हस्तलिखित

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

प्रथम खंड



नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

आर्यभाषा पुस्तकालय
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
में उपलब्ध

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

प्रथम खंड

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

संपादकमंडल

सुधाकर पांडेय करुणापति त्रिपाठी

मोहनलाल तिवारी

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी



नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३१
११०० प्रतियाँ



मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी
नागरी मुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरंभ किया, अपितु ऐसे गुरु गंभीर आयोजन भी आरंभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अभ्युदय और विकास मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनों में पड़ी पड़ी एकांत धरती में गड़े धन की भाँति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८९४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समयोचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का संकल्प बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के संकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची का यह प्रथम खंड प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और आशा है, हम शीघ्र ही इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री,
ना० प्र० सभा, काशी

रथयात्रा,
सं० २०३१ वि०

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे हैं। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक अज्ञात लेखकों और ज्ञात लेखकों के अज्ञात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने में अकल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों में जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का संचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लाँघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपजीव्य एवं मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग--छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह में पड़कर व्यर्थ ही धरित्री में गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन में लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूँदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश में अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर देशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बंबई तथा मद्रास की प्रेसीडेंसी सरकारों ने इस कार्य में अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध संस्थाओं और विद्वानों द्वारा भी खोज में उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक अज्ञात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक अज्ञात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक अज्ञात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। इस संबंध में रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम में प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त होते रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिये हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रार्थना पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके संपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियों में रखा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, आचार, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, कोश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तंत्र, मंत्र, यंत्र, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरीक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण कार्डों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं क्रमसंख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रों या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूर्ण है, अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीर्षक से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओं सर्वश्री शिवशंकर मिश्र, डा० प्रेमीराम मिश्र, मयालाल मिश्र, पारसनाथ पांडेय, वृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पांडेय, आदि का तत्पर सहयोग और श्रम प्रशंसनीय रहा है अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने कार्य के प्रति इन लोगों की निष्ठापूर्ण लगन प्रशंस्य है।

कार्डों के तैयार हो जाने पर इसके संयोजन और संपादन के निमित्त श्रीश्रीपति त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और दो चार दिन आए भी पर अंत में वे इससे एकदम विरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण का यह प्रथम खंड है जिसमें विभिन्न विषयों के लगभग २५०० ग्रंथों का विवरण आ सका है जो पूर्वोक्त विधि से संकलित है।

इसमें आयुर्वेद के १८८, उपनिषद् के १५८, कर्मकांड के १,१७१, कोश के ११३, गीता के २०४, तथा ज्यौतिष के ४८६ ग्रंथों का विवरण प्रकाशित है। इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशन के क्रम में है। अंतिम खंड में परिशिष्ट में उन ग्रंथों का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो संपादनक्रम में विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रंथ पुष्पचिह्नांकित (*) हैं।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रंश के भी अनेक ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रंथ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रंश के ग्रंथों का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रंथ प्रकाश में आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

---o---

विषयनिर्देश

—०—

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
१	७२४१	अंजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
२	३८१३	अजीर्ण मंजरी	श्री—?		दे० का०	दे०
३	३६६	अपामार्जन			दे० का०	दे०
४	६५१७	अर्क चिकित्सा	रावण (लंकानाथ)		दे० का०	दे०
५	३७२४	अश्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
६	३३६९	अश्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
७	६५९७	अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२२.७ × ६.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मदंजनं समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।।
१६.४ × ८.७ सें० मी०	८ (१–८)	७	२७	पू०	संवत्— १८४०	इति श्री कासिराज परमहंस परिब्राजकाचार्ज श्री विरचिते अजीर्णमंजरी समाप्तं ।। सुभमस्तु ।। संवत् १८४० भाद्रपदकृष्णं एकादस्यां शनिदिने ।। लिषितं मंगलशैन ।।
२१ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
२५.६ × ११.१ सें०मी०	१८ (१–१८)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति लंकानाथ कृतार्क चिकित्सानानौषधविधानं चतुर्थशतकां × × ।।
२५.७ × १२.२ सें०मी०	१२ (१–१२)	६	२७	अपू०	प्राचीन	इति नकुलकृते अश्वचिकित्सिते लक्षण नामाध्यायः षष्टः ।। (पत्र संख्या ६) × × ×
२४.५ × ११.८ सें० मी०	११ (१३-२३)	६	२६	अपू०	संवत— १८२७	इति श्री नकुलकृते अश्वचिकित्सितेविषाध्यायश्चतुर्दशः समाप्तः ।। शुभंभवत् ।। श्रीरस्तु ।। लिखितगजीवणकांकरोली मध्ये··· मिति चैत्र शुक्ल ५ संवत् १८२७ शाके १६६२···
२३.३ × ६.८ सें० मी०	४३ (१–४३)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाग्भट्ट विरचितायांमष्टांगहृदय संहितायां तृतीयेनिदानस्थाने वातव्याधि निदानाध्यायः पंचदशः ।। (पत्र सं ४१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	४३८	* अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०
९	२१	अष्टांग हृदय संहिता			दे० का०	दे०
१०	८८१	अष्टांग हृदय संहिता (संस्कृताटीका) { (१) तृतीयस्थान (२) चतुर्थस्थान (३) चतुर्थस्थान (४) षष्ठस्थान (५) औषधिप्रकरण (६) क्षाराग्निकर्म (७) क्षाराग्निकर्म }	वाग्भट्ट	अरुणदत्त	दे० का०	दे०
११	४१३५	आतंक दर्पण	वाचस्पति वैद्य	वैद्यवाचस्पति	दे० का०	दे०
१२	५५९५	आतंक दर्पण	वैद्य वाचस्पति		दे० का०	दे०
१३	७३२२	आतंकदर्पण (निदान व्याख्या)			दे० का०	दे०
१४	१२९७	आतंकदर्पणनिदान (संस्कृत टीका सहित)	वाचस्पति मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १०.७ से० मी०	३८३ (१-११५, ११७-२४०, २४३-३४१, ३४५-३८९)	११	३५	अपू०	प्राचीन संवत्—१७६७	मुनिरसऋषिचन्द्रे १७६७ वत्सरे शुक्ले शितंदशमिशशांके नाथनाम्नाद्विजेन।। सपदिचपठनार्थं वाग्भटोऽलेखिरम्यंलवण पुरमुषित्वा श्री हरेः सूनुनायं ।। नालोकितं यत्प्रतिपत्रमध्ये बुद्धेर्विरोधादथवान्य दं षात् ।। सद्भिर्विशोध्यंक्षपयात्रनाथे प्रायेण दृग्भ्रांतिमतिर्लिलिक्षो ।।
३२ × १५ से० मी०	१९ (२—२१)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
३१ × १५ से० मी०	१४८७ (६५,३४२, ९४,२२३, ४९१,१५१, १२१ प्रति अध्याय क्रमशः)	९	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यपति सिंहगुप्तसूनो वाग्भट कृतावष्टांगहृदय संहितायां सूत्रस्थाने-क्षाराग्निकर्मविधिर्नाम त्रिशोध्यायः श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु ।। शुभ ।। भवतु ।।
२४.७ × १०.७ से० मी०	३९ (२४—३९, ४३, ८१—१००)	१३	३७	अपू०	प्राचीन	इति वैद्य वाचस्पति कृते आतंकदर्पणे ग्रहिणीनिदानव्याख्यानं ।। (पत्र संख्या ३७)
३४.६ × १८ से० मी०	७१ (१—७१)	१३	५८	अपू०	प्राचीन	इति माधवनिदाने कृतौ वैद्य वाचस्पति कृते आतंकदर्पणे अतिसारे द्वितीयं (पृ० १८)
२६.१ × १०.८ से० मी०	९६ (१—९६)	९	३४	पू०	प्राचीन सं० १९१४ (शाके १७७८	इत्यातंकदर्पणे निदान व्याख्यायां विष निदानं संपूर्णसमाप्ताः ।। संवत् १९१४ शके १७७८ मासोतमे मासे भाद्रमासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भानुवासरे हस्त नक्षत्रे तदिनं गोविंदात्मज चीरंजीव × × × × × ×
२४.५ × १०.५ से० मी०	४४ (१—४४)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३७६१	आतंकदर्पणनिदान	माधवाचार्य ?		दे० का०	दे०
१६	७८६६	आतंकदर्पणनिदान-सटीक			दे० का०	दे०
१७	३८३				दे० का०	दे०
१८	७०	आयुर्वेदप्रकाश	माधव उपाध्याय		दे० का०	दे०
१९	६५८७	आयुर्वेदमहोदधि	सुखेण		दे० का०	दे०
२०	५६४	आयुर्वेदशतश्लोक्यानिघंट	श्री विमल्ल		दे० का०	दे०
२१	१३६४	औषधिकल्प			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५ × १२.६ सें० मी०	२४ (१–२४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
२६.६ × ११.४ सें० मी०	११२ (१—११२)	१४	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यातङ्कदर्पणे निदानव्याख्यामश्मरी निदानम् ॥ (पृ० १११)
२४.५ × १०.५ सें० मी०	८(२–७, ६–१०)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १४.४ सें० मी०	प० सं० १६ (१–१६)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं० १८४२	इति सौराष्ट्रादेशोद्भवसारस्वतकुलावतंस उपाध्याय माधव विरचिते आयुर्वेदप्रकाशे पाकावली नामाध्याय: संपूर्णम् ॥ समाप्तम् ॥ शुभंभवतु ॥ संवत् १८४२ शके १७०७ पौषकृतम् मंदवासरे ॥ समाप्तम् ॥
२०.३ × ९.७ सें० मी०	४२ (१–४२)	१३	२८	अपू०	प्राचीन	इति आयुर्वेदमहोदधौ सुखेण कृते पानीय वर्ग: ॥ (पत्रसंख्या—६)
२५.१ × १०.४ सें० मी०	प० सं० १२ (१–१२)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री त्रिमल्ल: कवि विरचिते आयुर्वेदशतश्लोक्या निघंट समाप्तं ॥··· संवत् १७३५··· वैशाषमासे वुद्धवासरे सप्तम्यां ग्रंथ समाप्तं···· ॥
२३.८ × १०.२ सें० मी०	८० (२–६८, ७०–८२)	७	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	७५३६	औषधिसार			दे० का०	दे०
२३	७०३५	कालज्ञान			दे० का०	दे०
२४	६५९५	कालज्ञान वैद्यक			दे० का०	दे०
२५	४०९	कष्टावली	रुद्र		दे० का०	दे०
२६	४४०	* गुणरत्नमाला	भावमिश्र		दे० का०	दे०
२७	५३८७	चतुर्थक			दे० का०	दे०
२८	६५१५	चिकित्साप्रणयनम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण-
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.६ × ८.७ से० मी०	८	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२६.७ × १०.५ से० मी०	७ (१–७)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२४.३ × ९.४ से० मी०	२० (१–२०)	८	३८	पू०	सं०१९२४	इति अभिन्यास कालज्ञान वैद्यके नाम ग्रंथ समाप्तं ॥ श्री भैरव योगेश्वरी प्रसन्नोस्तु ॥ संमत् १९२४ ॥ पौष कृष्ण ३० ॥ गुरु वासरे ॥ वाराणश्यां ॥ इदं पुस्तकं रामचंद्र बिन्न गणेश भट्ट हर्डीकर इत्युपनामकं ॥
२७.५ × १२.५ से० मी०	३	११	३२	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीश्री श्रीरुद्र कृतकष्टावली संपूर्ण ॥ करे कर पीटके चैव आयते स्तेताम्र भाजनें अस्वस्थेवट पत्रेच भूक्ता चंद्रा यणमाचरेत ।।१।। श्री ल ल ढ ट···
२३.२ × ९.५ से० मी०	७४ (८३-८५, ८८-८९, ९१-११०, ११२-१४३, १४६-१६२, १६४)	९	३१	अपू०	प्राचीन सं०१६४६	इति श्रीमन्मिश्रलटकनतनय श्री मिश्रभाव विरचिता गुणरत्नमाला संपूर्णा ॥ संवत् १६४६ समये चैत्रसुदि चतुर्थीरवौ ॥
१९.१ × ११.८ से० मी०	२ (१–२)	१३	३०	पू०	प्राचीन	अथ चतुर्थंकः ॥ (प्रारंभ)
१९.६ × ११ से० मी०	७ (१—७)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्म वैवर्त्तपुराणे ब्रह्मखंडे मालवीविष्णुसंवादे चिकित्सा प्रणयणं पंनदशोध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९	३५८१	चिकित्सासार संग्रह	बंगसेन		दे० का०	दे०
३०	१६३०	चूर्णविधि ?			दे० का०	दे०
३१	१८३७	ज्वरनिदान चिकित्सा	गोविंद प्रकाश		दे० का०	दे०
३२	७७३०	द्रव्यगुण शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		दे० का०	दे०
३३	५१४६	द्रव्यतत्व चंद्रिका	लक्ष्मण पंडित		दे० का०	दे०
३४	५४४३	द्विशतश्लोकी	ठाकुर		दे० का०	दे०
३५	२२३०	द्विशति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·९ × १७ सें०	प० स० ५१ (२–५१)	१७	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री बंगसेन कृते चिकित्सा सारसंग्रहे द्रव्यस्य भावाभावौ समाप्तः ॥ (पृ० ४३)
२५ × ९·५ सें० मी०	प० स० १७	८	३१	अपू०	प्राचीन	
१४·३ × १०·२ सें० मी०	११ (५–१५)	९	१७	अपू०	प्राचीन	इति गोविंद प्रकाश ज्वरनिदान चिकित्सा संपूर्ण ॥ देवीसहाय ।
२४·८ × १०·७ सें० मी०	११ (१–११)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्लभट्ट विरचितायां द्रव्यगुण शतश्लोकी समाप्ता ॥शुभमस्तु॥
२३·७ × ११ सें०मी०	३२ (१–३२)	१३	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्ब्रह्मज्ञानि वंशावतंस दत्तसुरिसुत लक्ष्मणपंडित विरचिता द्रव्यतत्वचंद्रिका समाप्तिमगमत् ॥ शुभं भूयात् ॥
२५·५ × १०·८ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	३३	पू०	प्राचीन संवत्–१८९८	गुणग्रामाभिरामैश्च पूजितेन मनस्विना श्री ठाकुरेण रचिता द्विशतीपूर्णतामियात् ? इति श्री द्विशती समाप्ता संवत् १८९८ ··· ···
२७ × ११ सें० मी०	२१	९	३०	पू०	संवत्–१९५०	इति द्वीसति सपूर्ण ···सम्मत् १९५० फालगुण शूदि १२ वार आदित्यवार पठितवघरा शुभं भूयात् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	३३५७	द्विशती	ठाकुर		दे० का०	दे०
३७	६५८२	धन्वतरि निघंटु			दे० का०	दे०
३८	७५२१	नाड़ीपरीक्षा			दे० का०	दे०
३९	७५२६	नाड़ीपरीक्षा			दे० का०	दे०
४०	७८५५	नाड़ीविज्ञान			दे० का०	दे०
४१	२७२	निघंटु			दे० का०	दे०
४२	४१८७	निघंटु			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४३	पू०	संवत् १९२९	श्रीठाकुरेणरचिता द्विशत्ती पूर्णतामियात् ॥ ग्रहयुग्मनवेंदौ च फाल्गुने कृष्ण पक्षके षष्ठ्यांभौमेयुते सांध्ये स्यामलालेन लेखितंम् ॥
२१ × ८.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३१	अपू०	प्राचीन	इति धन्वंतरीये निघंटौ द्रव्यगण समुच्चयः ॥ (पत्र सं० ८)
२७.१ × ११.१ सें० मी०	२ १–२	६	३०	पू०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण)	इति नाड़ी परीक्षा समाप्ता ॥
३६.१ × १०.२ सें० मी०	१	७	२३	पू०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण)	इति नाड़ी परीक्षा ॥
२७.२ × ११.१ सें० मी०	११६ २–११७	१७	३८	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११.१ सें० मी०	१३ (९६, ९६–१०२, १०४–१०५, १०७–१०९)	७	३५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२७.९ × ११.८ सें० मी०	८ (१–८)	५	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	१३२२	निघंटु (ज्वर निदान)			दे० का०	दे०
४४	४६४४	निदान			दे० का०	दे०
४५	२७५४	निदानप्रदीप	नागनाथ		दे० का०	दे०
४६	२०	निदानमाला	वाचस्पति		दे० का०	दे०
४७	३७६०	निदानांजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
४८	६५६६	नेत्रप्रसादन कर्म			दे० का०	दे०
४९	५३०९	पाकावली			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.१ × ११.४ सें० मी०	४ (१—४)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३०.५ × ११.१ सें० मी०	५० (८–५७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ११.७ सें० मी०	२४ (१–२४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५.५ सें० मी०	२६ (१-३, ५–२७	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
२५.९ × १२.४ सें० मी०	११ (३–१३)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमदग्निवेशविरचितं निदानांजनं संपूर्णम् श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥
१३.१ × ९.३ सें० मी०	६ (१–६)	९	३५	पू०	प्राचीन	इषत्कर्पूर संयुक्त स्मृतं नेत्रप्रसादनं ॥ नेत्र प्रसादिनी रस क्रिया ॥
२०.५ × १०.६ सें० मी०	४० (२–४१)	९	२६	अपू०	सं० १८८१	इति पाकावली समाप्तः जेष्ठ वदि ११ संवत् १८८१ शाके १७४६ मन्मथ नाम संवत्सरे लिखितं पं० श्रीभट्ट प्यारेलालेन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६५९९	पाकावली			दे० का०	दे०
५१	६७४३	पाकावली			दे० का०	दे०
५२	२१३१	पाकावलि			दे० का०	दे०
५३	३०००/३	पिप्पली वर्धमान			दे० का०	दे०
५४	४२७६	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५५	४०१५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६	४७४७	पूतनाविधान	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × ९·८ सें० मी०	१३ (१–४, ६–१४)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ पाकाद्विकारः ॥ (प्रारंभ)
३३·१ ×. ११·५ सें० मी०	५ ६–८, १०–११	८	४४	अपू०	प्राचीन	
२७ + ११·५ सें० मी०	७ (१–७)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति पाकानलि संपूर्ण ॥
१७·२ × ११·८ सें० मी०	३	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × १२·४ सें० मी०	१४	११	३३	अपू०	सं० १९३७	इति श्री पूतनाविधान माली स्कंद पुराणोक्त भामिनी पीडासमन विधान संपूर्ण ॥ लिखितं मिश्र सागरदत्त हरलीऽर्थं सम्हलग्राख्य ग्रामे मिति वैशाष शुदि १० बुधवार १९३७ शुभं श्रीकृष्णा नम शुभं ॥
२३·५ × १५·४ सें० मी०	प० सं० ११ (१–११)	१०	२६	पू०	प्राचीन (सं० १९१४)	इति श्री पूतनाविधान समाप्तं संवत् १९१४ चैत्र वदि तृतीयायां धनौराख्य नगरे छदम्मालाल वैद्य स्थाने द्विजदास·······॥
२४·३ × १२·७ सें० मी०	८ १–८	११	३६	पू०	प्राचीन	इति कमलाकर भट् कृते शांति रत्नाकरे पूतनाविधानं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	१३१२	पूतनाविधान (बालचिकित्सा)			दे० का०	दे०
५८	७०६५	प्रकाशचक्र निघंटु	द्विज वोपदेव		दे० का०	दे०
५९	१३३४	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६०	१३६५	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६१	३६००	वालचिकित्सा-पूतनाविधान	राजसिंह		दे० का०	दे०
६२	६५६५	बाल तंत्र	कल्याण		दे० का०	दे०
६३	८३४	बालरोग चिकित्सा	श्रीवंदिमिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२१·२ × १०·८ से० मी०	६ (१–६)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
३२·४ × १३ से० मी०	९ १–९	९	४५	पू०	प्राचीन	वाग्भट्कृते प्रमृते प्रकाशं चक्रे निघंटुममलं द्विजबोपदेवः १७६ श्रीमते रामानुजाय नमः × × × ॥
१९ × १३·५ से० मी०	९	१९	१६	पू०	संवत्–१९२५	इति श्री त्वारित्या ज्ञाने रुद्र स्वामी कार्तिकेय उमासंवादे बाल चिकित्सा पुस्तकं द्वादश वर्ष पर्यन्तं वलि उपाय समाप्तम् ॥ श्रा० कृ० द्वि० २ संवत् १९२५ ॥
२४·१ × ११·२ से० मी०	९ (१–९)	९	३५	अपू०	प्राचीन	
१२·४ × ७·६ से० मी०	२४ (१–२४)	८	१६	पू०	संवत्––१९३०	इति श्री महाराजधिराज श्रीराजसिंघ कृतो स्वधाभिधो नाम्नि ग्रंथेन बालचिकित्सा पूतनाविधान समाप्तं ·· ··· ··· ···सं० १९३० लिषतं पं० श्रीपाठक हजारीलाल वासिनः सरहनी श्री कृष्णयन्मः ॥
२२ × १०·९ से० मी०	३ (१–३)	१९	४९	अपू०	प्राचीन	इति कल्याणेन कृते बाल तंत्रे साधारण वंध्यौषध कथनं नाम द्वितीयः पटलः ॥ (पत्र-संख्या-२)
०२२·७ × १०·६ से० मी०	२१ (१,६–२२ २४–२६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	३५	भावप्रकाश	भावमिश्र		दे० का०	दे०
६५	५८२०	भावप्रकाश (माध्यम खंड)			दे० का०	दे०
६६	५८३९	भानप्रकाशनिघंटु			दे० का०	दे०
६७	८	भिषक चक्र चितोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०
६८	१४५०	भिषक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०
६९	३९२४	भिषक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·२ × १३·१ से० मी०	प० सं० १२८ (३-११, २५-२६, २८, ३२-३३, ३८ ४०-४१, ४४, ४६, ४७-५७, ५९-६०, ६५-७४, ७७-७८, ८१-८२, ८४-८५, ८९-९७, ९९-१०५, ११९-१२४, १२७-१३१; १३४-१३६, १३८-१४३, १४७, १५०, १५२-१५३, १५७-१५८, १६६, १६८-१७०, १७२, १७४-१८९, १९७-२१०, २१२-२१३, २२४-२२६)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	
३३·९ × १३·१ से० मी०	१९ (१–१९)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × ११·६ से० मी०	१९ (१–२, २–९, ११–१७, १९)	८	२९	अपू०	प्राचीन	
२०·५ × १३·५ से० मी०	६३	२१	१६	पू०	वि० सं० १९०९	
२८·५ × १६·१ से० मी०	४ (२–५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × १०·३ से० मी०	५९ (१–५९)	१०	३५	पू०	संवत्– १९००	इति श्रीभिषकचक्र चित्तोत्सवेहंसराज कृते वैद्यशास्त्रे सप्तदशोध्यायः १७ समाप्तः। लिषितमिदंपुस्तकं संवत् १९०० भाद्रशुक्ल ११ चंद्रवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०	१०६३	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७१	७२९	मदनबिनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७२	४७६७	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७३	४८८४	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७४	६७४४	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७५	७०५९/३	मदन विनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × १६·३ से० मी०	८६ (१–८५–८५	१३	२८	अपू०	संवत् १९४७	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश: १४ ॥ चैत्रे मासेशिते पक्षेमध्याह्ने शुक्र वासरे चतुर्दश्यां लिखितं फकीरीचंद्रेण पुस्तकं शुभदायकं सं० ११४७ वि० चैं० सु० १४ दीन शुक्रवार बहेडिमध्ये सेवग रामात्मज श्री लक्षमणाय नम: ॥
२७·८ × १०·८ से० मी०	५९(१,१-१२, ३२-६२, ८२-८५, ८७-९७)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२८·८ × ११·२ से० मी०	७ (१–२४, २६–७१)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ कृती नवर्ग: एकदश: ११ ॥ (पत्र, संख्या–६२)
२९·८ × ११ से० मी०	५२ (७, ९–१७, २९ ६७)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ प्रशस्तिवर्गाश्चतुर्द्दश: समाप्त: ॥१४॥ बाचस्पति पितुरुदार सुविधा बाचस्पतेश्चरणपंकज··· इति मदन विनोद: समाप्त: ॥
३२·१ × १२·६ से० मी०	४२ ४०–८१, ८३	९	३७	अपू०	प्राचीन संवत्–१८९०	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ प्रशस्ति वर्ग श्चतुर्द्दशम: समाप्त: श्री शुभमस्तु फाल्गुणेमासि कृष्णपक्षे पंचम्या भृगुवासरेक: सं० १८९० के साल श्रीकृष्णचन्द्रम्मह्म्भजामि ॥
३२·४ × १६ से० मी०	८६	१२	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ मिश्र वर्गस्त्रयोदश: समाप्त २३ रिति निघंटसंपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६	२२३२	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७७	७७३७	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७८	५२३१	मधुकोश (माधवनिदान की टीका) मू० ग्रंथ माधव मिश्र	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
७९	५७३२	मधुकोश	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
८०	६३३०	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८१	६०३१	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८२	६६८३	माधवनिदान (ज्वर प्रकरण) ('मधुकोश बंध' संस्कृतटीका)	माधव मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७·५ × १४ से० मी०	१३	१६	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोद निघंटौ मिश्रा वर्गास्त्रयोदशः ॥ शुभं भूयात् ··· ···॥
२६·४ × १० से० मी०	१९ ३८–५७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघंटौ कृतान्नवर्ग्रः एकादशः × × ॥ (पृ० ५७)
२८ × १३·५ से० मी०	४ (१–४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	तत्तद्ग्रंथ तरुभ्यो व्याख्या कुसुम रसलेश माहृत्य भ्रमरेणेव मया यं व्याख्या मधुकोष आरब्धः ॥ उपयुक्तमिहानुवर्तनिदानंमाधवेन यत् ॥ ग्रंथ व्याख्या प्रसंगेन मया तदपि लिख्यते ॥ (पत्र संख्या–१, पंक्ति सं०–६)
२५·६ × १०·८ से० मी०	३४	९	३२	अपू०	(जीर्ण) प्राचीन	आरोग्य सालीय वैद्यक महोपाध्याय श्री विजय रक्षित कृते मधुकोषे ज्वर निदानं समाप्तिमगमत् ॥ (पृ० ६३)
२४·७ × १०·२ से० मी०	४८ (१–४८)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११·८ से० मी०	७ (१–७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·४ से० मी०	१९ (१–१९)	१२	४१	पू०	प्राचीन	तेनोज्वलाविवृति रल्पधियां हिताय संबध्यते विबुध माधव संग्रहस्य । विज्ञाय तार्किक वरैकविचार वैद्यं वैषम्य गुंफनवशान्मधुकोश बंधं ॥ ८ ॥··· ··· (पत्र संख्या–२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३	६६८६	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८४	९९५	माधवनिदान	माधवाचार्य		दे० का०	दे०
८५	३७५९	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८६	३७९०	माधवनिदान (आतंकदर्पणनिदान व्याख्या)	माधवाचार्य	वाचस्पति	दे० का०	दे०
८७	३१८१	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८८	१०४९	माधवनिदान	माधवाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२५ × १० सें० मी०	९२ (१–९२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
३३·३ × १३·५ सें० मी०	११४	१०	४०	पू०	संवत्—१९४२	इति श्री माधवाचार्य विरचितो रुग्विनिश्चयः समाप्तम् ।। संवत् १९४२ शाके शालिवाहनस्य १८०७ मास १३ पक्ष २६ मिती अश्विन वदि प्रतपदा १ शुक्रवामरान्वितायां इदं पुस्तक लिखितं फकीरचंदः सेवगरामात्मजः वहेड़ि· मध्ये शुक्लः सुच्चशोकेशोचतिती शुक्लस्वार्थ परोपकार्थ । शुभ मंगलमस्तु ।। मंगल ददातु ।।
२४ × १०·५ सें० मी०	१२२ (१–४१, ४३–११२ ११५–१२५)	८	३२	अपू०	संवत्—१८७४	इति श्री वैद्यराजकवि माधवविरचिते रुग्विनिश्चयःसंपूर्णः इतिमाधवनिदान समाप्तं ग्रंथपरिमाणं २२०० संवत् १८७४ वैशाख कृष्ण १२ खौ काव्यकर्त्तायदाव्यस्तेलेखकोगणनायकः ····।
२३·८ × ११·१ सें० मी०	६९	१३	३८	अपू०	प्राचीन	इत्यातंकदर्पणे वाचस्पति कृतायां माधवे निदान व्याख्यायां भग्नव्रण निदानं (पत्रसंख्या ११५)
२२·७ × १०·२ सें० मी०	४६ (१–४६)	११	३३	पू०	प्राचीन	माधव कविनारचितःस्सुखहेतोस्समस्त ··· ···इति श्री माधवाभिधानं द्रव्यगुणं समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।। सिद्धेश्वर्य्यैनमः ।।························
३६·१ × १४·५ सें० मी०	प०सं०४४ ४. ६–४० ४३, ४६, ४८–५०, ५३–५५)	११	४९	अपू०	प्राचीन संवत्—१९१२	इति श्री माधवकृतं निदान स्थानं समाप्तं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	१८०४	माधवनिदान			दे० का०	दे०
९०	१४७	मालावति संवादः	गंगाधरभट्ट		दे० का०	दे०
९१	७२७७	मुद्गरकूटविवरण	माधव	नागेश	दे० का०	दे०
९२	६५९३	मूत्र परीक्षा			दे० का०	दे०
९३	६५९४	मूत्रपरीक्षादि			दे० का०	दे०
९४	६५८	मूत्रपरीक्षा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·८ × १२·४ सें० मी०	प०सं०९० (१–९०)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
१६·१ × १०·२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२१	पू० सं० १९३६	प्राचीन	इति मालावति विष्णु संवादे समाप्तोय ॥ संवत् १९३६ शके १८०१ वैशाख वद्य २ गुरौ तद्दिने पुस्तकं समाप्तं ॥ नाखरेत्युपनामक नारायणभट्टात्मज गंगाधर भट्टेन लिखितं.........मूर्खं हस्ते न दातव्यं एवं वदति पुस्तकं ॥
२१·८ × १०·७ सें० मी०	३ १––३	१६	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री माधवविरचितो मुद्गरकूटस्स माप्तिमगमत् ॥ इति श्रीमद्भिषग् कृष्ण पंडितात्मज भिषङ्नागेश पंडित विरचितं मुद्गरकूट विवरणम् ॥
१९·६ × १०·६ सें० मी०	३ (१ –३)	११	२८	पू०	प्राचीन सं० १७८८	इति श्री मूत्र परीक्षा समाप्ता ॥ संवत् १७८८ वर्षे: शाके १६५३ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुद्ध १ भौम वासरे रावल–शीवदत्त पुत्र शंभू रामेण पुस्तक परोपकारे अर्पन करुं छेश्री ॥ ......व्यास उदे कृष्णस्य अवरंगाबादे प्राप्तमिदं ।
१४ × १०·४ सें० मी०	४ (१–२, ४–५)	१५	१२	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति मूत्र परीक्षा समाप्तं संवत १८ऽ८८ आ० ६ शा १७ऽ५३ श्रावण वदी ८ भौमे लि०
३४ × १३ सें० मी०	२	१२	४०	पू०	संवत्— १९४०	मूत्र परिक्षासमाप्तम् सं० १९४० मिती चत सुदि १

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९५	७९२	मूत्रपरीक्षा	सरजीतसिंह		दे० का०	दे०
९६	७६४	योग तरंगिणी			दे० का०	दे०
९७	५०१२	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
९८	४५६४	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
९९	३९५९	योग चिंतामणि	हर्षकीर्ति सूरि		दे० का०	दे०
१००	७१९२	योगरत्नमालाविवृत्ति	नागार्जन		दे० का०	दे०
१०१	२४८	योगशत (टी०)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × १२·१ से० मी०	२ (१, ५)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति मूत्र परीक्षा लक्षणानि शुभम् लिखितं सरजीत सिंह ब्राह्मणेन शुभम् ।
२५ + १०·५ से० मी०	४८ (२–३, ५–६, ८–१५, १७–१८, २०–५०, ७१–७३)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
३०·५ + १२·३ से० मी०	२ (१०७–१०८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
३०·७ + १२·६ से० मी०	२२ (८५–१०६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
३१ + १२·४ से० मी०	५५ (१–१४, १६–४७, ७५–८३)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्नागपूरीयत योगक्षीय श्री हर्ष कीर्तिसूरि संकलिते श्री योग चिंतामणौ वैध्यक संग्रहे गुटिकाधिकारो नाम तृतीयोध्याय : । पृ० ४७
२३·५ + १०·६ से० मी०	२४ १–२४	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२१५ + ९·५ से० मी०	१८ (१–१८)	१३	२७	पू०	प्राचीन सं० १८२३	इति श्री योगशतं समाप्तम् । सं० १८२३ वर्षे भाद्रमासे शुक्ल पक्षेत्तिथौ ५ पंचम्यांशुभदिने लेष कया चक्रयोर्जयत्ति ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या व संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०२	१६५५	योगशतक (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१०३	६६८५	योगशतक			दे० का०	दे०
१०४	६१७४	(पूतना-विधान) योगसुधानिधि	वंदिमिश्र		दे० का०	दे०
१०५	६६८७	रसपद्धति	बिंदु		दे० का०	दे०
१०६	७२३७	रसप्रकरण			दे० का०	दे०
१०७	७७३८	रस मंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
१०८	७२६५	रसमंजरी ?			दे० का०	दे०
१०९	७८७६	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३० × ११·५ सें० मी०	९ (१–९)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ९·९ सें० मी०	७ (१–७)	७		पू०	प्राचीन	इति योग शतकं समाप्तं ॥··· ······ ··· ··· ··········
२२ × १० सें० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन संवत्— १८७०	इति श्री जगदीशात्मज वंदिमिश्र विरचितै जोग सुधा निधौ प्रथमादि दिवसं मास वर्ष समदाय कृतभेदन भिन्नानां पूतना ग्रहणचिकित्सा नामपंचकलास समाप्त·········॥ संवत् १८७०
२७ × १२ सें० मी०	९५ (१–९२, ९४–९६)	९	६३	अपू०	प्राचीन	विंदु नामय सुभिषजांमुदेरस पद्धतिः संपथ्यते······ पृ. १)
२२·४ × ९·४ सें० मी०	७ १–७	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १०·८ सें० मी०	२४ ३०–३४, ३६–५५	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शालिनाथ विरचिता रसमंजरी काल ज्ञान कथनं नाम दशमोध्यायः समाप्तोयां ग्रंथः ।
२४·४ + ९·६ सें० मी०	४ १–४	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२६·६ + ११·४ सें० मी०	१४ (११-२५)	८	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पंडित वैद्यनाथ पुत्र शालिनाथ विरचिते रसमंजरी उरी उपरसशोधन मारण सत्वापातनमणि मारण कथनं-नाम तृतीयोध्यायः ॥ पृ० १२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
११०	७१०७	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
१११	१०४२	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
११२	४२८८	रस रत्न समुच्चय			दे० का०	दे०
११३	६५१८	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११४	७५१२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ		दे० का०	दे०
११५	५२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११६	११६२	रसलक्षण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४.५ × ११ सें० मी०	८ (१–२, ४–७, ९–१०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रसमंजर्यां रस जारण मारणादि कथनं नाम द्वितीयोध्याय:··· (पत्रसंख्या ७)
२५.५ × १२.५ सें० मी०	४२ (१–७, १०–११, १३–४५)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२६·४ × ११·१ से० मी०	३१ (१–१३, १६–३३)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति रसरत्न समुच्चये षोडशोध्याय: ॥ (पत्र सं० ३०) × × ×
२६.७ × ११.६ से०मी०	११२ (१–११२)	११	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाथसिद्ध विरचिते रसरत्नाकरे रसायनखंडे वीर्य-स्तंभनादिस्त्री द्रावणां तन्नामनव मोपदेश: ॥९॥
१२.८ × १०.८ से०मी०	४७ (१–४७)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाथ विरचिते रस रत्नाकरे सिद्ध खंडे त्रयो-दशो पदेश: × × । (पत्रसंख्या ३६)
३५ × १८ से० मी०	४६	१५	५२	पू०	संवत्—१७२८	रसरत्नाकरमंत्र खंड पूर्ण
२७ × १२·५ से० मी०	६	६	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११७	७१०३	रसायनकल्प			दे० का०	दे०
११८	६६८२	रसायन-क्रिया (काकचंडीश्वर मते)			दे० का०	दे०
११९	४२६५	*रसिकविनोद	गोपालदास		दे० का०	दे०
१२०	७५२३	रोगचिकित्सा-औषधिप्रकरण			दे० का०	दे०
१२१	६६२३	रोगचिकित्सा ?			दे० का०	दे०
१२२	४१९१	रोगावली (हिंदी-सटीक)			दे० का०	दे०
१२३	४२६२	*वीरसिंहावलोक (कर्मविपाक)	वीरसिंह देव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.७ × १०.५ से० मी०	११ (१-११)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ८.५ से० मी०	४१ (१-४१)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
२७.८ × ११.२ से० मी०	प०सं० ४५ (१-२, ७-८, १४-२३, २५-२८, ३४-३८, ४३, ५१, ५३, ५९-६१, ६८, ७४, ७६, ८२, ८६-८७, ९० ९२, ९५, ९८, १०६, १०९, ११२, १५५, १५८)	१०	३४	अपू०	प्राचीन संवत्—१७६७	इति श्री मेहरा वंशावतंस श्री स्वामिदासात्मज गोपालदास विरचितोरसिक विनोद नाम्नाग्रंथोयं परिसमाप्तः ॥ श्री शुभमस्तु मांगल्यं ददातु । संवत् १७५८ वरषे पौष वदि पंचमी ५ गुरुवासरे × × × × ॥
२८.१ × १०.१ से० मी०	१३	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२५.१ × ९.८ से० मी०	३ (१, ४-५)	१४	४०	अपू०	प्राचीन	
२६.२ × १२ से० मी०	५ (१-५)	९	४२	पू०	प्राचीन	दक्षिक्षाश्चस्वशक्तित इत्युक्तं तदन्तर कृत्यमाह १ इति महार्णवे ॥
२४.६ × १० से० मी०	९५	८	२९	अपू०	प्राचीन सं०१५४४	इति श्री तोमरवंशावतंस—॥ वीरसिंहदेव विरचिते ग्रंथो वीरसिंहावलोके ज्योतिशास्त्र कर्मविपाकायुर्वेदोक्त प्रयोगे ········ ·······संवत् १५४४ समये भाद्रसुदि २ चंद्रवासरे । अद्येह-कालपीनगरेसुलुतान बहलोल साहि-राज्ये । सीम्रतहिजादेश्रादमषान राज्य प्रवर्त्तते ।········ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	६५८६	वैद्यक			दे० का०	दे०
१२५	३५७६	वैद्यक ?			दे० का०	दे०
१२६	६११	वैद्यकग्रंथ			दे० का०	दे०
१२७	३३०३	वैद्यकशास्त्र	हंसराज		दे० का०	दे०
१२८	७५३३	वैद्यकसंदोह			दे० का०	दे०
१२९	६६८४	वैद्यकसंदोह			दे० का०	दे०
१३०	७०६१	वैद्यकसार	शंकर		दे० का०	दे०

पत्नों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.८ × ९.४ से० मी०	१९ (१–१९)	८	३४	अपू०	प्राचीन	............॥ अथ वैद्यकं ॥.......... (प्रारंभ)
२५.५ × १२.५ से० मी०	५ (१–५	६	१९	पू०	प्राचीन	
१९.६ × ११.२ से० मी०	प० सं० ३९ (१,३–११, ४५–६२, ६४–७५)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × १०.६ से० मी०	प० सं० १७ (१–१७)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२.४६ × ६.६ से० मी०	७	७	३०	अपू०	प्राचीन	
१७.२ × ८.८ से० मी०	७ (१–७)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
१५.७ × ८.३ से० मी०	२० (१–२०)	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १८९१	इति वैद्यकसारे शंकराख्ये पंचमोध्यायः ग्रंथ संख्या ९५० हस्ताक्षरभाउविठल ब्रह्मारा पुरकर कुलकरणि प्रगणे जाहानाबादमौजे गोणे समंत १८९१ कार्तिक शुध्य १२—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३१	३२६३	वैद्यचन्द्रोदय	वाग्भट		दे० का०	दे०
१३२	४२३६	वैद्यकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति		दे० का०	दे०
१३३	४३६३	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३४	१३५८	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिंबराज	गोस्वामी-हरिनाथ	दे० का०	दे०
१३५	१६०७	वैद्यजीवन (संस्कृत टीका सहित)	लोलिंबराज	हरिनाथ शर्मा	दे० का०	दे०
१३६	११२६	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३७	३४००	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिम्बराज	भगीरथ	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × ११·१ से० मी०	प० सं० ११ (१–३, ५–१२)	६	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री वैद्य वाग्भटोक्तं विरिचितायां वैद्य चंद्रोदय नाम ग्रंथो षोडशोध्याय: ॥ संवतु १८६८ साके १७३३ ॥
२५·८ × १६·६ से० मी०	३६ (३६–६१)	२३	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री योगचिंतामणौ वैद्यक सारसंग्रहे तैलाधिकार: षष्टोध्याय: समाप्त: ॥ ६ (पत्रसंख्या–४३)
२३·१ × १०·५ से० मी०	प० सं० २३ १–२३	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्रीमद्दिवाकर सूनुना लोलिंबराज कवि: विरचिते वैदय-जीवनं समाप्तं । × × × संमत् १९२३ ॥ शाके १७८८ ॥ बहूधान्य नाम संवत्सरे उत्तरायणे...... ॥
२३·८ × १०·६ से० मी०	३० (१–२, ४–३१)	१३	४६	पू०	सं० १८९१	इति श्रीमद्दिवाकर सूनु लोलिम्मराज विरचिते सकलरोग प्रतीकारो नाम: पंचमो विलास: ॥ ❋ ॥ सम्वत् १८९१ मिति फाल्गुन शुक्ल पक्षे नवम्यां रविवासरे अहिछरा नगरे रघुबरमिश्रेण लिषितमिदम् शुभंभूयात् ।
३२·७ × १२·४ से० मी०	६ (१–६)	१४	५१	पू०	प्राचीन	
२८·८ × १०·७ से० मी०	२२ (१–२२)	७	४३	पू०	सं० १८५८	इति श्री लोलिवराजकविविरचिते वैद्य-जीवने रसप्रक्रिया कथनं नामपंचमो विलास: ॥ ५ ॥ ....समाप्तोयं ग्रंथ: ॥ संवत् १८५८ पौषेमास्यसिते पक्षे द्वादश्यां शुक्रवासरे ॥.......
३०·५ × १५ से० मी०	५३ (१–५२, ५४)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री कूर्म्माचलेंदु महाराजाधिराज-ज्ञानचंद्रात्मजजगचंद्राश्रित भगीरथ विरचितायां जगच्चंद्रिकायां वैद्यजीवन टीकायां पंचम: किरण: समाप्तश्चायं-श्रीरस्तु .....

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३८	३७९६	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३९	६५८४	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४०	७१८६	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४१	५७४१/२	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४२	७७७३	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४३	७२६४	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४४	७१२८	वैद्यजीवन दीपिका	लोलिंबराज	रुद्रभट्ट	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.१ × १२.२ से० मी०	प० सं० १६ (१–१६)	९	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यजीवने ज्वर प्रतिकारोनाम प्रथमो विलासः । (पत्र सं० ६)
१५.८ × ९.२ से० मी०	३१ (३–३४)	९	२२	अपू०	प्राचीन	इति मद्दिवाकर सूनु लोलिमराज विरचिते वैद्य जीवने ज्वर प्रकरणंनाम प्रथमोल्लासः ॥ १ ॥ (पत्र सं० १३)
३४.८ × १३.२ से० मी०	३३ (१–३३)	११	४५	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री वैद्य लोलिमराज विरचिते वैद्यजीवनेरसविधिर्नाम पंचमोविलासः ५ संवत् १९२२ कार्तिके शुक्ल पक्षे पंचम्यां भौमवासरे ततदीने रामभक्तेन लोलिमराज लिख्यते समाप्त शुभं भूयात् ॥ × ×
१८.१ × १३.९ से० मी०	२३	१७	१८	अपू०	प्राचीन सं० १८५८	इति श्री श्रीमद्दिवाकर पंडित सूनु लाल लोलिबराज विरचिते वैद्यजीवण समाप्तः सुभमस्तु मिदं पुस्तकं लिषा श्री त्रिपाठीनंदलालेन षडरौंधी ग्रामे संवत् १८५८ रामचंद्रायनमः ।
२० × १५ से० मी०	३२ (१–३२)	१४	१३	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री लोलिंवराजविरचिते वैद्य जीवने सकलरोग प्रतिकारो नाम पंचमो विलासः । इति वैद्य जीवन समाप्तम् ॥ शुभम्भूयात् संवत् ॥ १८६७ ॥
२३.६ × ९.५ से० मी०	२९ (१–२९)	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १७२९	इति श्री श्रीमदिवाकर पंडित सूनु लाल लोलिबराज विरचिते वैद्यजीवन समाप्त ॥ संवत् १७२९ समये जेठ वदि १२ मंगल + + +
१६.२ × १०.२ से० मी०	८ (१–८)	१८	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५	६४८७	वैद्य-दर्पण (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
१४६	६३९२	वैद्यभास्करोदय सटीक	धन्वंतरि	विष्णुगिरि	दे० का०	दे०
१४७	२०८९	वैद्यमनोत्सव	वंशीधर मिश्र		दे० का०	दे०
१४८	२९	वैद्यमनोत्सव	वंशीधर		दे० का०	दे०
१४९	३२४२	वैद्यरत्न	शिवानंद भट्ट		दे० का०	दे०
१५०	४५३६/२	वैद्यामृत	मोरेश्वर भट्ट		दे० का०	दे०
१५१	६५१६	वैद्यामृत	मोरेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·६ × १५·५ सें० मी०	२५ (१–१२, १४–२६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	श्रीमते रामानु जाय नमः नमस्कृत्य गणेशानं महेशान महेश्वरी वैद्यदर्पण-माचक्ष्टे वैद्यानाहितकाम्यया । (प्रारंभ)
२०·४ × ८·३ सें० मी०	१५८ (३–१६०)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यभास्करोदये धन्वंतरिकृत विष्णु-गि भाष्य विरचितायां नामरोग व्याधिजन्य उत्पतिज्ञान अनुक्रमणिका नाम कथनं चतूरविंशति परिछेदः २४ सुममस्तुः ॥
२६·५ × १४ सें० मी०	१७ (३,५, ७,९,१०, १४,१६, १७,२०, २२,२३, ३३ (३७, ३८)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्मिश्र वंशीधर विरचिते वद्य-मनोत्सवे नाडीपरीक्षा मूत्रपरिक्षा पित्त कफवातकोय निदान साध्यासा ।
३० × १३ सें० मी०	स० सं० ३०	९	३४	पू०	प्राचीन सं० १९१९	संवत् १९१९ वैशाषमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा भौमवासरे लिपि कृतं ... ...श्रीमस्तु शुभमस्तु दासरथे रामकृष्ण ।
२३ × १०·३ सें० मी०	४१ (३–४३)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि शिवानंदभट्ट विरचिते वैद्यरत्नः समाप्तः शुभंभूयात् ॥
२७ × ११ ५ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४१	पू०	संवत्–१८४२	इति श्रीमदहम्मदानगरस्थितमाणिक-भट्ट वैद्यात्मज मोरेश्वरविरचिते चतुर्थो-लंकारः बांधवकरोपनामकरघुनाथसूनु-नाभवानी शंकरेणलिखितमलं ॥ संवत् १८४२ आषाढ़ शुद्धपंचम्यांमिदौ ॥
२४·२ × १०·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३५	पू०	प्राचीन संवत्–१८८६	इति श्रीमदहंमदानगरस्थित माणिक भट्ट वैद्यात्मज मोरेश्वर विरचिते वैद्यामृते चतुर्थोलंकारः समाप्तः ॥ संवत् १८८६ मिति माघ शुद्ध ४ गुरुवासर जयरामेन लिखितं ॥ कवीश्वरोपनाम्ना ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५२	६५८३	वैद्यावंतस	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१५३	७५३०	व्याधि ज्ञान			दे० का०	दे०
१५४	६५६८	(द्रव्य गुणागुण) शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		दे० का०	दे०
१५५	३२६४	शतश्लोकी	त्रिमल्ल कवि		दे० का०	दे०
१५६	६५४१	शतश्लोकी टीका (द्रव्यदीपिका)	त्रिमल्ल भट्ट	कृष्णदत्त	दे० का०	दे०
१५७	७०५६ / ३	शतश्लोकी निघंटु	त्रिमल्ल		दे० का०	दे०
१५८	६६००	शारीरक (अष्टांग हृदय)	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·८ × ७·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	······रचयति चरकादीन् वीक्ष्य वैद्यावतंस कवि कुल सुलतानो लाल लोलिंब राजः ॥ २ ॥······ (पत्र सं० १)
२५·५ × १०·४ सें० मी०	६	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ९ सें० मी०	११ (१–११)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्ल विरचिता गुणागुण शतश्लोकी समाप्ता ॥··· ···
२३·२ × १३ सें० मी०	प०सं०१० (१–२, ८–१५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन संवत् १९२५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिता शतश्लोकी समाप्ता शुभं संवत् १९२५ फालगुन कृष्ण १० शनौ ॥
३४·५ × १२·९ सें० मी०	१३ १,१–१२	९	४०	पू०	प्राचीन संवत् १९०५	इति श्री त्रिमल्ल भट्ट कृता शतश्लोकी टीका समाप्तं शुभं भूयात् संवत् १९०५ के–कार्तिकः ६ बु० ।
२२·४ × १६ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	······अथ श्री त्रिमल्लकविकृत शतश्लोकी निघंटु प्रारंभः ॥··· ··· (आदि)
२२· × ५ ९·७ सें० मी०	१५ (७, १२–२५)	९	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारीरस्थाने मर्मं विभागोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५९	७५६८	शाङ्गर्धर संहिता			दे० का०	दे०
१६०	७४६२	शाङ्गर्धर व्याख्या	शाङ्गर्धर	सुखराम	दे० का०	दे०
१६१	७८२७	शाङ्गर्धर संहिता (व्याख्या) टीका	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६२	७७०७	शाङ्गर्धर टीका	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६३	६०३४	शाङ्गर्धर संहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६४	५६६२	शाङ्गर्धर संहिता (पूर्व एवं मध्यम खंड)	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६५	६८७०	शाङ्गर्धर संहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४×१.३.१ सें० मी०	२ (१–२)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शाङ्गंधरे० स्नेहपानाध्यायः ॥ (पत्र–सं० २)
२७×११.५ सें० मी०	९०	९	३१	अपू०	प्राचीन (शके १७७६)	इति शाङ्गंधर व्याख्यायां दृष्टि प्रसादन कल्पनाध्यायः ।···संवत् १–शके १७७६ मासोतम मासे भाद्रपद मासे शुभे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीयायां भृगुवासरे तदिनं उपनाम ज्योसी गोविंदात्मज चीरंजीव रामेश्वर गोडरीमा सुभस्थानेन लिखितं ॥
२६.९×११.३ सें० मी०	८ १-६, ८-९	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री शाङ्गंधर व्याख्यायां पुटपाक कल्पना (पत्र सं० ३)
२७×११.४ सें० मी०	१८ १-३, ३–१७	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
२८×१२.२ सें० मी०	५६	७	४०	अपू०	प्राचीन	
३३.५×१३ सें० मी०	९२ (१–९२)	८	३०	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री दामोदर शूनुना शाङ्गंधर बिरचितायां चिकित्सा स्थाने मध्यम खंडः समाप्तः शुभमस्तु मिति पौष सुदि द्वादसी रवौ की संवत १९०११ के साल
२३.८×१३.२ सें० मी०	११७	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनोः शाङ्गंधरेण विरचिता संहितायां चिकित्सा स्थाने यूर्णा जनवति सकल्पनाध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः ॥शुभम्॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	६५१९	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६७	५०५५	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६८	१०१९	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१६९	३०१२	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१७०	३७९७	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१७१	३७००	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१७२	६४९	शाङ्गर्धरसंहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·३ सें० मी०	३६ १–३६	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनूनाशार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां सूत्र स्थाने परिभाषाय: प्रथम: + + + (पृ० ५)
२८·७ × ११ सें० मी०	१९० १–२,४–२५, २७–११३, ११५–१६२, १६४–१६८, १७१–१८२, १८४–१९१, १९३–१९८	९	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदरसुनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायांसंहितायांश्चिकित्सास्थाने लेपादिविधिरध्याय: ।। (पत्र संख्या १८९) + + +
२२·६ × १४·७सें०मी०	प० सं० २६	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२५ × १२ सें० मी०	प० सं० ५९ (१–४०, ४४–६२)	१३	२६	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इति श्री दामोदर सूनो: शार्ङ्गधरस्य विरचितायां संहितायां चिकित्सास्थाने-रसकल्पनाध्याय: समाप्त: ।। इति मध्यमखंड समाप्त: संवत् १९१८'''।।
२५·२ × ११·९ सें० मी०	प० सं० २१ (१–२१)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायांनिदाने रोगगणना संख्याध्य: इति पूर्व खंड: समाप्त: ।।
३० × १५·७ सें० मी०	प० सं० ६ (२–६)	१४	३५	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११ सें० मी०	१५७ १, ३–१२, १२–३५-३५-११३, ११३–१३६, १४१–१५६	८	३१	अपू०	प्राचीन सं० १७६६	इति श्री दामोदर सूनू श्री शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सास्थाने-नवप्रशादनकर्म विधिरध्याय: ।। शुभमस्तु लेषक पाठयो: श्रीरस्तु संवत् १७७६ वरषे वैशाष कृष्ण पंचम्य चंद्रवासरे इदं पुस्तकं लिखितं शुभं अस्तु ।।०।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	४५३	शार्ङ्गधर संहिता मध्य खंड	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७४	१४४	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७५	३१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७६	४३१३	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७७	१८६०	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७८	१४४६	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७९	१०६१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२८ × ११ से० मी०	६६	१०	०३	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री शाङ्गंधरस्यसहितायांचिकित्सा स्थाने रस कल्पनाध्यायः ।। इति मध्यम खंड समाप्त: ।। शुभमस्तु ।। अथ शुभ संवत्सरे अस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्य सं० १८७२ वर्षे चैत्र शुदिदशमी १० बुध वासरे लिख तमिदं लक्ष्मण चदर्थं बढ़वाला शुभं ।।
२५.५ × १०.५ से० मी०	४६ (२-४७)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गंधरेण विरचितायां अवलेह कल्पनाध्यायः ८।।
३० × १३.५ से० मी०	४६ (३-३५ ६१-६४, ७४, ८४-८४, ८६ ६२-६४)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३४.३ × १३.१ से० मी०	५३	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गंधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सा स्थाने कयादि कल्पनाध्याय × × ×।। (पृ० १२)
२७.५ × ११.३ से० मी०	३५ (१-७, १०-३७	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.४ × १४.२ से० मी०	२७ (१–२७)	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनोः शाङ्गंधर विरचितायां संहितायां दारस्थाने योग गणनाध्यायः ।।
२१.५ × १४.७ से० मी०	६६ (७-४०, ४२–६६ ७२-६५)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	१०८१	शाङ्गर्धर संहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१८१	१०७७	शाङ्गर्धर संहिता (रसकल्पना बिधि-रध्याय:)	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१८२	१०५०	शाङ्गर्धर संहिता	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१८३	४५	शालिहोत्र (तुरग-प्रशंसा प्रकरण)	शाङ्गर्धर		दे० का०	दे०
१८४	७७७०	शिलाजतु शोधन (शिलाजीत शोधन)			दे० का०	दे०
१८५	५१६०	शूलज्वर चिकित्सा			दे० का०	दे०
१८६	५७३७	षड्ऋतु पथ्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.५ × १४ से० मी०	८८	१२	४०	पू०	सं. १८९६	इति श्री दामोदर सूनो शार्गधरेण विरचितायां सहितायां चिकित्सा स्थाने नेत्र प्रसादन कर्म अध्यायः द्वात्रिंशदाख्यः समाप्तः ··· सं० १८९६ मासोत्तमे माघ मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथौ सप्तम्यां उपरांत अष्टम्यां चंद्रवारान्वितायां पुस्तग लिखितं हेतरातमज वहेड़ी मध्ये शुभमस्तु, मंगलं ददातु ॥
३२.१ × १८.२ से० मी०	७१ (१-७१)	९	३४	पू०	प्राचीन सं. १९३२	इति श्री दामोदर सूनुना शाङ्गर्धरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सा स्थाने रस कल्पनाविधिरध्यायः चतुर्दशः १४ इति श्री मध्यम खंड समाप्तम् ॥ लि० संवत १९२२ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदायां भौम वा० ॥
२८.५ × १४.३ से० मी०	८० (१-८०)	१३	३७	पू०	सं. १८८८	इति श्री दामादर सुनुनाशाङ्गर्धरेण विरचितायांचिचिकित्सास्थाने नेत्र प्रसादन मर्म्माणिस्थान समाप्तः ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राजे संवत् १८८८ वर्षे वैशाखसुदी ४ चोथ वार शनि ॥··· ······ ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· श्रीराम श्रीराम
२४.५ × ११.४ से० मी०	९	११	२५	पू०	प्राचीन	इति शाङ्गर्धर विरचितायां पद्धत्यां तुरगप्रशंसा ।
१३.६ × ८.४ से० मी०	४ (१-४)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति शिलाजतुनः शोधन विधिः ॥
२१.१ × १३.८ से० मी०	१	२५	३६	अपू०	प्राचीन	
२३.१ × ८.९ से० मी०	११ (१-११)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति षड्ऋतुपथ्य वर्णनं ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८७	६४३७	षट्ऋतुवर्णन	त्रिमल्लवैद्य		दे० का०	दे०
१८८	६५८५	हृदय-दीपक			दे० का०	दे०
उपनिषद्						
१	६३२७	अथर्वणवेदोपनिषद्			दे० का०	दे०
२	१३२१	अथर्वणीयउपनिषद्			दे० का०	दे०
३	१५२५/१६	अथर्वशिखोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
४	७१४६	अथर्वशिखोपनिषद् दीपिका (टीका)		श्री शंकरानंद	दे० का०	दे०
५	१५२५/१६	अथर्वशिरोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·४ × १२·८ सें० मी०	२ १–२	८	४०	पू०	प्राचीन	इति विमल्लवैद्य विरचितं षट्ऋतु वर्णनं संपूर्णं शुभमस्तु मंगलम् ॥
१५·७ × ९·८ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री हृदयदीपके त्रिपाद्वर्गः ॥२॥ (पत्रसंख्या ५)
१६·५ × १०·२ सें० मी०	६ (१–६)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १९३२	इत्यथर्वण वेदोपनिषत्समाप्तम् ॥ श्री रामायनमः ॥ सं० १९३२ ।···
२३·७ × १२·७ सें० मी०	प०सं०८६	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × १५·७ सें० मी०	३½ (२३–२५½)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिखोपनिषद्दीपिका ७ ॥
२५·५ × १०·९ सें० मी०	१६)१–१६)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यानंदपाद पूज्यपादशिष्यस्य श्री शंकरानंद भागवतः कृतिरथर्वशिखोपनिषद्दीपिका समाप्ता ।
३२·२ × १५·७ सें० मी०	११ (१२-२२)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिरउपनिषद्दीपिका ६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६	१५२५ / १६	अमृतबिन्दूतनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
७	७७१७	अल्लोपनिषद्	अबुलफजल		दे० का०	दे०
८	१५२५ / १६	आत्मोनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
९	३७४७	आरण्यक			दे० का०	दे०
१०	२०३४	ईशावास्यभाष्य	शंकर भगवान		दे० का०	दे०
११	१३७६	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१२	२८६० / ३	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१३	३११६	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·२ × १५·७ सें० मी०	(५१-५७ ७	१२	४५	पू०	प्राचीन	इतिऽमृतबिन्दूपनिषत् द्वी ॥
१६·३ × ९·९ सें० मी०	१	७	२०	पू०	प्राचीन	इत्योपनिषदसमा: ॥
२२·२ × १५·७ सें० मी०	१३ (८२-९५)	१३	४८	पू०	प्राचीन	इति आतमोपनिषद् दीपिका ॥
१४·८ × ८ सें० मी०	९ (१–९)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति द्वितीयारण्यके सप्तमोध्यायः ।,
२८.४ × १३·८ सें० मी०	३ (१ –८)	१५	३८	पू०	प्राचीन सं० १८५०	इति श्री परमहंस परिब्राजकाचार्या श्री गोविंद भगवत्पूज्यपादशिष्यशंकर भगवत: कृतमीशावास्य भाष्यं समाप्तं श्री संवत् १८५० ··· ··· ॥
२·५५ × ११ सें० मी०	२	८	२९	पू०	प्राचीन	
२३.३ × १०·१ सें० मी०	प० सं० ४½	८	३०	पू०	प्राचीन	इति यजुर्वेदानां कण्व शाखोक्त ईशावास्पुपनिषदं समाप्तं ॥
२०·६ × ७·३ सें० मी०	प० सं० ३ (१–२)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदानंद भगवत्पदाचार्य विरचितं ईशा वास्योनिषदाष्टमं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	१९८६/२२	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१५	१०६४	ईशावास्योपनिषद् शांकरभाष्य		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१६	११७९	उपनिषद्मुपचार-दीपिका	वेंकटनाथ		दे० का०	दे०
१७	७१९५	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
१८	१६०६	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
१९	६१९	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
२०	५६९६	उपनिषद्सार संग्रह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.२ × १४.१ से० मी०	प०१$\frac{१}{२}$	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति ईशावास्य उपनिषद समाप्तः।
२५ + १०.८ से० मी०	१४ (१–१४)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यं वयगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्य शंकर-भगवतः कृतो इशावास्यभाष्यसमाप्तं श्री ब्रह्मार्प्पणमस्तु।......
२८.८ + १८.२ से० मी०	प० सं० ८	१८	२६	पू०	प्राचीन	
३३.६ + १३.५ से० मी०	१० १–१०	११	६०	अपू०	प्राचीन	
१६ + ६ से० मी०	१४ (१–१४)	१०	२३	पू०	प्राचीन	तेजस्विनावधितमस्तु माविद्विषावहै॥ ओम्॥ शांतिः॥ शांतिः॥ शांतिः॥
२१.२ + १० से० मी०	५६	६	२६	पू०	सं० १८५६	संमत् १८५६ प्रमाथिनाम संवत्सरे मार्गशिर्षमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ मंदवासरेलिखितं॥
२८ + ११.८ से० मी०	२३	११	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	१३६७	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२२	३६३१	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२३	३४१५	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२४	११३१	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
२५	६३५	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य-टिप्पणी	ज्ञानामृतयति		दे० का०	दे०
२६	२६६२	ऐतरेयोपनिषद्-सटीक			दे० का०	दे०
२७	२८६० ३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१९·५ × ८ सें० मी०	६	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति एतरेयोपनिषत्समाप्तम् ॥
१६·७ × ७·९ सें० मी०	प०सं०५ (१–५)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
१६·४ × १०·२ सें० मी०	१० (१–१०)	७	१५	पू०	प्राचीन	
२५·५ × १०·५ सें० मी०	७ (१–७)	८	२८	पू०	प्राचीन	ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥
२१·६ × ८·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	१३	३८	पू०	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री मदुत्तमामृत पूज्यपादशिष्यस्य ज्ञानामृतयतेः कृतौ श्रीमदैतरेयोपनिषतभाष्यटिप्पणे प्रथमारण्यकं संपूर्णं ॥ सं० १७३५ वि० संवत्सरे आश्विन शुद्ध ७ गुरुवार ॥ कृष्णदश पुत्रस्य पुस्तकं नारायणात्मज शिवरामस्य ॥
२३·१ × १५·८ सें० मी०	प०सं०८	१६	६२	अपू०	प्राचीन	
२३·३ × १०·१ सें० मी०	प०सं०९ (५–१३)	९	२९	पू०	प्राचीन	इति कठवल्युवनिषध संपूर्णं समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	८९३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०
२९	२४२५	कठोपनिषद् भाष्य (टीका सहित)			दे० का०	दे०
३०	१०९४	कठोपनिषद् (शांकर भाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
३१	१५७८/६	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३२	१६००	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३३	३४३५	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३४	३५४१	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·३ × १०६से०मी०	१४ (१–१४)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × १६·२से०मी०	प०सं०२४ (१–२४)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकरस्य काठकोपनिषद भाष्य टीका समाप्ता ।
२५·३ × १०·८से०मी०	५३ (१–५३)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत पूज्यपाद शिष्यस्यपरमहंस परिव्राज कार्यस्य श्री मछंकर भगवत् रतो काठकभाष्ये द्वितीयाध्याये ऋतीया वल्ली ॥ सापष्टी वल्ली: समाप्ता ॥
३४ × १७·४ से० मी०	१	१६	६०	अपू०	प्राचीन	
१३ × ९·५ से० मी०	२	९	२१	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत् समाप्ता ।। शिवमस्तु ॥ श्री ॥
१५·९ × १०·९से०मी०	प०स०१० (१–६,९ १२)	७	२२	अपू०	प्राचीन (सं. १८२४)	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणे कालाग्निरुद्रोपनिषत्संपुरणम् ॥ फागुलसुदि संवतु, १८२४ पठनार्थ ··· ··· ।
२२·५ × १० से० मी०	प०स०१० (१–१०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इती श्री नंदिके स्वरपुराणोक्त कालाग्निरुद्रोपनिषद संपुरणं ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	३३७५	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३६	४६४८	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३७	४५८१	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३८	६६६७	कालाग्निरुद्रोपनिषद			दे० का०	दे०
३९	५७९९	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४०	६१०७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४१	१२८७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×११·५ से० मी०	७ (१–७)	१०	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणोक्त श्री कालाग्निरुद्रोपनिषत् संपूर्ण समाप्तम्।
२७·१×१३·७ से० मी०	१	८	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत्स-माप्ता: राम।
१६·१×८·६ से० मी०	४ (१–४)	७	१६	पू०	प्राचीन	तत्सदिति कालाग्निरुद्रोपनिषत्स-माप्ता: ।।
१७×१०·३ से० मी०	७ (१–१)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणोक्तं काला-ग्निरुद्रोपनिषत्समाप्तम् ।।······
२१×१०·२ से० मी०	१० (१–१०)	७	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदकेश्वरपालयोक्तं श्री कग्नि रुद्रोपनिषद्य: समाप्ता: ।। शुभय:······
१९·६×११·७ से० मी०	६ (१–६)	१०	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री नंदकेसर पुराणोक्तं कालाग्नि-रुद्रोपनिषत्सुभमस्तु संवत् १८८२ एकातीद्ध २ ।।
११·८×७·६ से० मी०	पू० सं० १७ (२–१७, २१	६	१२	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	२८९० / ३	केनोपनिषद्			दे० का०	दे०
४३	४५७८	केनोपनिषद्			दे० का०	दे०
४४	१०६५	केनोपनिषद् (शांकर भाष्य)			दे० का०	दे०
४५	१५७८ / ६	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
४६	७७७२	कैवल्कोपनिषद्			दे० का०	दे०
४७	३२२४	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
४८	४२६९	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३·३ × १०·१ सें० मी०	१०	३१		अपू०	प्राचीन	इति ··· ··· सामवेदीयानां केनोपनिषदे नवमोऽध्यायः ॥
१५६ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति जैमिनी शाखा सामवेदोक्त केनोपनिषत्समाप्तः ॥ ··· ···
२५ × १०·७ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादसिष्यपरमहंस परिव्राजकस्यश्रीशंकरभगवतः कृतौपदभाष्यं समाप्तं ॥ केनभाष्यसमाप्त श्री ब्रम्हार्प्यणमस्तु ॥
३४ × १७·४ सें० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कैवल्योपनिषत्समाप्ता ॥
१६.२ × १० सें०मी०	६ (१–६)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री कैवल्योपनिषदं संपूर्णम् ॥
१३ × ८.२ सें०मी०	१० (१–१०)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषद्विवर्णं वेदांत शास्त्रोक्त। श्री गजाननार्पण मस्तु। श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु मस्तु।
१८·४ × १०·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१५	पू०	शाके—१७३६	इति कैवल्यउपनिषत् ।। सम्यक्ज्ञानी सदायोगी संसारमनुवर्त्तते ॥ परपुरुषेछं या नारी भर्तारमनुवर्तते ॥ शके १७३६ भाद्रपद आधीक शुद्ध सप्तमी तद्दिने समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६	३४१४	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
५०	४५८८	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
५१	१६८६/२२	कैवल्योपनिषद् (संस्कृत टीका)		विद्यारण्य	दे० का०	दे०
५२	५२४६	कैवल्योपनिषद् (सटीक)			दे० का०	दे०
५३	१५२५/१६	क्षुरिकोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
५४	१३७४	गरुड़उपनिषद्			दे० का०	दे०
५५	१५७८/६	गरुड़ोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × ९ से० मी०	३ (१–३)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषत्समाप्ता। ॐ शांतिः…… ।
१८·२ × १३ से० मी०	१३ (१–१३)	१४	३०	पू०	प्राचीन	एतत्कैवल्योपनिषदोज्ञानफलस्य परब्रह्म रूपत्वात् कैवल पाठस्य वक्ष्यमाण फलान्याह…… (पत्रसंख्या–१३, पंक्ति संख्या ६ से)
२९·२ × १४·१ से० मी०	१½	२५½ कुलपंक्तिसंख्या	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणवेदकैवल्योपनिषद्‌दीपिका ॥ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य कृतासमाप्तः ॥
२८.५ × १३.९ से० मी०	१३	१३	३७	पू०	सं०१८७०	इतिकैवल्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥ संवत् १८७० मार्गशिरमासे कृष्णे-एकादश्यां गुरुवासरान्वितायां लिखितमिदंलक्ष्मणाभिधानेन आत्मपठनार्थः शुभमस्तु ॥……
३२·२ × १५·७ से० मी०	४½ (३–८)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति क्षुरिकापनिषद्दीपिकासमाप्त चतुर्था ४ ॥
२० × ९·५ से० मी०	६	२५	२६	पू०	प्राचीन	इति गरुड़उपनिषद् संपूर्ण ॥
३४ × १७·४ से० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे गारुडोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६	११६५	गोपालतापनी (उत्तर भाग)			दे० का०	दे०
५७	६६६६	गोपाल तापनी उपनिषद्			दे० का०	दे०
५८	६६८२	गोपालतापनीयोपनिषद (पूर्वभाग) स्टीक			दे० का०	दे०
५९	१६७८	गोपालतापिनी उपनिषद्			दे० का०	दे०
६०	७५०४	गोपाल पूर्वतापनीयोपनिषद			दे० का०	दे०
६१	६४०४	गर्भोपनिषद्			दे० का०	दे०
६२	१५२५/१६	गर्भोपनिषद् (संस्कृतटीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·४ × १३·६ सें० मी०	१० सं० ६ (१–६)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री वर्णोपनिषत्सु गोपाल तापनि उत्तर भाग समाप्तम श्री राधागोपालोज्जयति उमाशिवोजयति संवत् १८९६ आषाढ़ शुक्ला १० लिखितं मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् ॥
३२·३ × १२.२ सें० मी०	१७ २–५५ ६८–१८	१०	४५	अपू०	प्राचीन सं० १९१०	इत्याथर्वणोपनिषदि श्री गोपाल तापिन्या पूर्व विभागः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १९१० वैशाख वदि १२ बुधे ॥ × ×
३५·३ × १२·४ सें० मी०	६ १–२, ४ ७७७–११	१४	४५	अपू०	प्राचीन सं० १९१०	इत्यार्थर्णोपनिषदि श्री गोपाल तापिन्यां पूर्वविभागः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १९१० वैशाख वदि १२ बुधे ॥ ... ...
३४·१ × १७·२ सें० मी०	१० सं० १६ १५–३०	१४	६२	अपू०	प्राचीन	
१९·७ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०·१ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति गर्भोपनिषत्समाप्तं राम ॥
३२·२ × १५·७ सें० मी०	५॥ २६–३१	१३	४८	पू०	प्राचीन	इतिगर्भोपनिषद्दीपिकाष्टमी ८ ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	१६६२	गोपाल सत-तापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	४३७४	गोपीचंदनोपनिषद्			दे० का०	दे०
६५	३८६४	चाक्षुषोपनिषद्			दे० का०	दे०
६६	१५२५/१६	चूलिकोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
६७	१४६५	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	२८६१	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६९	३१२६	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.३ × १०.७ से० मी०	२१ (१–२१)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१७६८	इति गोपालत्याउपनीसत् समाप्तः ॥ संवत् १७६८ नापोशव्रदिःखी लीखितं गयचोलिनीर्भेय राम राघवराम धोलकिया . कल्याणमस्तु । शुभंत्र भवतु ॥
१५.८ × ८.६ से० मी०	प० सं० ५ (१–५)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति अथर्वनवेदगोपी चंदनोपनिषत्संपूर्ण सुभमस्तु मंगलं ददासुभंभूयात संवत् १८७३ मार्ग कृष्ण १४ चंद्रवासरे लिषयं श्रीज्योतिपरमसुष ॥
१८.४ × ११.७ से० मी०	२ (१–२)	६	२५	पू०	सं०१६३४	इति श्री चाक्षुषोपनिषत्समाप्तम् श्री संवत् १६३४ ।
३२.१ × १५.७ से० मी०	३½ (८½–११)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति चूलिकोपनिषद्दीपिका ५ ॥
१६.५ × ८ से० मी०	११	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति छंदोग्येषष्ट प्रपाठकस्समाप्तः ॥
२३.३ × १०.४ से० मी०	प० सं० ११ (१–११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति छांदोग्यस्यसप्तमः प्रपाठकः ॥ श्री सच्चिदानंदार्पणमस्तु ॥···
२८.५ × ११.७ से० मी०	६१ (१–६१)	८	४०	पू०	सं०१६०६	इति छांदोग्यउपनिषद् ब्राह्मण संपूर्णं । समाप्तं ॥ शुभंभवतु ॥ संवत् १६०६ शाके १७७१ मार्गसीर्ष मासे शुक्ल पक्षे लिखितं ··· श्री वेदपुराशायनमः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९	३३६०	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७०	३०७२	छदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७१	१९५१	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७२	४११	छांदोग्योपनिषत् प्रकाशिका			दे० का०	दे०
७३	७६५	छांदोग्योपनिषद् (ब्राह्मण)			दे० का०	दे०
७४	१५७८/६	जावालीउपनिषद्			दे० का०	दे०
७५	७३००	जावाल्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × १६ से० मी०	५६ (१–५६)	१५	६०	पू०		इति छांदोग्योपनिषद्यष्टमोध्याय:
२३·२ × १०·५ से० मी०	९	८	३१	पू०	प्राचीन	इति छांदोग्योषष्ठोध्याय : ॥ इति छांदोग्यां षष्टमः प्रपाठकः ॥ शांतिः पाठ ॐ ... ... × × ×
३०.५ × १३.४ से० मी०	२७ ४५.७१.९५	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
३०·२ × १३·१ से० मी०	प०सं० ८५	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११ से० मी०	५५ (१–४५, ६६–७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति सामवेदस्य छान्दोग्यो उपनिषद् ब्रह्मण समाप्तः ॥
३४ × १७·४ से० मी०	४	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदेजावालीपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × १२ से० मी०	२ (१–२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति जावालोपनिषत्समाप्तं ॥ श्री सर्व्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य्य सरस्वतीनां जाबालोपनिषत् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५७७	तुरीयातीतोवधूतोपनिषद्			दे० का०	दे०
७८	१५२५/१६	तेजोबिन्दूपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
७६	६१३	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८०	१२५७	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८१	१०२३	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८२	१०६८	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८३	१०६६	तैत्तिरीयोपनिषद् (शाकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
८४	३४६३	दत्तात्रेयउपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·५ × ११·४ से० मी०	२ (१–२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति तुरीयातीतोवधूतोउपनिषत्समाप्ता ॥······
३२·५ × १५·७ से० मी०	१३ ६३–६४	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति तेजविंदूपनिषत्दीपिका २१ ॥
२५·३ × १०·६ से० मी०	१५ (१–१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × ८ से० मी०	१४	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री तैत्तिरियोपनिषदि तृतीयप्रपाठकः ॥
२५·१ × १०·६ से० मी०	प० सं० ३६ (१–३६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इतियमेवंयथोक्तायांमस्यांवल्यां ब्रह्म, विद्योपनिषत्सर्वाभ्योविद्यामः·········· समाप्ता नंदवल्ली ।
२५·३ × १०·५ से० मी०	२५ (१–२५)	९	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीशीक्षाभाष्यं समाप्तं श्रीब्रह्मार्प्यणमस्तु ॥
२५·२ × १०·७ से० मी०	१० (१–१०)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपाद शिष्यस्यपरमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री शंकरभगवतःस्कृतौ तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य विवरणं समाप्तं ॥ श्रीब्रह्मार्प्यणमस्तु······
२४.× १४·५ से० मी०	४ (१–४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रेयोपनिषद् अथर्वणवेदोक्तं समाप्तमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	१५२५ / १९	ध्यानबिन्दूपनिषद् (संस्कृत टकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८६	१५२५ / १९	नादबिंदूपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८७	३१७ / २	नारायण उपनिषद्			दे० का०	दे०
८८	३४१३	नारायणोपनिषद्			दे० का०	दे०
८९	४५७९	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९०	१८५४	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९१	१५२५ / १९	नीलरुद्रोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.२ × १५.७ सें० मी०	५॥ (५८–६२॥)	१३	४९	पू०	प्राचीन	इतिध्यानविंदूपनिषद्दीपिका ।
३२·२ × १०·४ सें० मी०	२॥ (४७–४९)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इतिनादविंदूसपनिषद्दीपिका संपूर्ण ।
१२·२ × ११.२ सें० मी०	११ (१–११)	७	११	पू०	प्राचीन संवत् १९३५	इत्यथर्ववेदे अथर्व नारायणोपनिषत्समाप्तम् लिपिकृतं देवीदत्त ज्योतिर्विदा । सं० १९३५ माघ कृष्ण १ तिथौ ।
१८ × ८.५ से० मी०	३ (१–३)	९	३२	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदनारायणोपनिषत्संपर्ण शुभमस्तु ॥
१७.९ × ११.५से०मी०	४ (१–४)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति निरालंबोपनिषद । समाप्तः ॥
१९ × १० से० मी०	५	९	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वण वेदोक्त निरालम्बोपनिषद् समाप्त : ॥ ... ...
३२.२ × १५.७ से० मी०	२॥ (४५–४६॥)	११	४९	पू०	प्राचीन	इतिनीलरुद्रोपनिषद्दीपिका संपूर्णम् १६

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	१३४८	नृसिंहोत्तर तापिनी उपनिषद् दीपिका (१–६) खंड			दे० का०	दे०
६३	२१५५	नेत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	२५३६	बृहदारण्यक			दे० का०	दे०
६५	२६	बृहदारण्यक षष्ठोध्याय			दे० का०	दे०
६६	१०५६	बृहदारण्यक उपनिषद्			दे० का०	दे०
६७	३४४३	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	७०५६	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३२ × १५.५ सें० मी०	५१ (१–५१)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री नृसिंहोत्तर तापिनी दीपिका समाप्त शुभमस्तु सं० १८६४ मी: भादो सुदी क्वार सुकरवार ।।
१६.४ × १२.२ सें० मी०	प०सं० १	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
३४.६ × १३.५ सें० मी०	प०सं०३६ (१–३६)	११	४७	पू०	प्राचीन	बृहदारण्यकं चतुर्दश कांड…… … संहितायां चत्वारिंशोऽध्यायः ।।
२०.२ × ८.४ सें० मी०	प०सं०२४	७	२६	पू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके षष्ठोध्यायः समाप्तः शुभमस्तु ।।
२३ × ६.८ सें० मी०	५५	६	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री बृहदारण्यकोपनिषत्समाप्ता ।। सर्वात्मने नमः ।। श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।।
२०.५ × ६.५ सें० मी०	प०सं०१६ (१–१६)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके उपनिषत्पादे चतुर्थो-ध्यायः ।।……तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।।
३१.७ × १५.६ सें० मी०	७ (४६–५३)	१५	५१	अपू०	प्राचीन	…बृहदारण्यकोपनिषदि षष्ठोध्यायः ।। (पत्र-संख्या–५२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९	३६५	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१००	३४०८	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१०१	३९०१	बृहदारण्यकोपनिषद् (टीका)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१०२	३७३०	बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
१०३	३९५४	बृहदारण्यकोपनिषद् (संस्कृत टीका)*		भगवदानंद-ज्ञान	दे० का०	दे०
१०४	२५३८	बृहदारण्यकोपनिषद् (सभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१०५	१५२५/१९	ब्रम्हबिंदूपनिषद (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × १०·५ सें० मी०	२७(१५१–१७२,२०१–२०२,२६२–२६४)	७	३८	अपू०	प्राचीन	
१०·५ × ७·३ सें० मी०	५७(१–४३, ४६–५९)	६	१६	अपू०	प्राचीन	यजुः ञाखिय बृहदारण्यउपनिश ॥ समाप्तं ॥
२६·५ × ११ सें० मी०	४६(१–४६)	११	४४	अपू०	प्राचीन	श्री गोविंदभगवत्पाद शिष्यस्यपरमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीशंकरभगवतः कृतायां बृहदारण्यकटीकायां चतुर्थोध्यायः समाप्तं ॥ शुभंभवतु ॥
२८·३ × १२·५ सें० मी०	२२	१७	५२	अपू०	प्राचीन	
२८·८ × १०·१ सें० मी०	९५(१–९५)	१०	५१	पू०	संवत् १९४१	इति श्री परिव्राजक शुद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृतायां बृहदारण्यकभाष्यटीकायां अष्टमोध्यायः ॥ संवत् १९४१ वर्षे आषाढ़ शुदि २ रवौउदोच्य ज्ञतीयनुपाध्याकेशवेनलेखितमिदं पुस्तकं जयतु श्रीशुभमस्तु ...
३५ × १३·५ सें० मी०	३२७	१२	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगोविंद भगवत्पूज्य पादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीशंकरभगवतः कृतायां बृहदारण्यक वृत्तौ अष्टमोध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७४७ समये ... ...
३२·२ × १५·७ सें० मी०	१ १/२ (५०–५१)	११	५१	अपू०	प्राचीन	इति ब्रम्हविन्दु उपनिषद्दीपिका अष्टादशी १८

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	१५२५ / १६	ब्रह्मविद्योपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१०७	१५२५ / १६	ब्रह्मोपनिषद्		नारायण	दे० का०	दे०
१०८	३८४४	ब्रह्मोपनिषद्			दे० का०	दे०
१०९	६२६	भावनोपनिषद्भाष्य		भास्कर	दे० का०	दे०
११०	१५२५ / १६	महोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१११	१७००	मांडूकोपनिषद्		श्री शंकरानंद-	दे० का०	दे०
११२	७२२४	मांडूकोपनिषद्भाष्य (गौडपाद भाष्य)		भगवदानंद ज्ञान	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·२ × १५·७ सें० मी०	२ (२–३)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति ब्रह्मविद्योपनिषद्दीपिका तृतीयोपनिषत् ३ ॥
३२·२ × सें० मी०	७ (३५-४१)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषद्दीपिका १० ॥
१९·५ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषत्ससाप्तः ॥
२७ × १२·४ सें० मी०	१४	१०	३९	पू०	सं० १९७५	इति भावनाभाष्यं समाप्तं ॥ सं० १९७५ स्य वैशाखेऽधवलेदले नवम्यां चंद्रवासरे समाप्तिमगात् ॥
२३·२ × १५·७ सें० मी०	३ (३२-३४)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति महोपनिषद्दीपिका समाप्ता ९।
१९.५ × ८ सें० मी०	५	७	२५	पू०	प्राचीन	इति मांडूकोपनिषद् सभाप्तं ॥
२५.४ × १३·२ सें० मी०	३० (१–३०)	१६	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शुद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंदज्ञान विरचितायां गौडपाद भाष्य टीकायां प्रथम प्रकरणं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	७६३६	मांडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११४	३८१२/२	मांडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११५	३४२५	मांडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११६	३५५१	मांडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११७	२८६२/३	मांडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११८	३४१८	मुंडकोपनिषद्			दे० का०	दे०
११९	२८६२/३	मुंडकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५ × १२.४ से० मी०	७ (४–९७,११)	११	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मांडुक्योपनिषद्गौडपाद व्याख्याने वैतथ्याख्यं द्वितीयं प्रकरणं समाप्तं ॥
१९.५ × ११.२ से० मी०	१	११	३९	पू०	प्राचीन	हरिः ॐ तत्सत् मांडुक्योपनिषत्समाप्तः॥ [नोट : इसके नीचे शंकराचार्य कृत 'कौपीन पंचम' स्तोत्र भी है]
१५.८ × ११.५ से० मी०	८ (१–८)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री मांडूक्योपनिषत्संपूर्ण ॥
१५ × ८.८ से० मी०	३ (१–३)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति मांडुक्योपनिषत्समाप्तं ॥
२३ × १०.२ से० मी०	प० सं० २½	७	२७	पू०	प्राचीन	इति मांडूक्योपनिषत्समाप्तम् । पूर्ववत् शांति कुर्यात् ॥
१६ × १० से० मी०	७ (१–७)	११	२६	पू०	प्राचीन	मुंडकोपनिषत्समाप्ता ॥
२३ × १०.२ से० मी०	प० सं० ६½	८	२६	पू०	प्राचीन	इति मुण्डकोपनिषत्समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	९५६	मुण्डकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२१	११०२	मुण्डकोपनिषद् (शंकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१२२	११००	मैत्रायण्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२३	१५७८/६	परमहंसोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२४	९५५	पूर्वतापित्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२५	३८४२/३	प्रश्नोत्तर मालिका (प्रश्नोपनिषद्)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२६	१४५४	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × १०·५ सें० मी०	८	८	२७	पू०	प्राचीन	
२५·२ × १०·८ सें० मी०	४४ (१–४४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीमछंकरभगवत: हरतावाथर्वण मुंडकोपनिषद्विवरणं समाप्तं ।। श्री ब्रह्मार्प्पणमस्तु ।।
२८·६ × ११ सें० मी०	प० सं० १७ (१–१६, १९)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति मैत्रायण्युपनिषदि सप्तमः प्रपाठक: ।। लिखितमिदं श्री मन्महादेव कवींद्रसरस्वत्या ।।
३४ × १७·४ सें० मी०	६	६	६३	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे परमहंसोपनिषत्समाप्ता ।।
१७·५ × ८ सें० मी०	७	७	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्ये पूर्वतापनियोपनिषद्समाप्तः ।। शुभं ।।
१४·५ × ९·५ सें० मी०	२ (१–२)	१३	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिते प्रश्नोत्तर मालिकारेख्यं संपूर्णम् ।।
२५·३ × १०·७ सें० मी०	प० सं० ९ (१–९)	८	२६	पू०	प्राचीन	प्रश्नोपनिषत्समाप्ता ।। ·········स्वतिनो बृहस्पतिर्दधातु ।। ॐ शांतिः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	३४१६	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२८	२८६२/३	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२९	१०००	प्रश्नोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
१३०	१५२५/१६	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३१	६१३०	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३२	१५२५/१६	योगतत्वोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१३३	१५२५/१६	योगशिखोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४×७८ सें० मी०	२१(१–२१)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्समाप्तं ॥
(२३× १०.२) सें० मी०	प० सं० ७ (१–७)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपानिषत्संपूर्णम् समाप्तम् श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥
२५.२× १०.५ सें० मी०	प० सं० ३२ (१–२३)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकर भगवतः कृतौ अथर्वणोपनिषत्प्रश्न भाष्य विवरणं समाप्तं ॥ .. .. द्वितिया सोमवासरे ॥
३२.२× १५.७ सें० मी०	३½ (४२–४४)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इतिप्राणाग्निहोत्रोपनिपद्समाप्ता ११
२२×१८.५ सें० मी०	४ (१–४)	६	२१	पू०	प्राचीन सं० १६०३	इति श्री प्राणाग्निहोत्रोपनिषत्समाप्तं संपूर्णं ११ मीती माघ कृष्ण १३ त्रियोदश्यां भृगौ संवत् १६०३ लीपी कृतं गोपालेन नसीरावाद की छावणी मधे ... .
३२.२× १५.७ सें० मी०	(६७–६८)२	१२	४७	पू०	प्राचीन	इतियोगतत्त्वोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २३
३३.२× १५.७ सें० मी०	२(६५–६६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति योगशिखोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २२

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	४१४०	रामतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३५	७५०२	रामतापनीयोपनिषद् (पूर्व एवं उत्तर)			दे० का०	दे०
१३६	५६२४	रामतापिनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३७	४३३० / २	राममंत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३८	६१२७	रामोत्तरतापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३९	१४०८	रामोत्तरतापनीयोपनिषद् (प्रदीपिका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१४०	५३६०	रामोत्तरतापिन्युपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १०.६ सं० मी०	प६सं०१८ (१–३, ३–१७)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति सप्ताचत्वारिंशन्मंत्रैनित्यं देवं स्तौति तस्य देवः प्रीतो भवति स्वात्मानंदर्शयतितस्माद्यएतैर्मंत्रैर्नित्यं देवं स्तौति स्देवं पश्यति सोमृतत्वं गछति इत्यथर्वणं रहस्येऽश्री रामस्योत्तरतापनीयोपनिषत्समाप्तं चैत्र सुदि ५ गुरुवासरे संवत् १६०६ ॥ शुभं ॥
२३ × ६.५ सें० मी०	११ (३–१३)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे रामपूर्वतापनीयमुपनिषत्समाप्ता ॥ (पत्र सं० ६)
२१.५ × १०.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इत्यन्यर्वणे रामोपनिषदुत्तरतापनीयं नाम संपूर्णं ॥
१३.३ × १०.६ सें० मी०	२ (१––२)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये श्री राम मंत्रोपनिषत्समाप्तः ॥
१४.८ × १०.२ सें० मी०	२६ (१–२६)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति इत्यथर्वण वेदे श्री रामोत्तर तापनीयोपनीषत्समाप्ताः ॥
३१.७ × १५.६ सें० मी०	प०सं०२५ (१–१४, १६–२६)	१०	४६	अपू०	प्राचीन	नारायणेनरचिता श्रुति मात्रोपजीविना । अस्पष्ट पदवाक्यानां रामोत्तर प्रदीपिका ॥ इतिरामोत्तरतापिनीयोपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × ११ सें० मी०	८ (२–४, ६–१०)	६	४४	अपू०	सं० १७५६	इन्यथर्ववेदे रामोत्तरतापिनीयमुपनिषत्समाप्ता ....शुभमस्तु संवत् १७५६ के फाल्गुन शुक्ल ३ तृतीयायां रविवासरे .... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	४३३० / २	रामोपनिषद्			मि० का०	दे०
१४२	२७५६	रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४३	५५०७	वज्रसूचिकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४४	३२६०	वज्रसूचिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४५	२३४१	वज्रसूचिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४६	२१६	वज्र सूची उपपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४७	२८७३	व्रज (वज्र) सूची उपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·३ × १०·९ सें० मी०	१	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री सामवेदे श्री रामोपनिषद सम्पूर्ण शुभंभूयात् ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
२१ × ८·५ सें० मी०	६	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणोक्तकालाग्नि रुद्रोपनिषत् संपूर्णम् ॥
१५·३ × ९ सें० मी०	९ (४, ७–१४)	७	१६	अपू०	सं० १९१८	इति श्री वज्रशूचिकोपनिषद्विभागो नामोपनिषद समाप्तः शुभंभूयात् संवत् १९१८ शाके १७८३ कार्तिक शुक्ल : १२............... ।
१८·५ × ११·८ सें० मी०	प० सं० ८ (१–८)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री मत्संकराचार्य्य विरंचितं बज्र-सूची उपनिषत्समाप्तं शुभमस्तु श्री सम्वत् १९०६ शाके १७७१ फाल्गुन शुक्ल १२ ।
२५·३ × १४ सें० मी०	९	९	२०	पू०	सं० १९१४	इति श्री शंकराचार्य विरचितायां उपनिषत्सुबोधिन्यां वज्र सूची समाप्ताः चैत्रे मासे सितेपक्षे ष्टम्यांच भृगु वासरे लिप्तंह्युमासहायेन श्री शंकर प्रसादतः संवत् १९१४ सुजान द्वारे लिखितं मौनी सरस्वतीपठनार्थं ॥
१५ × ११·३ सें० मी०	८ (१–८)	११	१७	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री वज्र सूची उपनिषत्समाप्ता सं० १८५५ ।
२४·२ × ११·२ सें० मी०	प० सं० ५ (१–५)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं० १८८२)	इति श्री मत्संकराचार्यं विरचितं व्रज वज्र सूची उपनिषत समाप्ता ॥ संवत् १८८२ तत्र शाके १७४७ तियौ...॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	१६६६	वाजसनेयसंहितोपनिषद्		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१४९	१४१०	वासुदेवोपनिषद्दीपिका			दे० का०	दे०
१५०	६९८	वेदांतमंत्रविश्रामतोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५१	८९१	षोडशोपनिषत्			दे० का०	दे०
१५२	१५२५/१९	संन्यासोपनिषद् (संस्कृतटीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१५३	१५७८/६	सर्वोपनिषत्सार			दे० का०	दे०
१५४	१६२७	सूर्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × १२·३ सें० मी०	६ (१–६)	१८	५४	अपू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीगोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य······ शंकर भगवत: कृतो वाजसनेय संहितोपनिषद् भाष्यं संपूर्णम् संवत् १८७६ ॥
३३·४ × १७·३ सें० मी०	३ (३१–३३)	१२	६१	अपू०	प्राचीन	इति वासुदेवोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
२०·१ × ११·२ सें० मी०	११ (३–१३)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं वेदांत मंत्रविश्रामतोपनिषधस्माप्त: ॥
२१.५ × ९·१ सें० मी०	४४ (२–४५)	११	२७	अपू०	प्राचीन	इति षोडशोपनिसत् ॥१६॥
३२·२ × १५·७ सें० मी०	१३ (६९–८१)	१५	५१	पू०	प्राचीन	इति संन्यासोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
३४ × १७·४ सें० मी०	३	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे सर्वोपनिषत्सारसमाप्ता ॥
१२·४ × ७ ९ सें० मी०	२	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सूर्योपनिषत्समाप्तम् शुभम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	६३७/२	सूर्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१५६	७१६४	सूर्योपनिषद्			मि० का०	दे०
१५७	२२६०	स्वरूपोपनिषत् प्रकरण			दे० का०	दे०
१५८	१९८६/२२	स्वरूपोपनिषद्			दे० का०	दे०
कर्मकां						
१	२४६७	अंग-करन्यास			दे० का०	दे०
२	३७७५	अंतेष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०
३	३७७६	अंतेष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
(२६·२ × ११·१) सें० मी०	१	६	३३	पू०	प्राचीन (सं०१६१०)	इति सूर्योपनिषत्समाप्तं सं० १६१० श्रावण मासे कृष्ण पक्षे श्री श्री श्री०
१०·१ × ६.३ सें० मी०	५ १–५	८	१५	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदोसूर्योपनिषत् ॥
२२·८ × १२·४ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वरुपोपनिषत् प्रकरणं संपूर्णम् ॥
२६·२ × १४·१ सें० मी०	१	२०	५०	पू०	प्राचीन	इतिस्वरूपोपनिषदप्रकर्णसंपूर्णसमापतः
१७ × ९·५ सें० मी०	४	७	१८	पू०	प्राचीन	इति अंगन्यास करन्यास संपूर्णः ॥
२३·२ × ९·५ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × ९·५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	५४	पू०	सं० १८१३	इती श्री मद्विद्वन्मुकुट माणिक्य हीरी कुर श्री मद्रामेश्वर भट्ट सूनना श्रीमद्भट्ट नारायण कृते प्रयोगरत्ने और्ध्वदेहिक पद्धति समाप्तेयं संवत्''' १८१३ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	३२७८	अंत्येष्ठि			दे० का०	दे०
५	३६५७	अंतेष्ठी			दे० का०	दे०
६	१५४	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
७	७६५७	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
८	६७४२	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
९	४९६९	अंत्येष्टि (दशगात्रपिंडदान-विधि)			दे० का०	दे०
१०	५५	अंत्येष्टिकर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × १२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × १२ सें० मी०	४९ (१–२०, २२–५०)	९	२६	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × १२·६ सें० मी०	४५ (१–३४, ३६–४१, ४३–४७)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १०·२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	१४	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·४ सें० मी०	४ (४९–५०, ५३–५४)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२८ × १३·१ सें० मी०	२० (१–७, १०–२२)	९	३९	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ११·२ सें० मी०	३४ (१२–२६, २९–४६, ४८)	८	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११	३४९२	अंत्येष्टि कर्म			दे० का०	दे०
१२	१३८७	अंत्येष्टी कर्म			दे० का०	दे०
१३	२७०	अंत्येष्टिकर्म	ईश्वरीदत्त		दे० का०	दे०
१४	७६६	अंत्येष्ट कर्म पद्धति			दे० का०	दे०
१५	३२१०	अंतेष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१६	२६२	अन्त्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१७	३१२३	अन्त्येष्टि कर्म विपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२०·५ × १४ सें० मी०	४८	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × ११ सें० मी०	१८	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × ११·३ सें० मी०	६३ (१–६३)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
(२६·२ × ११·५) सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १४ सें०मी०	३ (१–३)	१२	२८	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १५·१ सें०मी०	२० (१–२०)	१३	२३	पू०		
(१४·३ × ९·१ सें० मी०	१०	१३	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८	५५६४	अंत्येष्टि पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१९	२१७०	अंत्येष्टि विधि			दे० का०	दे०
२०	१७६	अंधयष्टि पद्धति॰			दे० का०	दे०
२१	१८४५	अंबिकास्थापन विधि			दे० का०	दे०
२२	५५३२	अंबिकास्थापन			दे० का०	दे०
२३	५०५४/१५	अम्बुघट श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
२४	६६६९	अग्निमुख प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १०·९ सें० मी०	७४	९	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८४९	इत्यौर्ध्वदेहिक पद्धतिः समाप्तं शुभंभूयात ...... संवत् १८४९ माघ शुदि चतुर्थी भौमवासरे तद्दिने समाप्तं ॥
२९·८ × १३·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	४०	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति सपिंडीककरणकर्म संपूर्ण ॥...... संवत् १९२१ पुस्तग लिपि कृतं मंगलं भूयात् ....॥
२७·५ × १०.९ सें० मी०	७१ (१–२८, २८–७०)	१०	४३	पू०	प्राचीन	॥ श्री ॥ अंधयष्टि पद्धतौ मित्रदेविष्टिः ॥ समाप्ताः ॥
१४·५ × ९·८ सें० मी०	५ (१–५)	११	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री अंबिकास्थापन संपूर्णं लिखितं कन्हैयालाल स्वात्मपठनार्थं शुभमस्तु ...
२७·७ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री अंबिकास्थापन संपूर्णं लिखितं पुस्तग मीश्रमहताबस्वात्मपठनार्थं शुभमस्तु ॥
१६ × ७·८ सें० मी०	२	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१७·४ × १०·५ सें० मी०	११ (१–११)	१७	३०	पू०	सं० १८९४	संवत् १८९४ कार्तिके मास शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भृगुवासरे तद्दिने श्री क्षेत्री .....॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	६४६१	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२६	६२२०	अग्निष्टोम	शेषगोविंद		दे० का०	दे०
२७	६७५०	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२८	६४६४	अग्निष्टोम (आछावाक प्रयोग)			दे० का०	दे०
२९	६७४८	अग्निष्टोम (सप्तहौत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
३०	६७०७	अग्निष्टोमहौत्र			दे० का०	दे०
३१	६५२३	अग्निष्टोमेछावाक-प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·६ × ९·४ सें० मी०	६ (१–६)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १७८०	।। अग्निष्टोम समाप्तः ।। संवत् १७८० माघ शुद्ध १४ सोमावारे लिखितं ।। इति श्री जोगनेकर गोपीनाथेन लिखितं
२३ × १०·४ सें० मी०		१२	३५	पू०	प्राचीन सं० १८१०	शेषगोविंद कृत प्रयोगोग्निष्टोम समाप्ताः ।। श्री वेद पुरुषार्पणमस्तु ।। संवत् १८१० सार्वनिनामसंवत्सरे श्रावण शुध १ शनौ तद्दिने काश्यां × × ×
२४ ७ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	११	२९	पू०	प्राचीन शके १६६३	इति ज्योतिष्टोमाग्निष्टोमे पोतृत्व प्रयोगः ।। इदं पुस्तकं कान्ह शर्मणः ।। शके १६६३ दुर्मतौ श्रावणाधिक द्वितीयायां भानौ लिखितं ।।
२४·७ × ११·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८१४	अग्निष्टोमादि अप्तोर्यामांत अछावाकस्य शस्त्रक्लृप्तिः समाप्ता । संवत् १८१४ कार्तिक कृष्ण १ भृगौ समाप्तं । पुस्तकमिदं राम हृदोपनामकविश्वनाथभट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखायितं ... ...
२३·६ × १०·४ सें० मी०	११९ (१–११९)	९	२९	पू०	प्राचीन शके १७३८	इत्यग्निष्टोम सप्तहौत्र प्रयोगः समाप्तः ।। शके १७३८ वर्षे धातृ नामाब्दे भाद्रपद वद्य ८ ।।
२३·३ × ९·७ सें० मी०	५५ (१–५५)	११	३६	पू०	सं० १८७२	इत्यग्निष्टोम हौत्रं समाप्तं ।। संवत् १८७२ मिती आश्विनशुद्ध २ सौम्य वासरे तद्दिने काश्यांराजधान्यां कवीश्वरेत्युपनामक महादेव भट्टात्मज लक्ष्मी नाथेन लिखितं ।।
२१·७ × ८·५ सें० मी०	४ (१–४)	९	२९	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमेछावाक प्रयोगः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२	६७१२	अग्निहोत्र प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३३	६६७४	अग्निहौत्र			दे० का०	दे०
३४	६५२५	अग्रयण हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
३५	६८३७	अग्निहौत्रप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३६	६७०२	अग्निहौत्र होम			दे० का०	दे०
३७	६७१३	अग्निहोत्र होम		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
३८	६८२६	अछावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.९ × १०.४ सें० मी०	४० (१–४०)	११	३३	पू०	सं०१८७८	समाप्तमिदं अग्निहोत्र प्रायश्चित्तं ॥ × × संवत् १८७८ नंदन नाम संवत्सरे उदगयने वसंत ऋतौ वैशाख शुद्ध ९ नवम्यां तद्दिने कवीश्वरोपनामक सखारामेण लिखितं ॥ + + +
२० × १२.२ सें० मी०	५ (१–५)	८	१९	पू०	प्राचीन सं०१९१७	इति श्री अग्निहौत्र संपुर्णम् शुभमस्तु संवत् १९१७ ॥
२१.४ × ८ सें० मी०	२ (१–२)	७	३१	पू०	प्राचीन	अथाऽग्रयण हौत्र प्रयोगः समाप्तः ॥
२०.२ × ८.३ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.४ × ७.५ सें० मी०	८ (१–८)	६	५०	पू०	प्राचीन	
२३.३ × १०.१ सें० मी०	५ (१–५)	११	३७	पू०	सं०१८११	इत्यपाद्याहौत्र प्रयोगः समाप्तः ॥ पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथभट्टात्मज नीलकंठेन लिखापितम् संवत् १८११ कार्तिक शुद्ध पंचम्यां समाप्तं ॥
२३.५ × १०.१ सें० मी०	९ (१–९)	११	३०	पू०	प्राचीन	अप्यात्यग्निष्टोमे अछावाक प्रयोगः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९	५२३३/२	अजपा गायत्री			दे० का०	दे०
४०	१६६३	अजपा गायत्री जप-विधि			दे० का०	दे०
४१	५४४	अजपा जाप (मानस पूजा)			दे० का०	दे०
४२	६८३६	अतिपवित्रेष्टिहौत्र			दे० का०	दे०
४३	६७०१	अधानहौत्र (अश्वारंभहौत्र)			दे० का०	दे०
४४	३६२८	अनंतपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री वसिष्ट संहितायां अजपा विधि समाप्तम् सुभमस्तु
१४·५ × ६ सें० मी०	३	६	१८	अपू०	प्रा०	
१६ × १०·५ सें० मी०	७	६	२०	पू०	प्राचीन	इति अजप्ता विधिः संक्षेपेन समाप्त्यम् यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वातादृशं लिखितं माया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते ?
२०·५ × ७·६ सें० मी०	८ १–८	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इत्यतिपवित्रेष्टिर्भरद्वाजसूत्रोक्तः समाप्ता ।। संवत् १८७७ भाद्रपदकृष्ण ३ मंदवासरे लक्ष्मीनाथ कवीश्वरेण लिखितं ।।शुभं।।
२०·५ × ८·७ सें० मी०	४(१–४)	११	३६	पू०	सं० १७८७	अश्वारंभणीययाहौत्रं समाप्तं ।। इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठस्य संवत् १७८७ श्री ।
२३·७ × १०·४ सें० मी०	प० सं० ७	१२	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	१८७	अनंतपूजा			दे० का०	दे०
४६	४७०५	अनंतोद्यापन			दे० का०	दे०
४७	७४३६	अनुवाक्			दे० का०	दे०
४८	६७६१	अपाद्या अनुवित्ती होत्र			दे० का०	दे०
४९	१६०४/४	अभिषेक			दे० का०	दे०
५०	३००६	अर्क विवाह			दे० का०	दे०
५१	५११८	अर्क विवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२×११ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	१९	पू०	प्राचीन	इति अनंत पूजनं संपूर्णं ॥
३४·४× १३·३ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४९	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे अनंतोद्यापनं समाप्तं ॥
१७×८·६ सें० मी०	७	८	७	अपू०	प्राचीन (सं०१९२३)	इति सर्वानुवाक संख्या समाप्तः × × × × संवत् १९२३ मार्ग शु० १० सो०
२२·१×८·५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इत्यपाद्या अनुवित्तीनां होत्रं ॥
१३·६×७·६ सें० मी०	४(१–४)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२८·५×९·३ सें० मी०	५ (१–५)	७	३५	पू०	प्राचीन	इत्यर्क विवाह समाप्तः
२४·६× १०·६ सें० मी०	५ १, ५,	९	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	४३६२	अशौचविचार			दे० का०	दे०
५३	६७०३	अश्वमेध हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
५४	६७०५	अश्वमेध हौत्र प्रयोग (आश्वलायन सूत्रानुसार अश्वमेध हौत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
५५	४१६४	अष्टका श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५६	५६४६	अष्टप्रयोग			दे० का०	दे०
५७	६५०३	आग्नीध्रप्रयोग			दे० का०	दे०
५८	५५५६	आतुर संन्यास पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·८ × ११·४ सें० मी०	२६	९	३६	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × ९·७ सें० मी०	६७ (१–६७)	१०	३८	पू०	सं० १७९५ प्राचीन	इत्यश्वमेध हौत्र पद्धतौ प्रथम मुत्यागोतमस्तोमः ॥ इदं पुस्तकं रामहृदस्थोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठस्य ॥ संवत् १७९५··· ।
२२·९ × ९·७ सें० मी०	१२७ (१–१२७)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	इत्यश्वमेधस्याश्वलायन सूत्रानुसारेण-हौत्र प्रयोगः समाप्तः ॥
२१ × ९·५ सें० मी०	८ (१–८)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति ।
२५·३ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२३ × ८·७ सें० मी०	६ (१–६)	७	३५	पू०	सं० १८१९	संवत् १८१९ वर्षे मागशिस शुद्ध दुतीयामंद वासरे ॥
१५·७ × ५·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२८	पू०	प्राचीन	आतुर संन्यास पद्धतिः समाप्ता ॥ शुभमवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९	७३५०	आतुरसंन्यास विधि			दे० का०	दे०
६०	१९८६/२२	आत्मपूजा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६१	६५०९	आधान हौत्र			दे० का०	दे०
६२	६५३१	अधान होत्र			दे० का०	दे०
६३	६५६८	आपस्तंब सूत्रोक्त संध्यावंदन प्रयोग			मि० का०	दे०
६४	२९४१	आपस्तंब सूत्र मंत्र प्रश्न			दे० का०	दे०
६५	६८३४	आपस्तंबसंध्यावंदन पद्धति (भाष्य)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.९ × ९.६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति संयास विधिः समाप्तः ॥
२९.२ × १४.१ सें० मी०	१½	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्यं आत्मपूजासंपूर्णं ॥
२१.३ × ८.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	३५	पू०	प्राचीन	अथ आधान होत्रं लिख्यते ॥ (प्रारंभ)
१९.८ × ८.४ सें० मी०	३ (१–३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति आधान होत्रं समाप्तं ॥
११.३ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३०	पू०	सं० १९५१	इत्यापस्तम्ब सूत्रोक्त संध्यावंदन प्रयोग श्री सीताराम चन्द्रार्पणमस्तु ॥ श्री संवत् १९५१ शाके १८१६ पराभवनाम संवत्सरे दक्षिणायणे शरद्रुतौ अश्विने मासे कृष्णपक्षे…।
२६.५ × ११ सें० मी०	प० सं० २८ (१–२८)	८	३९	पू०	प्राचीन	शके १७… विक्रम नाम संवत्सरे दक्षणायने वर्षा ऋतु भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे अाष्टम्यां तिथौ वासर : भानुवासरे पुस्तकं समाप्तं ॥
२१.२ × १०.९ सें० मी०	६	११	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	६५६६	आपस्तबोक्त संध्या-वंदन प्रयोग			दे० का०	दे०
६७	३५५४	आभ्युदैक श्राद्ध			दे० का०	दे०
६८	५६०४	आरामप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६९	४४५१	आरामप्रतिष्ठाविधान			दे० का०	दे०
७०	४४५०	आरामोत्सर्ग पद्धति			दे० का०	दे०
७१	६७०८	अश्वलायनश्रौतसूत्र पूर्वषट्क प्रयोग दीपिका	मंचनाचार्य		दे० का०	दे०
७२	६७१०	आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिका	मंचनाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·४ × ११·३ सें० मी०	१० (१–१०)	११	२४	पू०	आधुनिक	
२३·८ × १५ सें० मी०	९ (१–३, ५,७,९)			अपू०	सं० १८८९	आभ्युदैक श्राद्ध समाप्तः संवत् १८८९ जेष्ठं वदि २ बुधवासरे पत्र नव ॥
३२·४ × १४·७ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४२	पू०	जीर्ण सं० १९२५	लिखतं मुरलिधरः सं० १९२५
२·२ × १२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	अथायंतत्कृत्यसंगात्पूर्त्तारामाप्रतिष्ठा विधान लिख्यते । (प्रारम्भ) × × ×
२७·४ × ११·७ सें० मी०	११ (१–११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति आरामोत्सर्ग पद्धतिः समाप्ता ॥ विधान पारिजाते ॥ ··· ··· ··· ··· ··· ··· इदं पुस्तकं वालाजी महाराष्ट्रस्य लिखितं स्वार्थपरार्थंच
२३·४ × १०·१ सें० मी०	९९(१–७, ९–९२)	३३	४१	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १०·६ सें० मी०	७०(९३–१७३)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति मंचनाचार्य विरचितायां आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिकायां षष्ठोध्यायः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६७५७	आश्वलायन सूक्त			दे० का०	दे०
७४	२८६६	आसुरी विधि			दे० का०	दे०
७५	६७११	आहिताग्नमरणविधि			दे० का०	दे०
७६	१०६९	आह्निक कर्म विधि	क्षेमकर मिश्र		दे० का०	दे०
७७	२३८१	आह्निक कर्म विधि			दे० का०	दे०
७८	१०९५	आह्निक तरंग	नंद पंडित		दे० का०	दे०
७९	१०९७	आह्निक निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × १०.४ सें० मी०	३० (१–३०)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति आश्वलायन सूक्तानि ॥
१७·३ × १०·८ सें० मी०	१५(१–१५)	८	१९	पू०	प्राचीन	इति आसुरी विधि समाप्तः ॥ शुभं ॥
२३·३ × १०·२ सें० मी०	२१(१–२१)	११	२९	पू०	प्राचीन	इत्यापस्तंवाहिताग्नेः संस्कार विशैषः ॥
१८ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	८	३६	पू०	सं०१९२१	इतिश्रीक्षेमकरमिश्र विरचितं संक्षिप्ताह्निक कर्म्म विधिः ॥ माघासितैकादश्यां चन्द्रे लिखितङ्गणेश दत्तशुकेनं शुक्लेन? ॥ संवत् १९२१ श्रीरामोजयति ··· ···
१९·७ × १०५ सें० मी०	१०(१–१०)	९	२०	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·५ सें० मी०	८५ (१–८५)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इतिश्रीधर्माधिकारिकुल ॐ कमलमार्तंड नंदपडितकृतेस्मृर्तसिधावाह्निकतरंगः समाप्तिमगात् ॥ श्री कृष्णंभजेत् ॥
२२·५ × ९·५ सें० मी०	२५(१–२५)	१०	३७	पू०	प्राचीन	उक्तंनात्नमया स्वयं स्वरचितं यद्याज्ञवल्क्यादिभिःाप्रोक्तं स्वन्हिकनिर्णये तदखिलंस्पष्टं परज्ञप्वये···श्री सांवसदाशिवार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०	९७६	आह्निक मूल पद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
८१	६४२०	उग्ररथ शांति			मि० का०	दे०
८२	६६०९	उत्सर्जनोपाकरण प्रयोग (श्रावणी)			दे० का०	दे०
८३	६४२८	उदकशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८४	६८७	उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
८५	४८३४	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०
८६	६४७	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × ९·२ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	३८	पू०	प्राचीन	रघुनाथेन विद्वर्यभट्टमाधवसूनुना ॥ कृता निबंधात्प्रेक्षाऽशुसमूलाऽआन्हिक पद्धतिः ॥१॥............
१६·३ × ७·९ सें० मी०	५ (१–५)	११	२५	पू०	आधुनिक सं०१९६५	इति शौनकोक्तोग्ररथ शान्तिः ॥ सं० १९६५ शाके १८३० माघ कृष्ण द्विती-यायां शुक्रवारेऽदं पुस्तकं वेतालोपाह्व श्रीनाथेन आरभ्य च समापितम् ॥
२२·७ × ८·६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इत्युत्सर्जनोपाकरण प्रयोगः ॥
२३·३ × ९·१ सें० मी०	२१ (१–२१)	१०	४८	पू०	सं०१७८३	इत्युदक शांतिः समाप्ता ॥ सं० १७८३ नल नाम संवत्सरे माघ शुक्ल १५ बुध वासरे तद्दिने ... ... ।
१४ × ९·५ सें० मी०	६	१४	२५	पू०	प्राचीन	
३१ × ११·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४८	पू०	सं०१८८३	इति व्रतबंध समाप्तं ॥ सं०१८८३ ॥
२३ × १२·७ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	२८	पू०	सं०१९११	इति श्री उपनयनपद्धित समाप्तम् सं० १९११ जेष्ठ शुक्लादशम्यांभूमौवासरे लिखितं जुहारारामेण ... ... श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७	१९८४	उपनयनवेदारंभ			दे० का०	दे०
८८	४८०	उपनयन संस्कार			दे० का०	दे०
८९	२३५७	उपनयन संस्कार			दे० का०	दे०
९०	१९००	उपनयन संस्कार (सटीक)			दे० का०	दे०
९१	२५१५	उपनयन संस्कार विधि			दे० का०	दे०
९२	२३०	उपाकर्म			मि० का०	दे०
९३	३६६७	उपाकर्म प्रयोग	गंगाधर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·२ × ९·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	१९	पू०	सं०१९०३	इति उपनयन वेदारंभसमावरतनसमाप्तं शंवतु १९०३ साके १७६८ लिख्यतं···
२९ × १६·५ सें० मी०	७	१४	३०	पू०	सं०१८७८	इति उपनयन संस्कार व्याख्यानंसंपूर्णम् सं० १८७८ वर्षे भाद्रपद शुदि १५ भौमवासरे लिखितमिदं लक्ष्मण दासेन ॥
२१·६ × १०·७ सें० मी०	९	११	३०	पू०	सं०१८६८	इति उपनयन वेदारंभ समायर्तन समाप्तम् सं० १८६८ ··· ··· ···
३२ × १२ सें० मी०	२७	१३	४१	अपू०	प्राचीन (कृमिकृंतित)	
२२·५ × ११ सें० मी०	२३	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × ७·९ सें० मी०	१३	२१	३७	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × ७·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्यज्ञविद्याविशारदगंगाधरभट्रेण हरिहाराद्यनुसारेण विरचितं अध्यायोत्सर्गोपाकर्म प्रयोगः समाप्तः ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९४	१४६६	उपाकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
९५	१६७१	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
९६	१८९४	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
९७	५८६४	ऋषिपंचमी व्रत पूजा			दे० का०	दे०
९८	३७१७	ऋषिमंडल			दे० का०	दे०
९९	३४९३	एकादशाह श्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
१००	५८८	एकादशाह्निक कर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ११ सें० मी०	९	१४	२७	अपू०	सं०१७८१	इत्युपाकर्म प्रयोगः ॥ आशीर्वादाः ॥ ... लिखितं शंभुजी आत्मारामेण इदं पुस्तकं संवत् १७८१ संवत्सरेश्रावण मासि शुक्लपक्षे तिथौर अष्टम्यां वासरे शनौ
२१ × ११·८ सें० मी०	१०	११	२२	पू०	प्राचीन	इति विश्वसूय चाय ... तर्पणसमाप्ता ॥ ...अथ शुभ संवत्सरअसन्मे श्री नर्पत विक्रमादित्य राजे सं० १८०६ वर्ष माघ मासे कृष्ण पक्ष तिथौर संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ लिष नौबत राय ।
(३२·२ × १२·२) सें० मी०	१६ (१–१६)	९	३७	पू०	प्राचीन	इति ऋषि तर्प्पणं संपूर्णम् ॥
१६.५ × ९·१ सें० मी०	९ (१–९)	८	२३	पू०	सं०१८४१	इति ऋषि पंचमी ब्रत पूजा समाप्तः ॥ सं० १८४१ मिति भाद्रपद वद्य १४ गुरुवार ता दिने समाप्तः ॥
(१५·२ × ७·८) सें० मी०	३१ (१–२,५ –३३)	७	२०	पू०	प्राचीन	
२९ × १५·४ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	३२	अपू०	प्राचीन	
३०·४ × १२·७ सें० मी०	३० (२–३१)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति एकादशाह्निक कर्म समाप्तं शुभमस्तु-राम राम राम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	१६४१	एकादशी व्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
१०२	७८४	एकादशाह श्राद्ध-प्रयोग (सपिंडन पद्धति)			दे० का०	दे०
१०३	६५०८	एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग			दे० का०	दे०
१०४	६००५	ऐकाहिक चातुर्मास प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५	५१८२	एकोदिष्ट			दे० का०	दे०
१०६	५०५४/१५	एकोदिष्ट प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७	५०५४/१५	एकोदिष्ट श्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.८ × १६.१ सें० मी०	६	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे एकादशी वृत (व्रत) उद्यापन समाप्तं ॥
२७.५ × १५ सें० मी०	२१	१०	३४	पू०	सं०१९०२	इति श्राद्धविवेके सपिंडन पद्धति समाप्तम् सं० १९०२
२२.५ × ९.२ सें० मी०	९(१–९)	१०	४०	पू०	प्राचीन	अथैकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग (प्रारंभ)
२१.८ × ८.४ सें० मी०	५(१–५)	११	४१	पू०	प्राचीन	संतिष्ठत ऐकाहिक चातुर्मास्य प्रयोगः ॥ समाप्तं ॥
१८.८ × ११.३ सें० मी०	४(१–४)	१६	२६	पू०	प्राचीन	इति समाप्तोयं (अथैकोदिष्टः प्रारंभ)
१६ × ७.८ सें० मी०	१	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथसाम्वत्सरिकैकोदिष्ट प्रयोगः (प्रारंभ)
१६ × ७.८ सें० मी०	७½	९	२१	पू०	प्राचीन	एकोदिष्ट श्राद्धं समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	४६०५	एकोदिष्ट श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
१०९	५६५८	और्ध्वदेहिककृत्य	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
११०	७२४७	और्ध्वदैहिक पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१११	३७२३	और्ध्वदेहिक सपिंडीकरण प्रयोग पद्धति	भट्टनारायण		दे० का०	दे०
११२	६५६४	कन्या रजस्वला शांति			दे० का०	दे०
११३	३७११	कपिलधारातिर्थ विधि			दे० का०	दे०
११४	१९६१	कपिला निवास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३×१०.९ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	१९	पू०	सं०१९३९	इति एकोदिष्ट श्राद्धम् श्रीरामचंद्रायनमः श्री कृष्णार्पणमस्तु संवत् १९३९ श्री साके ७९६ मित्ती मार्गसिर वदि ८ भौमवारकु लिपि कृतं ॥ राम ॥··· ···
२९.५×१२ सें० मी०	१४ (८२–९३, ९५–९६)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्राम प्रसाद मिश्र विरचिते प्रपत्ति भूषणे श्री परमेश्वर चरण युगले द्वीपर मधुकराशयानां परमैकान्तिकानामौर्ध्वदैहिक कृत्यानि स्मृत्ति समाप्तानि शुभमस्तु ।
२२.४×९.७ सें० मी०	४२ १–१९,२२–२४,२७–२८, ३१–४८	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामेश्वर सूरि सूनु नारायण भट्टेन कृताया मौर्ध्वदेहिक पद्धतौ मरणविधानानि । समाप्ता चेयं पद्धतिः ॥
२४.२×१०.४ सें० मी०	७० (१–७०)	८	३४	पू०	सं०१८७३	इति श्री भट्टरामेश्वर सूरिसूनु भट्टनारायण कृतायांमौर्ध्वदेहिक पद्धत्यांमरणविधानानिः ॐत्सत सं० १८७३॥ शुभमस्तु
१९.१×८.९ सें० मी०	२(१–२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पितृग्रहे कन्या रजस्वला शांतिः ॥
११.५×८.५ सें० मी०	३(१–३)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति कपिलधारा तिर्थ विधि समाप्तः ॥
२०.५×८८ सें० मी०	४(१–४)	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१८३३	इति श्री कपिला निवास संपुर्न समाप्तः ॥ सं०१८३३ साके १६९८ फलगुन सुदि षष्टी ६ रवौ पुस्तक संपुर्नलिखितं पं० श्री मिश्र उमेद भितरीग्रामे ··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५	३५२०	कर्मकांड			दे० का०	दे०
११६	३५६९	कर्मकांड कौमुदी			दे० का०	दे०
११७	४०९६	कर्मकांड पद्धति			मि० का०	दे०
११८	२९१६	कर्मकांडविधि			दे० का०	दे०
११९	३७४३	कर्म कौमुदी			दे० का०	दे०
१२०	३४५३	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
१२१	२४६०	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १०·४ सें० मी०	७ (२-७)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
३१ × १४·३ सें० मी०	७ (३८,४१-४६)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १२·७ सें० मी०	३ (१-३)	११	२४	पू०	प्राचीन	इत्यन्वयः ॥ नन्दलालेन लिखित अयं श्लोकं ॥
२१·३ × ११ सें० मी०	३३	८	२८	अपू०	प्राचीन	
३१·४ × १४ सें० मी०	३६ (१-३६)	१४	५७	अपू०	प्राचीन	इति कर्म कौमुद्यां नाम कर्म पद्धतिः। (प० सं० २१)
२०·९ × १०·५ सें० मी०	४३	९	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री आवसथिक ब्रह्मदत्तात्मज-कृष्णदत्त विरचितायां कर्मकौमुद्यां चतुर्थी कर्म पद्धतिः ॥ समाप्तः (पत्रसंख्या——५८)
२२ × १०·६ स० मी०	४४	९	३१	अपू०	सं० १८४८	इत्या⋯⋯ब्रह्मदत्तात्मजकृष्णदत्तविरचितायां कर्मकौमुद्यां स्नातक समावर्तन पद्धति समाप्तः⋯⋯संवत् १८४८

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२२	१५४४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२३	४००६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२४	४४७६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२५	४४२६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२६	४६५२	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२७	५२६०	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२८	५६६१	कर्मविपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १०·७ सें० मी०	७४ (२–४, ६–१९, २१–७८)	९	२३	अपू०	प्राचीन	
३१ × १४ सें० मी०	२१ (२–२२)	१४	५०	अपू०	सं० १८९३	इति कर्म विपाक ग्रंथ संपूर्णम् संवत् १८९३ आषाड कृष्ण चतुर्दश्यां १४ भौम दिने लिखितं मिदं पुस्तकं तत्र भारद्वाज गोत्र मिश्र लक्ष्मणदासतत्सुत मिश्र मुरलीधरः ॥
२४·१ × १०·८ सें० मी०	२४ (१–२४)	१३	४१	पू०	प्राचीन	इती श्री कर्मविपाके ब्रह्मानारद संवादे चतुर्दशोध्यायः ॥ (पत्र संख्या २३)
३०·६ × १४·८ सें० मी०	८ (१–३, ५–९)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १२·८ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुर्य्यार्णवे कर्मविपाके ब्रह्म नारद संवादे जीव कर्म कथनेनाम प्रथमोध्यायः × × × × ॥ (पत्रसंख्या–६)
२०·२ × ९·७ सें० मी०	१५ (१–१५)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्तमहापुराणे श्रीकृष्ण जन्म खंडे भगवन्नंदसंवादे कर्मविपाकंनामपंचाशीतित्तमोध्यायः ॥
३३·६ × १३ सें० मी०	५९ (६–६४)	१०	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्मविपक संहितायां पार्वती हर संवादे शतमिषानक्षत्रस्य चतुर्थ चरण प्रायश्चितं नामाध्यायः × × × × (पृ० ६४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	४३५०	कर्म विपाक(चतुर्थ चरण,			दे० का०	दे०
१३०	९६४	कर्म विपाक कथन			दे० का०	दे०
१३१	४९२१/३	कलश प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
१३२	५८४३	कलशस्थापन			दे० का०	वे०
१३३	१५९८	कलशस्थापनं			दे० का०	दे०
१३४	३६३४	कलशस्थापनविधि			दे० का०	दे०
१३५	६४३६	काक मैथुन दर्शन-शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
(३३·२ × १६·७) सें० मी०	५८ (१–३,३, ४,४,५,५, –५५)	१४	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कर्म विपाके संहितायां पार्वती हर संवादे रेवति नक्षत्रे चतुर्थ चरणे ब्रह्मांड पुराणे पितृकामोत्तरे सनत्कुमार मारकंडयप्रपणोत्तरेकर्म विपाक संहितायां नारद अम्बरीय प्रत्युत्तरेआलिन्यादि-नक्षत्रे ॥
३० × १४·५ सें० मी०	४	१२		पू०	सं०१९०९	इति श्री महाभारतेऽखिले कर्मविपाक कथनं ॥ ॐ तत्सत् सं०१९०९ लिखतं मुरलीधर ॥
१६ × १०·७ सें० मी०	४	९	१७	पू०	प्राचीन	इति कलस प्रतिष्ठा ॥
१९ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
१३ × ९·८ सें० मी०	८	९	१८	पू०	सं०१९०९	सं० १९०९ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे ११ गुरुवासरे लिखतं कन्हैया ॥
१५ × ११·६ सें० मी०	४	१२	१५	पू०	प्राचीन	इति कलशस्थापन विधि समाप्ता शुभमस्तु ॥ श्री दैव्यैनमः ॥
२२·४ × ९·३ सें० मी०	१	९	४५	पू०	प्राचीन	इति काक मैथुन शांतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६	६४२२	काक स्पर्श शान्ति			दे० का०	दे०
१३७	४७५९	कत्यायन त्रिकंडिका सूत्र (स्नानसूत्र)	कात्यायन		दे० का०	दे०
१३८	२३९/१२	कात्यायनी तर्पण			दे० का०	दे०
१३९	२१६८	कात्यायनी तर्पण विधि			दे० का०	दे०
१४०	५१२२	कात्यायनी शान्ति	कात्यायन		दे० का०	दे०
१४१	३२८६/२	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०
१४२	८०५	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×७.७ सें० मी०	६	७	३१	पू०	प्राचीन	इति काक स्पर्श शान्तिः ॥
२४.६× १०.२ सें० मी०	३ (१–३)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति कात्यायन त्रिकंडिका सूत्रं समाप्तं संवत् १८४७ माघ कृष्णाष्टम्यां लिखितं श्री भट्टविश्वंभरस्यात्मजेचंद्रशेखरेण वाराणस्याम् ॥··· ···
१६×१०.५ सें० मी०	५	१५	१४	पू०	प्राचीन	इति कातीय तर्प्पण प्रयोगः ॥
१७.७× १०.७ सें० मी०	३	११	२२	पू०	सं० १९४४	इति कत्यायनी तर्प्पण विधिः समाप्तं संवत् १९४४ ॥
२६.८× १२.५ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२६	पू०	प्राचीन शके १९३१	इति श्री कत्यायणि ऋषि विरचिता कत्यानी शांतिः समाप्तम् शु०······ संवत् १९३१ मा० शु० त्रयोदशी गुरुदिने लिखतं ······ ॥
१८.५× १२.८ सें० मी०	११ (१–११)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति कात्यायिनी शांति संपूर्ण ॥ इदं पुस्तकं लिख्यतं······॥ संवत् १८६५ मिति भाद्रपद वदि चतुर्थियां ४ ॥···
१६.९× १२.४ सें० मी०	१८	७	१७	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनी शांति एता शांति पठेद्यस्तुसर्वसौख्यमाप्नुयात् श्रोता च सुख संपन्नाः प्रत्यवाचोत्यथा भवेत् ११० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४३	२२२२	कात्यायनी शांति			दे० का०	दे०
१४४	२५६६	कात्यायनी शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
१४५	२२१६	कत्यायनी शांति			दे० का०	दे०
१४६	७५७१/२	कात्यायनी शांति प्रयोग			दे० का०	दे०
१४७	६३७५	काम्यवृषोत्सर्ग प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
१४८	१४८१	कारिकारत्न			दे० का०	दे०
१४९	६४७१	कारीरिष्टि हौत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.३ × १६.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१३	१८	अपू०	प्राचीन	
१७.३ × ११ सें० मी०	१७ (१–१४, १४–१६)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायन ऋषि विरचिता कात्यायनी शांतिः संपूर्णम् ॥ ··· ···
२५.५ × १०.८ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२८	पू०	प्राचीन	इतिकात्यायनी शांति समाप्ता॥ शुभंभूयात्
२१ × १६.५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१४	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायनी शान्तिः समाप्ता।
२१.७ × ९.३ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	पू०	सं०१७४४	इति भट्ट रामेश्वर सुत भट्टनारायणत्मज भट्ट रामकृष्ण कृतः शौनक मतेन काम्य वृषोत्सर्ग। प्रयोगः॥ संवत् १७४४ कार्तिक १३ लिखितमिदं कृष्णेन॥
२५.४ × ८.४ सें० मी०	२६ (१–२२, २५–३१)	९	४७	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	११	३१	पू०	प्राचीन सं०१७८८	लिखित मिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठेन सं० १७८८ मिति भाद्रपद कृ० ११ भौमे मधुरा ग्रामे समाप्तम्॥ ··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५०	७४११	कार्तवीर्य दीपदानपद्धति	कमलाकर		दे० का०	दे०
१५१	५७७५	कार्तवीर्यार्जुनदीपदान			दे० का०	दे०
१५२	५५३४	कार्तिकोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१५३	६१६/२	कालीपूजापद्धति			दे० का०	दे०
१५४	४०१९	कुंड प्रकाशिका	राम	रामवाजपेयी	दे० का०	दे०
१५५	१६५९	कुंडमंडपकारिका	रामचंद्र		दे० का०	दे०
१५६	७३३६	कुंडमंडपसिद्धि-सटीक		विट्ठलदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२७×११·५ सें० मी०	८ १, ३–४, ७–८, १०, १२–१३	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२४·५×७·४ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३८	पू०	प्राचीन	
२२·७×८·९ सें० मी०	१० (३–१२)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कार्तिकोद्यापन विधि समाप्तः शुभमस्तु ।।
२३·५×१०·६ सें० मी०	२ (८–९)	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२२×७·७ सें०मी०	४२ (१–४२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री नैमिष निबासि रामरचिता कुंड प्रकाशिका रामवाजपेय टीका समाप्ता ।।
२८·५×१२ सें०मी०	१२ (१–२०)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	
२६×११ सें० मी०	३५ (१–३५)	११	४२	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री मत्संगमनेरस्थ विट्ठल दीक्षित विरचिता स्व कृत मंडप कुंड सिद्धि व्याख्या समाप्तेति शिवं संवत् १९१७ पौषशुक्ल १० तद्दिने समाप्तायं ग्रंथः स्वार्थं परार्थं च श्री रामार्पणमस्तु ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	५७३०	कुंडमंडपसिद्धि			दे० का०	दे०
१५८	५४७६	कुंडमंडपसिद्धि	विट्ठल दीक्षित		मि० का०	दे०
१५९	५२८३	कुंडमंडपादिनिर्माणविधि			दे० का०	दे०
१६०	७३२१	कुंडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६१	६७५९	कुंडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६२	१०७३	कुंडरत्नाकर टीका		विश्वनाथ द्विवेदी	दे० का०	दे०
१६३	६५१३	कुंडलेष्टि हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·२ × १५ सें० मी०	११ (१–११)	१४	४५	अपू०	प्राचीन	
२१·७ × १०·४ सें० मी०	५ (२–५)	११	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८३०	इति श्रीमज्योतिविज्ञ विट्ठल दीक्षित विरचिता कुंड मंडपसिद्धि × × संवत् १८३० समये कार्तिक शुक्ल १४ चतुर्दश्यां पुस्तक लिखितं आत्माराम भट्टेन महाराष्ट्रेण ।। शुभमस्तु ।।
२३·७ × १० सें० मी०	९ (१–९)	८	३२	अपू०	प्राचीन	अथ कुंडमंडपाद्युपयुक्तं भूसमत्व साधन माह ।।··· ··· (पत्र सं० ४)
२७ × ११·५ सें० मी०	७ (१–७)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति कुंडमातंण्ड संपूर्णं ।।
२०·६ × १०·१ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४६	पू०	सं०१८२०	इति श्री कुंडमार्त्तंडः समाप्तः ।। संवत् १८२० पौषे मासि बकुल पक्षे शिव तिथौ भौमे सदा शिवेन लिखि तं ।।
२५·५ × ११ सें० मी०	५४ (२–५५)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मअकल मतसकल विद्याविशारद श्री श्रीपति दीवदि द्विवेदी सुनु विश्वनाथ द्विवेदी कृता स्वकृता कुंड रत्नाकर टीका समाप्ता ।। शुभंभवतु ।।
२०·९ × ८·७ सें० मी०	३ (१–३)	९	२८	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायनानुसारी कुंडलेष्टि हौत्र प्रयोगः ।।······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	८७१	कुंडविचार			दे० का०	दे०
१६५	१३७७	कुंडविवुसुर्होम विधि			दे० का०	दे०
१६६	६५६६	कुंडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६७	६५६५	कुंडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६८	६५६२	कुंडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६९	६४११	कुंडार्क टीका		रघुवीरदीक्षित	दे० का०	दे०
१७०	७२७०	कुंडार्क व्याख्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५ × १५ सें० मी०	७ (१–७)	११	४०	पू०	सं०१७५०	इति कुंडविचार: समाप्त: ॥ शके १६१५ फालगुन शुद्ध १ बुधे लिखितमिदं पुस्तकं आत्माराम ज्योतिर्विद्भि: ॥
२१ × १० सें० मी०	२	१०	३१	पू०	प्राचीन	
२३·६ × १०·८ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	३८	पू०	सं०१८०६	इति संगमनेरस्थ विट्ठल दीक्षीत विरचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता संवत् १८०६ मीती माघ वदी सतीमी वार शुभ दी : ··· ··· ···
२३·७ × १०·२ सें० मी०	३८ (१–८३)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति संगममनेरस्थ विट्ठल दीक्षित विरचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता॥ + + + सं०१८०४ मिती वैशाख शुद्ध ५ समाप्तं॥
२३ × ९·४ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	४४	पू०	सं०१८१६	इति संगमनेरस्थ विट्ठल दिक्षित रचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता ॥ संवत् १८१६ ॥
२२ × ८·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	३१	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति कुंडार्क टीका समाप्त ॥ संमत् १८७३ शा (के) १७३९ आश्विन कृष्ण ६० शनिवार ॥ विट्ठल दीक्षित सूनुना रघुनाथेन लिखितं पुस्तकं ··· ··· ···
२७·२ × ११·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति कुडार्क: समाप्त: ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७१	१००६	कुंडोद्योत			दे० का०	दे०
१७२	६४३०	कुंभ विवाह			दे० का०	दे०
१७३	६०२०	कुशकंडिका			दे० का०	दे०
१७४	३६५२	कूपस्थापन विधि			दे० का०	दे०
१७५	६३७६	कूष्ठमांड होम			दे० का०	दे०
१७६	६५०१	कूष्मांड होम			मि० का०	दे०
१७७	१६०८	कूपारामादि प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १०.२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति कुंडोद्योतः ॥
२२.५ × १०.३ सें० मी०	१	६	३५	पू०	सं०१८१३	इति कुंभ विवाहः ॥........संवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
१७.१ × १२.६ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति कुशकंडिका संपूर्णम् ॥
२३.७ × १०.६ सें० मी०	प०सं० ३ (१–३)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति शरवंधनम् ॥
१६.१ × ६.६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	सं०१६४६	इति कूष्मांड होम समाप्तः ॥ श्री संवत् १६४६ मीः फागु० गु० व० २
१३.४ × ६.१ सें० मी०	४ (१–४)	७	३२	पू०	प्राचीन	
३२.८ × १२.५ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३८	पू०	सं० १६४०	इति दिक्यालेभ्योऽषवलिदत्वाततोदिक्यालेभ्यो नमस्कुर्या देवालयकूपतदादि (तड़ागादि) आराम प्रतिष्ठा पुस्तकं समाप्तम् ॥ संवत् १६४० ज्येष्ट वदि एकदश्यां ११ शुकवासरे...शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७८	४४४७	कूपारामोत्सर्ग विधि			दे० का०	दे०
१७९	७७	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८०	१८२	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८१	२३५	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८२	५१७	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८३	४७५३	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८४	३५२८	कृत्यरत्नावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११·८ सें० मी०	१० (१–४,४, ५–७,९–१०)	७	३३	अपू०	सं०१९१८	इति कूपारामोत्सर्गः समाप्तः ।। संवत् १९१८ श्रावण शुक्ल पूर्णमासी गुरुवासरः इदं पुस्तकं राबजी मोघे
३०·४ × १४·१ सें० मी०	६८ (१–६८)	१३	४२	पू०	प्राचीन सं०१८१७	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणभिज्ञतस्सुदुपाख्य बालकृष्ण भट्टांगज विट्ठल भट्टाभिधवुधवरस्तनु धर्मशास्त्र परावारीण श्रीमद्रामचन्द्रविरचिता कृत्यरत्नावली संपूर्णा ।। श्रीरस्तुकल्याणमस्तु ।।श्री।। संवत् १८१७ आषाढ़ शुक्ल ४ चतुर्थी भौमे लिखिता मिश्र नौबतराय श्री रस्ढां ।
(२५ × १०·९) सें० मी०	८७(१–२४,२८–६३,६६–९२)	१०	४१	अपू०	प्राचीन सं०१७९७	इति श्री मत्पद वाक्य···श्री प रामचंद्र भट्ट विरचिता कृत्य रत्नावली संपूर्णा ।। सं० १७९७ कार्तिक शुक्लैकादश्यां समाप्तं ।। लिखितमिदं पुस्तकम्··· गंगारामेण ।।
(३०·३ × ११) सें० मी०	८(३४–४१)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पद्विट्ठलभट्टात्मज रामचंद्र विरचिता कृत्यरत्नावली समाप्तः ।।
३०·७ × १३ सें० मी०	१२	१९	५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञ तत्सदुपाख्य बालकृष्ण भट्टांगज विट्ठल भट्टाभिध वुधवरसूनु धर्मशास्त्र यारावारीण श्रीमद्रामचन्द्र भट्टविरचिता कृत्य रत्नावली समाप्तिमगमत् । ६
२१·६ × १०·२ सें० मी०	१८ २,५–२१	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति कार्त्तिक कृत्यं + + + ।।
२५·१ × ९ सें० मी०	९८ (१–९८)	९	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञतत्सदुपाख्य बालकृष्णभट्टांगज विट्ठल भट्टाभिध वुधवरसूनुधर्म···श्रीमणं श्रीमद्रामचंद्रभट्ट विरचिताकृत्य रत्नावलीसमाप्ति मगमत्।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	११६३	कृशरान्नश्राद्धः			दे० का०	दे०
१८६	७५६४	कृष्णविरंचि अभिषेक	श्रीकृष्ण		दे० का०	दे०
१८७	७४०४	कृष्णव्रतोद्यापन			दे० का०	दे०
१८८	३१२/२	कृष्णार्चन पद्धति (न्यास)	गो० निंबार्कशरण देवाचार्य		दे० का०	दे०
१८९	५९०२	कोकिलाव्रतोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१९०	६३७७	क्रमप्राप्तोविवाह			दे० का०	दे०
१९१	४७१९	क्रियापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १४ सें० मी०	५	११	२२	पू०	सं० १९३८	इति श्रीकृशराग्न श्राद्धः समाप्ताः शुभमस्तु श्रीकृष्ण १ संवत् १९३८ मुः राजनगर लिषतं पं० श्री अवस्थी जानकी प्रसाद जूकी जायेः ताः जैं राधे कृष्ण पहुच्ये ॥
१७·२ × ८·६ सें० मी०	२ (१–२)	११	२२	पू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्रीकृष्णविरंचिऽभिषेको समाप्तं सुभं भूयात् ॥………
३४ × १३ सें० मी०	६ (६–१४)	९	४९	अपू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तरे श्रीकृष्णयुधिष्ठर संवादे श्रीकृष्ण व्रतोद्यापनं ॥
२१·५ × १५ सें० मी०	२८	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१३·२ × ७·७ सें० मी०	११ (१–६, ९–१०,१४–१६)	७	२८	अपू०	प्राचीन	एतत्सर्वं प्रभोक्तव्यं कोकिलाव्रतमाचरेत् ॥ व्रतस्याद्यप्रभावेण वैधव्यं नैवजायते ॥ इति उद्यागन विधिः ॥
१९·८ × १०·२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	२७	पू०	शके १६५६	शके १६५६ आनंदनम संवत्सरे अश्विन शुद्ध सप्तम्यां समाप्तं ॥…… (मुख पृष्ठ)
२७·६ × ११·२ सें० मी०	२५ (१–३, ५–६, १२–२५, २९–३०, ३३–३५,४१)	९	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	१२५१/२	क्षौरविधि			दे० का०	दे०
१६३	५७६४	गंगापूजा			दे० का०	दे०
१६४	६००७	गंगास्नानपूजनविधि			मि० का०	दे०
१६५	३२४०	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८३	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८४	गणपतिपूजाविधि			दे० का०	दे०
१६७	५१६६	गणहोमविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१२·३ × ७·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	११	पू०	प्राचीन	इति क्षौर विधिः ॥
१४·६ × १०·८ सें० मी०	२	१३	१७	अपू०	प्राचीन	
१५·६ × १२·१ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	१६	पू०	प्राचीन (सं०१९४३)	इति गंगापूजन विधि समाप्तं ॥ राम वेदांक चंद्राब्दे आश्विने × × × × शुभं भूयात् ॥ द्विजेरिते इति पाठः ॥
२१·१ × ८·३ सें० मी०	६ (१–६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति पूजनम् ॥
३१·४ × १२·३ सें० मी०	२ (१–२)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति गणपति अज्ञा ब्राह्मणाय इमां दक्षिणां दास्ये इति संकल्पः······ ॥
१५·६ × १०२ सें० मी०	९ (१–९)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति पूजा समाप्तः ॥
२३·८ × ८·४ सें० मी०	६ (१३–१८)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इति वौधायन प्रोक्तो गणहोम-विधिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९९	२३६२/२	गणेश चतुर्थीपूजाविधि			दे० का०	दे०
२००	२४३४/२	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०१	४११९	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०२	६३५०	गणेशपूजन विधि			दे० का०	दे०
२०३	७५३१	गणेशपूजा			मि० का०	दे०
२०४	३१४	गणेशपूजाविधान			मि० का०	दे०
२०५	३४२७	गणेशपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२ × ९.७ सें० मी०	१२	६	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश जू की पूजा विधि संपूर्ण शुभं भवति मंगलं ददात् ॥
२५.८ × ११.२ सें० मी०	१½	११	३४	पू०	प्राचीन	इति गणेश पूजन समाप्तम् ।
१७.१ × ११.२ सें० मी०	८	७	१७	अपू०	प्राचीन	नया कृत पूजनेन यथाज्ञानाज्ञानोपपन्ने भगवान्सर्वात्मा श्रीसिद्धिवुद्धि सहित महागणपति प्रियतां ॥ (अंत)
१६ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	९	१२	०	प्राचीन	इति श्री गनेस जू को पूजन संपुरनं सुभं भवतु मंगलं ददात् ॥
२१.८ × ९.७ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	पू०	प्राचीन	
१९.५ × १०.५ सें० मी०	६ (१–६)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १९१८	जँ गनेस जी सुभं मस्तु जथाप्रततया लिषतंममदोषो न दियते। सं० १९१८ अस्वनत्रितीया ३ शुक्ल चंद्रवार। गौरीदत्त……
१९ × १० सें० मी०	७ (१–७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	६९२१	गयाकार्यानुष्ठान पद्धति			दे० का०	दे०
२०७	७६९२	गयापद्धति			दे० का०	दे०
२०८	४७२१	गर्भाधान			दे० का०	दे०
२०९	३७७४	गर्भाधान आदि संस्कार-विधि			दे० का०	दे०
२१०	६४४०	गर्भाधान संस्कार	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२११	७६२०	गायत्री			दे० का०	दे०
२१२	२२४१	तुर्विंशति गायत्री जपम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·१ × ९·६ सें० मी०	१८	११	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामेश्वर भट्टात्मज नारायण भट्ट विरचिते त्रिस्थलीसेतौ गया-प्रकरणं गया कार्यानुष्ठान पद्धतिः ॥ तीर्थ कर्त्तव्य संदेह + + + ॥
२०·८ × ९·७ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति गया विधि अकीर्णं विस्तारः अथानुक्रमणिका ॥ ……… ।संवत् १८७३ ।
२७·७ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × १२·४ सें० मी०	१० (१९–२८)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२२ × ८·७ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री विद्वन्मुकुटमाणिक्य श्री मद्रामेश्वर भट्ट सुत नारायण भट्ट विरचिते प्रयोग रत्नेस्तज्ज्येष्ठ सुत रामकृष्णो ……दुष्ट रजो दर्शन श तिः ॥
१६·८ × ११·५ सें० मी०	१६ (१-२, ५-१८)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
३३·२ × ९·२ सें० मी०	१	३८	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री चतुर्विंशति गायत्रि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	४६३४	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१४	१७४३	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१५	३८१६	गायत्री जपविधि			मि० का०	दे०
२१६	१५०२/३	गायत्री तर्पण			दे० का०	दे०
२१७	७६४१	गायत्रीन्यास ध्यानपूजा			दे० का०	दे०
२१८	६२४	गायत्री पद्धति			दे० का०	दे०
२१९	१५५०	गायत्री पुरश्चरण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·२ × ११·१ सें० मी०	६ (२, ६–१३)	११	१५	अपू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री ब्रह्म ऋषि: वसिष्ट याज्ञवल्क्य प्रश्ने गायत्री कल्प संपूर्ण ॥ सं० १८३४ वर्षे जेष्ट मासे कृष्ण पक्षे ७ गुरुवासरे॥
२७ × १०·८ सें० मी०	३ (३३–३५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगायत्री कल्प संपूर्णम् ॥
१४·२ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	९	१७	पू०	आधुनिक	
१४ × १० सें० मी०	८	८	१२	पू०	प्राचीन	इति तर्प्पण समाप्तं ।
२३·५ × ८·७ सें० मी०	१० १–१०	६	२६	पू०	प्राचीन	
१६ × ९·५ सें० मी०	७	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२० × ८४ सें० मी०	६	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीभट्ट शंबूरात्मजभट्ट शांब कृत गायत्री पुरश्चरणप्रयोग: ॥··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	७०५८	गायत्री प्रयोग			दे० का०	दे०
२२१	२००६	गायत्री विधान			दे० का०	दे०
२२२	३५६४	गायत्री विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
२२३	६८६५	गावस्तूत प्रयोग			दे० का०	दे०
२२४	२७०४	गुरु दीक्षा ?			दे० का०	दे०
२२५	३०६३	गुह्यकाल्यापूजा पद्धति			दे० का०	दे०
२२६	३९२३	गृहदान प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × १६·२ सें० मी०	६	१४	३३	अपू०	प्राचीन	
१७·६ × ११·३ सें० मी०	१	८	२२	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × ६·४ सें० मी०	८	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·१ सें० मी०	५ (१-५)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति ज्योतिष्टोमेग्रावस्तुत् प्रयोगः समाप्तः ॥
१६ × ७ सें० मी०	४ (१–४)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति संकल्प्य कृत मंत्रं चल मंत्रं चानुसंधाय सात्विक त्यागं कृत्वा द्वयमुच्चार्य श्री मन्नारायण चरणारविंदयोः सर्वदेश सर्व कालस··· ॥
२५·१ × ८·४ सें० मी०	५ (१–५)	६	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री गुह्यकाल्याः पूजा पद्धतिः संपूर्ण ॥ नमः श्रीगुह्यांबायै ॥
२३·५ × १० सें० मी०	२	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इति गृहदान विधिः संपूर्णं श्रीरर्पणमस्तु ॥ संवत् १८१२ आषाढ़ शुद्ध ५ समाप्तम् ॥ पुस्तकम्मिदं रामप्रेहकर विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखापितं स्वार्थं परार्थं च । श्री सांब शिव प्रसंनोस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२७	६३०	गृह दीपक			दे० का०	दे०
२२८	१६२५	गृहप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२२९	५२३२	गृह प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२३०	४५३८	गृहस्थ्य रत्नाकर			दे० का०	दे०
२३१	७२६९	गृहारंभ शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
२३२	१०३१	गृह्यसार	वोपरण भट्ट		दे० का०	दे०
२३३	५४१३	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति गृहदीपक समाप्तम् । सं० १९२१ शाके १७८६ श्रावन मासे कृष्ण पक्षे अमावस्या भुमी वाशरे लिषित्वा दोउन्हराभिशपट्ठार्थस्य तत्वेः ।
३० × १३ सें० मी०	३ (१, २ अज्ञात)	६	४०	अपू०		
२९·४ × १०·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	४१	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति गृहप्रतिष्ठा विधिः ॥ संवत्सरे १९२३
२९·५ × ११·२ सें० मी०	१५० (१–४८, ४८, ४९–१४९)	८	४४	अपू०	प्राचीन	इति गृहस्थरत्नाकरे दातृनिरूपण तरंग ॥ पृ० (३५)
२८·१ × १०·८ सें० मी०	४ (१–४)	६	३१	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति गृहारंभ शिलान्यास्य विधिः समाप्तः श्रीरस्तु सं० १९१३ चैत्र सुदि १५रवौ ॥
२३ × ८·९ सें० मी०	४४ (२५–६८)	७	२८	अपू०	सं० १७३५	इति श्रीमहोपाध्याय श्रीमद्रदांध्रबोवपण-भट्ट विदुषा विरचितो गृह्यसारः समाप्तः॥ सं० १७३५ आषाढ़ कृष्ण द्वादश्यां दश-पुत्ररघुनाथेन स्वार्थं परोपकारार्थं च लिखितोगृह्यसारः समाप्तः ॥
२४·२ × १०·५ सें० मी०	२८ १–२३, २३–२७	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३४	५८३३	गोकुलाष्टमी पूजा			दे० का०	दे०
२३५	६६३५	गोतमस्तोमादि	रघुनाथ		दे० का०	दे०
२३६	७२४८	गोत्रावली			दे० का०	दे०
२३७	४७३२	गोत्रोच्चार			दे० का०	दे०
२३८	६३४१	गोदान			दे० का०	दे०
२३९	७७०६	गोदान			दे० का०	दे०
२४०	४२३८	गोदान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४·५ × १०·७ सें० मी०	४ (१–४)	७	१८	पू०	प्राचीन	गोकुलाष्टमि पूजा समाप्तं ॥···
२३·१ × ६·४ सें० मी०	२४ (१–२४)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १८०५	इति श्री मदयाचितोपनामकरुद्र भट्ट सुतेनरघुनाथेन एषा पद्धतिर्विरचिता ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८०५ मिति पौषवदि द्वितीया···पुस्तकमिदं राम हृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठस्य ॥···
२३·८ × ६·५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १०·४ सें० मी०	६ (२–७)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति गोत्राउचारः समाप्तम् ॥
२३·३ × ६·८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति गोदान प्रशंसा० ॥
२३·३ × ६·८ सें० मी०	७	११	३८	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१४ (२–१६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३८९५	गोदानपद्धति			दे० का०	दे०
२४२	३०४९/६	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४३	२३५४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४४	२०००	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४५	२१५८	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४६	६०२१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४७	१३९०	गोदान विधिः			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·७ × ९.३ सें० मी०	५ (१–५)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति गोप्रदान पद्धतिः समाप्ता ॥
(१९·७ × १३·१ सें० मी०	३१/२	१९	१७	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति गोदान पद्धति संपूर्ण ॥ सं०१८८५ ॥
२५·२ × ११·२ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२४	पू०	(कृमिकृंतित) सं०१९१५	इति सं०१९१५ तत्रमासे महामांगल्यमासे पौषमासे शुक्लपक्षे द्वादस्यां १२ आदित्यवासरान्वितायां लिख्यतं मिश्र प्रभूलाल पठनार्थ१ इति गोदान विधि समाप्तम्॥ राम–राम
२८ × १३·३ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३१	पू०	प्राचीन (जीर्ण) सं० १९४४	इति श्री नारदपुराणे गोदान विधि समाप्तः । सं० १९४९ मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे कृष्ण पक्षे शुभतिथौ द्वितीयाम् ... ...
१६·३ × १२·३ सें० मी०	४ (७–१०)	११	१६	अपू०	प्राचीन	
२७·८ × ११·९ सें० मी०	४ (१–४)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे प्रयाग माहात्म्ये गोदान विधि निरूपणं षट् पंचाशत्तमोध्यायः ॥
१२·३ × ८ सें० मी०	४	८	१५	पू०	प्राचीन	इति संक्षेपेण गोदानविधिः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४८	२८८४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४९	३८८१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२५०	७६२३	गोदान (सूक्ष्म) विधि			दे० का०	दे०
२५१	४३३७/८	गोद्वार			दे० का०	दे०
२५२	७५८५	पूजाविधि गोपालकृष्ण			दे० का०	दे०
२५३	२५६७	गोपाल गायत्री अंगन्यास			दे० का०	दे०
२५४	६५६२	गोप्रसव शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ × १० सें० मी०	६ (१–६)	१०	३४	अपू०	जीर्ण प्राचीन सं० १७८१ शाके १६४६	इति साधारण······॥ सुभमस्तु ॥ संवत् १७८१ साके १६४६ माघवदि दसम्यां ··· ···
१५·७ × १५ सें० मी०	८	११	१५	अपू०	प्राचीन	
३१·५ × ११·७ सें० मी०	४ (१–४)	७	४२	पू०	प्राचीन	इति सूक्ष्म विधिः समाप्ता······
१६ × १३·३ सें० मी०	२ (३५-३६)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति गर्डत्यारणी (?) गऊत्यारणि ? समाप्ता ॥
१७ × १० सें० मी०	८	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री गोपालकृष्ण पुजां समाप्तं ॥
२० × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री गोपाल गायत्री पंच अंगन्यासः संपूर्ण ··· ···
१९·३ × ९ सें० मी०	१	७	४५	पू०	प्राचीन	इत्यद्भुत सागरे नारदोक्ता सीद्धार्के गो प्रसव शांतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५५	७२७३	गोमुखप्रसव			दे० का०	दे०
२५६	४३३२	गोमुख प्रसव विधि			दे० का०	दे०
२५७	६४२३	गोमुख प्रसव शांति			दे० का०	दे०
२५८	६४३४	गोमुख प्रसव शांति प्रयोग			दे० का०	दे०
२५९	४७११	गोमुख शांति			मि० का०	दे०
२६०	७१६४	गौतमी पद्धति			दे० का०	दे०
२६१	२७३	ग्रहमख पद्धतिः			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ९.३ सें० मी०	२ (१–२)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसवं ॥ + + +
२१ × ८.५ सें० मी०	२ (१–२)	९	३१	पू०	सं० १७६७	इति गोमुख प्रसव विधिः ॥ सं० १७७६ शार्वर्यब्दे चैत्र शु० १······
२०.८ × ७.९ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव शांति समाप्तः ॥ श्री ॥
२२.२ × ९ सें० मी०	६ (१–६)	७	३०	पू०	सं० १९१५	संवत् १९१५ भाद्रपदशुक्ल १२ रविवासरे इदं पुस्तकं वेतालोपनामकस्य ॥ शुभं ॥
२४.३ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	८	३४	पू०	सं० १९६६	इति श्री म० गोमुखप्रसव शांतिः समाप्ता । सं० १९६६ वाशिकरोपान्ह काशिनाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२७.१ × ११.२ सें० मी०	२८ (१–२८)	९	३४	अपू०	प्राचीन	अथ गौतमी पद्धति लिख्यते (प्रारंभ)
१७.३ × १०.५ सें० मी०	७२	७	२२	पू०	सं० १९६६	इति ग्रहमख पद्धतिः समाप्त आश्विने मासे कृस्न पक्षेतुअयायां गुरुवासरे ७ तस्मिन दिनेतु लिखितं श्री गुरोश्च प्रसादतः ॥ श्री रस्तु ॥ सं० ९९६६ दुर्मति नाम संवत्सरे शुभं उभयोः लेखक पाठकयोः ॥ लिखितं इदं पुस्तकं पुरुषोत्तम मिश्र । शुभं भवतु स्वार्थ परमार्थं च ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	५६३०	ग्रहवास्तुपूजन			दे० का०	दे०
२६३	२२१६	ग्रह शांति	कात्ययन ऋषि		दे० का०	दे०
२६४	२६८०	ग्रहशांति			दे० का०	दे०
२६५	१८४१	ग्रह शांति			दे० का०	दे०
२६६	१६२४	ग्रह शांति			दे० का०	दे०
२६७	६७	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६८	४१७२/२	ग्रहशांति विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११·५ सें० मी०	४(१–४)	६	४३	पू०	प्राचीन	
२५·८ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीकात्यायन ऋषि विरचिता ग्रह-शांतिः समाप्ता १
२२·५ × ८·८ सें० मी०	३	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१७ × १०·५ सें० मी०	२७	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१८९०	इति नवगृह मख्य यज्ञ समाप्तः ।। सं० १८९० मागसिर सुदि ११ गुरूवारेण लिषितं जोसिचनराम सुत पुत्र कालुराम पुस्कर मध्येः।। श्रीमस्तु ।। कल्याणमस्तु।।
२५·५ × १५ सें० मी०	१६ (१–२, ४–१७)	१२	२५	अपू०	प्राचीन	
१६ × १३·२ सें० मी०	१०		१५	पू०		इति कात्यायन ऋषि विरचिता ग्रहः शांतिः समाप्ता शुभेभूयाल्लेखक पाठकयोस्ताम्वकृपातः ।। कृष्नाय नमः ।। राम राम
१८·८ × १३·८ सें० मी०	२३ (१–४, ९–२७)	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति प्रवगर्भ समाप्तं । (प० सं० २७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६९	१०२४	ग्रहशांतिविधि			दे० का०	दे०
२७०	२४३४/२	ग्रह स्थापन विधि			दे० का०	दे०
२७१	६७५२	ग्रावस्तोत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
२७२	५०१७	घृत तुलादान प्रयोग			मि० का०	दे०
२७३	५६१७	चंडिका विधान			दे० का०	दे०
२७४	५२५१	चंडी जप विधि			दे० का०	दे०
२७५	६३०	चंडीविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·३ × १५ सें० मी०	६ (१–६)	११	२५	पू०	प्राचीन (स०१८६०)	इति श्री ग्रहशांति विधि समाप्तम् शुभं भूयात् ॥ सं० १८६० चैत्रशुदि १५ गुरुदिने···श्री शी (सी)तारामायनमः ॥
२५·८ × ११·२ सें० मी०	(१½)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति कात्यायन ऋषि विरिचिते ग्रहास्थापन विधानं समाप्तं ॥
२४ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति ग्राव स्तोत्र प्रयोगः ॥
१६·५ × ६·३ सें० मी०	१	१५	३७	अपू०	आधुनिक	
२४·४ × १०·५ सें० मी०	११ (१–१०,१३)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति चंडिका विधान संपूर्ण ॥
२२ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	११	३६	अपू०	प्राचीन	अथ चंडी जपविधिः ॥ (प्रारम्भ) × × ×
२४·४ × ७·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति चंडी विधिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७६	२४३७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७७	२२५७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७८	६४४६	चतुर्थीव्रत चंद्राघ्यं			दे० का०	दे०
२७९	१५०७	चतुष्टय संप्रदाय पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
२८०	७२०१	चलाचलप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२८१	७१८३	चवरी			दे० का०	दे०
२८२	६४९९	चार्तुमास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × ११ सें० मी०	२५	९	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री मदुपाध्यायोपनाम शिव भट्ट सुत सतीगर्भज नागोजो भट्ट कृते मारकण्डेय पुराणांतर्गत सप्तसत्वाख्य चंडीस्तोत्र व्माख्याने चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥
१८·८ × १९·१ सें० मी०	प० सं० ३३ (२–१९, १८–३५)	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं० १९३२	इति श्री मदुपाध्यायोपनाम शिवभट्ट सुत सतीगर्भज नागोजी भट्ट कृते मार्कंडेय पुराणांतर'''संवत् १९३२
१३·६ × ८·२ सें० मी०	३ (१–३)	५	१३	पू०	प्राचीन	इति चंद्राऽर्घ्यं ४ वृतं ॥
१८ × ९·७ सें० मी०	७ (५–११)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२५·८ × ११·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२८	पू०	सं० १९१५	इति चलाचल प्रतिष्ठा विधिः संवत् १९१५ पौषमासे सितेपक्षे त्रयोदश्यां आद्रकेतथा शोभारामेण लेखस्यात्
२६·२ × १५·८ सें० मी०	१४ (१–११, १३–१५)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाब्रह्मपुराण कर्मकांडे-विवाह विधि चतुर्थोध्याय + + सं० १९०३ अषैगढमध्ये + + ॥
२२·५ × ९·५ सें० मी०	५३ (१–१३, १५–५४)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	इति हौत्र : पशुबंधश्चातुर्मास्यानां । (पत्र सं० ५४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८३	१२०६	चातुर्मास्यविधि			दे० का०	दे०
२८४	६७०६	चातुर्मास्यहौत्र			दे० का०	दे०
२८५	५१४२	चित्रगुप्त पूजा विधि			दे० का०	दे०
२८६	७०८८	चूडाकरण			दे० का०	दे०
२८७	६६७०	चौलप्रयोग			दे० का०	दे०
२८८	६१३३	जनमारी शांति			दे० का०	दे०
२८९	६२५४	जप			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × १३ सें० मी०	६ (१–६)	७	२३	पू०		इति चातुर्मास्य विधिः संपूर्नं सूभं भूयात् ।
२२ × ९·५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३१	पू०	प्राचीन	
१९·७ × ९·८ सें० मी०	११ (१३·१३-२२)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × ११·६ सें० मी०	९ १–९	९	२२	पू०	प्राचीन	इति चूडाकरण पुस्तक समाप्तम् चैत्र मासे सिते पक्षे + + + + +
२२·४ × ७·७ सें० मी०	७ (१–७)	९	३८	पू०	प्राचीन	
१७·२ × ७·५ सें० मी०	४	८	२१	पू०	प्राचीन	इति विधानमालायां गर्गं प्रोक्ता जनमारी शांतिः समाप्तं ... ...
२६·८ × १०·९ सें० मी०	२	७	२९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	४८१६	जपविनियोग			दे० का०	दे०
२६१	१६१३	जल गायत्री			दे० का०	दे०
२६२	३७५१	जलाशयकूपोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२६३	१३०६	जलाशय चत्वर प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
२६४	५६४५	जलाशयारामोत्सर्ग मयूख	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	२५१०	जलाश्रयोत्सर्ग	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२६६	४४४६	जलाशयोत्सर्ग विधि	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१७×१०·७ सें० मी०	३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
१६×११ सें० मी०	१	७	२०	अपू०	प्राचीन	
(२७·६×१५·१) सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	२६	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति जलाशय कूपोत्सर्ग समाप्तः संवत् १८९६ मासानामुत्तमे फल्गुने मासि कृष्णेपक्षे एकादश्यां शनिवासरे लिखित मिदं पुस्तकं लक्ष्मी नारायणेन ··· ॥
१६·३×९·२ सें० मी०	३७ (१–३७)	६	२०	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इत्यारामामोजलाशय चत्वर प्रतिष्ठ-समाप्ता । श्री कृष्णायनमः सं०१९०७ शाके १७७२ मासोत्तम्मासे ज्येष्ठ कृष्ण ३० चंद्रवासरे लिपि कृतं मिश्र डाल चंद्र राज्ञ पुरकः । श्री कृष्ण ।
२३·४×११ सें०मी०	१३ (३–१५)	१४	३८	अपू०	सं०१९०६	इति श्री मीमांशक भट्ट संकरात्मज भट्ट नीलकण्ठ कृते भास्करे जलाशयारामोत्सर्ग मयूषः समाप्तंः ॥ ··· १९०६ चैत्रे शुक्ले तरे शुभे ··· ···
२६·३×१५·२ सें०मी०	२७ (१–२७)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्रीमीमांसक भट्ट संकरात्मज भट्ट लीलनीलकट कृते भास्करे जलाश्यां रामोत्सर्गमयूषग्रंथ शाख्या १०० सुभमस्तु कार्तिक सुदि १५ का सं० १९१८ क
२७×१२ सें० मी०	८९ (१–८९)	८	३७	पू०	सं०१९१७	इति श्रीभट्ट रामेश्वर सूरिसुतनारायण भट्ट कृते जलाशयोत्सर्ग विधौतडागो सर्ग विधि पद्धतिः ॥ संवत् १९१९ भौमे पौष शुक्ल १० स्वार्थं परोपकारार्थंच ॥
(सं०सू० २४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९७	५०५३	जलोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२९८	४९०२	जलोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२९९	६४१७	जातकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
३००	६४१८	जीर्णोद्धार			दे० का०	दे०
३०१	६३६८	जीर्णोद्धार प्रयोग			दे० का०	दे०
३०२	६३७१	जीर्णोद्धार विधि			दे० का०	दे०
३०३	६११८	जीवश्राद्ध पद्धति	गौरी भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ १ × ११ सें० मी०	३ १–३	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२८·५ × १२·२ सें० मी०	३ १–३	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२२·४ × ६ सें० मी०	६ (१–६)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति जातकर्म पद्धतिः ॥
२१·५ × ८·४ सें० मी०	४ (१–४)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धारः निर्णयसिंधोक्तेन विधि समाप्तिमगमत् ॥
१४ × ७·६ सें० मी०	१ (१–२)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार प्रयोगः समाप्तः ॥
२१·८ × १०·१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति रघुनाथ सूरि सूनु विविक्रम रचितायां प्रतिष्ठापद्धतौ जीर्णोद्धार विधिः ॥
२४·३ × ११·३ सें० मी०	१४ (१–४४)	७	३३	पू०	सं० १९५८ (कृमिकृन्तित)	सं० १९५८ माघ शुक्ल १० सोमे लिखित गणपति पुरोहितेन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०४	५७२८	जेष्ठानक्षत्र जनन शांति			दे० का०	दे०
३०५	५०५४/१५	ज्वरशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
३०६	६५८६	तडागादि प्रतिष्ठाप्रयोग			मि० का०	दे०
३०७	५४५८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०८	६२१८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०९	७७८२	तर्पण			दे० का०	दे०
३१०	४०७३	तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२४ × ८·७ सें० मी०	३ (२–४)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति ज्येष्ठा नक्षत्र जनन शांतिः ॥'''
१६ × ७·८ सें० मी०	४	८	२५	पू०	प्राचीन	इति ज्वर शांतिः ॥
२४·४ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	पू०	प्राचीन	वाज वाहादुर चंद्रनिर्मिते कौस्तुभेनृपति धर्मगोचरे शौनकोक्तविधिनेयनीरिता सज्जालाशयतरुत्सृजेः कृतिः ॥
२६ × ६·५ सें० मी०	५	८	३४	अपू०	प्राचीन	
६८ × १६·५ सें० मी०	१ (खर्रा)	६३	१४	अपू०	प्राचीन	
११ × १०·२ सें० मी०	८ (१–८)	११	१३	पू०	प्राचीन	
१४ × ८·७ सें० मी०	प०सं०७ (२–८)	६	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८६७	इति तर्पन संपूर्णं संवत् १८६७ साकै १७६२ आषाड वदि ६ बुधवासरे तादिन प्रति संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३११	११९६	तर्पण			दे० का०	दे०
३१२	४५०४	तर्पण			दे० का०	दे०
३१३	२८७७	तर्पण			दे० का०	दे०
३१४	७००४/२	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१५	१३३२	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१६	५७१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३१७	६०७	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९३८	
२७·३ × ९·७ सें० मी०	८ (१–८)	६	४०	पू०	सं० १९३३	इति तर्प्पणाम्सम्पूर्णम् ॥ जपानंतरं कात्यायनः ॥·········संवत् १९३३ माघ शुक्ल वसन्त पंचम्यां······ ॥
१७·३ × १०·६ सें० मी०	३ (१–३)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पन संपूर्ण······दिवाकरः ॥
१२·२ × ८·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति सूर्य्यायांजलिदद्यात् शुभम् ॥
१७·५ × १३ सें० मी०	५	११	२३	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधेः पुस्तक मिदं गंगादत्त ब्रह्मचारिणः पाठार्थम् लिखितं जयानंदेन शुकदेवाश्रमे प्रतिप्रत्तिथौ भौमवासरे शुभम् ॥
१९·८ × १४·३ सें० मी०	४ (१–४)	११	१९	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥१॥
१२·८ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१८	६००६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३१९	५३२१	तर्प्पण विधि			दे० का०	दे०
३२०	५१२६	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२१	५२२६/४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२२	५२६६/२	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२३	७७९/२	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२४	७५४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·३ × ९·४ सें० मी०	५ १–५	८	१५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधिसमाप्त ॥
३० × १३·६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
७५·५ × ११·२ सें० मी०	१ (खर्रा)	७६	१७	पू०	प्राचीन	इति तर्प्पण समाप्तम् ···
१६·५ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पणं समाप्तम् ॥
१६ × ८ सें० मी०	२ (३–४)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
१५·४ × १०·९ सें० मी०	१६ (२–१७)	१०	९	अपू०	प्राचीन सं० १९४०	इति तर्पण विधि सं० १९४० भाद्र शु० ७ शनिवारे मध्यान्हात् घाटिका न्यूनं··· ···पठेत् ॥ अच्युतायनमः गोविंदायनमः शुभं भूयात् ।
२६ × १०·५ सें० मी०	७	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री तर्पण विधि संपूर्ण शुभमस्तु शुभसंवत्सरा १९०६ शाके १७७१ कर्क शुक्ल प्रतिपदा भृगु वासरे लेखिराम-दिहल विप्रेण परोपकारार्थं हेतवे ।

(सं० सू० २५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२५	३५८५	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२६	२२८६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२७	३६६२	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२८	४०६५	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२९	४२२०	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३३०	१५७३	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३३१	१६२९/३	तीर्थमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·१ × १३·७ सें० मी०	८ (१–८)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ··· ॥
७५·६ × ५०·८ सें० मी०	१	६३	१३	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति तर्प्पण विधि संपूर्णम् सं० १६०४॥ ब्रह्मादयः···
२३·४ × ६·५ सें० मी०	१	३३	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधिः ॥
१५·७ × ७·६ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति तर्प्पण विधिः शुभमस्तु
२७ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	११	४०	पू०	प्राचीन	इति नारद पंचरात्रे तर्पण विधिः ॥
३१ × ११·५ सें० मी०	११ (१–५, ५८ –६३)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × १३·१ सें० मी०	८ (१–८)	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १६००	इति तीर्थमुख श्राद्ध विधिः समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ फागुन शुक्ला बुधवासरे संवत् १६०० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	२९७७	तीर्थविधि			मि० का०	दे०
३३३	१७७५	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३४	६०७४	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३५	३३००	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३६	७९८	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३७	१३६६	तीर्थश्राद्ध निर्णय	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
३३८	१८४८	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × १०·५ सें० मी०	१४	७	२०	अपू०	प्राचीन	
६० × २०·३ सें० मी०	१ पत्र (खर्रा)	५४	२४	पू०	प्राचीन	पिता भगिनी स्वश्रु प्रपितामही ८ इति कुलमेकोत्तशतं १ ......
२६·६ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति तीर्थ श्राद्धं सम्पूर्णम्।
१३ × ८·२ सें० मी०	३ (१-२, १२)	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति तीर्थं श्राद्धं संपूर्णम् ॥ सं०१६५... मिति कार्तिक कृष्णा १४ बुधे दिने ॥ शुभम् ......
२५·७ × ११·८ सें० मी०	३ (१–३)	११	३५	पू०	प्राचीन (सं०१९१६)	इति तीर्थश्राद्ध समाप्तोयम् अश्विन मासे...लिखितं रामसरणेन पुस्तकमिदं द्विजप्रसातः १ संवत् १९१६ ॥
२०·६ × १०·६ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री नरायण भट्ट विरचिते सामान्य प्रघटके तीर्थ श्राद्ध निर्णयः ॥
२२·२ × ६·१ सें० मी०	३ (१–३)	७	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२२	इति शुभमस्तु सं० १९२२ कारतिक् शुक्ल पक्षे ६ शनिवारे इदं पुस्तकं लिख्यते गौरी दत्त ॐ नमः शिवाय ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३९	२२३९	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४०	२६०१/२	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४१	२२४३	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४२	६७४	तिलकमुद्राधारण विधान			दे० का०	दे०
३४३	१५८१	तुलसीप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
३४४	१६२९/३	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०
३४५	७०४३/२	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·४ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति तीर्थ श्राद्ध विधिः ॥
२१ × ११.५ सें० मी०	६	८	१६	पू०	सं०१९५६	इति श्री तिर्थ श्राद्ध विधि समाप्तम् ॥ लिषतं पं० कबुलशहायः ॥ ? ॥
१८ × ११·८ सें० मी०	४ (१–४)	१३	१६	पू०	प्राचीन	दक्षिणा चात्र संकल्प तीर्थ श्राद्धव्वयं विधि । अर्घमा वाहनं चैव द्विजांगुष्ट-निवेशनं ॥ विकर तृप्ति प्रश्नं च तीर्थ-श्राद्धेषु वर्जयेत् ॥२॥
१५ × १० सें० मी०	५	९	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वाराह पुराणे चातुर्मास महा-त्म्ये धरणी वराह संवादे श्री भगवान-वराहोक्त तिलक मुद्रा धारण विधानं नाम पंचमोध्यायः ॥ श्री कृष्णार्पण-मस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री कृष्ण ॥
२७·५ × १२·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२९	पू०	सं०१८८१	इति तुलसी प्रतिष्टाकर्मसंपुर्णं ॥ सं० १८८१ ॥ तत्रवर्षेमार्गशीरशुद्विद्वादस्यां बृसपतवारदिने लिखितकिसनचंद ॥ इद पुस्तकं ॥ शुभमस्तु ॥
२१·१ × १२·९ सें० मी०	४ (९–१२)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति तुलसी विवाह : समाप्तः ॥
१४·७ × १३·३ सें० मी०	६	८	१४	पू०	प्राचीन सं०१८४२	इति श्री विष्णु जी मले श्री तुलसी विवाह विधि संपूर्णाम् ॥ सं० १८४२ वर्षे कार्त्तिक वदिकादशी भृगुदिने लिखितं स्वामि तन सुखराम वेणीराम का पुत्र शुभमस्त ॥ मंगल ददात् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४६	७१३६	तुलसीविवाहपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
३४७	४६७६/२	तुलसीविवाह विधि			दे० का०	दे०
३४८	५०५४/१५	तुलादान प्रयोग			दे० का०	दे०
३४६	३८५४	तुलादान प्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
३५०	७७६३	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५१	३५०१	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५२	३७४६	तुलापुरुष पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १०.९ सें० मी०	१९ १–१९	८	३२	अपू०	प्राचीन	अथ तुलसी विवाह पूजा प्रारंभ × × × (प्रारंभ)
१५.८ × ९.५ सें० मी०	१४ १–१४	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे कार्त्तिकोद्यापन तुलसी विवाह विधिः ॥
१६ × ७.८ सें० मी०	५	७	२०	अपू०	प्राचीन	अथ तुलादान प्रयोगः ॥ (प्रारंभ)
२१.५ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति कमलाकर भट्ट कृत तुलादान प्रयोगः संमाप्तिमगमत् ॥ श्री ॥ भारद्वाज वैंजनाथात्मज धुंडराजस्य
२६.९ × ११.३ सें० मी०	३ १–३	७	३२	पू०	प्राचीन	
२३.२ × १०.३ सें० मी०	७	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१७.५ × ९.३ सें० मी०	८ (१–८)	९	२७	पू०	प्राचीन सं०१७५६	इति तुलापुरुष पद्धति समाप्तः ॥ सं० १७५६ समये श्रावणशुन्ध्यपौर्णमास्यांकाशीक्षेत्रे लिखितं तुलापुरुष दान प्रयोगः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	३८९४	तुलाप्रयोग			दे० का०	दे०
३५४	३१७३	त्रिकंडिका			दे० का०	दे०
३५५	७२५४	त्रिकालसंध्या			दे० का०	दे०
३५६	६०६७	त्रिकाल संध्या			दे० का०	दे०
३५७	६४२४	त्रिपाद पंचक शांति			दे० का०	दे०
३५८	७०३	त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
३५९	३७०९	त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·१ × ९·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१८१२	इति तुला प्रयोग समाप्तः ॥ सं०१८१२ आषाढ़ शुद्ध पौर्णमास्यां समाप्तम् ॥ पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठ भट्टेन लिखपितम् स्वार्थं परार्थं च ॥
२३ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	९	२७	पू०	प्राचीन सं०१८९७	इति त्रिकांडिका साम्पतम्। इति श्री कात्यायन प्रणीत स्वान सूत्रं समाप्तं ॥ लिखितं वेणी राम दिक्षितस्य ॥ सं० १८९७ भाद्रपदवद्य भानुवासरे ॥......
१७·९ × ११·७ सें० मी०	१८ १–१८	७	१९	पू०	प्राचीन सं०१९९१	इति त्रीकाल संध्या संपूर्णम् ॥ लिषितं सं० १९९१ ॥
१६·७ × ८·३ सें० मी०	७ (२–८)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्री त्रिकाल संध्या समाप्तं संपूर्णम् ॥ मिति हुती जेष्ठ सुदि ३ भौम संवत् १९०४ ... ... ।
१९·८ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	९	३१	पू०	प्राचीन	त्रिपादपंचक शांतिः समाप्ता ॥
२२·९ × ११·७ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२९	पू०	प्राचीन	प्रेतपाकं च शूद्रान्नं कुर्याद्वैश्वदेवकं समाप्त ॥
१८·५ × ९·४ सें० मी०	४ (१–४)	१४	३२	पू०	प्राचीन सं०१८०६	इति गरुडोक्त त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोगः .... । सं० १८०६ मगशीर्ष वद्री १४ इंद्री लिखितमिदम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६०	३७१०	त्रिपिंडी श्राद्ध विधान			दे० का०	दे०
३६१	३८८०	त्रिवेणी स्नान विधि			दे० का०	दे०
३६२	४७९६	त्रिसुपर्ण			मि० का०	दे०
३६३	३३१७	दंडक			दे० का०	दे०
३६४	७२८९	दत्रिम पुत्र ग्रहण विधि			दे० का०	दे०
३६५	६९६०	दर्श पद्धति			दे० का०	दे०
३६६	६५१०	दर्श पूर्णमास विहार-कारिका विवरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० × ९ सें० मी०	६ (१–६)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
१५·८ × १५·७ सें० मी०	६	१५	१८	अपू०	प्राचीन	
२१·२ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	११	२१	पू०	आधुनिक	त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् । ब्रह्महत्यां वा एते घ्नंति । ये ब्राह्मणा स्त्रिसुपर्णं पठंति । ते सोमं प्राप्नुवन्ति ॥ (पत्र संख्या–१, पक्ति संख्या–४, ५)
२३·८ × १०·१ सें० मी०	२८ (१–२८)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति दण्डकं सम्पूर्णम् ॥
२८·९ × १०६ सें० मी०	३ (१–३)	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १९१२	इति दत्रिमपुत्रविधिः समाप्ता संवत् १९१२ चै० वदी १२ ॥
२२·८ × ९·७ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	आपस्तंबोक्त रीत्यंषाकारीत्थं दर्श-पद्धतिः ॥ ………
२२ × ८·९ सें० मी०	७ (१–७)	११	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६७	६५००	दर्श पौर्णमास होत्र ?			दे० का०	दे०
३६८	७७२३	दर्शपौर्णमासौ व्याख्या			दे० का०	दे०
३६९	४१४५	दशगात्र			दे० का०	दे०
३७०	४९२१ / ३	दशगात्र			दे० का०	दे०
३७१	४८८१	दशगात्रएकादशाह श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
३७२	२४०५	दशगात्र पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
३७३	२२९२	दशगात्र विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.५ × ९.२ सें० मी०	३ (१–३)	८	३३	पू०	प्राचीन	
२३.१ × १०.४ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
१६.३ × १०.३ सें० मी०	४ (१–४)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति दशगात्र विधिः समाप्तः ॥
१६ × १०.७ सें० मी०	७ (१–७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं० १८२८	इति दसगात्र संपूरणं लिषितंनरसिंघ दा सुकल संवत् १८२८ मिति असाढ···
२८.८ × १०.२ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	२८	पू०	प्राचीन सं० १८६४	ब्योरो दशगात्र की सामग्री को ॥ (पत्र सं० १) इति अस्थि संचयन श्राद्ध विधि संपूर्णं ॥ (पत्र सं० ४) इति एकादशकृत विधि संपूर्णं ॥१॥ संवत् १८६४ जेष्ठ कृष्ण ६ बुधदिने इष्ट लिषतं ब्राह्मणभग्नुकुकरणमध्ये ॥
२६.१ × १३.६ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३३	पू०	प्राचीन सं० १९१३	·········· संवत् १९१३ माघ कृष्ण ७ बार शनिवार शुभमस्तु भूयात् ···॥
२३ × १०.७ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७४	४२५	दर्शपिंडीकरणपद्धति			दे० का०	दे०
३७५	३७२७	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
३७६	७८०६	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
३७७	४९८६	दानप्रार्थनावली			दे० का०	दे०
३७८	१६३२	दानमयूख			दे० का०	दे०
३७९	६२४९	दानविधि			दे० का०	दे०
३८०	६२४९	दानविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·८ × ९ सें० मी०	९ (१–९)	१३	४०	पू०	प्राचीन सं०१८१२	इति सपिंडीकरण पद्धति समाप्तं लिखतं मिश्र नौवतराय सं०१८१२ ।
२४·५ × १०·५ सें० मी०	१५९ (१–१५९) ४ (सूचीपत्र)	७	३९	पू०	सं०१८५८	इति दान चंद्रिका समाप्ता ॥……… यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं-मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धंवा ममदोषोन लिप्यते ॥ सं० १८५८ ॥ अंतग सन्तान संवत्सर माघ शुध सात दिने समाप्तेः ॥
१५·७ × ८·६ सें० मी०	६ (९–१०, १२–१५)	९	१८	अपू०	प्राचीन	
२९·५ × १३·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	५०	पू०	प्राचीन (खंडित)	श्रीखंडागुरु कर्पूर कस्तूरी कुंकुमान्वितं विलेपनं प्रयच्छामि सौख्यमस्तु सदा मम ॥
(२६·६ × १६·६) सें० मी०	११ (२–१२)	१४	२९	अपू०	प्राचीन	
१७ × ८ सें० मी०	१० (१–१०)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति दशदान श्लोकः ॥
२२ × ९·४ सें० मी०	७	१०	४०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८१	५०५४/१५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८२	५०५४/१५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८३	८७५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८४	८२२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८५	७८७२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८६	२२८७	दान सिद्धांत मणि	चंडेश्वर		दे० का०	दे०
३८७	१५३५	दालभ्योत्तर पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ७·८ सें० मी०	६	८	२४	अपू०	प्राचीन	
१६ × ७·८ सें० मी०	१०½	९	२६	अपू०	प्राचीन	
२७ × १२·३ सें० मी०	२२९ (१३२–२३०, २३५–२६४, २६८–३६६, ३७०)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१८·५ × १२ सें० मी०	९ (५–१३)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	
१४ ६ × ७·८ सें० मी०	२	५	१५	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १३·७ सें० मी०	१८ (३–२०)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२·६ सें० मी०	५ (७–११)	१४	५२	अपू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री दालभ्योत्तर पद्धति संपूर्ण ·········संवत् १९१७ फालगुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८८	७०९	दाह पद्धति			दे० का०	दे०
३८९	३९९७	दाहप्रयोग			दे० का०	दे०
३९०	३११	दाहविधि	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
३९१	६९३२	दिवः श्येनयः			दे० का०	दे०
३९२	३५७४	दीक्षाविधान			दे० का०	दे०
३९३	१४१५	दीपमालाकृत्य			मि० का०	दे०
३९४	४२३७	दीप श्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × ८ सें० मी०	२०	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१ × ९४ सें० मी०	२ (१–२)	१७	४७	पू०	प्राचीन सं०१७५७	इति अहिताग्ने राश्वलायनोक्तमार्गेण दाह प्रयोगः……………………………………………सं० १७५७ पौष शुद्ध ७ रवौ
३३ × १२·५ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	४५	पू०	प्राचीन	इति विश्वनाथ कृतिः संपूर्णः शुभमस्तु ॥
२३·९ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति दिवःश्येनयः समाप्ता ॥
१७·३ × ९ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति दीक्षाविधान संपूर्णं शुभंभवति ॥
२९·९ × १२·१ सें० मी०	२	९	३६	पू०	प्राचीन	शुभः इति
२०·३ × १०·८ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२७	पू०	प्राचीन सं०१८२४	इति दीप श्राद्ध प्रयोगः ॥ सं०१८२४॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९५	४०७९	दीपश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३९६	२६९८	दुर्गा जंत्र विधि			दे० का०	दे०
३९७	१३९१	दुर्गापाठ विधि			दे० का०	दे०
३९८	६५६	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
३९९	२८७०	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
४००	१२००	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०
४०१	२०१०	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·४ × ९·६ सें० मी०	२	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
१३·३ × ९·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१८·८ × ९·५ सें० मी०	४	७	२५	पू०	प्राचीन	इति दुर्गापाठ विधि समाप्तिमगात् ॥
१५ × ८ सें० मी०	३६ (१–३६)	५	२१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२२·८ × ८·६ सें० मी०	१	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२१·८ × ८·५ सें० मी०	६	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२१ × १५ सें० मी०	२३	१३	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०२	१६४२	दुर्गाप्रतिष्ठान विधि			दे० का०	दे०
४०३	५९९८	दुर्गाहवन पद्धति			दे० का०	दे०
४०४	१६११	दुर्गार्चन विधि			दे० का०	दे०
४०५	३७७०	दुर्गोत्सव पूजा			दे० का०	दे०
४०६	३२९१	दुर्गोत्सव पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
४०७	६३६३	दुष्ट रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०
४०८	५१५२	दुष्ट रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·२ × १२·६ सें० मी०	९	११	३१	पू०	प्राचीन	इति दुर्गा गायत्री ॥ अथपूजाणेहकोणेषु । ॐ गणेशायानमः ॥ ....
११·६ × ११·६ सें० मी०	११ (४–७,१०, २६–३१)	९	१९	अपू०	सं० १९२४	इति दुर्गा हवन पद्धति समाप्तम् शुभमस्तु सं० १९२४ मास फालगुण कृष्ण ६ वासर गुरु ...... ।
१९ × १५·८ सें० मी०	५ (१–५)	११	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुरि श्री पति जै कृष्ण विरचिता भगवति पद्य पुष्पांजलि स्तव समाप्तम् । सं० ३६ सु० ११ भौ० ॥
२३·८ × ११·२ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२७·९ × ११·६ सें० मी०	४३ (८–५०)	९	३९	अपू०	प्राचीन सं० १८७९	इति श्री शारदीय नवरात्रि प्रतिपदारभ्य विजय दशमी पर्यंत श्री दुर्गोत्सवादि चंडी पूजन पद्धति विधिः संपूर्ण समाप्तः शुभं भवतु मंगलं ददातु श्री सं० १८७९ शाके १७४४ श्रावणे मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ४ चंद्रवासरे ।
१६·२ × ८·२ सें० मी०	९	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति दुष्ट रजोदर्शनं शांति समाप्तं ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥
२४·४ × १०·४ सें० मी०	८	११	३७	अपू०	प्राचीन सं० १८०६	इदं दुष्टरजोदर्शन शांतिः समाप्ता ॥ इदं पुस्तकं चंद्रभट्टस्य ॥ सं० १८०६ शके १६७० कार्तिक व ८ समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०९	७४१०	देव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
४१०	१६४५	देवप्रतिष्ठा देवमूर्ति देवालय निर्माण विधि			दे० का०	दे०
४११	१४९२	देवप्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
४१२	६२०६	देवयाज्ञिक क्रिया निबंध			दे० का०	दे०
४१३	१२५०	देवपूजा			दे० का०	दे०
४१४	४९४६	देवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
४१५	६४१६	द्वादशाब्दादूर्ध्वं मिलन शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·८ × १२·१ सें० मी०	५ २–६	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × १३ सें० मी०	२ १–३	८	३०	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × १०·५ सें० मी०	२४	८	१७	अपू०	प्राचीन सं०१८८६	इति देवप्रतिष्ठा प्रयोगमल सपूर्ण नामगात् १८८६ ।
३४·७ × १३.५ सें० मी०	१३० १–१३०	६	४७	पू०	प्राचीन सं०१९२३	इति दाहादिकर्मकर्तु निर्णयः भर्त्तु-श्राद्धं पचमेह्नि कुर्या रजस्वला पुत्रः पित्रोः प्रकुर्वीत मृताहनि शुचेर्यतः ।। देवयाज्ञिक क्रिया निबंधः समाप्तं ।। सं०१९२३बै० शुक्लः१५ रवीवासरे ।
२४·७ × १६·५ सें० मी०	३	१२	२२	पू०	प्राचीन	
२२·२ × ११ सें० मी०	१९ (५०–६८)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१६ × ६·८ सें० मी०	१	८	३०	पू०	प्राचीन	इति द्वादशाब्दादूर्ध्वमिलन विधि ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१६	३५०२	द्वादशाह			दे० का०	दे०
४१७	२८२७/५	धनदापद्धति			दे० का०	दे०
४१८	१४७८	धनेश्वरी पूजाविधि			दे० का०	दे०
४१९	६४६२	नक्षत्रेष्टिप्रयोग			दे० का०	दे०
४२०	१९३९	नवग्रह पूजा			दे० का०	दे०
४२१	६६०७	नवग्रह मंत्र			दे० का०	दे०
४२२	४५३७	नवग्रहमखप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·८×९ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १७९२	इति द्वादशाहः समाप्तः ॥ शिवः शिवञ्चरी कर्त्तु ॥·······संवत् १७९२ शाके १६५७ फाल्गुन कृष्ण अमावस्यायां भीष्मदेवेन लिखितं श्री ॥
१५·८×९·२ सें० मी०	६½	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पद्धतिधनदाकि संपूर्णम् ॥
१८×११·८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री तंत्रसारे धनेश्वरी पूजाविधि समाप्त । शुभ सम्बत्सरा १९०९ शाके १७७४·········
२५×११·७ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	४९	पू०	प्राचीन (कृमि-कुन्तित)	इदं पुस्तकं गावल्युपनामदादं भट स्वामिकं नक्षत्रेष्टि प्रयोगस्य । पत्र १९ ग्रंथ संख्या ६८४······
२४·८×१२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १९२०	इति नवग्रह समाप्तं सुभमस्तु······ संवत् १९२० मिति कार्तिक वदि ३ गुरौ कालि या पुस्तक राम वनग्रहे ॥
२४·४×१०·५ सें० मी०	१	८	४६	पू०	प्राचीन	इति नवग्रः मंत्र संपूर्णं ॥
२४·१×१३·३ सें० मी०	३९ (१–३९)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १८४०	इति श्री रूपनारायनविधिः नवग्रह मष प्रयोगः समाप्तः ॥ सुभमस्तु ॥······ संवत् १८४० के शालसमये नामपौष सुल्क पक्षे १२ रविवासरे विरसिघपुर ग्रामे पुस्तक लिपितं लीखीत्वा ॥ षेदू तिवारी आपु पठनार्थं ॥ रामयनमः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२३	२१४०	नवग्रहमखप्रयोग			दे० का०	दे०
४२४	४७७२	नवग्रहहोमविधि			दे० का०	दे०
४२५	४६५६	नवग्रहहोमविधि			दे० का०	दे०
४२६	६४१०	नव चंडी होम			दे० का०	दे०
४२७	३६४६	नवरात्रविधि			दे० का०	दे०
४२८	२७४३	नवान्येष्टि			दे० का०	दे०
४२९	३२३६	नवार्णविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२०·५ × १०·५ सें० मी०	३६	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१७८०	
३०·३ × १२·४ सें० मी०	१५ १–१५	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८७७	इति श्री नवग्रह होम सर्वज्ञ विधि समाप्तम् शुभ सम्यत्सरा १८७७ साके १७४२ समयभाद्र शुल्क २ शनिवासरे रघुवर रामेण लेखि ॥
२१·२ × ८·८ सें० मी०	४ (१–४)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति ग्रह होम विधि ग्रहा + + + + सं०१८६० ॥
२१·४ × ७·८ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	४२	पू०	प्राचीन	
२३·६ × १०·८ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति शारद नवरात्र विधिः संपूर्णा × × × × ॥
१६·६ × १३·२ सें० मी०	३ (१–३)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति नवान्येष्टिः ॥
१७·२ × ८·६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति नवार्ण विधिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३०	३०३५	नांदीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३१	२२२१	नांदीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३२	३९२	नांदीमुखश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४३३	३०३७	नांदीश्राद्ध-मातृकापूजन			मि० का०	दे०
४३४	२७५५	नागबलि विधि			दे० का०	दे०
४३५	२७६४	नारायण बलि			दे० का०	दे०
४३६	२५३७	नारायण बलि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·७ × १०·३ सें० मी०	१०	७	३३	अपू०	(खंडित)	
३२ × १३·१ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४६	पू०	प्राचीन सं०१८१८	श्री कृष्णायनमोनमः संवत्सराष्टादश शतेषु १८ द्विनवर्तीवर्तमानेऽस्मिन कार्तिक कृष्णत्रयोदश्यां भौमवासरे इदं लिपिकृतं हरिसिंहात्मजेन हरदयालु नावडोतमध्येस्वस्यपठनकर्मानुसारेणशुभ-मंगलादि भूयात्नः ॥
१६·३ × ११·५ सें० मी०	३९ (१–३९)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति नांदी मुख श्राद्धपद्धति समाप्तम् ॥
१८ × १० सें० मी०	२५ (१–२५)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति संपूर्णं । उमाकांत दीक्षित•••
२३ × १०·५ सें०मी०	११	७	२२	पू०	प्राचीन सं०१९२८	इति शौनक प्रोक्त नागबलि विधानं पूर्णं ॥ संवत् १९२८ माघवद्य ११ चंद्रवासरे। लि० लालजी दुबे अलं स्वार्थं परमार्थं ॥
२३·२ × १०·५ सें०मी०	९	७	२४	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि समाप्तः ॥
२.५३ × १५ ७ सें० मी०	८२ (१–८२)	२०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि कर्म समाप्तम् श्री शुभमस्तु ॥

(सं०सू० २९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३७	४४०४	नारायणबलि			दे० का०	दे०
४३८	११०४	नारायणबलि			दे० का०	दे०
४३९	१८०५	नारायणबलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४०	२५९	नारायणबलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४१	१७९	नारायणबलि प्रयोग				
४४२	१२६६	नारायणविधि			दे० का०	दे०
४४३	३१५/२	नारायणबलि विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·४ × ११·४ सें० मी०	६	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
१९·६ × ५१३ सें० मी०	७६ (१–७६)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१९·६ × १२·४ सें० मी०	५ (१–३, ७–८)	१८	२३	अपू०	प्राचीन	इति नारायणीवल (नारायणबलि) संपूर्णं शुभं ॥
२६ × १७·५ सें० मी०	२४	२४	१८	पू०	सं० १९४५	इति नारायणीबलि पद्धति समाप्ता ॥ श्री ॥ सं० १९४५ भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां बहेडी नगरे ग्रामध्ये विश्रामे तिलक रामेण लेषितं शुभं भूयात् ॥ रामकृष्ण ॥
१३·५ × ८·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि प्रयोगः ॥ एताव-द्विस्तरावेत्तो प्रयोगशक्तौ बौधायनी ॥
२२·६ × १५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	१९	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति······नारायणविधि समाप्तम् संवत् १९२६ ज्येष्ठ शुक्ला ८ ॥
१७·७ × ११·८ सें० मी०	१८ (१–१८)	१५	१२	पू०	प्राचीन सं० १९२१	······नारायणि बलि कार्या इति सत्येश पूजन विधि समाप्तिम् गात् लिषितं पचौलिमहताव सं० १९२१ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४४	१६०८	नित्यकर्म			दे० का०	दे०
४४५	१६१२	नित्यकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
४४६	३२२२	नित्यपूजा-जप विधान			दे० का०	दे०
४४७	४१५७	नित्यपूजा विधि			दे० का०	दे०
४४८	३३९९	नित्यश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४४९	१४८८	नित्य स्नान विधि			दे० का०	दे०
४५०	५८१४	निर्णय चिंतामणि	विष्णुशर्म		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·५ × ८·५ सें० मी०	२	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × १२·७ सें० मी०	४	८	३५	अपू०	प्राचीन	
१३ × ६·२ सें० मी०	४ (२–५)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति नित्य पूजादिजपविधानं समाप्तं उंडात्येकरइस्कपनाम्नां जनार्दनेनलिखितं ॥
३४·५ × १३·३ सें० मी०	३	१४	६०	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	१२	३६	पू०	प्राचीन (सं०१८६०)	नित्य श्राद्धपद्धतिः ॥ संवत् १८६० माघवदि १२ चंद्रे मु० छत्रपुर ॥
२४·५ × १०·५ सें० मी०	७ (१-६,७)	८	२७	अपू०	कृमिन कृंतित	इति नित्य स्नानं समाप्तं ॥
२५ × ६·५ सें० मी०	५१	१०	४२	अपू०	प्राचीन (जीर्णशीर्ण)	······महा जाज्ञिक विष्णुशर्म विरचिते निर्णय चितामणौ साद्धर्षदे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५१	५९९५	निर्णयसार	राघवभट्ट		दे० का०	दे०
४५२	९९०	नीलोदाह विधि			दे० का०	दे०
४५३	६८६४	नेष्ट्रत्व प्रयोग			दे० का०	दे०
४५४	७३४२	नेष्ट्र प्रयोग			दे० का०	दे०
४५५	२९३७/१२	न्यासतिलक	वेदांताचार्य		दे० का०	दे०
४५६	२९३७/१२	न्यासदशक			दे० का०	दे०
४५७	२९३७/१२	न्यासविंशति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	११	४८	पू०	प्राचीन सं०१८९५	इति राघव भट्ट बिरचिते निर्णयसारः समाप्तः ॥ ……… सं० १८५९ शकः १७२३ लिखितं……… ॥
२३ × १०.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति अगस्त्य पुराणे शौनकोक्तनीलो-अर्गविधि (१) समाप्तः ॥ शुभंभवतु ॥…
२३.३ × १०.१ सें० मी०	६ (१–६)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति नेष्टृत्व प्रयोगः समाप्तः ॥
१५.८ × ७.६ सें० मी०	१३ (१, ३–१०, १३–१६)	७	२१	अपू०	प्राचीन	अथ सांख्गायनसूत्रिय नेष्ट्र प्रयोगः ॥
१३.१ × ८ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदांताचार्य विरचितायां न्यास-तिलक संपूर्ण श्री मतेरामानुजायनमः ॥
१३.१ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री न्यासविंशति संपूर्णं ॥
१३.१ × ८ सें० मी०	१४ (४–१७)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति न्यास विंशति संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५८	४७६५	न्युब्जपादजनन शान्ति			दे० का०	दे०
४५९	६५७	पंचक मरण विधि			दे० का०	दे०
४६०	१८६५	पंचकविधान			दे० का०	दे०
४६१	१७३५	पंचकविधान			दे० का०	दे०
४६२	३०४९/६	पंचकविघान			दे० का०	दे०
४६३	२३४५	पंचकविधान			दे० का०	दे०
३६४	८००	पंचकविधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·४ × १०·३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारदोक्त न्युब्जपादप्रभृति जनन शांतिः ॥ है पुस्तकं सदासीव भट दुधोडकरेण लिखितं वाचितार्थं विजई भव ॥ शुभं भवतु ॥
३१·१ × १५·१ सें० मी०	२३ (१–२३)	१३	३६	पू०	प्राचीन	इति पंचकर्मण विधि समाप्तं ॥ लिष्यतं देविसाहाय विद्यार्थी······ नक्षत्रे योगे च शूभगाभवेत् ॥
३०·८ × १३·४ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति पंचकविधान समाप्तं ॥ संवत् १९०२ मासोतम मासे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथौ दशम्यां बुधवासरे ॥
१४·७ × १०·३ सें० मी०	८	१०	२०	पू०	सं०१९०१	इति पंचक विधानं समाप्तं संवत् १९०१ कार्तिक········
१९·७ × १३·१ सें० मी०	१	१९	१६	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × १२·३ सें० मी०	७	९	१५	अपू०	प्राचीन	
२७·९ × १२·५ सें० मी० (सं०सू०३०)	३	१२	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	४४६	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६६	३५११	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६७	४१८९	पंचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६८	६४३५	पंचक शांति			दे० का०	दे०
४६९	७९१	पंचक शांति			दे० का०	दे०
४७०	९०२	पंचकशांति विधि			दे० का०	दे०
४७१	६९७५	पंचगव्य विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ९.२ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४६	पू०	प्राचीन सं०१८१२	(क्रमिकूंतित) इति ब्रह्मपुराणोक्तमस्ति इच्छाचेत्कर्त्तव्यं । अकृतेन दोष । इति पंचक विधि ।
१९.१ × ९.५ सें० मी०	६ (१–६)	९	२२	अपू०	प्राचीन	इति पंचक विधान समाप्तं ॥ (पृ० ५)
२७.८ × १० सें० मी०	३ (१–३)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सामग्री समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१.५ × ९.३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	सं०१८०१	इति ब्रह्मांडपुराणोक्तं पंचक शांतिः समाप्तः ॥......॥ संवत् १८०१ मासे जेष्ठासिते पक्षे द्वादशी मंदवासरे ॥ ....॥
२६.५ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
२४.३ × ९.६ सें० मी०	४ (१,३–५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	शेषं पंचकशांतिवत् ॥
२२.१ × १३.५ सें० मी०	२ (१–२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पंचगव्य विधि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७२	५१८८	पंचगव्य विधि			दे० का०	दे०
४७३	१७९७	पंचपातकनाशन विधि			दे० का०	दे०
४७४	७८६९ / ४	पंचसंस्कार			दे० का०	दे०
४७५	२९५२	पंचायतन पूजा			दे० का०	दे०
४७६	४२४१	पंचीकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७७	७२३८	यतिदेह संस्कार			दे० का०	दे०
४७८	६७९३	परमहंस दीक्षाग्रहण विधि	विश्वेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·९ × १३·२ सें० मी०	१	१२	२४	पू०	प्राचीन	इति पंचगव्य विधि समाप्तम् ॥
१५ × ८ सें० मी०	४	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१०·५ × ७·७ सें० मी०	२ (९९–१००)	७	११	अपू०	प्राचीन	इति पंचसंस्कार संपुर्णं ॥
(१५·१ × १०·८) सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	श्री बासुदेवाय नम इति पुस्तकं समाप्तं ॥
२६·२ × १२ ८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमद्भगवद्गोविंदपादपूज्यशिष्य श्रीमच्छकराचार्य्य विरचितं पंचीकरणं संपूर्णं शुभमस्तु :
१७·९ × १०·४ सें० मी०	४	११	३०	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १३·६ सें० मी०	७६ (१–७६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वेश्वरविरचितं परमहंस दीक्षा ग्रहण विधि: समाप्त: ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७९	३२१६	परायणक्रम विधि मूल वाक्य			दे० का०	दे०
४८०	६४२१	पर्यंकखट्वांगादि भंग (अद्भुतसावार) शांति			दे० का०	दे०
४८१	६००४	पल्लीशरट शांति विधान			दे० का०	दे०
४८२	६५०७	पवित्रेष्टि			दे० का०	दे०
४८३	६४७०	पवित्रेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
४८४	६७०६	पशुबंध प्रयोग			दे० का०	दे०
४८५	३११२	पात्रशोधन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८ × ८·६ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति परायणक्रम विधि मूलवाक्यानि ॥ समाप्तश्चायं ग्रंथः ।
१९·७ × ७·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति अद्भुतसागरे पर्यंकखट्वांगादि-भंग शांतिः समाप्ता ॥······
२७·१ × ११·५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री बसंतराजे गर्गोक्त पल्ली-शरटयोः शांति विधानं संपूर्णम् ॥
२२·५ × ९·२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	प्राचीन	संतिष्ठते पवित्रेष्टिः ॥
२२ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	
२३ × ९.५ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	४१	पू०	प्राचीन	
२२·४११–१ सें० मी ०	४ (१–४)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपात्रे शोधन संपूर्णं शुभम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८६	४७१७	पार्थिव गणेश पूजन पद्धति			दे० का०	दे०
४८७	४३८५	पार्थिवपूजन			दे० का०	दे०
४८८	३०५०	पार्थिव (लिंग) पूजन			दे० का०	दे०
४८९	१५००	पार्थिव पूजनविधि			दे० का०	दे०
४९०	७३८७	पार्थिव पूजा			दे० का०	दे०
४९१	७८२८	पार्थिवपूजा			दे० का०	दे०
४९२	२१८४	पार्थिवपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·७ × ११·७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	६०	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखंडे पार्थिवगणेशपूजन पद्धतिः समाप्ता ॥
१७·७ × १७·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१४	२०	अपू०	प्राचीन	अथ पार्थिवपूजन लिख्यते ॥ ······ (प्रारम्भ) × × ×
१५·३ × ७·५ सें० मी०	४ (९,११–१३)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ७·९ सें० मी०	४	८	२६	अपू०	प्राचीन	
१४·४ × १०·४ सें० मी०	७ १–७ (शेष फुटकलपत्र)	७	१५	पू०	प्राचीन सं०१९२६	···पार्थिवपूजा अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतो × × संमता १९२६ ×
२३·१ × ११·५ सें० मी०	१० १–१०	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२०·५ × ११ सें० मी०	६	९	२५	अपू०	प्राचीन	इति पार्थिवपूजा समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९३	६०२६	पार्थिवपूजा			दे० का०	दे०
४९४	५४७३	पार्थिवपूजाप्रकार			दे० का०	दे०
४९५	१२५४	पार्थिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
४९६	४६५६	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४९७	३४५०	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४९८	२०३९	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४९९	४८४४	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·६ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	६	१९	पू०	प्राचीन	इति पूजा कुर्यात् ॥
३१·२ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	१५	५०	पू०	प्राचीन	इति लिंगपुराणे पार्थिवलिंगोद्यापनं संपूर्णम् ॥
२२ × ११ सें० मी०	८ (६–१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८५७	इति पार्थिवपूजाविधान समाप्तम सं० १८५७ तत्रवर्षे चैत्रमासे शुक्ले पक्षे तिथौ तृतीया ३ भृगु० दिने लिषतं पाडेषु स्यालमे रठीचिरनत्वद मध्ये ॥ शुभमस्तु मंगलं ददात् ॥ श्री०
२१·७ × ८·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति शिवपार्थिव पुजनं समाप्तम् शुमस्तु ॥ इति शिवायनमः ॥ सम्वत् १८६० शाके १७२५ समये जेष्ठ मासे कृष्ण पक्षे द्वि···॥
१३·८ × ७·२ सें० मी०	७ (१–७)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवपूजा विधि
१९·६ × ९·७ सें० मी०	७ (१–७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पार्थिव विधिः समाप्तं शुभमस्तु ······ ॥
२३·६ × ९·४ सें० मी०	९ (२–१०)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री सकल सारोद्धारे पार्थिव पूजा-विधिः समाप्तम् शुभ सम्वत्सरा १८७० साके सालिवाहनस्य गत्समा १७३५ समय श्रावण + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५००	६६८	पार्थिव महापूजा			दे० का०	दे०
५०१	२६००	पार्थिव लिंग पूजन			दे० का०	दे०
५०२	५४४८	पार्थिवलिंग पूजा-उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
५०३	३३०७	पार्थिवलिंगपूजा विधि			दे० का०	दे०
५०४	५६७३	पार्थिव विधान			दे० का०	दे०
५०५	७५८७	पार्थिवार्चन विधि			दे० का०	दे०
५०६	७६३	पार्थिवेश्वर चिंतामणि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × १४.५ सें० मी०	८	१४	३४	पू०	सं०१९११	इति सं० १९११ लिखितं मुरलीधर श्रोतस्सत् श्री ॥
१० × ६ सें० मी०	१६	६	१३	अपू०	प्राचीन	
२१.२ × १०.५ सें० मी०	१५ (१-१५)	९	३२	पू०	सं०१८२७	इति लिंगपूजा उद्यापणं विधि शमाप्तं सिवार्पणः शंवत् १८२७ शाके शौरासै १६९२ बिष्णु विशतिकायां········
२२.६ × १० सें० मी०	१३ (१–२, ४–१४)	९	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	इति लिंग पूजा उद्यापणं विधि समाप्तः सिवार्पणं संवत् १८२८–१६९३ वैशाष वदि ३ गणेसः लिषतं गोविंद पारस दुबे ॥
१५.८ × ९.६ सें० मी०	८ (१–८)	८	१९	पू०	प्राचीन सं०१७८६	इति पार्थिव विधान समाप्तम् ॥ संवत् १९२१ साके १७८६ मिति माघ वदि ५ भौमवासरे × × × × ॥
२६.३ × ११.३ सें० मी०	३ (१–३)	१७	४८	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवार्चन विधिः ॥
२०.६ × १०.७ सें० मी०	४ (१–४)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति तर्पनम् ॥ ॐ नमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०७	७०६२	पार्थिवेश्वरमंत्र विधि			दे० का०	दे०
५०८	३३९	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५०९	५५५०	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१०	५३२६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५११	३३१६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१२	२४८६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१३	४०६१	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·८ × १० सें० मी०	२ (१–२)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
३२१ × ११·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१९५५	इति पार्वर्ण श्राद्ध संपूर्ण शुभ संवत् सो आश्विनमासे कृष्ण पक्षे पौर्णमायां १५ रविवासरे संवत् १९५५ इदं पुस्तकं कबूलचंद शुभमस्तु ॐ नमो भगवते बासूदेवाय ॥१॥
२२·८ × १०·४ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वणश्राद्ध संपूर्ण + + + + + + + अस्तु परिपूर्णमस्तु मार्ग शीर्षे शुक्लपक्षे तु पचम्या रविबासरे लिषत प्रयाग मध्ये तु० गं० पाठ द्विजोत्तमः ॥ स्वार्थ परार्थं शुभमस्तु ॥ संवत् १९०७ ॥
२४·८ + १०·९ सें० मी०	४ (१–४)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२३ × १४·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	१९	अपू०	प्राचीन	इत्येका पार्वण श्राद्ध समाप्तः ।
२०·२ × ९·२ सें० मी०	७ (२–८)	७	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९२२	इति पार्वण श्राद्ध संपूर्ण शुभ संवत्सरे कारतिक् मासे शुक्ल पक्षे ··· संवत् १९२२ इदं पुस्तकं लिप्यते गौरीदत्त शुभमस्तु ओं नमः शिवाय ॥
१७ × १०·३ सें० मी०	२१ (३–२३)	१०	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९६७	इति पार्वण श्राद्धं संपूर्ण संवत् १९६७ भाद्र शुक्ले १० बुद्धे ··· ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१४	१८४४	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
५१५	५५०९	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१६	६३८०	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१७	३८६९	पार्वणश्राद्ध प्रयोगः			दे० का०	दे०
५१८	६११७	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
५१९	६९७६	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
५२०	५७७९	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.६ × १०.३ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्ध पद्धतिः समाप्तम् ॥ ······आसाढ़ मासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ ४ रविवासरे संवत् १८८९ ॥ साके १७५४ ॥ लिखतं कन्हैया लाल ॥
२४.५ × १०.७ सें० मी०	१० (१–१०)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्धं संपूर्ण ।
२०.८ × ९.७ सें० मी०	२ (१–२)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२१.५ × ७.९ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२०.२ × ९ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्धविधिः संपूर्णः ॥
२५ × ९.५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्ध विधिः समाप्ताः॥ × × × × ।
१६.५ × १६ सें० मी०	८ (१–८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	३४२०	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
५२२	५०५४/१५	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२३	४६२४	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२४	१३३२	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२५	७४८	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२६	५६६४	पिंडदानम्			दे० का०	दे०
५२७	१५०८	पिंडदानम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२३·२ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२५	पू०	प्राचीन सं०१८१५	गया श्राद्ध फलमस्तु ॥ सम्वत् १८१५ ॥ भाद्र बहुलोयं पक्षतिथिषु नवमी तथा ॥ रविवार मुहूर्ताया लिखितं हुलाशिस्तथा ॥
१६ × ७·८ सें० मी०	१४½	६	२४	पू०	प्राचीन सं०१८६६ शाके १७६१	इति पार्वणि श्राद्धपद्धतिः समाप्तः शाके १७६१ माघ सुदि ६भौमेकः ॥
२६·५ × ११ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति पार्वण श्राद्ध सम्पूर्णम् स०१६१७ अर्धमासे कृष्ण षष्टां शनोवासरे श्रीः श्रीमतिमिश्रा शिवलालात्मजेनलल्लुरामेण पार्वण श्राद्ध पद्धति लिपिकृता ······
२१·५ × १० सें० मी०	१३ (१–१२, १४)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८७२	इति पार्वणि श्राद्ध पद्धित संपूर्ण समाप्तं ॥ संवत् १८७२ मासोतमासे आश्विन मासे कृष्णपक्षेअष्टम्यां भौमवासरे लिष्यतं मिश्रकुवर जी के प्रताप सेवि लिषतं मोतिराम जी स्वपठनार्थं ॥ भो करेरि मध्ये गंगा तटे शुभमस्तु ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
२७ × ११ सें० मी०	२	६	३२	पू०	प्राचीन सं०१६०७ शाके १७७२	इति श्री पार्वन श्राद्ध संपूरणम् शुभ संवत् १६०७ शाके १७७२ शमये-आश्विन मासेकृष्ण पक्षे द्वादश्यां बुधवासरे लेखि राम दिहल विप्रेण पठनार्थक पुस्तकी मिदं किं ग्रामस्य वासि च रोहुया ग्रामस्य न वापुरे गंगायां मुत्तरे चैव मेक योजन संस्थितम् ।
२५·३ × ६·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	४५	पू०	प्राचीन	
२१·५ × ११·५ सें० मी०	३	७	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२८	१२८२	पिंडदानम्			दे० का०	दे०
५२९	३५५५	पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
५३०	७०२८	पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
५३१	६५२८	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३२	६५३२	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३३	६५३३	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३४	६५२६	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	१२	अपू०	प्राचीन	
२३ × १४ सें० मी०	१८	२०	२२	अपू०	प्राचीन	
१९·२ × १३·८ सें० मी०	१५ (४–१८)	१४	१५	अपू०	प्राचीन	
२०·४ × ८·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	
१५·३ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पिंडपितृयज्ञः ॥
१९·५ × ७·३ सें० मी०	२ (१–२)	८	४५	पू०	सं० १८३४	इति पिंडपितृयज्ञः समाप्तः ॥ संवत् १८३४ श्रा० कृ० ३ र० ॥
२१·३ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति पिंडपितृयज्ञः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३५	५७५७	पितृकर्म			दे० का०	दे०
५३६	६४४१	पिपीलिका शांति			दे० का०	दे०
५३७	७३१२	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३८	४२५४	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३९	४९६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४०	६९९०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४१	७७०४	नांदीश्राद्ध प्रयोग पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × ११·८ सें० मी०	६ (१–६)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री संहितायाम्पाठे पितृकर्म्म संपूर्णम् ॥
२२·४ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३०	पू०	सं० १६६९	॥ एक खंडम् ॥ गोविंद ज्योतिर्विसुत माधवेन लिखितेयं शांतिः ॥ संवत् १६६९ जैष्ट शुद्ध १५ बुधे ॥
२५·५ × १०·९ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२·४ × ८·३ सें० मी०	१७ (२–१०, १२–१९)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति पुण्याहवाचनं संपूर्णं ॥·········
१६·७ × ८·७ सें० मी०	१२ (१, ३–५, १२, १५–१७, १९–२२)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१९·६ × ८ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४२	५३९३	पुत्तलविधान			दे० का०	दे०
५४३	४३८८	पुत्तलविधान			दे० का०	दे०
५४४	७५२०	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४५	७०७७	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४६	६४१६	पुर्नलिङ्गप्रतिष्ठापन-विधि			दे० का०	दे०
५४७	४३५७	पुरश्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०
५४८	५३९	पुरश्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६·५ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	सं० १६१२	इति पुत्तलविधानं समाप्तं···लिपितं दत्तरामेण पठनार्थं···संवत् १६१२
३२ × १२·४ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४२	पू०	सं० १६०६	इति पुत्तलविधानंसमाप्तम् सं० १६०६ लिखितं पचौली महतावसिंह स्वात्मपठनार्थं ॥
२३ × १०·६ सें० मी०	५ (१–५)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इत्यनंतदेव कृतपुनराधेयं समाप्तमगमत् ॥
२२·८ × १०·६ सें० मी०	२ (१–४)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२१·१ × ६·५ सें० मी०	१	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति बौधायन सूत्रोक्त पुनर्लिंग प्रतिष्ठापन विधिः समाप्ता ॥ सदाशिवभट्ट कवीश्वरेण लिखितं पुस्तकं ॥···
२६·१ × १०·५ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य जानकीनाथं देवेंद्राश्रमधीमता क्रियतेमंत्रचंद्राणांपुरश्चरणचंद्रिका ॥ (प्रारम्भ) × × × ×
२३·८ × १० सें० मी०	४८ (२–४६)	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री देवेन्द्राश्रमकृतावै पुरश्चरणचंद्रिकासमाप्त शुभमस्तु श्रीरस्तु विद्याऽस्तु श्रीगणेशदेव ·· ······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४६	४३८३	पुण्य स्नान विधि			मि० का०	दे०
५५०	२६०८	पूजनक्रम			दे० का०	दे०
५५१	५३८४	पूजनविधि			दे० का०	दे०
५५२	४०६३	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५३	२८३	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५४	२६६२	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५५	४६६०	पूजाप्रकार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·३ × ११·३ सें० मी०	७ (१–७)	७	३२	पू०	सं०१९६६	इति पुष्य स्नानं ॥ सं० १९६९ पौष कृ० रवि वासरे वाशिकरो पाह्व काशिनाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२०·९ × १४·१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२५	पू०	प्राचीन सं०१९१७	इति पूजनक्रम समाप्तिमगात् श्री विक्रम गताब्दान् १९१७ मिथुनार्के ति ? ५ रविवासरे ।
२६·८ × १३·३ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
१३·६ × ११·३ सें० मी०	१२	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१८·५ × १३·५ सें० मी०	१० (२–११)	९	१७	नपू०	प्राचीन	
१७·५ × ८·७ सें० मी०	१३ (४–१६)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति पूजापद्धति पटल समाप्तं ॥
२७·६ × ११·५ सें० मी०	२ (१–२)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे पूजा - प्रकार: ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५६	५३५६	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५७	५४०५	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५८	५२१	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५९	२१४८	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५६०	१७०५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६१	६८३८	पूर्णमासप्रायश्चित्त	महादेव		दे० का०	दे०
५६२	६४२९	पूर्त्तकमलाकर	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	९	१०	११
१६·४ × १०·२ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति पूजाविधि समाप्तोयम् ॥
१६·६ × १३·८ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२१	पू०	प्राचीन	कल्पसुत्रोक्त प्रकारेण पुजा विधिः समाप्त ॥
३० × १४·८ सें० मी०	३० (१–२१, २३–३२)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	३[illegible]	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ११ सें० मी०	१०	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति पूतनाविधान मालायां स्कंद पुराणोक्तं भामिनीपीड़ा शमन विधानं संपूर्ण ॥ श्री··· ··· ··· ··· ··· ···
२२·१ × ८·६ सें० मी०	२८ (१–२)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति महादेव सोमयाजि विरचिते सत्याषाढीयहिरण्यकेशिसूत्र प्रयोग-रत्ने दर्शपूर्णमास प्रायश्चितानि समाप्तानि ॥
२२·३ × १०·३ सें० मी०	४८ (१–४८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमीमांसकरामकृष्णभट्टात्मज महामहोपाध्याय कमलाकर भट्टकृत ऐंद्रीमहाशांति सहितः पूर्त्तकमलाकरः समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६३	७४	पूर्त कमलाकर (जलज्ञानोपाय)	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
५६४	२५४	पूर्त कमलाकर	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
५६५	६५३०	पोतृत्व प्रयोग			दे० का०	दे०
५६६	६५२७	पोतृ प्रयोग			दे० का०	दे०
५६७	६४६३	पौंडरीक हौत्र			दे० का०	दे०
५६८	६४६९	प्रज्ञाकामनयेष्टि			दे० का०	दे०
५६९	२९५५	प्रतिष्ठा कर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × ११ सें० मी०	१२१ १–१२१	११	४०	पू०	प्राचीन	इति भट्टकमलाकर कृतो जलज्ञानोपायः॥
२६·२ × ११·२ सें० मी०	१३८	११	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मीमांसक रामकृष्ण भट्टात्मज महामहोपाध्याय कमलाकरभट्ट कृत ऐंद्री महाशांति सहितो राज्याभिषेक प्रयोगश्च पूर्त्त कमलाकर समाप्तः सं० १८६४ मिती श्रावण सुदि १० शुक्रेका का राम राम राम
२०·४ × ८·४ सें० मी०	८ (१–८)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमस्य पोवृत्व प्रयोगः समाप्तः॥
२१·३ × ७·८ सें० मी०	४ (१–४)	११	४२	पू०	प्राचीन (सं०१६४३)	इति संस्थाजपः । वतीर्येन निष्क्रम्यं ॥ संतिष्ठते ज्योतिष्टोमो ज्योतिष्टोमः॥ संवत् १६४३ श्रावण वदि............
२२·५ × १०·४ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं०१७९५)	समाप्तं पौंडरीक हौत्रम् ॥ संवत १७९५ पौष कृष्ण १ शनौ लिखितं ॥
२०·७ × १०·३ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	पू०	प्राचीन (सं०१७६०)	लिखितमिदं रामहृदस्थ नीलकंठेन संवत् १७६०
२६·७ × १५·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन (सं०१९२५)	इति प्रतिष्टानुक्रमः ॥ लिख्यते गणेश शुक्लेन मार्ग वदी ११ संवत् १९२५

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७०	२६८७	प्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०
५७१	३३२८	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
५७२	४४०२	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
५७३	१६३१	प्रतिष्ठामयूख			दे० का०	दे०
५७४	७३	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
५७५	६२६	प्रतिष्ठामयूख	भट्टनीलकंठ		दे० का०	दे०
५७६	६१५/३	प्रथम स्नानविधि वाजसनेयिनाम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२५·१ × ९·२ सें० मी०	११	१०	४९	अपू०	प्राचीन	
२९ × ९·९ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२४	इति श्री मीमांसकभट्ट नीलकंठकृते भास्करे प्रतिष्ठामयूखोष्टमः संपूर्ण-मिति जेष्टवदी १३ बृहस्पतिवार संवत् १९१४ ॥
२८.४ × १२·३ सें० मी०	२७ (३–२९)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकरट्टात्मज भट्ट नीलकंठेन कृते भास्करे प्रतिष्ठा मयूखोष्टमः ॥
२८·६ × १४·३ सें० मी०	८	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × १३ सें०मी०	३१ (१–३१)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं०१८३७	कृमि-कुन्तित । इति श्री सेंगर वंश-वतस श्री महाराजधिराज भगवंत देवाधिष्ट मीमांशरक भट्ट शंकरात्मज नीलकंठ कृते प्रतिष्ठामयूखो नवमः ॥९॥··· ···संवत् १८३७ शाके··· मासोत्मासे फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे शुभ··· ···सरे लिखितं हरशुषराय मेरठ नगरे ॥ शुभं ॥ नोवतराय पाठार्थ : ॥ शुभं ॥
२५·८ × ११·५ सें०मी०	३७	१२	२५	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमद्विश्वामित्र वंशावतंस श्री महाराजाधिराज मीमांसक शंकर भट्टा-त्मज भट्टनीलकंठेन कृते भगवंत भास्कर प्रतिष्ठा मयूखोष्टमः ॥
१९½ × ११½ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० ३४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	३८२१	प्रदोष पद्धति			दे० का०	दे०
५७८	४१५४	प्रधानपुरुष घटस्थापन पूजा			दे० का०	दे०
५७९	९६	प्रपन्नकंठाभरण	श्रीरामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
५८०	४५९३	प्रपन्नकंठाभरण	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
५८१	६७८४	प्रयोगचिंतामणि	अनंत भट्ट		दे० का०	दे०
५८२	६६६७	प्रयोगपरिजात (षोडश कर्मकांड समावर्तन-प्रयोग)			दे० का०	दे०
५८३	३६३	प्रयोग रत्न (षोडश कर्मपद्धति)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२५·५ × ६·८ सें० मी०	१३ (२–१४)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२५·४ × १५·२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति प्रधानपुरुष पूजा समाप्ता ॥
२१·५ × १० सें० मी०	२१० (७–२१०)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१८६६	समाप्तेयमानुक्रममणिका ॥ संवत् १८६६ शाके १७३१ ज्येष्ठे मासि भौमवासरे नवम्यां तिथौ समाप्तोयं ग्रंथः ॥
३६·२ × ११ ५ सें० मी०	१०२ (१,१,१,१–१३,१३,३०–६८,६८,६९–७१,७१,७२–७५,७७–७९,१०१–१०२,१३१, १३४,१३६, १३७,१३७, १३८–१५७, १५७,१५८–१८६,१८८–१८९)	१४	५४	अपू०	प्राचीन	श्री मद्रानप्रसाद मिश्र विरचिते प्रपन्न-कंठाभरणे सर्व्वेश्वरेश्वराश्रयणानन्यौ-त्कर्ष्यनाम षष्ठं विरचनं ॥
२८·५ × ११·६ सें० मी०	१६१ (१–१६१)	११	४२	अपू०	प्राचीन	इत्यनंत भट्ट विरचिते श्री रामकल्प-द्रुमांतर्गत संस्कारकांडे प्रयोगचिंता-मणौ वृद्धि श्राद्धं ॥······ ······ (पत्रसंख्या–१२)
२२·७ × १० सें० मी०	४ (१–४)	११	५२	पू०	सं०१७६६	संवत् १७६६ मिति भाद्रपदवदि ९ नवमी वृहस्पतिवार ॥ + + +
२३·७ × १०·१ सें० मी०	४७ (२–४८)	९	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८४	२२५	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८५	६३७६	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
५८६	९९९	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
५८७	४७५१	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८८	७००३/२	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५८९	३६९१	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५९०	४९५	प्राणप्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०·३ × ८ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री सदाशिव दीक्षित् सुत काशि-दीक्षित प्रयोगरत्ने नामकरण प्रयोगः । अथ पर्यकारोहणं ॥ तत्र गाम करण… ध्रुवक्षिप्रनक्षत्रादि युक्ते पुन्न काले ।
२१·७ × १० सें० मी०	६१ (२-३,७-८, १२,१४-६६)	१४	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्यज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनुनादीक्षितानंतेन सर्वोपकाराय समंत्रक विरचिते प्रयोगरत्ने प्रायश्चित्तांतः समाप्तः ॥…… … …
२२ × १०·७ सें० मी०	२४ (१-१४, १६-२८)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
१७·३ × १०·३ सें० मी०	५६ (१–५६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री सदाशिव दीक्षित सुत काशी दीक्षित कृते प्रयोगरत्ने अन्नप्राशन प्रयोगः ॥ + + + + ॥ (पृ० ४६)
१२·३ × ८ सें० मी०	४ (६–६)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठायां संपूर्णं ॥
२१·४ × ६·८ सें० मी	५	५	११	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × ११·६ सें० मी०	४० (१–४०)	१२	५१	पू०	प्राचीन	श्री प्राणप्रतिष्ठोंदितनिगमवचोभिर्य्युतैः पाञ्चरात्रै श्रीमद्रामप्रसाद प्रणतविरचिता पद्धतिः पूर्त्तिमाप्ता ॥ समाप्तेयम्पद्धतिः समस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९१	२१४५	प्राणप्रतिष्ठामंत्र			दे० का०	०
५९२	४६७८	प्रात:कालपूजाविधि			दे० का०	दे०
५९३	७७४८	प्रातः संध्या			दे० का०	दे०
५९४	७७५३	प्रातः संध्या			नि० का०	दे०
५९५	५८३६	प्रातः संध्या			दे० का०	दे०
५९६	५७७६	प्रातः संध्या			दे० का०	दे०
५९७	९१२	प्रायश्चित्तमुक्तावली	दिवाकरभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × १२·८ सें० मी०	१ १/२	११	२३	पू०	प्राचीन	इति प्राणप्रतिष्ठा समाप्तम् ।
२४·८ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	१३	५५	पू०	प्राचीन	इति प्रातःकाल पूजाविधिः ॥शुभमस्तु ॥
१४·५ × ८·४ सें० मी०	२० (१–२०)	६	१४	पू०	शके १६५३	इति प्रातःसंध्या समाप्तः ।··· शके १६५३······ ॥
१६ × १० सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२०	पू०	आधुनिक	
१६·५ × १० सें० मी०	४ (१–४)	११	३५	पू०	प्राचीन	···संवत् १८७४ ॥शाके १७३८॥ प्रथम श्रावण सुदि ८ चद्रे समाप्तोयं···
१६·४ × ८·४ सें० मी०	९	७	१९	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × ११·४ सें० मी०	६	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज दिवाकर विरचितायां प्रायश्चित मुक्तावल्यां सर्व साधारण प्रायश्चित्त प्रयोगः ॥६॥

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९८	२३७२	प्रायश्चित्तविधि			दे० का०	वे०
५९९	७७०८	प्रासादमूर्तिप्रतिष्ठान्वाधान (प्रासाद नव कुंडी प्रयोग)			दे० का०	दे०
६००	२८५४	प्रेतदीपिका			दे० का०	दे०
६०१	४९८९	प्रेतप्रकाशिका	उद्योतमणिमिश्र		दे० का०	दे०
६०२	३८२८	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०३	९	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०४	७०८	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·१ × १०·७ सें० मी०	१६ (२-६, ८-६, १३, १६, १६-२५)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ६·४ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × ११·८ सें० मी०	४० (१-११, १३, १३–३१, ३३–४१)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२६·३ × १०·८ सें० मी०	१६ (२,४,६–२२)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं०१६१४	इति त्ती मत्पंडितद्योतमणि मिश्र कृतायां प्रेत प्रकाशितायां निरग्नि ··· ··· संवत् १६१४ वैशाख सुदि ६ बुधें लिखितं पं श्री नायक रामगोपाल ॥
२८ × १८ सें० मी०	३१ (१–३१)	२१	१८	पू०	सं०१६३६	इति सपिंडी श्राद्ध संपूर्णम् । इति श्री प्रेत मंजरी संपूर्णम्··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···संवत् १६३६ मिति जेष्ठ सुदी २ वार शुक्रवार कु संपूर्ण हुई ।
२६·५ × १४ सें० मी०	२३	२३	३३	पू०	प्राचीन	
२३·३ × १०·८ सें० मी०	११	११	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति प्रेत मंजरी समाप्ताः ॥ संवत् १८८८ अधिक वैशाख शुद्ध २ गुरौ लिखितं स्वार्थं परारार्थ ॥ शुभं

(सं०सू०३५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०५	३७४०	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०६	२१७९	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०७	४१०९	प्रेतमुक्तिदा पद्धति	क्षेमराम		दे० का०	दे०
६०८	४०००/३	बलदेवाह्निक			दे० का०	दे०
६०९	२८०१/४	बलिवैश्वदेवविधि			दे० का०	दे०
६१०	६५०४	बृहस्पतिसव हौत्र			दे० का०	दे०
६११	४८७०	बोधायनोक्तविनायक-शांति				दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८×१३२ सें० मी०	३८ (४–४१)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	
२७.८×१४.१ सें० मी०	३६ (१-१९ २१-३२ ३२-३६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.५×१०.७ सें० मी०	१५ (१–१५, १५–१५)	१२	४७	अपू०	प्राचीन	श्री क्षेमरामेण कृतेयं प्रेतमुक्तिदा समाप्ता शुभं भूयात् ।। संवत् १८३३ शाके १६९८ मलिमासे कृष्णपक्षे रविवासरे ।।
१८.७×१५.४ सें० मी०	६ (४–९)	१३	२२	अपू०	संवत् १९१८	इति श्री हरिवंशे वलदेवान्हिकं नारायण समष्टि रूपस्तवनं आत्मरक्षाकरणं १६४ ऊँ तत्सत् संवत् १९१८ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ लिखितमिदं पुस्तकं मुरलिधर आत्मपठनार्थं ।।
१७.५×१३.५ सें० मी०	२	११	२०	अपू०	प्राचीन	
२३.३×८.५ सें० मी०	८ (१–८)	८	३३	अपू०	सं०१७८२	इति बृहस्पतिः सवः समाप्तः ।। संवत् १७८२ मार्गशीर्ष शुद्ध ८ बुधे लिखितं जय राम खेर्डा कामेश्वरस्य ।।
२५.५×१०.८ सें० मी०	४ (१–४)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रतापनारसिंहाख्ये संस्कार प्रकाशे बौधायनानुसारीविनायक शांति प्रयोगः समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१२	१४३३	व्रतबंध			दे० का०	दे०
६१३	१४९६	ब्रह्मत्रर्यव्रतम् पद्धति			दे० का०	दे०
६१४	६५२४	ब्रह्मतत्वप्रयोग			दे० का०	दे०
६१५	४५८०	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१६	६३६४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१७	६३६६	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१८	६३७०	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८ × ११·५ सें० मी०	१४ (१–१२, १६–१७)	८	१४	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × १०·३ सें० मी०	२४ (२–२५)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२१·३ × ८·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मत्वं ॥ अपश्यंगोपामनि पद्यमानं ॥
११·५ × ६·६ सें० मी०	५ (१–४, ६)	११	१४	अपू०	प्राचीन	अत्मना समस्त पापक्षयार्थं देवरषिमुष ॥ पित्रु प्रीत्यर्थं ॥ ब्रह्मयज्ञमहं करिष्ये ॥ (पत्र-संख्या — १, प्रारंभ)
१६·५ × १०·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मयज्ञदेवऋषिमनुष्यपितृतर्पणं समाप्तं ॥ शुभ भूयात् ॥ श्रीरस्तु ॥
१७·७ × ६ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × ६·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१८	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१९	४४७४	भागवतपूजा विधान			दे० का०	दे०
६२०	४४६०	भुवनेश्वरी शांतिः			दे० का०	दे०
६२१	४०४९	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
६२२	७००३/२	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
६२३	१२१०	भैरव दीपदान			दे० का०	दे०
६२४	२००५	भैरवपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६२५	२८७१	भौमपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर-संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × ११·७ सें० मी०	३ (१–३)	९	५०	अपू०	प्राचीन	चिंतामणि फलप्रदां श्री भागवताभिधां सप्ताह यज्ञ नियमेन श्रवणमहं करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥··· (पत्र संख्या २)
२४·५ × १०·५ सें० मी०	८	९	३७	पू०	प्राचीन	इति भुवनेश्वरी शांतिः
२१·५ × ९·५ सें० मी०	२ (१–२)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति भूतशुद्धिः ॥
१२·३ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	आधुनिक	इति भूतशुद्धि संपूर्णं शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥ ब्रह्मार्पण मस्तु ॥
२० × ११·५ सें० मी०	६ (५–९,११)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२०·२ × १०·८ सें० मी०	१०	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति भैरवपूजा पद्धतिः ।
१६·२ × ८·४ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२२	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२६	४४६१	भौमपूजा			दे० का०	दे०
६२७	५३८५	भौमपूजा विधि			दे० का०	दे०
६२८	१३०९	मंगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६२९	७४७०	मंगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६३०	६०३७	मंडपपूजा			दे० का०	दे०
६३१	१३५४	मंडपपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३२	९८१	मंडपपूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·५ × ८·८ सें० मी०	३ (१,४,५)	६	२४	अपू०	आधुनिक	इति भौमपूजा ।
१९·६ × ८·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	२०	अपू०	प्राचीन	
३० × १३·५ सें० मी०	२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१९·१ × ११·२ सें० मी०	२	२१	२०	अपू०	प्राचीन	
२४·४ × ९·४ सें० मी०	७ (१–७)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति मंडपपूजा ॥
२४·३ × ११ सें० मी०	३	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × ११·५ सें० मी०	६ (१–५,७)	९	२८	अपू०	प्राचीन	इति मंडपपूजन विधि समाप्तं–शुभमंगल ददात् ॥

(सं०सु० ३६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३३	७१३५	मंडलदेवतापूजन (सर्वतोभद्र-लिंगतोभद्र-देव स्थापन-पूजन)			दे० का०	दे०
६३४	३१०६	मंत्रदीक्षा			दे० का०	दे०
६३५	७१४०	मंत्रदीक्षासिद्धि विधि			दे० का०	दे०
६३६	२६६३	मंत्रपूजा होमविधि (नारद पंचरात्र)			दे० का०	दे०
६३७	३८४६	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
६३८	७१५९	मंत्ररत्नावलीयंत्रपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३९	५८५१	मंत्रला			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति मंडलदेवताः पूजनंसंपूर्णं ॥
२१·६ × १०·८ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२७	पू०	प्राचीन	
१५·६ × १०·६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पन्चरात्रे मंत्रपूजा होमविधि. ॥
२३·५ × ११·४ सें० मी०	७ (१, ३–८)	६	३१	अपू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री मंत्रमुक्तावल्यां कृष्ण नारद संवादे दीक्षाविधाणं पचमोध्यायः संपूर्णं शुभमस्तु मंगलददात् संवतु १९०६ साके १७७३ ...... ॥ शेषं पंचकशांतिवत् ॥
११·४ × ७·२ सें० मी०	३ (१–२, ११)	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमंत्ररत्नावल्यांयंत्रपूजनविधानमेकत्रिंशोल्लासः + + + + +
२३·३ × १०·६ सें० मी०	४	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४०	२६६६	मंत्रविधि			दे० का०	दे०
६४१	७८६०	मठमंडपोत्सर्ग			दे० का०	दे०
६४२	१७५१	महादाननिर्णय	दामोदर		दे० का०	दे०
६४३	६३६०	महान्यास	माधव भट्ट		दे० का०	दे०
६४४	३६६६	महामृत्युंजय जप पद्धति			मि० का०	दे०
६४५	१५३८	महामृत्युंजय मंत्र			दे० का०	दे०
६४६	७७३३	महामृत्युंजय जपविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·५ × १० सें० मी०	४ (२–५)	८	२५	अपू०		इति मंत्र विधिः समाप्तः ॥
२४·५ × १०·१ सें० मी०	६५ (१–६५)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२७·७ × १०·५ सें० मी०	४८	८	४४	अपू०	प्राचीन	
१४·७ × ७·१ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२६	पू०	शके१६७४	इति न्यासः संपूर्णः । श्री कृष्णार्पण-मस्तु शके १६७४ माघ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्भृगुवासरे । कवीश्वरोपनामक मुकुंद भट्टस्य सूनुना माधवेन लिखितं ॥
१६·८ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामृत्युंजय पद्धतिस्समाप्ता मंत्रोयथा······
१७·२ × ८.६ सें० मी०	३ (१–३)	५	१६	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१८३०	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४७	४६९४	महालक्ष्मी पूजन			दे० का०	दे०
६४८	३१३५	महालक्ष्मीव्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
६४९	३०३४	महालक्ष्मीव्रत-पूजन विधि			दे० का०	दे०
६५०	६८६३	महाव्रत हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
६५१	७६१	महाषष्टी पूजा			दे० का०	दे०
६५२	३२४६	महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६५३	६५९१	महिम्नोक्त लिंग-प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३०.५ × १७.५ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२४	पू०	सं०१६७६	इति श्री लक्ष्मी जी की आरती समाप्तम् ॥ पं० लालमन दास लिपि कृतं सं० १६७६ मिति वै० शु० ५ भौमवासरे चाँदपुर निवसि ॥
२३.८ × १०.३ सें० मी०	७ (१–७)	१०	५२	पू०	प्राचीन	इति महालक्ष्मी व्रतोद्यापनं समाप्तं ॥
२४ × १०.४ सें० मी०	७ (१–७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × ६.८ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४१	पू०	प्राचीन सं०१७६१	इति आश्वलायनोक्तं महाव्रतं ॥ संवत् १७६१ श्रावण कृष्ण २ चंद्रे लिखितं ॥
२४.५ × १० सें० मी०	७ (२–८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ७ ७ सें० मी०	१० (२–११)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा समाप्तं ॥
२५ × ११.४ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३३	पू०	सं०१६३६	इति महिम्नात्मक लिंगप्रतिष्ठा स्थापन विधिः समाप्त। । संवत् १६३६ मि०···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५४	३८९६	महीदानविधि			दे० का०	दे०
६५५	२३५६	माघउद्यापन विधि			दे० का०	दे०
६५६	३०१९	मातृका न्यास			दे० का०	दे०
६५७	५४०६	मातृश्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६५८	६३९६	(जगदंबाया:) मानस पूजा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६५९	५९४६	मानसपूजा			दे० का०	दे०
६६०	३३४८/४६	(श्रीराम) मानसीपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·४ × ९·७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इतिमहीदानं ॥
६३ × १८·५ सें० मी०	१ (खर्रा)	६४	२३	पू०	प्राचीन सं०१८२०	इति श्री नारद ब्रह्म सवादे माघनुद्यापन विधि संपूर्ण समाप्तं ॥ संवत् १८२० माघमासे त्रियोदशी १३ बुधदिने······ शुभमस्तु ॥ मंगल ददातु ॥
२३·५ × ८·८ सें० मी०	६ (१–६)	७	२८	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति केशवादि मातृकान्यासः । स्वामिचरणारविंदयोरस्तु ॥ संवत् १८२८ शके १६९३ ज्ये०कृ०११ भृगोर्वासिरे ॥ ······························
२४·८ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३०	पू०	सं०१९१३	इति मातृश्राद्ध समाप्तम ॥१॥ संवत् १९१३ भाद्रपद शुक्ल पक्षे च प्रतिपद्यां वुधवासरे लिषितं दत्त रामेण घोघडी पुर मध्ये ॥ स्वहेतवे ॥ शुभंभूयात् रामायानमः ।
२३·५ × १०·२ सें० मी०	९ (१–९)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छं(क)राचार्य विरचिता जगदंबायाः मानसपूजा समाप्ता ॥
२४ × ११·८ सें० मी०	५ (१–५)	९	३३	पू०	प्राचीन	इत्यगस्त्य संहितायां परमरहस्ये मानसीपूजा कथन नाम त्रयस्त्रिशोध्य।यः ३३ ······ ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी० (सं०सू०३७)	१३ (१–१३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त संहितायां परमरहस्ये श्रीराम मानसीपूजाविधिपंचत्रिशोऽध्यायः श्रीराम··· ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६१	१६१२	मानसोपचार पूजा	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
६६२	६३४६	मालासंस्कार	चिरंजीव भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
६६३	७७६६/२	मालासंस्कार			मि० का०	दे०
६६४	२८६३	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
६६५	३३०६	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
६६६	६७४७	मालासंस्कार विधि			दे० का०	दे०
६६७	५७५२	मालासंस्कार विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब.	स	द	९	१०	११
२८·२ × १५·५ सें० मी०	४ (१–४)	१५	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमछ्री शंकराचार्य कृतामानसोपचार पूजा समाप्तम् ॥ शुभममस्तु ॥
२४ × १०·५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति चिरंजी भट्टाचार्य कृते सर्वार्णये माला संस्कारः ॥
२०·८ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति माला संस्कारः ॥
१६·७ × ७·७ सें० मी०	५ (१–५)	९	१६	पू०	प्राचीन सं०१८३९	इति रुद्र यामले तंत्रे माला संस्कार संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ संवतु १८३९ ॥ मुत्रामछत्रपुरः लिषितं लल्लू अवस्थी ॥
२०·३ × ११·४ सें० मी०	३ (१–३)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति माला संस्कार संपूर्ण ॥
२४·६ × १०·६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति माला विधि समाप्ता··· ··· ···
१८·५ × ८·२ सें० मी०	१	८	३५	पू०	प्राचीन	इत्थं मालानां संस्कार्य्यं यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपेदिति ॥ मालानां संस्कारविधिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६८	३०२६	मुंडनसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
६६९	६४२६	मूर्तिदान विधिः			दे० का०	दे०
६७०	६४१५	मूर्तिप्रतिष्ठा	सदाशिव भट्ट		दे० का०	दे०
६७१	४८८३	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			मि० का०	दे०
६७२	२५०५	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६७३	४७७८	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७४	३१०७	मूलशांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.७ × ९.५ सें० मी०	५	१२	२५	अपू०	प्राचीन	
२२.६ × १०.३ सें० मी०	१	८	३६	पू०	सं० १८१३	इति मूर्तिदान विधिः ॥.........संवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
२२.२ × ९.२ सें० मी०	७ (१-७)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इत्यागमोक्ता मूर्तिप्रतिष्ठा ॥...... चलाचल प्रतिष्ठायाः पुस्तकं लिखितं सदा शिव भट्ट कवीश्वरेण ॥......
२८.८ × १४.१ सें० मी०	१० (१-१०)	१३	३२	पू०	सं० १९५७	इति चलाचल मूर्ति प्रतिष्ठा विधिः समाप्तः संवत् १९५७ माघ मासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ एकादश्यां बुधवारान्वितायां लिखितं............॥
२०.६ × १० सें० मी०	५ (१६-२०)	१२	५२	अपू०	प्राचीन	
३२.७ × १३.४ सें० मी०	७ (१-७)	११	४६	पू०	सं० १९०६	इति श्री मूलशांति समाप्तः संवत् १९०६ ॥
२२.५ × ८.८ सें० मी०	२	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री सर्व शास्त्रोद्धारे मूल शांतिकं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७५	३७३५	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७६	३७१४	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७७	४५५	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७८	८२१	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७९	२४२६	मूलशांति			दे० का०	दे०
६८०	७३२	मूलशांति कांडिका	कामदेव दीक्षित		दे० का०	दे०
६८१	२८४२	मूलशांतिविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·५ × ११·४ सें० मी०	८	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मूलाद्यर्क्षे स्नान कर्म विधिः लिखतं मुरलिधर + + + + + ॥
२३·५ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १९५०	इति श्री मूल सांत विधायसपुर्नं ॥शुभं। मिती द्वितिय आषाड़शुक्ल १४ गुरवासरे संवत् १९५० ॥ …………
२४·४ × ११ सें० मी०	६	११	३२	पू०	प्राचीन सं० १९९६	इति मूलशांति कर्त्तव्यता ॥ १९९६ वरषे माघवदिदशमी बुधवासरान्विता जां तत्र वदरी मिश्रण आलेषि ॥१॥ शुभमस्तु ॥१॥
१९·७ × ९·५ सें० मी०	९ (१–९)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति विश्वप्रकाशे मूलजनन शांत समाप्तः
२०·१ × ११·१ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १८६२	पुंतग लिष्यतं जमनादास सं० १८६२ शाके १७२७ ॥
२३·१ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री दीक्षित विश्वामित्रात्मज दीक्षित कामदेव कृता मूल शांति कांडिकायाः पद्धति समाप्ता ॥
२०·९ × १०·९ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति मूल शांति विधि समाप्तः ॥ शुभमस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८२	२०६०	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८३	२३१०	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८४	२६८६	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८५	६७१४	मृगारेष्टि प्रयोग			दे० का०	दे०
६८६	६५१२	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
६८७	६५२२	मृगाष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
६८८	६४६६	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·४ × ८·८ सें० मी०	९ (१–९)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × ८·६ सें० मी०	१२ (३–१४)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मूलशांति विधिः समाप्तः श्री शिवायनमः श्रीकृष्णायनमः संवत् १९३५ राम······
२६·५ × १२·५ सें० मी०	९	८	२५	पू०	सं०१६१५	संवत् १६१५ मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे पुन्यतिथौ मावस्यायां शुक्रवासरान्वितायां शुक्रवासरे लिखितं चंदन मिश्र सूनु हरिदीयाल मिश्रका ॥
२३·४ × १० सें० मी०	९	१०	४२	पू०	सं०१७६१	इति मृगारेष्टि प्रयोगः ॥ श्री लक्ष्मी-नृसिंहार्पणमस्तु ॥ संवत् १७६१ आषाढ़ शुद्ध १२ लिखितमिदं पुस्तकं रामडोहकरोपनामक विश्वनाथ भट्टेन ॥
२१·६ × ८·२ सें० मी०	५ (१–५)	८	२९	पू०	प्राचीन	॥ संतिष्ठते मृगारेष्टिः ॥
२१·५ × ८·६ सें० मी०	३ (१–३)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति मृगारेष्टि हौत्रं समाप्तं ॥ ··· ···
२१·६ × १०·४ सें० मी०	७ (१–७)	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१७८७	इति मृगारेष्टि हौत्रं संपूर्णं ॥ श्री ॥ संवत् १७८७ शाके १६५२ अश्विन शुक्ल पक्षे···················

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८६	३६६८	मृतदाहविधि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
६९०	६२८	मृत्युंजयपूजा			दे० का०	दे०
६९१	६३६६	मृत्युंजय विधान			दे० का०	दे०
६९२	३३०८	मृत्युंजयविधान			दे० का०	दे०
६९३	७३४७	मैत्रावरुण अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
६९४	६५०५	मैत्रावरुण प्रयोग			दे० का०	दे०
६९५	६६६१	मैत्रावरुण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२·५ × ९·३ सें० मी०	११ (१–११)	९	३५	पू०	प्राचीन सं०१८१४	इति श्री भट्टरामेश्वर सुतनारायण भट्ट विरचितः साग्निकाआश्वलायन मृतदाह विधिः ॥ (पत्रसंख्या ९) + + + पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखापितं स्वार्थं परार्थं च संवत् १८१४ समये आश्विन कृष्ण ७ रवौसमाप्तम् ॥···
२४·१ × १०·९ सें० मी०	७ (१–७)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति मृयु तजयपूजा संपूर्णमिति ओंनमः शिवाय संवत् १८८८ तत्रमासे ······ मम दोषो नदीयते मंगलं ददातु ॥
२२·८ × ९·७ सें० मी०	४ (१–४)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मृत्युंजय विधानः समाप्तः ॥ सदाशिव देवताऽपर्णमस्तु॥ संवत् १९१० के साल समये नाम मिती माघ सुदि ७ कः वुधवासरे कः समाप्तः ॥ + + +
२०·६ × १०·९ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२९	पू०	प्राचीन सं०१८७६	इति मृत्युंजयविधानं वसिष्ठ कल्पे ॥ आचार्य सदा रक्षेन्मंत्रेनानेन मंत्रवित् ॥ राजाहि सर्वलोकस्य पिता भवति धार्मिकः॥ तस्मात्तदर्थंयत्नेन कर्म कुर्वीत शांतये ॥ श्री महादेवायनमः ॥ संवत् १८७६ ॥ मार्गशीर्ष मासेशुक्लपक्षे
२२·२ × ९·६ सें० मी०	३५ (१–३५)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
२२·९ × ८·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	१४	३९	पू०	प्राचीन	अथानिष्टो मौमैत्रावरुणप्रयोगो लिख्यते (प्रारंभ)
२३·६ × ९·८ सें० मी०	३	७	१९	अपू०	प्राचीन (सं०१७८८)	···मैत्रावरुण समाप्तं ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठस्य संवत् १७८८ ज्येष्ठ शुक्ल ५··· ·· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९६	१८६९	यज्ञपद्धति			दे० का०	दे०
६९७	४७७६	यज्ञपद्धति	रामप्रसाद प्रणीत		दे० का०	दे०
६९८	४५४९	यज्ञपद्धति			दे० का०	दे०
६९९	५८९३	यज्ञोपवीत			दे० का०	दे०
७००	६३५४	यज्ञोपवीत			दे० का०	दे०
७०१	३९२९/२	यज्ञोपवीतकरण विधि			दे० का०	दे०
७०२	२४३६	यज्ञोपवीत पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × ९·५ सें० मी०	३८ (२–३७, ४३–४४)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	जीर्ण
३६·६ × १२·२ सें० मी०	६० (२–६०) पत्र ४२–दो	११	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८७२	सम्वर्षे युग्म सप्ताष्ट शशि परिमित मासि माघे च शुक्ले पछे चायुष्य योगे कुशुमशर तिथौ पुष्यभे चार्क्क वारे ।। श्री मद्रामप्रसाद प्रणत विरचिता श्री वशिष्ठ प्रणीतैश्छन्दो मन्त्रैर्विशिष्टा-धरवर परमा पद्धतिः पूर्तिमाप्ता ।। समाप्तेयं यज्ञ पद्धतिः समस्त ।।
२५·४ × १२·८ सें० मी०	२७ (२–५, १४–३६)	९	३३	अपू०	प्राचीन सं०१९१७	इति श्री यज्ञ पद्धित संपूर्णम् शुभ मस्तु संवत् १९१७ आषाड शुल्क ९ बुधवासरे ।।
२५·२ × १०·३ सें० मी०	६ (१–६)	९	४९	अपू०	प्राचीन	
१९·९ × १०·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१३·४ × १५·६ सें० मी०	३	९	१४	पू०	प्राचीन	इति यज्ञोपवीत करण विधिः ।।
२२·२ × १२·१ सें० मी०	११ (३–४, ८, २० २४–२५, २७, ३०–३३)			अपू०	सं० १८४९	इति यज्ञोपवीत पद्धतिः समाप्तः ।। शुभमस्तु :। संवत् १८४९ श्रावण कृष्ण षष्टयां सोमवासरे ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०३	१२७६ / २	यज्ञोपवीत प्रकार			दे० का०	दे०
७०४	४१२८	यज्ञोपवीतसंस्कार पद्धति			दे० का०	दे०
७०५	३०३८	यज्ञोपवीतसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
७०६	१००७	यतिसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
७०७	७६६२	यतीआराधना प्रयोग			दे० का०	दे०
७०८	६९२३	योगपट्ट विधि			दे० का०	दे०
७०९	२९९९	रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६×११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इत्युपवीत प्रकारं ॥
२२·२×१२·१ सें० मी०	१५ (५, ७–८, १०–१९, २५–२६)	११	२५	अपू०	प्राचीन	
२१·५×१०·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२३·१×१०·६ सें० मी०	११ (१–११)	११	३५	पू०	सं० १८३७	इति यति संस्कार विधि निर्णयसंग्रहः ॥ श्रीरामकृष्णायनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः ... ...संवत् १८३७ मी० आ०
२५·८×·१०७ सें० मी०	५ (१–५)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति यतीनां आराधना प्रयोग ॥
१८·९×८·९ सें० मी०	५ (१–५)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८६३	इति योगपट्ट विधिः समाप्तः ॥ संवत् १८८३ शाके १७२८ मासाश्विन शुक्ल पक्षे तिथौ ५ गुरुवासरे ॥ लखि ब्राह्मण विसन्नगरा ॥ पंड्या ऊद्धवजीये ॥ पोथिशिवानंद स्वामिनीछे ॥
१६·६×७·७ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२०	पू०	सं० १८२७	इति शौनकोक्त रजोदर्शन शांति ॥ संवत् १८२७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१०	३४५६	राधाकृष्णमानसीपूजा			दे० का०	दे०
७११	३९६४	रामचंद्राह्निक (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
७१२	५७८८	रामपद्धति	रामानुज		दे० का०	दे०
७१३	५८१८	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१४	३२०४	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१५	६०९७	रामपद्धति			दे० का०	दे०
७१६	२१४२/६	रामपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.३ × ८.५ सें० मी०	८ (१–८)	६	२३	पू०	प्राचीन	श्रीराधाकृष्ण मानसीपूजा सम्पूर्णम् ॥
३२.२ × १३.२ सें० मी०	३० (४-६, ८–११ १४-१९ २१,२४ ३२-३५ ३८,४१ ४४-४६)	११	५४	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.५ सें० मी०	११ (१–११)	९	२५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री रामानुजकृता रामपद्धति वेदोक्त-समाप्ता। शुभमस्तु अस्वन सुदि ७ संवतु १८८३··· ··· ··· ··· ॥
२७.२ × ११.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्रामानुजाचार्ये विरचितं श्री रामपद्धति वेदोक्तं संपूर्णम् लिखितं लक्ष्मीनाथ भट्ट तैलिंग पंचद्रावल ॥ शुभंभूयात् ॥ ··· आरोग्ये भवतु ॥
२१.८ × १०.३ सें० मी०	२१ (१–२ ४–२२)	६	२४	अपू०	सं० १८२३	इति श्री रामानुजाचार्य कृता वेदोक्तो पद्धति संपूर्णम् ॥ सुभमस्तु संवत् १८२३ साल ॥ स्रावण शुक्ल पक्ष ॥१०॥ वार ॥ रवि ॥ लिखितं बरेली मध्ये ॥ चंपतराय का ॥ वाग में ॥ दासानु-दास। वलदेवदास ॥ ··· ···
१४.७ × ९.२ सें० मी०	२९ (१–२९)	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री रामानुजीय श्री रामपद्धति संपूर्ण ॥
१८.५ × १६ सें० मी०	४ (९–१२)	९	१९	पू०	सं० १९२३	संवत् १९२३ श्रावणे कृष्ण पक्षेतु तृतीये सौम्य वासरे लिषितं जय रामेण याद दास्ती शुभं भवेत् ॥ श्री··· ···

(सं० सू० ३९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१७	३०६६	रामपूजा विधि			दे० का०	दे०
७१८	२८३२	रामसेवा विचार			दे० का०	दे०
७१९	५३३८	रामयणपरायण विधि			दे० का०	दे०
७२०	७८६१	रामायणपूजन			दे० का०	दे०
७२१	७५६९	रामायणविधि			दे० का०	दे०
७२२	१५०३	रामार्चन			दे० का०	दे०
७२३	७५०७	रामार्चनचंद्रिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ९.७ सें० मी०	२	८	३२	पू०	प्राचीन	इति रामपद्धति संक्षेपतो पूजा विधिः ॥
२६ × ११.२ सें० मी०	४५ (१–४५)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीराम सेवाविचारे एकोनविंशतिध्याय ॥
२७.७ × ११.१ सें० मी०	११ (१–११)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति रामायण पुरश्चरण विधिः ॥
२३.३ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	११	२४	पू०	प्राचीन	
३१.५ × १२.२ सें० मी०	४ (१–४)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामायण विधिः········
२०.२ × १०.३ सें० मी०	६ (१५–२०)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
२२.७ × १२.५ सें० मी०	९२ (१–९२)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति रामार्चन चंद्रिकायां पंचमः पटलः समाप्तः ॥·········संवत् १९०४···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७२४	६१२४	रामार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
७२५	१००३	रामार्चन विदीपिका	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७२६	६२१७	रामार्चन विधि			दे० का०	दे०
७२७	३५५६	रामार्चा पद्धति			दे० का०	दे०
७२८	६२८६	रामार्चा विधि			दे० का०	दे०
७२९	७६११	रामार्चा विधि (द्वितीय अध्याय)			दे० का०	दे०
७३०	६४८३	रामार्चा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ९·७ सें० मी०	५ (९–१३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ८ सें० मी०	३४ (१–३४)	५	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाराष्ट्र रामकृष्ण भट्ट विरचिता श्री रामर्चन विदीपिका समाप्ता ॥
१८·८ × ७·५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १०·५ सें० मी०	९ (१–९)	६	३८	पू०	प्राचीन	
३१·२ × १६·२ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३५	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्री शिव संहितायां भविष्योत्तर खंडेशिव पार्वती संवादे रामार्च्चा विधि संपूर्ण सं० १९२३ जेष्ट शुक्ल ८ भौमे ॥
२७·५ × ११·३ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव संहितायां भव्योत्तरषडे रामार्चा विधि कथेन शिव संवादे द्वितीयोध्याय: ॥ + + +
१४ × ९·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३१	१२५५	रुद्रजाप (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)			दे० का०	दे०
७३२	७१५८	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
७३३	५७१३	रुद्रपद्धति	रंगनाथ		दे० का०	दे०
७३४	१४०५	रुद्रपाठ (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
७३५	४४२६	रुद्रपूजन विधि			दे० का०	दे०
७२६	२१३५	रुद्रप्रश्न			दे० का०	दे०
७३७	३००३	रुद्रप्रश्न			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·५ × ९ सें० मी०	१४ (१–१४)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति रुद्र जापे द्वितियोध्यायः ।।२।।
९·५ × ५·७ सें० मी०	७	६	१०	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्ये पंचमोध्यायः ।।
२७ × १०·८ सें० मी०	१५ ३–१७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति रंगनाथ कृते रुद्रपद्धतौ ।।
२०·८ × १०·५ सें० मी०	२१ (१-२,६-१३, १७–१८, २०-२७,२९	८	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९१५	इति रुद्रपाठोऽग्रष्टमोध्यायः सं० १९१५ श्रावण कृष्ण दशम्यां लिखितं भवानी दत्तेन शुभं भूयात् ।।
२४·२ × ११·२ सें० मी०	८ (४३-५०)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति बौधायनोक्तं रुद्र स्नान विधानं समाप्तं ।।··· ··· (पत्रसंख्या ५०)
२४·३ × ९·३ सें० मी०	१५	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
९·८ × ५·१ सें० मी०	१०	५	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३८	७१०	रुद्रवत्युद्यापनविधि			दे० का०	दे०
७३९	२३५५	रुद्राक्षधारण विधि	वूर्पसिहदेव		दे० का०	दे०
७४०	५५५६	रुदाक्षमाला संस्कार			दे० का०	दे०
७४१	६९३०	रुद्रानुष्ठान पद्धति	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
७४२	५००८	रुद्राभिषेक कल्प			दे० का०	दे०
७४३	२९६७	रुद्राभिषेक विधि			दे० का०	दे०
७४४	४७४२	रुद्रीजाप			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × ९·५ सें० मी०	३	१२	६४	पू०	प्राचीन	इति काशी खंडे रुद्रवात्यु द्यापन विधानं संपूर्णं ॥
२९ × १५ सें० मी०	५ (१–५)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
१८·५ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	९	३३	पू०	प्राचीन	रुद्राक्षमाला संस्कारे··· मंत्रसिद्धि कामोऽमुक दैवता माला संस्कारमहं करिष्ये ··· ··· (प्रथम पत्र)
२३·७ × १०·३ सें० मी०	५६ (१–५६)	९	३२	पू०	सं०१८०३	संवत् १८०३ मासे आश्विन कृष्ण पक्षे तिथि ३० वार गुरौ तद्दिने अवसत्थी माहेश्वरेण लिखितं ॥
१९·३ × १२·५ सें० मी०	४५	७	२२	अपू०	आधुनिक	
१६·२ × ९·६ सें० मी०	४ (१–२७)	९	२०	अपू०	प्राचीन	
१७·४ × ९·७ सें० मी०	२२ (१–२२)	९	१७	पू०	प्राचीन सं०१७८१	इति रुद्रविधानं समाप्तं ॥ संवत् १७८१ ··· ··· ··· ॥
(सं०सू० ४०)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४५	४६७७	लक्ष्मीपूजन विधि			दे० का०	दे०
७४६	१२५१/२	लघु आतुरसंन्यास विधि			दे० का०	दे०
७४७	६४७२	लघुपद्धति			दे० का०	दे०
७४८	१८४६	लघु लक्ष्मीहवन विधि			दे० का०	दे०
७४९	६३१२/७	लघुशांतिः			दे० का०	दे०
७५०	४४७७	लिंगतोभद्रमंडल देवता			दे० का०	दे०
७५१	६७३	लिंगतोभद्र होम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.५ × ८.९ सें० मी०	३ (१–३)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२.३ × ७.८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति सन्यासं ।
२३.३ × ७.२ सें० मी०	७९ (७-७७, ७९-८६)	५	३२	अपू०	प्राचीन	
१४.६ × १० सें० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति लघु लक्ष्मी हवन समाप्तः इति श्री लिखतं पुस्तग कन्हैया लाल स्वातम पठनार्थं शुभमस्तु ॥
२०.८ × १४.२ सें० मी०	२ (५–६)	१५	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री लघुशांति समाप्तं ॥ ......
२५.५ × १०.९ सें० मी	१० (१–१०)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति देवता होमे समाप्तः ॥.........
२०.२ × ८ सें० मी०	९	७	२२	पू०	सं० १९३६	इति लिंगतोभद्र देवता प्रधान होमः समाप्तः ॥ इदं होपुरोपाक् वटुकनार्थेन स्वपठनार्थं लिखितं ॥ स्वार्थं परार्थं च ॥ माघे शुद्धे ८ म्यां लिखितं ॥ सं० १९३६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५२	७८०५	(शिव) लिंगप्रतिष्ठा पद्धति			दे० का०	दे०
७५३	३३२५	लिंगप्रतिष्ठा पद्धति	अनंतभट्ट		दे० का०	दे०
७५४	१००६	लिंगप्रतिष्ठापन विधि			दे० का०	दे०
७५५	१०६०	लिंगप्रतिष्ठा विधिः			दे० का०	दे०
७५६	५७२७	लिंगस्थापन विधि			दे० का०	दे०
७५७	६५६७	लिंगार्चाप्रतिष्ठा विधि	कमलाकर		दे० का०	दे०
७५८	१२०६	वंशगोपालमंत्रानुष्ठान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६·५ × ११·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति बौधायनोक्त लिंगप्रतिष्ठा पद्धतिः समाप्ता ॥
२६·३ × १० सें० मी०	२० (१–२०)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं० १६२३	इति श्रीमद्विद्वद्वृंदमुकुटमणि श्रीमन्नागदेवात्मज श्रीमदनत भट्ट विरचिता लिंगप्रतिष्ठा पद्धतिः समाप्ता ···इति लिपि कृतं स्यामलालत्तरये यं ग्रंथ· सं० १६२३ मास. माघ. शुक्ल. ११ ॥
२४ × १०·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३१	पू०	प्राचीन	श्रीराम श्री कासी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ श्री अन्नपूर्णा देविभ्यो नमः श्री भैरवनाथ समर्थ श्री अष्टमातृका देवता नवग्रा देवतापर्णमस्तु । श्री राम ॥
२३·६ × ११·७ सें० मी०	६	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति वास्तुदेवता ॥ शुभंभवतु ॥
२०·२ × ६·३ सें० मी०	११ (१–११)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति बौधायनसूत्रोक्त लिंगस्थापन विधिः ॥
२४ × ६·५ सें० मी०	७	६	५०	पू०	प्राचीन	इति मद कमलाकर कृते लिंगार्चाप्रतिष्ठा विधिः ॥
३२ × ११ सें० मी०	१	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५९	५७७४	वटुकदीपदान विधि			दे० का०	दे०
७६०	५२८१	वटुकवलि विधि			दे० का०	दे०
७६१	४८३०	वनप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७६२	४८४६	वनप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७६३	७७४०	वलिदान विधि			दे० का०	दे०
७६५	३८३१	वलिदान विधि			दे० का०	दे०
७६५	४८३१	वलिप्रदान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२३·८ × ८·५ सें० मी०	१	३३	१७	पू०	प्राचीन	इति बटुकदिपदान विधि ॥ शुभ०
२६·२ × ११ सें० मी०	३ (१–२)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति बटुक बलि विधिः ॥
३०·३ × १२·५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४०	पू०	सं०१८७४	इति श्रीवनोतराम जलोतसंजी विधि संपूर्णम्। सम्वत्सरा १८७४ साके १७३९ समय फाल्गुण मासे शुल्क पक्षे पंचम्यां वुध वासरे वेलेषिरघुवरामेन पुस्ककि समाप्तम् ॥
२४·६ × १० सें० मी०	१७ १–१७	८	२६	अपू०	प्राचीन सं०१७८१	× संव्वत्सरे १७८१ समय भाद्र शुक्लस्यैकादश्यां वुधवासरे ॥
१३·७ × ९·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति वलिदान विधिः ॥
३५·६ × ९·२ सें० मी०	२	७	४९	पू०	प्राचीन	इति वलिदान प्रकरणं समाप्तं ॥
२७·५ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	६	४१	पू०	सं०१९४०	इति वलिदान विधि समाप्तम् ॥ सं० १९४० शा १८०५ गौरि द्विजः ॥

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६६	५२२८	वलिवैश्वदेव			दे० का०	दे०
७६७	५८४६	वलिवैश्वदेव			दे० का०	दे०
७६८	७५८०	वलिवैश्वदेव विधि			दे० का०	दे०
७६९	६८६२	वाजपेयहौत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
७७०	२३५८	वापीकूपतड़ागादि-प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७७१	६६५०	वाल्मीकि रामायण-पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७२	६६४९	वाल्मीकि रामायण-पाठ प्रयोग			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२८ × १२.५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति बल वैश्वदेव क्रिया समाप्तम् ॥
२१.८ × ९.२ सें० मी०	२ (१–२)	११	४५	पू०	प्राचीन	
२६.३ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	९	४५	पू०	प्राचीन	अथ वैश्वदेव लिष्यते (प्रारंभ)
२३.६ × १० सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति वाजपेय हौत्रं समाप्तं ॥
२७.५ × १३ सें०मी०	११	१३	२९	अपू०	प्राचीन	
२२.३ × १०.५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	२९	पू०	प्राचीन	इति संक्षिप्त श्री वाल्मीकि रामायण-पाठप्रयोगः ॥ अयं विधिः श्री काशीस्थ ठाकुरद्वारा समीपस्थ श्री विश्वनाथजी अग्निहौत्रीति प्रसिद्ध सोमयाजिना परम कारुणिकेन संगृहीतः ॥ तथा श्री संवत् १९५० + + + + ॥
१९.२ × ९.६ सें० मी०	५ (१–५)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाहंस प्रयाणे उमामहेश्वर-संवादेपंचमः पटलः ॥५॥ श्री संवत् १९५० श्रावण कृष्ण १२ द्वादश्यां + + + + रामदासभट्टात्मजराम कृष्णे-नैतत् विधानं सीतला घट्ट समीपस्थ-ठाकुर द्वारा समीप वासि श्रीविश्वनाथ अग्निहोत्री + + + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७३	६६४८	वाल्मीकि रामायणपाठ विधान			दे० का०	दे०
७७४	६६६९	वालमीकीय रामायण संक्षेप पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७५	५३०१	वाशिष्टी			दे० का०	दे०
७७६	५६४७	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७७	१४	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७८	२२५१	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७९	५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९.९ × १०.४ सें० मी०	९	१२	२४	पू०	प्राचीन सं०१९४९	श्री वाल्मीकि रामायण पाठ विधानं श्री रामभक्तार्थं महता परिश्रमेण सगृह्य लिखितं श्रीराम भट्टात्मज राम कृष्ण तैलङ्गेण । श्रीकाशीविश्वनाथ पुरी संवत् १९४९ × × ×
२८.६ × ११.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३६	पू०	सं०१९५०	इति श्री मद्वाल्मीकि रामायण पारायणे संक्षेपः प्रयोगः ॥ श्री संवत् १९५० शके १८१५ विश्वावसुनाम संवत्सरे मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया
२१.४ × ११.५ सें० मी०	२९ (४–३२)	११	२४	अपू०	सं०१९३२	इति वाशिष्टी समाप्तं··· ··· ·· ··· ··· ··· ···संवदि १९३२ शाके१७९७ वारानाम ग्रामे लिष्यतं पषरे पाठक ॥
२३.६ × ११ सें० मी०	५ (१०–१४)	९	२९	अपू०	प्राचीन सं०१८६९	इति श्री वासिष्ठीकीरिचा समाप्तं ॥ श्री रस्तु ॥ मिति कार्तिक वदी ७ संवत् १८६९ ··· ··· ···॥
१५ × १०.५ सें० मी०	११ (१–११)	७	१३	पूर्ण	प्राचीन	
१५.५ × १० सें० मी०	२६ (१–२६)	९	१८	पू०	प्राचीन सं०१७८६	इति वासिष्ठी समाप्तं ।। शुभं मंगलं ददातु ॥ कार्तिक वदि ४ वासरे संवत् १८७३ लिखतं पं० श्री पाठक जवाहिर सोप ग्रामे विहारी आश्रमे ॥ स्वस्तिः । दीर्घायुः भूयात ॥४॥
१७ × १२.५ सें० मी०	१४	८	१९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८०	३५६८	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८१	३५१५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८२	५०४६	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८३	८३८	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८४	६६७	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८५	५००५	वाशिष्ठी होम विधि			दे० का०	दे०
७८६	९८२	वास्तुपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×११·५ सें० मी०	१४ (६–१२, १७–२३)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२५·४×१५·१ सें० मी०	१९	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२४·२×११·५ सें० मी०	४० (१–३०, ३३–४२	७	२८	अपू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्री ब्रम्हप्रोक्तं संहितायां वाशिष्ठी दुर्गोत्सव होम पद्धति समाप्तम् ॥ × × संवत् १९०७ वैसाषकृष्ण ९ रवौ ॥
२३·७×१३·२ सें० मी०	७ (४९–५५)	९	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री होम पद्धित वाशिष्टी संपूरनं शुभमस्तु श्रीरस्तु मंगलं भूयात् संवत् १९२३··· ··· ···लिखतं मया यदि शुद्धमसुद्धं वाम मम दोशो न दीयते ॥
२०·५×१०·२ सें० मी०	२५ (२–२६)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
२५·७×११ सें० मी०	४० (१–४०)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मोक्त वसिष्टोक्त होम विधिः समाप्तः ॥
२७·८×११ सें० मी०	६	७	३०	पू०	संवत् १९३६	गौरी शंकर शर्मा लिषित्वा··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८७	२६७६	वास्तुपूजा			दे० का०	दे०
७८८	७४७३	वास्तुपूजादि			दे० का०	दे०
७८९	६२७	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९०	६०३६	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९१	२१३८	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९२	६४१३	वास्तुप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
७९३	३७७३	वास्तुप्रतिष्ठा पूजा-विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·१ × १५·५ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४·६ × ११ सें० मी०	१३ (२–१४)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२४·८ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	८	३७	पू०	सं० १९४६	इति वास्तुपूजा विधि समाप्तम् संवत् १९४६ शाके १८११ माघ शुक्ल १ भौम लिषित्वा गौरी शर्मणे ॥
२४·१ × ९·२ सें० मी०	६ (१–६)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति वास्तु पूजा विधि ।
२०·५ × १० सें० मी०	१७	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × ९·६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	·· अथ प्रतिष्ठावास्तुर्लिख्यते तत्र प्रकारः। (प्रारंभ)
२९·२ × १४·२ सें० मी०	२	१४	५०	पू० (जीर्ण शीर्ण)	प्राचीन सं० १९०६	इति वास्तु पूजा विध संपुर्न सुभमास्तुमंगल ददात् संवत् १९०६ कातिक कृष्ण १ बुः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९४	४८९६	वास्तुशांति (वास्तु पूजन पद्धति)			दे० का०	दे०
७९५	१००४	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
७९६	६४२७	वास्तुशांति प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७९७	५१३३	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
७९८	२०३२	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	दे०
७९९	५८४	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	दे०
८००	६३४८	विध्यपराध प्रायश्चित्त-विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स	द	९	१०	११
२५·८ × ११·४ सें० मी०	११ (१–११)	८	२९	पू०	सं०१९०६	इति वास्तु पूजन पद्धति समाप्ताः ॥ संवत् १९०६ ॥
२४ × १०·३ सें० मी०	११ (१–११)	११	३७	पू०	प्राचीन	अग्निरित्यादिप्रजापत्यंतं ॥ एकैकयाज्याहुत्यांयक्षे ॥
२२·२ × ९·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामकृष्ण विरचिते आश्वलायन गृह्योक्त वास्तु शांति प्रयोगः ॥
२१·४ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	१४	४५	पू०	प्राचीन	इति गृहवास्तु शांति प्रयोगः ।
२७·७ × १३·१ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३७	पू०	प्राचीन सं०१८२३	इति श्री विजयादशमी पूजा समाप्तं ॥ ·········संवत् १८२३ तत्र वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदायां १ गुरुदिने लिखितं·········॥
१६ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	१६	१०	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति विजयदशमी कर्तव्यता संपूर्ण सं० १८३६ ॥
२३·५ × १०·५ सें० मी०	११ (१–११)	१२	४४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०१	७८१५	विनायक शांति			दे० का०	दे०
८०२	५४८१	विवाह			दे० का०	दे०
८०३	६११९/७	विवाह कर्म	रूपलाल गुसाईं		दे० का०	दे०
८०४	४३३७/८	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०५	३२८३/२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०६	५४२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०७	५२४३	विवाह कर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.८×११.१ सें० मी०	३ (१–३)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति विनायक शांति: ॥ शुभमस्तु
१८.६×१० सें० मी०	२० (२४–४३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१४.७×६.६ सें० मी०	४० (१–४०)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति शाषाचार रूपलाल गूशाई कृत संपूर्ण॥ + + इति ग्रहघ्नोक्त विवाह कर्म संपूर्णम् ॥१॥
१६×१३.३ सें० मी०	२४ (७–३०)	१३	२५	अपू०	प्राचीन	इति ग्रहघ्नोतक बीवा कर्म संपूर्ण: ॥
१८.५×१२.८ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	२३	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति विवाह कर्म समाप्तं ॥ इति ॥ संवत् १८६५ मिति वैशाष शुदि शुक्र वासरे नम: । लिषतं तोतेराम ब्राह्मणे वहावडि मध्ये ॥
१६×१२.२ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं०१६०८	इति श्री विवाह कर्म समाप्तम् । संवत् १६०८ श्रावण कृष्णा ४ गुरुवासरे लिषतं लौति रम । पठनार्थं कन्हैयाराम । शुभमस्तु श्री: ॥ श्रीरामचंद्र:
२७×११.६ सें० मी०	२२ (१–२,४–८,१०,१२–२५)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इति विवाहकर्म्म समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०८	५११६	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८०९	१००२	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८१०	५५९६	विवाहकर्म (टीका सहित)	हलायुध		दे० का०	दे०
८११	४२८७	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८१२	६०८९	विवाह टीका			मि० का०	दे०
८१३	४०६५	विवाह दर्पण			दे० का०	दे०
८१४	४६४	विवाह पद्धति	रामदत्त		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·७ × १४·७ सें० मी०	१५	११	२०	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ११ सें० मी०	१० (१–९,११)	१०	४१	अपू०	सं०१८१३	इति विवाह क्रम ॥ संपूर्ण ॥ संवत् १८१३ मति वैसाष शुक्ल १० रवि वासरे ॥ याद्रसि पुस्तकं द्रष्ट्वा ॥ ताद्रसं लिखितं मयापजदि शुद्धं विशुद्धं बा मम दोषो न दियेते ॥ श्रीराम
३०·८ × १४·७ सें० मी०	१५ (४–१८)	१४	५२	अपू०	सं०१८८३	इति श्री विवाह कर्म मंत्र व्याख्या हलायुधेन कृत विवाह संपूर्णम्··· ··· सम्वत् १८८३ श १७५८ फाल्गुण कृष्ण ९ सौम्य दिने लिपि कृत मिदं।
२५·३ × ११·२ सें० मी०	१७ (२–१८)	११	३१	अपू०	सं०१८४९	इति विवाहकर्म समाप्तः ॥शुभमस्तु॥ संवत १८।४९ समय पाष कृष्ण एकादश्यां लिखितं रामहित शुक्ल आदारे वंसे ॥ राम कृष्मायनमः ॥
१९·९ × ८ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१५	पू०	सं०१९०५	इति श्री विवाह टिका संपूर्ण संवत् १९०५ मीति आषाडवदि ११ वार मंगलवार··· ···
२३·५ × ८.८ सें० मी०	२३ (२५–४७)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × ११·३ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३५	पू०	सं०१९३२	इति वाक्यार्थः इति चतुर्थीमंत्र व्याख्या विवाहकर्म समाप्तम् हलायुधेन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१५	२४४	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त		दे० का०	दे०
८१६	११८९	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८१७	११९४/२	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त आचार्य		दे० का०	दे०
८१८	४६२	विवाह पद्धति (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
८१९	४६०९	विवाह पद्धति (कर्मकौमुद्यांतर्गत)	कृष्णदत्त अवस्थी		दे० का०	दे०
८२०	५२२१	विवाह पद्धति (सटीक)	रामदत्त		दे० का०	दे०
८२१	४०१०	विवाह पद्धति (सटीक)	पं० गंगासहाय		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १२·६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१२	१६	पू०	प्राचीन सं०१०६७	इति चतुर्थी कर्म समाप्तम् सं० १०६७ तिथि ६ बुधवासरं मार्गशीर्ष ।
२२·५ × ८ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	३२	पू०	सं०१७२७	अलेखितं पिरोधर त्रिपाठी मिदं पुस्तकं संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ संवत् १७२७ ॥ शाके ॥ १५९२ श्रावणे मासि कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दश्यां ॥१४॥ भौमवासरे
१५·२ × १२·४ सें० मी०	३९ (३–४२)	१०	१७	अ० पू०	सं०१९१०	इति श्री रामदत्त आचार्य कृते विवाह पद्धति संपूर्णम् शुभं भूयात लिष्यनार्थं गगन आचार्य १९१० पौष शुक्ला ८ भृगु०······
३३ × १४ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	५१	पू०	सं०१८९७	इति चतुर्थी कर्म प्रकारः समाप्तमिति श्रीरस्तू ॥
२३·१ × ११·८ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	२६	पू०	सं०१९०९	इत्यावस्थिक कृष्णदत्त विरचितायां कर्म्म कौमुद्यां विवाह पद्धति प्रकर्णं समाप्तः शुभमस्तु संवत् ॥ १९०९ जेष्ट शुक्ल ॥ १३ ॥ सोमकौ लिख्यतं पं० श्री अउजरियाः विहारी स्वार्थम् ॥
३३·४ × १२·९ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामछति विरचितायां विवाह पद्धतिः ॥
३२·५ × १८·४ सें० मी०	४२ (१–४२)	९	२७	पू०	सं०१९५७	इति विवाह प्रकरणम् ॥ + + + + + संवत् १९५७ पंडित गंगा शहाय कृत ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२२	१७७३	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२३	५२०३	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२४	२०२६	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२५	२२६२	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२६	३२४४	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२७	६५५५	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२८	१८६७	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति-संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·२ × १०·३ सें० मी०	२२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१४·६ × ९·२ सें० मी०	२०	१०	१७	अपू०	प्राचीन	अथ वरः धर्मार्थकामाय गौरी विवाहः यिष्ये वर इति संकल्पा पंचभू संस्कारान्क्षुत्वा लौकिकाऽग्नि स्थापनं ... ... (पत्र-संख्या ३)
३०·२ × १४·५ सें० मी०	९ (१–९)	१६	५२	पू०	सं०१८५८	इति विवाह कर्म समाप्तम् संवत् १८५८ फाल्गुन शुक्ला प्रतपदा भृगुवासरे विवाह पद्धति लिषितम्
१८·३ × १०·७ सें० मी०	२५ (१–६, ११–२९)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२५·५ × १५·२ सें० मी०	४ (६,८-९,११)	१६	२०	अपू०	प्राचीन	
२५·६ × १०·८ सें० मी०	४ (४–७)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति विवाह विधिः ॥
१७·३ × १३·३ सें० मी०	३१	१०	१५	अपू०	सं०१९४३ कृमिकृतित	इति विह कर्म्म समाप्तं ॥ अथ चतुर्थी कर्म लिप्यतम् ॥ सं० १९४३ मासाना मासोतमासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ १३ तृयोदश्यां भौमवासरे लिप्यतं मीश्र बाहालराम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२९	१५४०	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३०	४५०५	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३१	४९२१/३	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३२	४२०४	विवाहपद्धति			मि० का०	दे०
८३३	४२०२	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३४	४१९०	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३५	२७०९	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १०·२ सें० मी०	१८ (१-७,९-१६ १८-२३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ११·५ सें० मी०	२५ (१-२५)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ क्रमप्राप्तो विवाह विधिमुच्यते (प्रारंभ) × × ×
१६ × १०·७ सें० मी०	१३	९	१६	अपू०	प्राचीन	
२२·३ × १७·६ सें० मी०	१९	११	२३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·८ सें० मी०	१२ (१-१२)	७	३०	अपू०	प्राचीन	अथ विवाहपद्धति लिखते (प्रथमपत्र)
२१·१ × १०·३ सें० मी०	९ (१०-२०)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६ × १०·५ सें० मी०	११	९	१७	अपू०	सं० १८४९	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३६	३५०४	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३७ ×	१२२५	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३८	४०३९	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३९	६२६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८४०	६२७	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८४१	१८०८	विवाहपद्धति (टीकासहित)			दे० का०	दे०
८४२	१९०४	विवाहपद्धति (संस्कृतटीका)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × १३ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	२६	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति विवाहपद्धति कर्म समाप्तम् ॥ ……संवत् १८७१ आषाढ़ शुक्ल प्रतिपत्सनिवासरे लिपीपूर्ति……… …।
२३·७ × १०·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति विवाहः समाप्तः ॥ मीः पौषशुदी ८ शुभं
१९ × १०·२ सें० मी०	३० (१–३०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × १२·५ सें० मी०	२७	९	२२	अपू० क्रमिकृंतित	सं० १९२१	इति चतुर्थी कर्म समाप्तम् ॥ शुभमस्तु-मंगलं ददातु ॥ श्री ॥ संवत् १९२१ मिति पौष वदि १३ चंद्रवार लिषतं मिश्र हरगुं (गुन) लाल ॥ पठनार्थं मिश्र लाल ॥ शुभं ॥
२३ × १६ सें० मी०	९ (१-२,७-१३)	२२	२०	अपू०	प्राचीन	
३२·७ × १२·५ सें० मी०	३८ (२-७,९-३८, ४३–४४)	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२९·५ × १३·७ सें० मी०	११ (१-४,६-१२)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४३	३५१४	विवाहपद्धति (सटीक)			दे० का०	दे०
८४४	६६६८	विवाहप्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
८४५	१६७४	विवाहमंत्र व्याख्या			दे० का०	दे०
८४६	४०४०	विवाहविधि			दे० का०	दे०
८४७	४७१०	विवाहविधि			मि० का०	दे०
८४८	७५७१/२	विवाहविधि			दे० का०	दे०
८४९	४९२६	विवाहसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३१·६ × १२·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२२·३ × १०·३ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३४	पू०	सं०१७८८	इति श्री राम कृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्ट कृतो विवाह प्रयोगः ॥ संवत् १७८८ माघ कृष्ण ११ बुधे लिखित मिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठेन ॥
२२·५ × १४·५ सें० मी०	६ (१–२,६, ११–१३)	२०	३०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·५ सें० मी०	४३ (१–४३)	६	२६	पू०	सं०१६१७	इति विवाह विधि समाप्तः ॥ संवत् १६१७ ॥ फाल्गुण मासे शुभे कृष्ण पक्षे ॥ तिथौ पंचमीयाँ ॥ शुक्रवासरे ॥ ………
२०·७ × १७·३ सें० मी०	११ (१–११)	८	२३	अपू०	आधुनिक	
२१ × १६·५ सें० मी०	३३ (१–३३)	१८	२१	अपू०	प्राचीन	
१५·२ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	८	१८	पू०	सं०१८५०	इति विवाह शूत्रं लिषितं पंडित राम हित ॥ संवत् १८५० ओदारे वैसे मिति जेष्ठ शुक्ल पंचमी गुरु वासर के पुस्तक समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	३७६१	विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
८५१	६५७०	विष्णुवलि प्रयोग			दे० का०	दे०
८५२	६६४०	विष्णुबलिप्रयोग			दे० का०	दे०
८५३	१४८४	विष्णुशयनो द्यापन विधि			दे० का०	दे०
८५४	२७६०	विष्णु षोडश नाम			दे० का०	दे०
८५५	२७८३	विष्णु षोडशोपचार पूजा			दे० का०	दे०
८५६	५७५०	विष्णु सहस्रनाम पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·१ × १०·७ सें० मी०	४२ (२–४३)	९	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्रकल्पे वानप्रस्थ-गृहस्थाश्रम धर्मपंचमहायज्ञविधिः समाप्तः ॥ (पत्र संख्या–३७) + + +
२४·४ × ११·१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३८	पू०	सं० १८१६	इति विष्णु वलि प्रयोगः ॥ पुस्तकमिदं रामडोहकर बिश्वनाथ भात्मज भट्टात्मज नील कंठभट्टेन लिखितं स्वार्थं परार्थं च संवत् १८·१६ कार्तिक शुद्ध १०
२२·६ × १०·१ सें० मी०	४ (१–४)	९	४१	पू०	प्राचीन	इति विष्णुवलि प्रयोगः ।·
१८·८ × १० सें० मी०	५ (१,४-७)	९	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्ण-शयनाद्युद्यापन विधि अषाठी शुक्ला संपूर्ण शुभं भूयात् श्री कृष्णायन्मः
१२·८ × ९·६ सें० मी०	२ (१–२)	८	१२	पू०	प्राचीन	इति विष्णु पुराणे षोडस नाम समाप्तं ॥
१४ × ८·४ सें० मी०	३ (१,३-४)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७·३ × ९·७ सें० मी०	३	४	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५७	६३१२/७	वृद्धि शांति			दे० का०	दे०
८५८	६६५	वृषाक पद्धति			दे० का०	दे०
८५९	४१६०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६०	११३०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६१	५५०२	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६२	५२७७	वृहस्पतिमंत्र न्यास			दे० का०	दे०
८६३	३७५८/२	वेणीमाधव पूजन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·८ × १४·२ सें० मी०	३ (६–८)	१४	३२	पू०	प्राचीन	इति वृद्धि शांति संपूर्णा ॥
३२.५ × १७.६ सें० मी०	३	१०	३०	अपू०	प्राचोन	
२२·७ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४४	पू०	सं०१८४५	श्री रस्तु ॥ संवत् १८४५ मिति श्रावण वद्य पंचमी लिखितं नारायणस्य हस्ताक्षर पुस्तकं समाप्तं ॥ इदं पुस्तकं वृषोत्सर्गस्येदं ॥
३१ × १३·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	४०	पू०	सं०१९४२	इति वृषोत्सर्ग गोदान संवत् १९४२ आश्विने कृष्णपक्षेच द्वादश्यां चंद्र वासरे लिखितं फकीरचंद्रेण पुस्तकं शुभदायकः॥ श्रीरीशिवायनमः शुभंभूयात् ॥
२७·४ × १७·५ सें० मी०	१ खर्रा (१–४)	३९	३०	अपू०	जीर्ण प्राचीन	
१५·६ × ११·५ सें० मी०	१	१५	२०	पू०	प्राचीन	वृहस्पते गृत्समदो वृहस्पतिस्त्रिष्टुप् छंदः न्यासे विनि०………(प्रारंभ)
१५·७ × ८·५ सें० मी०	९ (२–१०)	११	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्री पद्मपुराणे पाताल खंडोक्तं श्री वेणीमाधव पूजनं समाप्तः ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६४	६३७२	वेदपरायण विधि			दे० का०	दे०
८६५	५०५४/१५	वेदपारायण विधि			दे० का०	दे०
८६६	१२१६	वेदोक्तशिवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
८६७	६६३१	वैदिकमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
८६८	६६२६	वैदिकमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
८६९	६४३३	वैधृतिशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८७०	५०५४/१५	वैशाखस्नान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·४ × ९·१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति ऋग्विधानाद्युक्तो वेदपरायण विधिः॥ ... ...
१६ × ७·८ सें० मी०	१३½	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १२·३ सें० मी०	४४ (१–४४)	४	१३	पू०	प्राचीन	इति वेदोक्तशिवार्चन पद्धतिः। शुभम्।
२४·५ × ११·१ सें० मी०	४ (१–४)	९	२९	पू०	प्राचीन	
२४·३ × ११·१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३५	पू०	प्राचीन	
२२·३ × ८·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	२७	पू०	प्राचीन	
१६ × ७·८ सें० मी०	४½	७	२१	अपू०	प्राचीन	इतिस्तोत्रम्॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७१	७६४७	वैशाखोद्यापन			दे० का०	दे०
८७२	४४८५	वैश्य संध्या			दे० का०	दे०
८७३	१९२०	वैश्व (वलिवैश्व)			दे० का०	दे०
८७४	६३६१	वैश्वदेव			दे० का०	दे०
८७५	५७५८	वैश्वदेव विधि			दे० का०	दे०
८७६	५८१६	वैश्व विधि			दे० का०	दे०
८७७	६४२	व्यास पूजा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·४ सें० मी०	२	६	३५	अपू०	प्राचीन	इति वैशाखोद्यापनविधिः ॥
२५ × १०·४ सें० मी०	२ (१–२)	८	४२	पू०	सं० १९२३	इति वैश्य संध्या समाप्तिमगात् सं० १९२३ वैशाख शुक्ला ८ श० वा० ॥
२५·५ × १०·७ सें० मी०	५ (१, ३–६)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति वैश्वम् समाप्तम् पौषमासे असिते पक्षे दशम्यां सनिबासरे ॥ नधन मिश्र द्विजे नेदं लिषितं पुस्तग् मिदं ॥ संवत् १८७३ शकेश १७३८ शुभमस्तु ॥
१४·७ × ८·३ सें० मी०	६ (१–६)	६	२४	अपू०	सं० १९३५	इति वैश्वदेवः समाप्तः ॥ स्वार्थं परोपकारार्थं ॥ शिवाय गुरवे नमः ॥ संवत् १९३५ शकेः १८०० ॥
२६·४ × २१·३ सें० मी०	१ (खर्रा)	२०	३३	पू०	सं० १८८६	इति श्री वैस्वदेव पद्धति संपूर्णं ॥ समाप्तं ॥ श्री रस्तु ॥ सं० १८८६ के उपरांत चै० व० ७ मु० वेरेठी लिष्यतं पं० विदुवा सुषलाल ॥
२७·३ × ११·४ सें० मी०	२ (१–२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति वैश्व विधिः ॥ सं० १९३२ मा० मा० वृ० ४ लि० ॥
१३ × १०·५ सें० मी०	६ (३–८)	१२	१५	अपू०	प्राचीन	इति छंकराचार्य विरचितं व्यास पूजा समाप्ताः ॥ श्री हरहराण्यर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७८	१८४२	व्रतबंध			दे० का०	दे०
८७९	४८१३	व्रतार्क			दे० का०	दे०
८८०	५९२६	व्रतार्क			दे० का०	दे०
८८१	६९४१	ब्रह्मचारीव्रतलोप-प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
८८२	१२४४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८३	५२६६ / २	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८४	७०५२	ब्रह्मयज्ञ तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४ × १२·३ सें० मी०	२	१०	१८	अपू०	प्राचीन (खंडित) जीर्ण	इति व्रतबंध व्रतादेश व्रतविर्ग तृतीय कर्म समाप्तम्··· संवत् १९१५ ? मिति भाद्रपद वदि १ भृगुवाशरे ॥ लिपितं मिश्र नयन ॥ पठनार्थं नानक पचोलि ॥
२६·३ × १०·३ सें० मी०	१६ (१५–३०)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·९ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	३९	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × १०·२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३६	पू०	सं० १७१८	लिखितमिदं रामह्रदस्थ विश्वनाथ भट्ट सुत नील कंठ भट्टेन वैशाख शु० ११ संवत् १७१८ ००
२०·८ × ९·२ सें० मी०	५ (१–५)	७	२५	पू०	प्राचीन	अथ ब्रह्मयज्ञ समाप्तः ॥ ··· ··· ······ भिष्म युधिष्ठिर संवादे सहस्त्रशत रामायण समाप्त । श्री कृष्णार्पणमस्तु॥
१६ × ८ सें० मी०	२ (१–२)	९	२९	पू०	प्राचीन	ब्रह्मयज्ञं समाप्तं । शुभमस्तु
२७·२ × १०·६ सें० मी०	११ (१–११)	९	३४	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इनि श्री ब्रह्मयज्ञतर्पण समाप्तम् शुभमस्तु मि० वै० सु० १२ मंगलवार समाप्तम् सं० १८६२ लिखितं पुरशौतम रलिराने रीवा बैठे ।

(सं० सू० ४५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८८५	४८६६	ब्रह्मशापविमोचन			मि० का०	दे०
८८६	६८२८	ब्राह्मणाछंसी प्रयोग			दे० का०	दे०
८८७	६६६६	ब्राह्मविवहांगभूत-वाग्दान विधि			मि० का०	दे०
८८८	२२६६	शंकारार्चन दीपिका पद्धति	श्रीपति		दे० का०	दे०
८८९	४७२९	शमीपूजन			दे० का०	दे०
८९०	५०२२	शय्यादान			दे० का०	दे०
८९१	४२२७	शय्यादान प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·६ × ८·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	२२	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्री रुद्रया जामले चंडिका ब्रह्म-शाप विमोचनं संपूर्णम् ॥.......... सं०१९१८ ॥
२३·४ × १० सें० मी०	७ (१–७)	११	३०	पू०	प्राचीन	इति ब्राह्मणाछंसी प्रयोगः समाप्तः ॥
२२·३ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	
२५·३ × ९·५ सें० मी०	७१ (६–७६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२०·६ × १०·१ सें० मी०	४ (२–५)	१०	२९	अपू०	प्राचीन	इति शमीपूजन समाप्तं शुभं भूयात् ॥ राम..............
२१·२ × ९·७ सें० मी०	१	८	४०	अपू०	प्राचीन	
२१·९ × ८·८ सें० मी०	३ (१–३)	९	३४	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनमः ॥ अथ शय्यादानं ॥ (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९२	३००३	शांतिकर्म			दे० का०	दे०
८९३	६४३२	शांतिरत्न (ज्वरशांति प्रयोग)			दे० का०	दे०
८९४	५१	शांतिविधान			दे० का०	दे०
८९५	६३५१	शांतिविधि			मि० का०	दे०
८९६	६४२५	शांतिसार			दे० का०	दे०
८९७	२१२	शारदनवरात्र			दे० का०	दे०
८९८	६३८१	शालग्राम पंचायतन दान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.६ × १५.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२१.७ × १० सें० मी०	२ (१–२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति शांतिरत्ने ज्वरशांति प्रयोगः ॥
२६.५ × १३.२ सें० मी०	८	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२४.२ × १५.३ सें० मी०	८ (१–८)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.७ × १०.३ सें० मी०	१० (१–११) (पत्र १ पर दो नंबर)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति वैधृतिव्यतीपातसंक्रांतिजनन शांतिः ॥
२४.२ × ११ सें० मी०	१४	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × ९ सें० मी०	१	१३	३३	अपू०	प्राचीन	इति पंचायतन दान विधिः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९९	६३६२	शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
९००	४२८२	शिव पार्थिव पूजा			दे० का०	दे०
९०१	४०५१	शिवपूजन			दे० का०	दे०
९०२	२८३८	शिवपूजन			दे० का०	दे०
९०३	८१२	शिवपूजनन्यास			दे० का०	दे०
९०४	८११	शिवपूजनन्यास			दे० का०	दे०
९०५	४०३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५ × ७·२ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	सं० १८५४ शाके १७१९	इति शिलान्यास विधिः ॥ श्री संवत् १८५४ विभवन्नाम संवत्सर फाल्गुन कृष्ण ७ शके १७१९ ॥
१५·९ × ११·६ सें० मी०	१४ (१–१०, १३–१८)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति शिव पार्थिव पूजनं संपूर्ण समापतं शुभं मंगलं मस्तू ।
२३ × १०·७ सें० मी०	५ (१२–१३, १५–१७)	७	२६	अपू०	सं० १९१२	इति शिवपूजनं संपूर्णम् शुभ संवत् १९१२ ॥
१४·९ × ८·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
२२·४ × १० ६ सें० मी०	९ (१,३,५–९,१०–११)	१२	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री इतिहास्पेन पूजा विधिः समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १८७२ ॥
२२·४ × १०·६ सें० मी०	९	१२	२८	अपू०	सं० १८७२	इति श्री इति हा स्येन पूजा विधिः समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १८७२ ॥
१५·५ × ८·२ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२२	पू०	सं० १९०८	इति शिवपूजनं संपूर्णम्................ पौषशुक्ल १० भृगौ संवत् १९०८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	१३३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०
६०७	३०४६/६	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०८	१५१०	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०९	४३३७/८	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१०	२६८७	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६११	१६०४/४	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१२	१४८३	शिवपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१·७ × ६·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री शिवपूजनपद्धतिसंपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८७१ समैभाद्रपदकृष्ण षष्टयां रविवासरे ॥
१६·७ × १३·१ सें० मी०	३	२१	१५	पू०	प्राचीन	इति विसर्जनं ॥
१६ × ८·५ सें० मी०	८ (२-४,७-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	
१६ × १३·३ सें० मी०	१४ (४२–५५)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति रूद्रामले शिवपूजा संपूर्ण ॥
१६·५ × ११·५ सें० मी०	६	६	२१	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति शिवपूजा संपूर्ण संवत् १६१८ ॥
१३·६ × ७·६ सें० मी०	२ (५–६)	८	१३	अपू०	प्राचीन	इति आर्तिक्यम् ॥
१८·८ × ११·२ सें० मी० (सं०सू०४६)	६ (५–१०)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति शिव पुजा समाप्तिं सं०१८८८ ॥ श्रावण वदी त्रयोदशी १३ ॥ शनिवासरे ॥ शुभं मंगल ददात्·······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१३	७००५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१४	३६२५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१५	७८७७	(विश्वनाथ) शिवपूजा-तरंगिणि			दे० का०	दे०
६१६	४०७१	शिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
६१७	६६२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६१८	२४७१	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६१९	४५३३	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १०·३ सें० मी०	८ (६–१३)	९	२५	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले शिवपूजा वेदोक्त संपूर्णं । इदं प्रति लिषतं कातिक कृष्णा १० । चद्रवासरे इदं प्रति लिषतं रामधन मिश्र २ अहिरवा मध्ये आत्म पठनार्थं ॥ + + + +
१५·८ × ७·८ सें० मी०	९ (२–१०)	८	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८५४	इति शिवपूजा समाप्तं ॥ मंत्र हीनं० गछः जातिदेव गणां सर्वेः पूजा + + + + + सं० १८५४
२१·५ × ९·५ सें० मी०	१० (१-६, ९-१२)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
१७·४ × ८·८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री वेदोक्तं सिव पूजा विधानं संपूर्णं समाप्तं जेष्ट सुदि २ संवतु १९०२ ... ...॥
३३ × १३ सें० मी०	२	४८	२६	पू०	प्राचीन	इति पूजा विधि समाप्ता ॥
२३ × १०.७ सें० मी	३ (१,४-५)	९	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शिवपद्धतौ शिवपूजा विधिः ॥ संपूर्णं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु मंगलं ददातु ॥
२४·३ × १०·१ सें० मी०	६ (४–९)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं० १९१७	इति शिवपूजाविधि समाप्त शुभमस्तु ज्येठे मासे क्रस्न पक्षे तिथौ १३ भृगु वासरे संवत् १९१७ लिषतं पं श्री रिछारिया हर परसाद ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२०	१२५८	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२१	४६१७/२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२२	४८८५	शिवपूजाविधि प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६२३	४६७६/२	शिवप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६२४	१३७५/२	शिव मानसपूजा			दे० का०	दे०
६२५	४२३	शिव रहस्यमहालिंगार्चन			दे० का०	दे०
६२६	१४८२	शिवलिंग (पूजा-तर्पणम्)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १४ सें० मी०	७	१३	३५	पू०	सं०१८७४ शके१७३९	इति हांस्येन पूजा विधि समाप्ति मगमत् ॥ संवत् १८१४ शाके १७३६ वैशाख शुदि चतुर्दशी बुधवार पुस्तग लिखि है।
१५·१ × ९·९ सें० मी०	३	८	१५	अपू०	प्राचीन	इति शिवपूजा विधिः संपूर्ण ॥
२२·५ × १०·९ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२८	पू०	सं०१८७२	इति श्री इतिहास्येन शिव पूजा विधि प्रतिष्टा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८७२ । पौष शुदि द्वितीया २ चंद्र वासरे लिखितमिदं पुस्तकं लक्ष्मणाभिधानेन चंडिपुरमध्ये शुभं ॥
१५·८ × ९·५ सें० मी०	१४ (२–१४)	१०	२४	पू०	प्राचीन सं०१८८४	इति शिव प्रतिष्ठा समाप्तम् शुभं भूयात यादृशं पुस्तकं दृष्टा तादृशं लिषतं मया यदि शुद्धं वा मम दोषो न दियते १ संवत् १८८४ तत्रवर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे × ×
१५ × ९·५ सें० मी०	२	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री वेद वेदांत परिकर्ण शिव मानवपूजा समाप्तः ॥
१३·३ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री शैव पुराणे शिव रहस्ये महालिंगार्चन विवर्णनंनामषड्विंशोध्यायः। यादृशं पुस्तकं दृष्टा तादृशं लिषितंमया यदि शुद्धम शुद्धंवामम दोषो नदीयते लेखक पाठकयोर्मगलं शुभमस्तु ।
२०·६ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२६	पू०	प्राचीन सं१९०९	इति श्री पार्थिवेस्वर चिंता मनि शिव लिङ्ग पूजा तर्पण सपूरणम् ॥ सं० १९०९ शाके १७७४ अधिक

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२७	६८२	शिवलिंगप्रतिष्ठा-प्रयोग			दे० का०	दे०
६२८	४०५२	शिवस्थापन पूजन विधि			दे० का०	दे०
६२९	६२१५	शिवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
६३०	४७६५	शिवार्चन विधि			दे० का०	दे०
६३१	५०२१	शिविकादान			दे० का०	दे०
६३२	६६३७	शुक्लसूत्र परिशिष्ट			दे० का०	दे०
६३३	११७७	शुद्ध एकादशाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
४२·२ × ९·२ सें० मी०	२ (१–२)	८	६६	अपू०	प्राचीन	
२२ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३५	पू०	सं०१९०८	इति शिवस्थापन पूजन विधि समाप्तम् ।' श्रा० शु० १४ रवौसंवत् १९०८ अस्थित: ·······
१६·५ × ११ सें० मी०	२ (२–३)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति शिवार्चन पद्धतिः ॥
३० × १४ सें० मी०	१ (खर्रा)	३८	१६	पू०	प्राचीन सं०१८९७	इति बौधायन सूत्रोक्त शिवार्चन विधिः ॥ सं० ॥ १८९७ वैशाख शु ॥ ३ पराज्ये इत्युनाम्ना अंणा भट्टेन लिखितं ॥
२१·२ × ९·७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
१७·१ × ७·५ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनोक्तं शुक्ल सूत्र परिशिष्टं समाप्तं ॥ श्री रामचंद्रायनम । नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रेण गोविंदेन शुक्ल सूत्र पुस्तकं लिखितं + + + + ॥
२२·१ × १३·७ सें० मी०	६ (१–६)	१९	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३४	८२८	शुद्धिविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
६३५	५२६२	शौनककारिका			दे० का०	दे०
६३६	५२००	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
६३७	१३२४	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
६३८	१६४६	श्राद्धकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
६३६	१६७	श्राद्ध कांड	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
६४०	१४६३	श्राद्ध चंद्रिका	दिवाकर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·४ × ९·५ सें० मी०	१०० (१–१००)	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२३ × ९·६ सें० मी०	१	२०	३५	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनमः शौनक कारिका ॥ (प्रारंभ)
२२·८ × ९·६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२९	पू०	प्राचीन सं०१८०२	श्राद्धाहनितु संप्राप्ते भवेन्निरशनोपि वेति।···लिखितमिदं पुस्तकं रामहृदोपनामक नीलकंठेन पौष वदि १ संवत् १८०२···············।
२१ × ११·५ सें० मी०	१३ (२–१४)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
३० × १३ सें० मी०	८ (६५–६९, ७४–७६)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२११ × ९ सें० मी०	२४ (१–२४)	१४	४३	पू०	प्राचीन सं०१६९७ श०१५६२	इति पदवाक्य प्रमाण श्री लक्ष्मीधर सूरेः सूनुना भट्टोजिदीक्षितेनरचितायां श्री चतुरविशति मुनिमत व्याख्यां श्राद्ध कांडम्। सं०१६९७ शके १५६२ विरोधिनि संविता माघसित द्वादश्यां प्रयागेयाज्ञवल्क्यो पेंड्भटोपाध्याय सूनुना भट्टोपाध्यायानं तेना लेखीदम्।
२०·५ × ११ सें० मी०	२६	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज सकल विद्या निधान श्री दिवाकर विरचितायां श्राद्ध चंद्रिकायां महालय श्राद्धानि ॥
(सं०सू० ४७)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४१	६८४१	श्राद्धचंद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका	बैजनाथ		दे० का०	दे०
६४२	३८३८	श्राद्धदीपिका			दे० का०	दे०
६४३	५५७४	श्राद्धनिर्णय			दे० का०	दे०
६४४	६५५७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४५	६६८८	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४६	३४७१	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४७	३६७२	श्राद्धपद्धति	क्षेमराम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·९ × ११·४ सें० मी०	८१ (१–८१)	१०	४३	पू०	प्राचीन सं० १७८२	इति श्री दिवाकरात्मज वैजनाथ विरचिता श्राद्धचंद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका समाप्ता ॥ संवत् १७८२ श्रावण सुदि १२ × × × सं० १७८६ जेष्ठवदि १ शोधितमदोभारद्वाज काशीनाथेन + ॥
२४·५ × १२·२ सें० मी०	१६ (१२–२७)	६	२४	अपू०	सं० १८१७	सपिंडी श्राद्ध कर्तव्यं ॥ ……… … … …शुभमस्तु संवत् १८१७ ॥
२२·८ × ११ सें० मी०	३ (२०,२८,२९)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२२·४ × ८·८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति कोकिल ऋषिमतं संक्षेपतः ॥ संवत् १६६९ वर्षे पौष मासे शुक्लपक्षे + + + + + ॥
२१·७ × १६·८ सें० मी०	१२ (१–१२)	१४	२३	पू०	प्राचीन	
२१·४ × १२ सें० मी०	७ (१–७)	१४	३९	पू०	सं० १८५६	इति श्री रूपरति समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८५६ रुधनवहि १० सनीचर लिषत्तंपुमानसुक्ल श्री जमुना ध्येनमः…
२३·३ × ८ सें० मी०	६३ (१–६३)	७	३८	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री क्षेमराम कृता श्राद्धपद्धतिः समाप्ता सुभमस्तु सुभंभूयात् संवत् १८७१ शाके १७३६ अधिक भाद्रे मासि शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोश्यां रविवासरे लिखितमिदं पुस्तकं देवीप्रसाद त्रिपाठिना……

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४८	५४६२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४९	६७८७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५०	७२९७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५१	३४९०	श्राद्धपद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
६५२	४११५	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५३	३९६६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५४	५१७६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·४ × १०·६ सें० मी०	११ (१–११)	११	२२	पू०	जीर्ण सं०१८८८	इति श्री श्राद्धपद्धित समाप्तः ।। संवत् १८८९ (८) मिति आश्वनवदी २ गुरुबार लिपत गंगाधर पाठ ··· ···
२५·७ × १०·५ सें० मी०	९ (१–९)	९	३७	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्राद्ध पद्धतिः समाप्तः ।। माघकृष्ण ११ भौमिकः संवत् १९०४ के शाके १७६९।।
२२·२ × ९ २ सें० मी०	४० (१–३०, ३३–४२)	८	३१	अपू०	सं०१९२१	इति दं पुस्तकं श्राद्धपद्धति समाप्तं संवत् १९२१ मि० पौ० शु. १ गुरुवार
१९·७ × १० सें० मी०	६९ (२–७०)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणज्ञ सूविवरविसरनासीरसरोपाध्य भट्ट मराधवात्मज भट रघुनाथ विरचिता श्राद्धपद्धतिः संपूर्णं ।।··· ··· ···
२४·४ × १०·६ सें० मी०	२२ (२–२१, ३८–३९)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८५८	ईत्ति श्राद्धं समाप्तंः ।। समत १८५८ प्रमोदनाम संवत्सरे वैशाष वदय पंचमिते दिन समाप्तं ।। (पत्र सं० ३९)
२३·३ × १०·२ सें० मी०	१६ (२२–३७)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५·२ × ९·५ सें० मी०	१०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९५५	३८२६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५६	५७४१/२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५७	१६६९	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५८	५१३१	श्राद्धप्रकार			दे० का०	दे०
९५९	४५१८	श्राद्धप्रकाश	इन्द्रदत्तोपाध्याय		दे० का०	दे०
९६०	३४८७	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६१	४६७४	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·३ × ६·१ सें० मी०	८ (१,५–१०, १०)	५	२८	अपू०	प्राचीन	
१८·१ × १३·९ सें० मी०	२	१६	२१	अपू०	प्राचीन	
२१·७ × ११·२ सें० मी०	५ (१,३–६)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
१५·८ × ९·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
३४·४ × १३·६ सें० मी०	२९ (१–२९)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१९२७	इति श्री श्राद्धप्रकाशे इन्द्रदत्तोपाध्या कृते अधुना श्राद्धार्थ सपिण्डन विधिः तृतीयः प्रकाशः ।३। श्री संवत् १९२७ । जेष्ट मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा मंगल वाशरे द्विज्न रामभरोशेन श्राद्धप्रकाश लिख्यते ॥
२१·७ × १०·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	२४	पू०	सं०१९५०	श्री संवत् १९५० शाके १८१५ विश्वावसु नाम संवत्सरे अमान्तमानेन आषाढ़ कृष्ण ६ षष्ट्यां गुरुबासरे श्री क्षेत्र काश्या रामदासराम भट्टात्मज रामकृष्ण तैलङ्गेन धार्मिक जनमोनल्हादनायां ध्रसांप्रदायिकोयं श्राद्धप्रयोगो लिखितः
२४·१ × १०·१ सें० मी०	४ (१–४)	९	३८	पू०	प्राचीन	श्राद्धं संपूर्णतां यातु प्रासादाद् भवः + + + + + + +॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९६२	५५७९	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६३	७०१५	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६४	१७१३	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६५	६९१	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६६	५९५८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९६७	१६२२	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९६८	५६३९	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२७·६ × ११·२ सें० मी०	५९ (३-५,७-१०, १२-१९,२१-३४,३६-३७, ३९-६५,६७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	......गरुड पुराणादौ श्राद्ध प्रयोग लिख्यते ... ... (पत्र सं० ३)
१७·८ × ९·५ सें० मी०	११ (१–११)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
१७.४ × ९·४ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ९·६ सें० मी०	१० (१–३, ५–११)	९	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्राद्ध संपूर्ण शुभम श्री गणेशायनमः सीताराम ॥
२१·८ × ८·७ सें०मी०	१० (१–१०)	७	२९	पू०	सं०१७४४	इति श्राद्ध विधि समाप्त शुभमस्तु संवत् १७४४ आश्विन वदि १० मंगल वासरे कस्य लिषितमिदं...... ॥
२३·७ × ७·८ सें० मी०	१	१९	११	पू०	प्राचीन	
२८ × ११·८ सें० मी०	१३	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६९	१४१८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
६७०	२२६	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
६७१	२२३५	श्राद्धविवेक			दे० का०	दे०
६७२	४८५१	श्राद्धविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
६७३	४४२३	श्राद्धविवेक (प्रेतक्रिया)	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
६७४	२१८२	श्राद्धविवेक			दे० का०	दे०
६७५	३४८५	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३०.६ × १३ सें० मी०	२४	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११.७ सें० मी०	१० (१–१०)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
२७.५ × १०.३ सें० मी०	३ (१–३)	११	३२	पू०	प्राचीन सं०१६३५	संवत् १६३५ तमसे फलगुणमसे कृष्न पक्षे शुभतिथौ १ : लीखतं हरसण सहाय·· ······ ...
२६.४ × १०.६ सें० मी०	२० १–३०	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोपाध्याय श्री रुद्रधर कृतः श्राद्ध विवेकः श्रीनारायणयनमः + + + + + + ॥
२५.६ × १०.७ सें० मी०	१५ (२६–४३)	११	३६	अपू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री कृष्णदत्त प्रकाशिकायां पितृभक्तिलतायां और्द्ध देहीकेति कर्त्तव्या संपूर्णम्॥ चैत्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां शनिवासरे लिखितं दत्तारामेण पठनार्थस्वमात्मने ॥ शूभंभूयात् मंगलं ददातु ॥ संवत्१६१५॥
२७.५ × १४.२ सें० मी०	६७ (१–५१, ५३–६८)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.२ × ६.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	३२	पू०	प्राचीन	भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा भृगुवासरे पुस्तकं श्राद्ध संकल्प समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७६	३४८६	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
९७७	३४९८	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
९७८	५५९८	श्राद्धसूत्र	कात्यायन		दे० का०	दे०
९७९	५५६६	श्राद्धसूत्र			दे० का०	दे०
९८०	४११३	श्री केशवलीत्र्यादि न्यास			दे० का०	दे०
९८१	४३३६	श्रीनाथादिश्लोक उद्धार			दे० का०	दे०
९८२	१३९५	श्रीरामचन्द्र षोडशोपचार पूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१·२ × ६·२ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१८६७	यस्य स्म० श्राद्ध संकल्पः समाप्तः ॥ संवत् १८६७ चैत्र कृष्ण षष्ठ्यां समापितं गदाधर वेतालेन लिखितं ॥
२३ × ६ सें० मी०	१६ (१–११)°	११	४३	पू०	प्राचीन	श्री काशी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥
२१ × १० सें० मी०	३ (१–३)	६	४१	पू०	सं०१९३९	इति श्री कात्यानकृतं श्राद्ध सूत्रं संपूर्णम् ॥ सं० १९३९ चैत्रसिते ५ बुधे बटुकनाथेनालेखि ॥
२५·६ × ११·८ सें० मी०	४ (१–४)	११	४३	पू०	सं०१९०६	इति कात्यायनमुन्युक्तं श्राद्ध सूत्रं ॥ सं० १९०६ श्रावणवदि ७ गुरौ मिरजापुरे लिखितं ॥
२२·१ × ६·७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव कीर्त्यादि न्यास ॥
२२ × १०·७ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीनाथादिस्लोक उद्धार संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥
१५·५ × ८·५ सें० मी०	५	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचंद्र षोडसोपचार पूजाविधि वसिष्ट हितायाम् संपूर्णं ॥ श्री रामयत ॥ सीताराम ॥ सीताराम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८३	२३०६	श्रीराम नित्यपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६८४	७८१७	श्रीराम पद्धति	रामानुजाचार्य	०	दे० का०	दे०
६८५	१२८५/८	श्रीराम पद्धति	श्री रामानुज		दे० का०	दे०
६८६	२०२०	श्रीराम मानसपूजा			दे० का०	दे०
६८७	७२३४	श्रीसूक्त जपविधि			दे० का०	दे०
६८८	११५६	श्रीसूक्त विधान			दे० का०	दे०
६८६	६५०२	श्रुतिलक्षण प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × ११·३ सें० मी०	७२ (१–७२)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे हरगौरी संवादे श्रीराम नित्यपूजा पद्धतिः समाप्तम् शुभमस्तु ॥
१६·६ × १०·२ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०७	इति श्रीमद्रामानुजाचार्य कृतं श्री राम पद्धति वेदोक्तं संपूर्ण × × सुभमस्तू माघे मासे कृष्ण पछे १२ दसी सं० १९०७ ॥
१७·५ × ९·५ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानुजा कृता वेदोक्त श्री राम पद्धति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तुकल्याण-मस्तु ॥
१३·४ × ८·४ सें० मी०	१४	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहितायां परमहस्ये श्री अगस्त्य सुतीक्षण संवदे श्रीराम-मानसीपूजा संपूर्णं समाप्तम् ॥ शुभं ॥ राम········
१४·२ × ८·७ सें० मी०	११ (१–११)	९	२०	पू०	प्राचीन सं० १८३२	इति श्रीसूक्त विधिः संपूर्णः ॥ श्री महालक्ष्मी देवतार्पणमस्तु ॥ संवत् १८३२ माघ शुध १५ रवौ इदं पुस्तकं समाप्तिमस्तु ॥ स्वार्थं परोपकारार्थं च ॥
१३·६ × ८.७ सें० मी०	२४	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूक्तविधानं समाप्तं ··· ··· श्री परमेश्वरार्पणमस्तु ॥
२२·६ × ९·१ सें० मी०	२० (१–२०)	९	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९०	८२६	श्लेषाशांति विधि			दे० का०	दे०
९९१	४३३७/८	षडंग रुद्रजाप्य			दे० का०	दे०
९९२	७३४९	षडंग ,, ,,			दे० का०	दे०
९९३	३७४५	षडंग ,, ,,			दे० का०	दे०
९९४	१३७६	षण्णवतीश्राद्ध निर्णय			दे० का०	दे०
९९५	२०५४	षष्टीका पूजाविधि			दे० का०	दे०
९९६	६५८८	षष्टीपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स	द	९	१०	११
१९.६ × ९.२ सें० मी०	३ (१–३)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्लेषाशांति विधि ॥
१९ × १३.३ सें० मी०	२१ (५६–७७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्येषडंग समाप्ता शुभंमस्तु ॥
२१.२ × १२ सें० मी०	१५	९	२२	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१६ (१–११, २२–२६)	६	२४	अपू०	प्राचीन सं० १८३३	……संवत् १८३३
२१ × १० सें० मी०	८	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्चातुर्धर गोविंद सूरिस्छनोः शिवस्य कृतौ षण्णवती श्राद्ध निर्णयः समाप्तः ॥
२०.५ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८४१	इति षष्टिका पुजा समाप्तां शुभमस्तू संवत् १८ से ४१ केशला चैत्रावदि अमावस्य रविवासरे क : लिषतं सिड-पारसद पँडेके पुस्तक संपुरणं सुभमस्तू ॥
२४.६ × १०.५ सें० मी०	९ (१–९)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति षष्टी पूजा समाप्ता ॥……

(सं०सू० ४९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९७	५३६२	षष्टी पूजा			दे० का०	दे०
९९८	६६७१	षष्ठि पूजा			दे० का०	दे०
९९९	५५८७	षष्ठी पूजा विधि			दे० का०	दे०
१०००	९०१	षोडश कर्म			दे० का०	दे०
१००१	२७१	षोडशकर्म विधि			दे० का०	दे०
१००२	५०४७	षोडश पूजा			दे० का०	दे०
१००३	४४४० / १०	षोडश पूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·१ × १० सें० मी०	३ (५–७)	६	३१	अपू०	सं०१८५७	इति षष्टी पुजनं समाप्तं शुभमस्तु सवत् १८५७ शाके १७२२ फाल्गुने मासि कृष्ण पक्षे········
२३·५ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३४	पू०	सं० १८८७	इति श्री षष्ठि पूजा समाप्ता ।। संवत् १८८७ मिति अश्विन शुद्ध ३ सोमवासरे समाप्तं ॥
२५ × १२·५ सें० मी०	६	११	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२३ × ६ सें० मी०	२३ (१–२, ४–२४)	१४	४३	अपू०	प्राचीन	इति षोडश कर्माणि समाप्तानि ॥
२६ × १४ सें० मी०	६	१२	३१	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × १२·६ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
१२४ × ९·१ सें० मी०	५	६	१६	पू०	प्राचीन	इति षोडश पूजा विधि संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००४	७७२	षोडशसंस्कार पद्धति			दे० का०	दे०
१००५	६१७	षोडससंस्कार विधि			दे० का०	दे०
१००६	४३१०	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
१००७	५६०६	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
१००८	६३९४	षोडशोप्रकार पूजाविधि			मि० का०	दे०
१००९	४५८७	संकष्ट चतुर्थी पूजा			दे० का०	दे०
१०१०	६४१४	संक्षिप्त चलार्चा-प्रतिष्ठाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२१·२ × ९·५ सें० मी०	२२ (२१-४२)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × १०·४ सें० मी०	३५	८	२९	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × ११·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	१८	पू०	प्राचीन	
१७·३ × ९·५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति षोडशोप्रकारपूजा विधिः सहस्रशीषा समाप्तम् ॥
१९·३ × १२·५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	संकष्ट चतुर्थि पूजा समाप्तः ॥
२१·३ × ९·२ सें० मी०	६ (१–६)	१६	३७	पू०	प्राचीन सं०१७५३	इति संक्षिप्त चलार्चा प्रतिष्ठाविधिः ॥ ···सवत् १७५३ समये मार्गशीर्ष शुद्ध ३ भौम लिखितमिदं पुस्तकं काश्यां विश्वनाथभट्ट राडोहकरेण ॥······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०११	६६६३	संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०
१०१२	७०५५/४	संक्षिप्त संध्या प्रयोग			दे० का०	दे०
१०१३	५७३१	संक्षेप पार्थिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
१०१४	४२६८	संतानगोपाल विधि	सत्यापाढ		दे० का०	दे०
१०१५	३३०१	संध्या			दे० का०	दे०
१०१६	३१०८	संध्या			दे० का०	दे०
१०१७	५५३०/३	संध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३० × ११·६ सें० मी०	१	१४	३५	पू०	प्राचीन	ततो मूलं जत्वा शिवाय जपं समर्पये दिति संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोगः ॥
१३·५ × १३ सें० मी०	४ (१–४)	१६	१७	पू०	प्राचीन	
१५·९ × १०·६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति संक्षेपतः पार्थिव विधि ॥
२५·७ × ११·५ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री सत्याषाढ कृते अनपत्यत्वहर संतान गोपाल विधिः ॥
२२·६ × १५ सें० मी०	३ (१–३)	१७	३१	पू०	प्राचीन	इति सायं संध्या समाप्ता ॥ × × ×
२६·४ × ११·३ सें० मी०	४ (१–४)	८	३९	पू०	प्राचीन	इति संध्या संपूर्ण ॥
२६ × १४·७ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१८	५५६१	संध्या			दे० का०	दे०
१०१९	६११३/१०	संध्या			दे० का०	दे०
१०२०	५७५६	संध्या			दे० का०	दे०
१०२१	२३६७	संध्या			दे० का०	दे०
१०२२	२२९६	संध्या			दे० का०	दे०
१०२३	६४०१	संध्या			दे० का०	दे०
१०२४	६४४४	संध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·४ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	७	३५	पू०	प्राचीन सं०१९४१	इति लामगानां सध्या सामाप्तम ॥ शुभं मगलददात्···संवतु १९४१ मु: ललतपुर।
१६·५ × १३ सें० मी०	१० (२७–३६)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल संध्या समाप्ता ॥
१६·३ × १२·६ सें० मी०	८ (१–८)	१४	१४	पू०	प्राचीन	इति सायं संध्या समाप्ता शुभमवति मगलंददात् ॥··· ···
२२ × ८·५ सें० मी०	९	७	३०	पू०	प्राचीन सं०१८९५	इति श्री यजुर्वेद सन्ध्या संपूर्णम् सम्वत् १८९५ ॥
२७·८ × ११·९ सें० मी०	६ (१–६)	९	२५	पू०	प्राचीन सं०१९११	इति संध्या विधिप्रयोग: ············ ······संवत् १९११ का फालगुण मासे दसम्यां ········ ॥
२१·५ × ९ ३ सें० मी०	७ (१–२, ४–८)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति त्रिकाल संध्या विधि + + + ॥
१५·९ × ८·४ सें० मी०	४ (४–९)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति गायत्री त्रिकाल संध्या संपूर्ण शुभमस्तु संवत् १८९६ के साल मार्ग सुदि १२ क: लिषा दामोदर दाश पंपषरा बैठे श्री तिवारी बस्ती राम पठनार्थकं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०२५	५५१२	संध्या			दे० का०	दे०
१०२६	७३७७/३	संध्या			दे० का०	दे०
१०२७	७७९८	संध्या			मि० का०	दे०
१०२८	७६७४	संध्या			दे० का०	दे०
१०२९	६२१६	संध्या			दे० का०	दे०
१०३०	७७४/४	संध्या			दे० का०	दे०
१०३१	७०२०	संध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × ८·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
९.६ × ४.१ सें० मी०	१२	४	१२	अपू०	प्राचीन	
१६·१ × ९·६ सें० मी०	५	७	१६	अपू०	अर्वाचीन	
१७·५ × ८·६ सें० मी०	३ (४, ५, १०)	५	१८	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ८·६ सें० मी०	३	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१४·६ × ९·३ सें० मी०	६ (१५-२०)	७	१३	अपू०	प्राचीन	
१२·३ × ९·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	१२	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३२	३८५७	संध्या जप			मि० का०	दे०
१०३३	५०५१	संध्यातर्पणविधि			दे० का०	दे०
१०३४	७०७६	संध्या पद्धति			दे० का०	दे०
१०३५	६४६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३६	७७११	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३७	७०२५/३	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३८	२०५१	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १०·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	पू०	आधुनिक	इति संस्छोजपः। तीर्थेनिष्क्रम्य ॥
२४·४ × ११·२ सें० मी०	१८ (१–१७, १६)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ६·६ सें० मी०	४२ (५६–६१, ६३–१०२)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	सं० १८७३	इति श्री संध्यासंमाप्नम् ॥ शुभमस्तु सं० १८७३ तत्रवर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां चंद्रवसरे लिषितम् रामदियाल ब्रम्हणे स्वपठनार्थि हेतवे ... ...
२५·६ × ११·३ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति संध्या प्रयोगसंपूर्णम् लीपिकृतं मिश्र दिवान श्रावण मासे कृष्णपक्षे त्रतीयायां भोमवासरे शुभमस्तु श्रीराम चंद्रायनमः + + ॥
१०·८ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	१७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
१४·१ × ६·५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	१५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३९	२११७	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४०	३२९९	सध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४१	३९९५	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०४२	२६५६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४३	३९२९/२	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४४	४३३५	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४५	१९१५	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०·६ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१३·५ × ८·६ सें० मी०	४	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × १०·३ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल संध्या समाप्ता ॥ × × × × × × ×
१६·५ × १०·५ सें० मी०	६	६	२३	अपू०	प्राचीन	
१३·४ × १५·६ सें० मी०	११ (२–१२)	६	१३	अपू०	प्राचीन	इति यजुर्वेदी संध्या प्रयोगः ॥
१५·७ × ८ सें० मी०	११ (२–६, ११–१३)	१०	१६	अपू०	प्राचीन सं० १६२०	लिखित पं श्री पुजारी कनइया लाल संवत १६२० कात्तिकवदि ॥
३१ × ६·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	४७	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति संध्या प्रयोगः समाप्तः संवत् १६११ चैत्र कृष्णे १५ भौमवासरे मु० कपु गंगातरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०४६	२८०१/४	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४७	५६७६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४८	७००४/२	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४६	५२२६/४	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०५०	३५८६	संध्याप्रयोगः			दे० का०	दे०
१०५१	४४३०	संध्याभाष्य	दिलेरामशर्मा		दे० का०	दे०
१४५२	५२०८	संध्याभाष्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·५ × १३·५ सें० मी०	७ (३–९)	९	१५	अपू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोगः ॥
१४·८ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	९	१६	पू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोगः ॥
१२·२ × ८·२ सें० मी०	११ (१५–२५)	५	१४	पू०	प्राचीन	इति संध्या संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
१६·५ × ११·२ सें० मी०	५ (५–९)	११	२०	पू०	प्राचीन	संध्या समाप्तः ॥
२१·६ × १२·७ सें० मी०	७ (१–७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति त्रै कालिक सन्ध्योपसन समाप्तम् ॥ राम सम्वत् १९२१ गायत्री लिषतं···॥
३५·२ × १३·४ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	५७	पू०	प्राचीन	इति संध्याविधानम् ॥
२२·४ × ११·६ सें० मी०	३ (१६–१८)	९	३०	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०५१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५३	६५७१	संध्यामंत्र व्याख्या	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१०५४	२७४६	संध्या महावाक्य पंचीकरण			दे० का०	दे०
१०५५	१५४५	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५६	३८८४	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५७	४६२८	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५८	४६६५	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५९	७१२७/३	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.५ × ९.९ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३२	पू०	प्राचीन	भट्टो जी दीक्षित विरचितं संध्या मंत्र व्याख्यानं संपूर्णं ॥
१७ × ८.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति परिव्राजकानां संध्या पंचीकरण महावाक्यादिकं समाप्त ।
११.५ × ९.७ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	१२	पू०	प्राचीन सं० १७६९	इति त्रिकाल संध्या विधिः । सं० १७६९ वर्षे कार्तिक सु ७ शनौ लिषितं सदा शिव देवेन वदन दुवे निमिक्तं ॥
१६.१ × ११.१ सें० मी०	८ (१–८)	१०	१४	पू०	प्राचीन	इति जप विधिः संध्याविधिः समाप्तं ॥
१४.७ × ११.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति संध्या प्रयोगस्समाप्तः शुभः राम '''
२७.९ × १२.१ सें० मी०	६ (१–६)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री संध्याप्रयोगः समाप्तः ॥
१७ × १०.९ सें० मी०	७ (१–७)	१६	१२	पू०	प्राचीन सं० १७७९	इति संध्या प्रयोगः ॥ शुभंभवतु ॥ संवत् १७७९ चैतसुदी २ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६०	५२९८	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६१	३०८०	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६२	६९४	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६३	४६८८	संध्या विधि प्रयांग			दे० का०	दे०
१०६४	५५४३	संध्या बिधि प्रयोग			मि० का०	दे०
१०६५	१२४३	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६६	२२८८	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४×१०·२ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति संध्या प्रयोग शम्पूर्णम् ॥
१५·७×१०·३ सें० मी०	८	८	१८	पू०	प्राचीन	इति संध्या विधि प्रयोगः समाप्तं ॥ शुभं भूयात् । श्रीरामायनम ॥
२२·८×११ सें० मी०	४	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·८×१३·४ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति संध्या समाप्तं ॥
२०×८·२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	अपू०	आधुनिक	..... अथ संध्या प्रयोगः...... (आदि)
२१·१×६·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२१·८×६·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६७	६७७३	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६८	४६६४	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६९	४५१७	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७०	१२८५/८	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७१	४९६१	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७२	५५०३	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७३	१५१५	संध्योपासन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.२ × ८.९ सें० मी०	९ (१–९)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१९०९	इति विसर्जनम् इति + + + + + संध्याविधि प्र० समाप्ताः शुभमस्तु संवत् १९०९ ज्येष्ट कृष्ण पक्षा + + + ॥
१४.६ × ७.९ सें० मी०	२५ (१–२५)	५	१९	पू०	प्राचीन	इति संन्यासस्य संध्याविधि समाप्तं ॥
२५.२ × १०.४ सें० मी०	१४ (२,२–१४)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इति सायंशंध्या शंपूर्ण ··· ··········॥
१७.५ × ९.५ सें० मी०	६ (१–६)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति सामगात्रिकेत्रिकाल संध्योपासनं समाप्तं ॥१७॥६॥ ॥ ॐ ॥
२२.६ × ८.५ सें० मी०	८ (१–८)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल गायत्री विधिः समाप्तः ॥ + + + + + ॥
२१.७ × १० सें० मी	५ (२–६)	८	२९	अपू०	प्राचीन	इति सामगानां सन्ध्योपासनम् ॥
१४.८ × ८.५ सें० मी०	१० (२–११)	६	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७४	१८५१	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७५	२९२०	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७६	२४६६	संन्यास पद्धति			दे० का०	दे०
१०७७	३७०१	(आतुर) संन्यासविधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७८	४५३९	संस्कार पद्धति			मि० का०	दे०
१०७९	२३६९	संस्कार विधि			दे० का०	दे०
१०८०	६२४१	संस्कार-विधि (गर्भाधान से अन्नप्राशन तक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११ × ८ सें० मी०	१४	८	११	पू०	प्राचीन सं० १८५३	इति संध्या संपूर्णं समाप्तं ॥ संवत् १८५३ भाद्र पद वदि आदित वार ॥ १० ॥
१५·७ × ७·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × ९·५ सें० मी०	३९ (१–३९)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × ११·७ सें० मी०	४ (१–४)	८	२८	पू०	प्राचीन	अथ आतुर संन्यास विधि समाप्तः ॥
२२·५ × १०·५ सें० मी०	४७ (१–८, १५–५३)	९	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८९४	सरस्वतीं गुरुं चैव कुर्वे संस्कार पद्धतिं ॥ (प्रारंभ) + + + इत्यर्कविवाह ॥ संवत् १८९४ सके १६५(?) भाद्रपक्रुष्ण १० शुक्रवासरे टोपलोपनामक बाला जी नामकेन लीखीतं स्वार्थं परार्थं च इयं देव नाथि……
२३·२ × ९·४ सें० मी०	३४	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
१९ × ११·३ सें० मी० (सं०सू०५२)	२५	९	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८१	६३५८	संस्कारविधि (चौलकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन आदि)			दे० का०	दे०
१०८२	२४१८	संस्कारविधि			दे० का०	दे०
१०८३	२१८५	सत्यनारायण पूजाविधि			दे० का०	दे०
१०८४	१८७८	सत्यनारायण पूजाविधि			दे० का०	दे०
१०८५	६२१	सपिंडकर्म			दे० का०	दे०
१०८६	३८६१	सपिंडी			दे० का०	दे०
१०८७	४७४१	सपिंडीकरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·४ × ८·४ सें० मी०	१४		३२	पू०	प्राचीन	
३२·६ × १३·३ सें० मी०	७ (१३४–१३६, १४१)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × १०·३ सें० मी०	५	८	२५	पू०	प्राचीन	
२२·६ × १३·२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२४	अपू० ; कृमिकृंतित	प्राचीन	इति प्रार्थना ॥०॥
१६ × १३ सें० मी०	३६ (१–६, १२–४१)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	इतिसर्पिडि कर्म समाप्तम ।
१६·१ × ८·३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति वाराहेपिंडकल्पे भगवछास्त्रे ॥
१६·१ × ९·८ सें० मी०	४१ (१–४१)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति सपिंडी करणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८८	३६०७	सपिंडीकरण विधि	घोषमणि मिश्र		मि० का०	दे०
१०८९	५४७९	सपिंडीकरण श्राद्ध			दे० का०	दे०
१०९०	१०६२	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
१०९१	४९९४	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
१०९२	५२२९ / ४	सप्तशतिका पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
१०९३	५८०५	सप्तशती पाठविधान			दे० का०	दे०
१०९४	८९६	सरोजकलिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·५ × ११·४ सें० मी०	१८ (१–६, ८–९, १२–१४, १६–२२)	९	२२	अपू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री मत्पंडित घोषमणि मिश्र कृतायां प्रेतप्रकाशिकायां निरग्निको… हिक क्रिया सपिंडीकरण विधिः समाप्तः शुभंभवतु संवत् १९२२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्यां ।।…
२१७ × १०·६ सें० मी०	१८ (५–१७, १९–२०, २२–२४, २६–२८)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति सपिंडीकरण श्राद्धं संपूर्णं ।। संवत् १९० चैत्र शुक्ला चतुर्थी शनिवासरे लिखतं पचोली महताब सिंह स्वातम पठनार्थं शुभं भूयात् ।।
३२·५ × १२·७ सें० मी०	४७ (१–४७)	१०	२९	पू०	प्राचीन सं० १९३७	इति सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति समाप्तम् ।। संवत् १९३७ ।। शाके १८०२ ।। मिति……लखितं फिकिरचंद्रेण पुस्तकं शुभदायक ।। रामायनमः ।। लक्ष्मणायनमः ।।
२५·४ × १०·७ सें० मी०	२२ (१–३, ३–४, ४-५, ५-७, ९, ११–२१)	९	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९०४	इति सपिंडीकरणे श्राद्ध पद्धतिः ।। श्रीरस्तु ।। सं० १९०४ कार्तिक वदि ९ ।।
१६·५ × ११२ सें० मी०	५	७	१४	पू०	प्राचीन	सप्त सतका पूजा पध्यत समाप्ता ।।१।।
१५·९ × ९·८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × १३·१ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	२९	पू०	प्राचीन सं० १८५८	इति मैथिल निबंधे सरोज कलिका समाप्ता ।। संवत् १८५८ ।। पौष कृष्ण षष्ठी शनौ यात्त–ग्रामे ।। शुभ० ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०९५	४००१	सर्पसंस्कार विधान			दे० का०	दे०
१०९६	५८२७	सर्वकर्मसाधारणांगपद्धति	देवभद्रपाठक		दे० का०	दे०
१०९७	४४३४	सर्वकर्मस्वग्निनिर्णय	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१०९८	५१६८	सर्वतोभद्रदेव स्थापन			मि० का०	दे०
१०९९	७६३२	सर्वतोभद्रपूजन			दे० का०	दे०
११००	३५०७	सर्वतोभद्रपूजनम्			दे० का०	दे०
११०१	२२४२	सर्वतोभद्रपूजनम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१ × ६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४३	पू०	प्राचीन	सर्प संस्कार विधानं ॥
२३·२ × १०·४ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १६१२	इति श्री मन्महायाज्ञिक नागर ज्ञातीय पाठक श्री रामचंद्र सूनु गंगाधर पाठक वंश संभूत पाठक श्रीबलभद्रात्मज देवभद्रकृत सर्वकर्मसाधारणांग पद्धतिर समाप्ता। संवत् १६१२ मिती ज्येट बदी ५ रइवार लिखतं ॥
१८·७ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इमि रामकृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्टे कृतौ सर्वकर्मस्वग्निनिर्णयः ॥ शुभमस्तु ॥
३२·५ × २०·७ सें० मी०	१ (खर्रा)	३३	१८	पू०	आधुनिक	
२२ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति सर्वतोभदेवता ॥
३१ × १३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति सर्वतोभद्र पूजनम् ओं तत्सत् संवत् १६०४ मार्गशुक्ला ५ रवौ लिखितं.........। ६
३१·२ × १६·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १६१३	इति सर्वतो भद्रपूजनम् ओम् तत्सत् संवत् १६१३ आषाड कृष्णा......

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०२	५३६४	सर्वतोभद्रपूजन विधि			दे० का०	दे०
११०३	२८२६	सर्वतोभद्रमंडल पूजाविधि			दे० का०	दे०
११०४	७५८८	सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र			दे० का०	दे०
११०५	६७४१	सर्वदेवता प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
११०६	३१५/२	सर्वदेवपूजन प्रकार			दे० का०	दे०
११०७	८२५	सर्वदेव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
११०८	६७५४	सर्वपृष्ठाप्तोर्यामिस्यप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·५ × १२·४ सें० मी०	४ (१–४)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १९२९	इति सर्वतोभद्रपूजनविधि समाप्तं शुभमस्तु संवत् १९२९ शाल ।। मीती मार्ग शिर्ष शुक्ल ९ ।। रविवासरे ।।
२४·७ × १५·६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं० १९२५	इति सर्वतोभद्रमंडल पूजा विधिः समाप्ता ।। श्रावणे चसितपक्षेपंचम्यां भृगुवासरे ।। शखाह्वकेंदुकेऽब्दे १९२५ लिख्यते पूजनमया ।··· ··· ··· ···
२३·७ × १०·३ सें० मी०	९ (१–९)	११	३७	पू०	प्राचीन सं० १८७४	इति सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र समाप्त ।। संवत् १८७४ शके१७३९ सर्व धारिणां संवत्सरे भाद्र पद मासे शुक्लपक्षे + +
२१·४ × १० सें० मी०	२ (१–२)	११	४०	पू०	प्राचीन	लिंगतोभद्र देवता समाप्ता ।।
१७·७ × ११·८ सें० मी०	४ (१–४)	१५	१२	पू०	प्राचीन	इति सर्व देव पू० ··· ···
२७·७ × ११·३ सें० मी०	७० (१–५१, ५१–६९)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	१४	४३	पू०	प्राचीन	यज्ञ पुछादि सर्व मति रात्रवत् अप्तोर्यामेत्रयस्त्रिंशछस्त्वाणिभवंति एषा तृप्तिः सर्वस्तोमस्य सर्व पृष्ठाप्तोर्यामस्य समाप्ता ।।
(सं० सू० ५३)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०९	६७६०	सर्वपृष्ठाप्तोर्यामिस्योक्थ्यंत प्रयोग			दे० का०	दे०
१११०	६५१५	सर्वपृष्ठेष्टि हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
११११	६५०६	सर्वपृष्ठेष्ठि आध्वर्यव प्रयोग			दे० का०	दे०
१११२	४७३७	सर्वप्रायश्चित प्रयोग			दे० का०	दे०
१११३	६९३८	सर्वस्तोम सर्वपृष्टाप्तोर्यामिस्य ब्राह्मणाच्छंसी प्रयोग			दे० का०	दे०
१११४	६१५/३	सर्वेषां वर्णानां शुद्धाशुद्धिः			दे० का०	दे०
१११५	३९८४	सहस्रचंडी (होम) विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × ८·८ सें० मी०	१७ (१, ४–१९)	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्योक्थ्यतः प्रयोगः ॥······
२२·३ × ८·१ सें० मी०	४ (१–४)	८	३४	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायनोक्त सर्वपृष्ठेष्टिहोत्र प्रयोगः समाप्तः ॥ ···
२३ × ९·३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति सर्व पृष्ठेष्ठिग्राध्वर्यव प्रयोगः ॥
२०·३ × ७·५ सें० मी०	९ (१–९)	७	३६	अपू०	प्राचीन	······अथ सर्व प्रायश्चित प्रयोगः ॥ ······ (प्रारंभ) × × ×
२३·१ × ९·७ सें० मी०	११ (१–११)	९	३३	पू०	प्राचीन	छंदोगवशान्निर्णयः ॥ सर्वस्तोम सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्य ब्राह्मे ॥
१९½ × ११½ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२५·९ × ८·८ सें० मी०	१	७	३९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१११६	२६६०	सहस्त्रशीर्षा			दे० का०	दे०
१११७	६३७३	सांगमंडलपवमान अनुष्ठान पद्धति प्रयोग			दे० का०	दे०
१११८	५४४०	सांवत्सरिक श्राद्ध			दे० का०	दे०
१११९	५८१३	सापिड्य प्रदीप	नागोजीभट्ट		दे० का०	दे०
११२०	४७२० / ३	सायं संध्या			दे० का०	दे०
११२१	५४८५	सालाकर्म			दे० का०	दे०
११२२	७२०	सावित्रीव्रतकथोद्यापन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·४ × ८·६ सें० मी०	८ (२–३, ७, ९ १२–१४)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सहस्त्रशीर्षा संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु राम ॥
२०·८ × ९·८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३८	पू०	सं०१८२९	इति श्री महदृग्विधान शौनकानुसारी सांग मंडल पवमानानुष्ठान पद्धति प्रयोगः समाप्तः । इदं पुस्तकं सदा सदाशिवकवीश्वरेण पौष शुद्ध पौर्णमास्यां लिखितं ॥ संवत् १८२९ मिति ॥
२१ × ७·८ सें० मी०	६ (१३–१८)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इति सांवस्तरीक श्राद्ध प्रयोगः ॥
२८·७ × १२·१ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१८१०	इति श्री मतकालोपनाम शिव भट्ट सुत सतीगभज नागोजी भट्ट कृतः सापिंडय प्रदीपः समाप्तः शुभमस्तुः । संवत् १८१० मीति सावनवदि अमावस्य १५
१७·७ × ११ सें० मी०	३ (१८–२०)	७	१८	पू०	प्राचीन	
२२·८ × ९·४ सें० मी०	३ (१–३)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति साला समाप्तम् ।
२४·४ × ७·७ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१८७८	इति श्री भविष्योत्तर पुराण कृष्ण युधिष्ठिर संवादे वट सावित्री व्रत कथोद्यापन समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२३	६११२	सिद्धिविनायक-पूजाविधि			दे० का०	दे०
११२४	५३३६	(श्री) सूक्तविधान			दे० का०	दे०
११२५	१२२६	(श्री) सूक्तविधान पुरश्चरण			दे० का०	दे०
११२६	४७२० / ३	सूत्रोक्त प्रातः संध्या	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
११२७	४७२० / ३	सूत्रोक्त मध्याह्नसंध्या			दे० का०	दे०
११२८	४७४४	सूत्रोक्त श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
११२९	४१६५	सूत्रोक्त श्राद्ध संकल्प			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × १०·६ सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति वरद चर्थी सिद्धि विनायक पूजा विधिः समाप्तः ॥
२२·२ × ७·४ सें० मी०	४ (१–४)	८	४८	पू०	प्राचीन	इतिश्री सूक्त विधानं संपूर्णं ॥
२१·५ × ८·६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री सूक्तस्य विधान पुरश्चरण प्रकारः शुभभवतु ॥
१७·७ × ११ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्त प्रातः संध्या समाप्तः ॥
१७·७ × ११ सें० मी०	६ (१२–१७)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्तमध्यान्ह संध्या ॥
२४·८ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	समाप्तोयं सूत्रानुसारी दर्श श्राद्धप्रयोगः ॥ श्री सीताराम चंद्र ॥
२१·५ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्त श्राद्ध संकल्पः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३०	६५२९	सोमभक्षविवेक			दे० का०	दे०
११३१	६५११	सोमभक्षविवेक			दे० का०	दे०
११३२	६७००	सौत्रामणि प्रयोग			दे० का०	दे०
११३३	६७५३	सौत्रामणी होत्र			दे० का०	दे०
११३४	६२७९	स्नान			दे० का०	दे०
११३५	२६९१	स्नान मंत्र			दे० का०	दे०
११३६	२०६	स्मार्तकर्मानुष्ठान	भवदेव भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·८ × ८·६ सें० मी०	११ (१–११)	६	३२	पू०	प्राचीन सं० १८८८	संवत् १८८८ शुभ कृत् नाम संवत्सरे मिति वैशाख ब १० गुरुवार ॥
१८·६ × ८·४ सें० मी०	२ (१–२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमे आश्वलायनानां सोम भक्ष विवेकः ॥ + + +
२१·६ × ६ सें० मी०	३ (१–३)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति सौत्रामणि प्रयोगः ॥
२४ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	
२१·६ × १०·८ सें० मी०	६ (३–५, ८–१०)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति स्नान मंत्रः ।
१६ × ८·४ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति पिंड पितृ यज्ञः ॥ समाप्तः ॥
(सं०सू० ५४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३७	६७६	❀ स्मार्तपदार्थ संग्रह (गङ्गाधरी)	गङ्गाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११३८	६६१२	स्मार्तपाकसंप्रयोग	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
११३९	६३७४	स्मार्त प्रायश्चित्त	दिवाकर		दे० का०	दे०
११४०	४६९९	स्मार्तसंग्रह कारिका (आधान पद्धति)	गंगाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११४०	७६४५	स्मार्ताग्न्यनुगमन प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
११४१	४११९	स्वस्ति वाचन			दे० का०	दे०
११४०	४७०८	स्वस्तिक वाचन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × ११.५ सें० मी०	५०	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १६८४	इति गंगाधरी पुस्तक मिदं संपूर्णं ॥ संवत् १६८४ वर्षे आषाढ़ वदि ५ रवौ लेखः ॥
२३.२ × १०.२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्यज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनुना दीक्षितानतेन सर्वोपकाराय वशिष्टासमन्त्रकाश्रवरणाकर्माधापाक संप्रयोगः समाप्तः ॥ ... ...
२१ × ९.४ सें० मी०	६७ (१–६७)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्कालोपनामक भट्टरामेश्वरात्मज भट्ट महादेव द्विज वर्य सूनु भट्ट दिवाकर विरचित स्मार्त प्रायश्चित्तानि प्रयोग रूपेण नित्यनैमित्तिक प्रायश्चित्तानिकारिकाद्युक्तानि निरूपितानि ॥ इतिस्मार्त प्रायश्चितः समाप्तः ॥
२७.४ × ११.१ सें० मी०	५४ (१–५४)	९	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री गंगाधरभट्टविरचितेस्मार्तपदार्थ संग्रहेमणिकावधानंसमाप्तं ॥... (पत्रसंख्या ९) आधानपद्धतिकुर्वे स्मार्त संग्रह कारिका ॥१॥ (प्रारंभ)
२७.२ × ११.४ सें० मी०	४ (१–४)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति स्मार्ताग्न्यनुगमन प्रायश्चितं समाप्तं ॥
१६ × ९.१२ सें० मी०	१० (२–११)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०.१ सें० मी०	७ (१-२,४-८)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११४४	७०३९	स्वस्त्ययन			दे० का०	दे०
११४५	५६३६	स्वाहाप्राण			दे० का०	दे०
११४६	५४३	हंसविधानार्घ्यम्			दे० का०	दे०
११४७	७१७०	हनुमत्प्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
११४८	६६५७	हरिवंशश्रवणविधि			दे० का०	दे०
११४९	५०८२	हरिसमाराधनसार संग्रह	रामप्रसाद		दे० का०	दे०
११५०	४६३२	हरिसमाराधनसार संग्रह	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·२ × १०·६ सें० मी०	७ (२–८)	६	१५	अपू०	सं०१९५२	इति श्री स्वस्तेण समाप्तत:म् १३३ स्वस्ती श्री सर्व्व उपमाग्य पं श्री मिश्र वहन्हीहां जज दत्तराम कलीपतं मिदं पुस्तकं स्वस्तेन समप्तत: ३४ समत् १९५२ के साल…… ……
१९·८ × ९·४ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२३	पू०	प्राचीन	स्वाहा प्रान समाप्त: शुभमस्तु ॥
१७ × ८·५ सें० मी०	६	५	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·९ × ११·४ सें० मी०	३ (१–३)	९	४०	पू०	प्राचीन सं०१९१९	इति नारद पंचरात्रोक्त हनुमत् प्रातिष्ठा प्रयोग: संवत् १९१९ फाल्गून शुक्ल ८ गुरुवासरे लिखा रावजी मोघे स्वार्थ परार्थं ॥
२२·१ × ९·७६ सें० मी०	६ (१–६)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति पद्म पुराणे हरिवंश श्रवणविधि: समाप्त: ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तू ॥ + + + + + + +
३९ × १२·३ सें० मी०	१३ (२–१४)	७	६२	अपू०	प्राचीन	श्री मद्रामप्रसाद प्रणत विरचित: पूर्णतां सम्यगाप्त: इति श्री हरिसमाराधन शार संग्रहस्समाप्त: शुभमस्तु ॥
२६·५ × ९·१ सें० मी०	६ (१–६)	८	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्राम प्रसाद मिश्र विरचितो हरि समाराधन शार संग्रह: समाप्त: शुभं भूयात शुभ मस्तु शुक्लपक्षे + + + + + + +॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५१	४६९६	हरिसमाराधनसारसंग्रह	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०
११५२	१४०१	हरिस्मृति			दे० का०	दे०
११५३	३५२४	हवनपद्धति			दे० का०	दे०
११५४	४७४६	हिरण्यश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
११५६	४९३७	होम			दे० का०	दे०
११५६	६७५६	होमचिंतामणि			दे० का०	दे०
११५७	५३०	होमपद्धति	श्रीलंबोदर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·८ × ११·१ सें० मी०	४ (१–४)	१३	४१	पू०	सं० १९०४	इति श्री मद्रामप्रसाद मिश्राचार्य्य विरचितो हरिस्समाराधनसार संग्रहः समाप्तः शुभं भूयात् वेदाकासांक भमाने मिते सम्वत्सरे तथा ज्येष्ठाऽधि शुल्क आदित्ये नवम्यां रविवशरे लिखितं चान्द्रपुरे तत्सूनुना रामनिधि मिश्राचार्य्य नाम्नालिखितम् ॥
२१·१ × १०·४ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२२	पू०	प्राचीन सं० १८५६	इति हरि स्मृतिः ॥ संवत् १८५६ गुणदेवेन पुस्तकम् लेखि परोपकार्यार्थम्
२३·५ × १०·३ सें० मी०	१३ (२–३ ५–१५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × १२ सें० मी०	१	९	४७	पू०	प्राचीन	
५३ × १८·७ सें० मी०	१ खर्रा	४४	१८	पू०	प्राचीन	इतिपूर्णाहुतयः।
२२·१ × १०·१ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति पदवाक्य प्रमाणज्ञ महामहोपाध्याय श्री कर्क रचित होम चिन्तामणिः ॥
३०·१ × १५·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री लंबोदर विरचिता होम पद्धतिः समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५८	२७४४	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११५९	४३५१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६०	६७७	होमपद्धति	लम्बोदर		दे० का०	दे०
११६१	५०२६	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६२	७८६८	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६३	३०२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६४	४६८४	होमपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२१·७ × १२·६ सें० मी०	२८ (१–२८)	९	२३	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति रूपनारायन होमपद्धतिः समाप्तः शुभं भूयात् ॥ संवत् १८६५ शके १७३० पौष शुक्ल नवम्यां सोमवासरे पुस्तक लिखित मिश्र पुमान राम श्री श्रीराम चन्द्राय नमः ॥
३०·५ × १२·९ सें० मी०	५ (१–५)	१४	४९	पू०	सं० १९१३	सं० १९१३ आषाड कृष्ण १३ लिखितं मिश्र मुरलीधर स्वयं पठनार्थं श्रों तत्सत् ॥
२६.६ × ११·५ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	३६	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति श्री लम्वोदर विरचित होम पद्धति समाप्तम् संवत् १९३५ चैत्र कृष्ण ९ रविवासरे लिखितं गंगा सहायेन अहौलना मध्ये इदं पुस्तकं संपूर्णोजातः शंकरजयतु शुभां ददातुः ॥
२४ × १०·३ सें० मी०	२ (९–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
१४ ८ × १३·५ सें० मी०	२०	१२	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८६५	इति शीवपूर्णाहुति होमजग्य पदति समापता ॥ मीतो ज्येष्ट सुदि २ संवत् १८६५······
२४ १ × १०·२ सें० मी०	१५	३०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६ × १२ सें० मी०	१९ (९५–११३)	९	३१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६५	५२६७	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६६	२४२८	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६७	७५६६	होम विधि			दे० का०	दे०
११६८	५२४६	होम विधि (कुशकंडिका)			दे० का०	दे०
११६९	७३११	होम विधि			दे० का०	दे०
११७०	७७४५	होम विधि			दे० का०	दे०
११७१	६४६५	होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.५ × १२.४ सें० मी०	५ (१-३, ५-६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०.३ सें० मी०	८ (१–६, २४, २६)	१२	३५	पू०	प्राचीन	
३०.६ × १४.७ सें० मी०	४५ (१–४५)	११	३१	पू०	सं० १९३९	इति श्री होम समाप्त· संवत् १९३९ के शाल·········
२३.२ × ९.८ सें० मी०	४ (१–४)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति होम समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४ × १२ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२६.१ × १०.३ सें० मी०	१० (१–१०)	४२	३९	अपू०	प्राचीन	
२२.९ × १०.४ सें० मी०	८	८	३२	पू०	प्राचीन	अथ पशुवंध हौत्र प्रयोगः ॥ (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
कोश १	१७६८	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	क्षपणाक		दे० का०	दे०
२	४५२८	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	क्षपणाक		दे० का०	दे०
३	५५९९	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी			मि० का०	दे०
४	४४८७	अनेकार्थ मंजरी (१–४ अध्याय)			दे० का०	दे०
५	६०९९	अनेकार्थ मंजरी			दे० का०	दे०
६	३४७९	अभिधान चिंतामणि	हेमचंद्र		दे० का०	दे०
७	११७६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.५ × १०.५ सें० मी०	६ (४–९)	१३	४०	अपू०	सं०१८७४	इति श्री काश्मीरणाम्नयेमहाक्षपणक विरचिते अनेकार्थध्वनिमजर्यां पदाधिकार: काड: शुभमस्तु ॥ संवत् १८०७४ ॥
२३.२ × ११.६ सें० मी०	७ (१–६, ८)	११	४८	अपू०	सं० १८९४	इति श्री काश्मीराम्नायेमहाक्षपण कविविरचितायामनेकार्थपजर्यां ऋतोकाधिकार: प्रथमकांड: । (पत्रसंख्या–४) × × × इतिऽनेकार्थ ध्वनिमजर्यां तृतीयोध्याय: ३ संवत् १८९४ वैशाष मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां बुधवासरान्वितायां लिखितं मिश्रमहतावसिह स्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु ॥
२१ × ११.१ सें० मी०	९ (१–९)	११	४०	पू०	आधुनिक	इत्यनेकार्थ्वनि मंजर्यां द्वितीय कांडोऽर्ध श्लाकाधिकार: सांग एव सर्थित: ॥ अनेकार्थ काश समाप्त: …………
२७.८ × ११.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३२	पू०	सं० १९१४	इत्यनेकार्थमंजरय्यां एकाक्षरधिकार: श्चतुर्थोध्याय: ॥ ४ माघमासे शितेपक्षे चतुर्थोसोमवासरेस्वलिषित्स्वामपाठार्थं बडकलीनगरस्थित: १ सवत् १९१४ मंगलं लेखकानांच पाठकानांचमंगलं
२२.२ × ९.७ सें० मी०	१५ (१, ३–१६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री लिंगशासनं समाप्तं ॥ महाशब्दोपनामक गदाधर भट्टेन माघे ससि शुक्ल पक्षेन वम्यां लिखितं ॥
३० × १०.९ सें० मी०	२५	१४	५४	अपू०	खंडित सं०१७६६	इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचितायामभिधान चितामणो नाममालायां सामान्य कांड: षष्ठ: समाप्त: ॥ सं०१७६६ वर्षे
२५.७ × ११.९ सें० मी०	(४९,६४–९९,१०६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	३०६४	अमरकोश (नामलिंगानुशासन-भूमिकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
९	७४६	अमरकोश			दे० का०	दे०
१०	७७५	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
११	८५१	अमरकोश (स्वरादिकांड) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	क्षीरस्वामी भट्ट	दे० का०	दे०
१२	८६६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१३	४३०७	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
१४	४३८२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२·८ × १०·५ सें० मी०	२१ (२२-४२)	११	३७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ भूमिकाण्डो द्वितीयोऽयं साङ्गएव समर्थितः ॥ तपसि शुक्लदले चतुर्दश्यां कुजे दिने समाप्तोयं द्वितीयः कण्डः लिखितमिदं गुरुदयालेनेति शिवम् ॥
२१·६ × १०·३ सें० मी०	६०	६	२८	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने··· ···एव समर्थितः ? ॥
२२·२ × १०·४ सें० मी०	२१	६	३०	पू०	सं० १६३७	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने-स्वरादि कांडः प्रथमः १ सांगएव समर्थितः आषाढ़मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया गुरुवासरे लिखितं रामप्रसादेन पुस्तकं बुद्धि दायकं संवत् १६३७, राम राम
२७·५ × ११·३ सें० मी०	५२ १, ३-५३	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट क्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितमरकोशोद्घाटने स्वर्गादि कांडं प्रथमं समाप्तः ॥··· ···
२६·७ × १०·१ सें० मी०	६० (२–८०, ८४-६४)	७	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७०२	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने काडः तृतीयः सामान्यः सांगएव समर्थितः शुभमस्तु शुभदिने ॥ संवत् १७०२ समये आषाढ़ सुदि प्रतिपदा गुरवासरे ॥
२६·६ × १०·८ सें० मी०	१०२ (१–८६, १–१६)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री बघेल वंशोद्गव श्री मैहर विषयाधिप श्री कीर्ति सिंह देवाज्ञया श्री भट्टो जी दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायाममर टीकायां व्याख्या सुधाख्यायाः पातालभोगिवर्ग विवरणं समाप्तं ॥ (पृ० ७५)
२४·५ × ६·६ सें० मी०	८३ (२६-३८, ४०-४४, ४६-५६, ५६, ६६-७८, ८०-१०७, १०६ –१२३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीयः सांगएव समर्थितः शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	७५७०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१६	४३८४	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१७	१३०२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१८	१६०२	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	भानु दीक्षित	दे० का०	दे०
१९	१८०७	अमरकोश (प्रथमकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२०	४२२६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२१	४१३०	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × ९·६ सें० मी०	९१ (१–६,१२–९३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × १३·९ सें० मी०	३३ (१,६–३५, ३७–३८)	९	१५	अपू०	प्राचीन	
२५·९ × १२ सें० मी०	४५	८	२५	अपू०	प्राचीन	
३३.७ × १५·४ सें० मी०	४१ (१–४१)	११	५७	पू०	प्राचीन	इति श्री वघेलवंशोद्भवश्रीमहीधर विषयाधिय श्री सिंहदेवज्ञाया श्रीभट्टोजिदीक्षितात्मज श्री भानुदीक्षित विरचितायाममरटीकायांव्याख्या सुख्यायांप्रथम: कांड: संपूर्णतामगमत्··· ··· ··· ··· ···
२८·६ × १२·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	११	३८	पू०	प्राचीन सं०१८८९	इति श्री अमराचार्य कृतौ प्रथमकांड समाप्त ॥ संवत् १८८९ मिती माघ कृष्ण सप्तम्यां लिप्पी कृतं स्थानेश्वर नगरमध्ये ॥
२५·१ × ११ सें० मी०	५	१०	३२	अपू०	प्राचीन (खंडित)	
२५·८ × ११·१ सें० मी०	११ (८५–९५)	८	३७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	४२२८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२३	२७४६	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२४	३५२३	अमरकोश			दे० का०	दे०
२५	३५३०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२६	३६४७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२७	४०२१	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२८	२५४६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × ९ सें० मी०	४४ (१-१३,१६-१८,१८-२३, २३,२४,२४-३२,३४-३५, ३७,३९-४३, ४५-५३,५९-६१,६३-६५)	८	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण) (खंडित)	समाहृत्यान्यतंत्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ॥ संपूर्ण मुच्यते वर्गनामलिंगानुशासनम् ॥ २ ॥ (प्रारंभ)
२५·२ × ११ सें० मी०	३४	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२४·६ × १०·९ सें० मी०	२६ (३२–४५, ५४–६१, ६५–६६, ६७–६८)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × ८·३ सें० मी०	५५ (१–५५)	७	३६	अपू०	प्राचीन सं० १९०८	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने भूमिकांडो द्वितीयोयं सांगएव समर्थितः ॥२॥ समाप्तोयं द्वितीयः कांड ॥ संवत् १९०८ मार्गशीर्ष शुक्ल १५…॥
२२·९ × ११·१ सें० मी०	२८ (१–१०, १२–२४, २६–३२)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १०·७ सें० मी०	२८ (१–९)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ अमर लिष्यते ॥ (प्रारंभ)
२७ × १०·९ सें० मी०	३ (१–३)	७	३५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९	३३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३०	३७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३१	४२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३२	१३२	अमरकोश (प्रथम कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३३	१३३	अमरकोश (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३४	४७१	*अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३५	४०२	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·६ × १४·२ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × ११ सें० मी०	८६ (१–७, १२–९१)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × १०·९ सें० मी०	६९ ९२–१६०	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८५४	शुभंभूयाल्लेखक पाठकयोः ॥ सं०१८५४ ज्येष्ट मासे शुक्ल ११ चन्द्र० रत्नाख्येन लिखितम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीः ॥
२५ × १२·५ सें० मी०	१८ (१–१८)	९	३०	पू०	प्राचीन सं०१७१८	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने॥ स्वरादिकांडः प्रथमः सांग एव समर्थितः ॥२॥ इति प्रथमकांड समाप्तं ॥ शके १७१८ ··· भाद्रपदशुक्ल तृतीयां इदं पुस्तकं समाप्तं ॥ गंगाधर महादेव काणेरषां इदं ॥ स्वार्थपरार्थं च ॥६॥
२३·३ × १०·७ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	२८	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशाने सामान्य कांड तृतीयः सांग एव समर्थितः।
२५ × १०·३ सें० मी०	९४ (१–९४)	९	३४	पू०	प्राचीन कृमिक्रंतित सं०१६८०	इति लिंगादि संग्रहवर्गः॥ इत्यमरसिंह कृतौनामलिंगानुशासने ॥ सामान्य काण्डेतृतीयः सागएवसमर्थितः ॥ शुभमस्तु ॥ श्री विश्वेश्वरायनमः ॥ श्री रामायनमः ॥ संवत् १६८० ॥······
३३·५ × १३ सें० मी०	१५१	५	३२	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इत्य अमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशानें कांडस्तृतीयः सामान्यः। संग राव समर्थितः ॥३॥ संवत्१९०२ शाके१७६७॥ अश्वनमासे शुक्लपक्षे शुभ तिथौ ॥७॥ भौमवासरे॥ लिषतं बिहारिलाल ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२४५	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३७	२५५	अमरकोष (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३८	२८१	अमरकोश (लिंगानुशासन) (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३९	३६१९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४०	३७९५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४१	३८११	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४२	३०३२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन) (भूमिकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × ११ सें० मी०	१०	११	३६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिङ्गानुशासने स्वर्गादिकाण्डः प्रथमः साङ्गएव समर्थितः ॥
२७·५ × ११ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौनामलिङ्गानुशासने भूमिकाण्डो द्वितीयोऽयंसाङ्गएव समर्थितः ॥
२७·६ × ११·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिङ्ग नुशासने काण्डस्तृतीयः सामान्यः साङ्गएव समर्थितः ॥ शुभमस्तु लेखक पाठकयो श्रीरस्तु सिद्धि श्री महाराजाधिराजे श्री महाराजा श्री राजा जै सिंहदेव राज्ये-शुभस्थाने रीवाणगरपुस्तकलितं श्री चतुर्वेदयो धाली रामेण सं० १८८५ के अश्विन शुक्ल ५ सोमे आत्मर्थवा शुभंभवतु ॥
२६·७ × १५·२ सें० मी०	२६ (१-४,६-५४, ५६–५७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × ११·३ सें० मी०	४१ (४–५, ११–४६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × १५ सें० मी०	३३ (१–१२, १–२१)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने-स्वरादिकांड प्रथमः साङ्गएव समर्थितः ॥
२७·१ × ११·८ सें० मी०	६७ (१–६७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने भूमिकांडो द्वितीयोयं सांगएव समर्थितः ॥ शुभंभवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	३०४८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४४	४८५०	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४५	४८५६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४६	४६४०	अमरकोश (नामलिंगानुशसन–१–२ कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४७	५३३४	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४८	४४३०	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (अमरविवेक संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	महेश्वर	दे० का०	दे०
४९	६३३५	अमकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·८ × १०·७ सें० मी०	११ (७३–८३)	८	३८	अपू०	प्राचीन	
३१ × ११·३ सें० मी०	५२ (१–५२)	६	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशासने भूतकाण्डो द्वितीयः सांग एव समर्थित × × × × × × × × ॥
३०·३ × १२·८ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	३९	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १०·५ सें० मी०	३८ (३–२४, २६–४१)	७	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८९४	इति श्री इत्यमरासंस्कृतौ नामलिंगानुशासनेद्वितीयो भमि कांडोयसागएवसन्वितः॥ अगहसुदि दुइज संवत् १८९४ श्रीकृष्ण प्रशाद ब्राह्मणेन लिखितं समाप्तं शुभमस्तु...॥
२७·३ × १०·४ सें० मी०	१३० (१–१३०)	६	४५	पू०	प्राचीन	श्रीमत्यमरविवेके महेश्वरेण विरचित्त-एवायं ॥ भूम्यादि द्वितीयकांडः समाप्तिम गमच्छुभंभवतु इति द्वितीय कांडः समाप्तः ॥
२७·२ × ११·६ सें० मी०	४९ (१–४९)	६	३७	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ स्वरादिकाण्डः प्रथमः सांग एव समर्प्पितः
२२ × १२·५ सें० मी० (सं० सू० ५७)	१९ (११,२१–२७,२९, ३९,५२–५५,५७, ५९,६२ ६३,८७)	८	२३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	५०८५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५१	४८९९	अमरकोश (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५२	५००३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५३	५१८३	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५४	७२००	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५५	६९८६/३	अमरकोश (नामलिंगानशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५६	७०२९	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × १२·१ सें० मी०	२३ (२–११, १३–२५)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने स्वरादि कांडः प्रथमः समाप्तः ॥
२२·८ × ८·८ सें० मी०	३९ (१–३९)	६	३८	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ··· ···॥ इति श्री अमरकोश तृतीय कांडः समाप्तः ।
२३·५ × ११ सें० मी०	३७ (४–२२, ३०,४७,४८)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२७·८ × ११·६ सें० मी०	३ (१–३)	९	३१	अपू०	प्राचीन	······समाहृत्यान्य तंत्राणि संक्षिप्तैः प्रति संस्कृतैः ॥ संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिंगानुशासनम् ॥ २ ॥······ (प्रारंभ)
२५·३ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१७ × १५·७ सें० मी०	२२ (१–२२)	१२	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री अमरसिंह विरचिते नाम लिंगानुशासने स्वरादिकांडः प्रथमः समाप्तम् ॥
२१·१ × १२·३ सें० मी०	१	९	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	२३४९	अमरकोश (नाम लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५८	२३०२	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५९	२३००	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६०	५६३७	अमरकोश (सटीक) (प्रथम कांड)	अमरसिंह	नरहरि भट्ट	दे० का०	दे०
६१	५६२५	अमरकोश (सटीक) (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६२	५५७५	अमरकोश			दे० का०	दे०
६३	५५२४	अमरकोश–टीका	अमरसिंह	भानुदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × ११ सें० मी०	५	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२९·६ × ११·९ सें० . मी०	११० (१–२३, २५–१११)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	इत्यिमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ... ... ॥
२८·५ × ११·२ सें० मी०	१५४ (१–१५४)	१०	४९	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासनो। सामान्य काण्डस्तृतीयः सांगएव समर्थितः॥ शुभमस्तु ॥
२२·५ × ९ सें० मी०	४३ (१–४३)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नरहरि भट्ट विरचिते अमर... ने प्रथमः कांडः ॥
२२·५ × ९ सें० मी०	३६ (१–२८, २८, २६, २९–३४)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११–४ सें० मी	४२ (२–४२)	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १९४६	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ॥ सामान्य कांडस्तृतीयः सांग एव समर्थितः ॥४७॥ संवत् १९४६ माघ शुक्ले षष्ठ्यां रवौ समाप्तोऽयमंत्तिमः
२१·८ × १२·४ सें० मी०	८१ १–४, ४–५, ५–७८, १०७)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री बघेलवंशोद्भव श्री महीधर विषयाधिप श्री कीर्त्तिसिंह देवाज्ञया श्री भट्टोजि दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायामारटीकया व्याख्या सुधायां प्रथम काण्डः संपूर्णतामगमत् ॥शुभमस्तु॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१९८०	अमरकोश (टीका)			दे० का०	दे०
६५	१९३६	अमरकोश (सटीक)			दे० का०	दे०
६६	२१२९	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
६७	२०६९	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६८	२०२५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६९	५७९३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७०	५७९७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२२·५ × १२·३ सें० मी०	३६ (१–३८,४६)	१३	५४	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १२ सें० मी०	५६	१३	५०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११·५ सें० मी०	२७१ (१८–२८८)	११	४४	अपू०	सं०१७४७	इति श्रीवघेलवंशोद्भव श्रीमहीधर विषयाधिप श्रीमहाराजकुमार श्री-कीर्ति सिंह देवज्ञाय । श्रीभट्टोजी दीक्षितात्मज श्रीभानुजी दीक्षित विरचितायाममरटीकायां व्याख्या-सुधा द्वितीयः काण्डः संपूर्णतामगात् ॥ शुभसवत् १७४७ समये······
२१·४ × ८·२ सें० मी०	८६ (१४,१४-१८, ३५-६६, १०१-११६)	६	३५	अपू०	प्राचीन सं०१७३७	इति लिंग संज्ञवर्ग इत्यमर सिंह कृतौ तृतीय कांड समाप्त शुभमस्तु सं० १७३७ समये पौष सुदि एका-दश्यां पुस्तकं लेखितं गंगाराम वंदी जनेन लेखायितं श्री महाराज कुमार भगवतराय धर्मार्थं ॥
२६ × ११·५ सें० मी०	१७ (७–२३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति अमरसिंह कृते······
२७·५ × ११·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२३·१ × ११ सें० मी०	२८ (४–६ १०–३४)	६	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	५७३५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७२	५९९९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७३	६११५	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७४	६०४७	अमरकोश–सटीक (प्रथमकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७५	६३१९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७६	६३१८	अमरकांश (नामलिंगा-नुशासन, तृतीयखंड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७७	७६१६	अमरकोश	अमरसिंह		द० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·५ सें० मी०	५७ (१–५७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति शूद्रवर्गः इत्यमर सिंह कृतौ नाम-लिंगानुशासने ।। द्वितीय कांडो भूम्यादिः सांगएव समर्थितः ।।
२३ × ८·४ सें० मी०	९०	४	२७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने स्वरादि कांडं :········· ।। (पृ० ४७)
२८ × ११·५ सें० मी०	२९ (१–२९)	५	२९	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने स्वरादि कांडः प्रथमः सांग एव समर्थितः ।।
२७·१ × ११·३ सें० मी०	३९ (१–३९)	८	३५	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ।। स्वरादि कांडः प्रथमः सांगएव समर्थितः ।।१।।
२२·८ × ९·८ सें० मी०	९ (१, ६, १५–२१)	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × १०·४ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगाऽनुशासने ।। काण्डस्तृतीयः सामान्यः सांगएव समर्थितः ।।
२६·७ × १०·३ सें० मी०	९	७	३८	अपू०	प्राचीन	महाराज कुमार श्री बाबू फत्तेसिंह देव राज्ये तस्मिन्काले वत्माने ।। पुस्तक लिखितं पण्डित भोपति × × ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९	७७१०	अमरकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
८०	७६६०	अमरकोश नामालिंगानु-शासन			दे० का०	दे०
८१	७४७४	अमरकोश			दे० का०	दे०
८२	७३९८	अमरकोश (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
८३	११७३	एकाक्षरकोश	क्षपणक		दे० का०	दे०
८४	४७४६	एकाक्षरकोश			दे० का०	दे०
८५	५२६५	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.३ × १३.२ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
२४.७ × १०.७ सें० मी०	३८ (१–३८)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति लिंगादिशेषवर्गः इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने काण्डस्तृतीय × × × × × ॥
२३.२ × १०.६ सें० मी०	८ (५९–६६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२९.५ × १४.४ सें० मी०	३४ (१–३, १५–३५)	१२	२९	अपू०	प्राचीन	
२९.१ × १४.८ सें० मी०	२ (१–२)	१३	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इतीत्वे काक्षरं कोशं कथितं मुनिना पुरा इति श्री महा क्षपणक कवि विरचितमेकाक्षरं नाम कोश ...॥
२५.१ × ११.२ सें० मी०	३ (१–३)	११	२२	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरि नाम समाप्ताः ॥
२२.७ × १०.२ सें० मी०	३ (१–३)	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इत्येकाक्षर कोशः समाप्तः संवत् १८६० शके १७२५ श्रावन सुदि १४ भौमे कः पुस्तक लिखितं सीतारामेणात्मकपठनार्थम्परार्थम्वा श्री गणेशायनमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	६५३८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८७	५८९९	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८८	७२७२	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८९	३०७८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
९०	१०११/२	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
९१	१६२६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
९२	१७९६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·२ × ११·१ सें० मी०	२ (१–२)	९	३८	पू०	प्राचीन सं०१९४३	इत्येकाक्षर कोशः समाप्तः संवत् १९[illegible] पौषवदि × × × × ।
२४·९ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री महा[illegible]रक कविराज विरिचित एकाक्षरनाम कोशः ।,
२३·८ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	१४	२९	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११ सें० मी०	६	६	२१	पू०	सं०१९३९	इति एकाक्षर कोश समाप्तः ॥ लिखितं नर्वदाप्रसाद तिवारी सं० १९३९ के मिति माघ सुदि १४............ ॥
२९ × १८·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरकोश समाप्तम् ॥
२४·२ × ८·३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति एकाक्षरीकोशः परिपूर्णः ॥ राम राम ॥
२४·१ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	११	३९	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इत्येकाक्षरकोशः ॥ संवत् १८७५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४०५८	कोश			दे० का०	दे०
६४	१३४६	जगद्विजयी छंदटीका	कवींद्राचार्य सरस्वती		दे० का०	दे०
६५	२३३	त्रिकांडकोश	श्री पुरुषोत्तमदेव		दे० का०	दे०
६६	६०१६	दीपिकोश मुक्तवली	नगेंद्र		दे० का०	दे०
६७	२३५३	नाम माला	वल्लभ		दे० का०	दे०
६८	४५३६/२	नाममाला निघंटु	धनंजय		दे० का०	दे०
६६	१७१६	नामलिंगानुशासन	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·३ × ९·५ सें० मी०	१३ (२–११, १३–१४)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२९ × १२·५ सें० मी०	३२ (३–३४)	८	४३	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीसर्वविद्यानिधान कवींद्राचार्य सरस्वती विरचितायां बृहद्जगद्विजछंष्टीका समाप्तं ॥
३०·७ × १०·३ सें० मी०	२५	९	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री पुरुषोत्तम देव विरचितः शेषामरः समाप्तः ॥ इदं पुस्तकं……… स्वस्ति श्री नृपशालि वह् नशक्के १७७३ विरोधकृतनाम संवत्सरे श्रवणे शुक्ल द्वादश्यां भृगुवसरयुतायांतद्दिनं समाप्तं ॥
२७·४ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	१८	५५	पू०	प्राचीन सं०१९२४	तस्यातिशायिनि कवेः पथि जागरूक धीलोचनस्य गुरु शासन लोचनस्य नानाकवींद्र रचितानभिधानकोषानाकृष्य लोचनमिवोथमदीपिकोषः ॥३॥…नागेन्द्र संग्रंथितं कोष समुद्रमध्ये नानाकवींद्र मुखसुक्ति समुद्धूवेयं । विद्वद्गृहादमरनिर्मित पट्टसूत्रे । मुक्तावली विरचिता हृदि सन्निधातु ॥…इति ग्रंथस्यादिः समाप्ता ॥ संवत् १९२४ जेष्ठे · ॥
२४·६ × ११·४ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति वलभ कृत माला समाप्ता श्लोक संख्या आठ ॥
२७ × ११·५ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	२८	पू०	सं०१९३६	इति श्रीधनजयकृत नाममालानिघंटुः समाप्तम् शुभम् शुभमस्तुसिद्धिरस्तु श्री संवत् १९३६ मार्गशीर्षे कृष्णे ५ पंचम्यमगुरौ लिखितं रामप्रसाद दिच्छित ॥
१९·५ × ९·७ सें० मी०	१४ (११२–११३, १३५,१४२, १४२,१४५–१५१,१५३–१५४)	७	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८१२	इत्यऽमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने सामान्य काण्डे तृतीयः सांगएव समर्थितः शुभमस्तु लेखक पाठकयोः सं०१८१२ ज्येष्ठसुदि ४ गुरऊ श्री कृष्णार्यणमस्तु ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००	३६६६	निघंटु			दे० का०	दे०
१०१	२५७४	निर्घंटनाममाला			दे० का०	दे०
१०२	२६४३	निर्घंटमाला	धनंजय		दे० का०	दे०
१०३	१११२	❀ पारसीप्रकाश	कृष्णदास		दे० का०	दे०
१०४	६६८	पारसीप्रकाश	कृष्णदास		दे० का०	दे०
१०५	३२३६	मातृकाकोश			दे० का०	दे०
१०६	५१७०	मातृकाकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ७.७ सें० मी०	१६ (१–१६)	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इतिनिघंटौ पंचमोध्यायः समाप्तः ॥ सं० १८५८ ॥ शके १७२३ मिती माघकृष्ण अमायां समाप्तं ॥
२३ × १०.३ सें० मी०	९	१०	४१	पू०	सं०१८७०	इति श्री धनंजय महाकाव्ये निर्घंटनाम माला समाप्ता, शुभमस्तु श्रीस्तु ॥ सं० १८७० पौष कृष्ण पंचमी रवि वासरे इदं पुस्तकं लिख्यते ॥ रामाय नमः··· ··· ··· ···
२२ × ९ सें० मी०	२० (१–२०)	७	३६	पू०	सं०१७८७	इति श्री धनजय विरचितायां निघंट माला ॥ समाप्तः शुभमस्तु ॥ संवत् १७८७ शाल कार्तिक·········· ··
२८.८ × ११ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८३३	इति श्री महीमहेन्द्र श्रीमदकधर शाहकारिते विहारि कृष्ण दाश मिश्र कृते पारसी प्रकाशे कृत्प्रकरणं समाप्तं ॥ अग्नि राम बसु भूमि संयुते फाल्गुणे शिवतिथौ सितेतरे ॥ सूर्य नंदनदिने हरिवंशो वंशरूप कृतये विलिलेष ॥
२८ × ११.३ सें० मी०	१० (१–१०)	१३	४४	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री मही महेन्द्र श्री मदधरसाह कारिते कृष्णदास पारसी प्रकाशे शब्दार्थ कोश प्रकरणम् ॥ सं०१८३४ के साल चैत्र वदी ११ गरोक लिखि महापाल वंशरू पेशा ।
२३.४ × १०.३ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति मातृका कोशः सपूर्णः ।
१६.७ × ८.५ सें० मी०	६	९	२१	पू०	सं०१९१७	इति मातृका कोशः समाप्तः सं०१९१७ आश्विन कृष्ण १३ गुरौ ॥
(सं०सू०५९)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७	६२०/२	मातृकाकोश			दे० का०	दे०
१०८	६२०/२	मातृका निघंटु			दे० का०	दे०
१०९	७५५९	मेदिनीकोश			दे० का०	दे०
११०	२६६०	मेदिनीकोश			दे० का०	दे०
१११	१३८३	मेदिनीकोश	मेदिनीकर		दे० का०	दे०
११२	१०४०	व्यंजनैकांतरेकोश			दे० का०	दे०
११३	२४३५	शुद्ध प्रदीप	सुरेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९.६ × ९.८ सें० मी०	५	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मातृकाकोशस्समाप्तः ॥
१९.३ × १० सें० मी०	८	१०	२७	अपू०	प्राचीन	
३१.२ × १३.५ सें० मी०	७४ (१–७४)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.६ सें० मी०	४	१३	३१	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.८ सें० मी०	१०२	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३१ × ११.८ सें० मी०	६	६	३१	पू०	सं०१८८२	इति व्यंजनैकांतरे कोष समाप्त ।. श्रीकृष्ण गोकुल वासी सवत् १८८२ समय नाम कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां सौमवासरे बुझावन शर्मणे लेख्यमिदं पुस्तकं ॥
२४.३ × ८.५ सें० मी०	४३	६	४६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
गीता						
१	६००२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
२	१७०७	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
३	२८१३	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
४	३४४८	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
५	३५७५	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
६	२५१२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
७	२७३	अवधूत गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १०·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१६	पू०	सं०१६०६	इति श्री अर्जुन गीता श्री कृस्न अर्जुन संवादे तत्व शंनदीपो संवत् १६०६ ॥ ······ ··॥
२२·५ × ६·८ सें० मी०	६ (६–१७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्तं । श्री शुभमस्तु। श्रीरामायनम
१२ × ८ सें० मी०	(४३ पृ० संस्कृत, १६ पृ० हिंदी) कुल ५९ पृ०	४	१२	पू०	सं०१८६३	इति श्री कृष्णमार्जुन संवादे अर्जुन गीता संपूर्ण, भाद्र शुक्ल पक्ष तिथौ ४ बुधवासरे संवत् ॥१८६३॥
१८·४ × ६·६ सें० मी०	११ (१–११)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री अर्जुन गीता संपूर्णं संवत् १८४७ कवार वदि द्वतीया ॥
२३·३ × ११ सें० मी०	६ (१,५-८-१०, १२–१३, १७, १६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीकृष्णार्जुन संवादे अर्ज्जुन गीता समाप्तं ॥
२१·३ × १४·१ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२८	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री कृष्णार्ज्जन संवादे अर्ज्जुन गीता समाप्तं शुभमस्तु सं० १८८६ प्र श्रवण वदि नवमी रविवासरे प्रति लिषितं राधकृष्ण व्रह्मन उपाध्या श्री कृष्णायनम राधकुंजविहारी की जैराम ॥
१६·५ × १२ सें० मी०	८ (१०–१३, २०–२३)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	६७३१	अवधूत गीता	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
९	७८४५	अष्टादशश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१०	३६६४	उत्तरगीता	गौडपादाचार्य		दे० का०	दे०
११	१९२६	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१२	२०२२	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१३	७७०५	उत्तरगीताभाषा (द्वितीय अध्याय)		गौडपादाचार्य	दे० का०	दे०
१४	४१५८	कपिलगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·६ × १३·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रय विरचितायां अवधूत गीतायां ।। स्वात्म संवित्त्युपदेशे चतुर्थं प्रकरणं । (पत्र संख्या १३)
१६·६ × ९ सें० मी०	२	७	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादश श्लोकी गीता संपूर्णम् श्री कृष्णार्पणमस्तु श्री गुरुदत्तात्रयायार्पणमस्तु शुभं भवतु ।।
२०·४ × ९·३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचितायां उत्तर गीतायां द्वितीयो० ।। (पत्रसंख्या–२२)
१५·५ × ९·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	५	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × ९·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × १४·३ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचितायां उत्तरगीता व्याख्यां द्वितीयोध्यायः ।। श्रीमदुत्तर गीतायां द्वितीयोध्यायः ।।
१५·३ × ९ सें० मी०	२७	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति पद्म पुराणे सिद्धांत सारे कपिल ऋषि सिद्ध संवादे राजराजेश्वरयोग कथनं नाम अष्टमोध्यायः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३२८१	गणेशगीता			दे० का०	दे०
१६	५७१५	गर्भगीता			दे० का०	दे०
१७	१०६(अ)	गीता	व्यास		दे० का०	दे०
१८	२०५५	गीता (तृतीय अध्याय)			दे० का०	दे०
१९	३८८	गीता (संस्कृत टीका सहित)	व्यास		दे० का०	दे०
२०	३१७४	गीता			दे० का०	दे०
२१	५२३३/२	गीता (दशम और एकादश स्कंध)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × ८·८ सें० मी०	५० (१–५०)	७	२५	पू०	सं०१८२०	इति श्री गणेशगीता संपूर्ण। संवत् १८२० शके १६८५ विजयनामसंवत्से अधिक ज्येष्ठवद्यतता देशीतदिन पुस्तकं समाप्तं ॥ श्री गजाननार्पणमस्तु ॥
१६·६ × ९·२ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	पू०	सं०१९३६	इति श्री गर्भगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विधायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गर्भ गीता समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १९३६ के आषाढ़ सुदि १२ कालिषितं श्री बाबा मंगलदाश ॥
१२·५ × ७·५ सें० मी०	१३० (१-१३०)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्यां संहितायां भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योयशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासं योगो नामाष्टादशोध्यायः ॥१८॥ समाप्ता श्री भगवद्गीताः ॥
१५·५ × ९·६ सें० मी०	८ (१–८)	५	१८	पू०	प्राचीन	श्रीमदुत्तर गीता सूपनिषत्सु० यांयोगशास्त्रे० संवादे महाभारते अश्वमेध० शत सहस्र० ज्ञान विवरणंनाम तृतीयोध्यायः ३ ॥
३४·७ × १३·१ सें० मी०	१० (५, ९ १२–१९)	९	३७	अपू०	प्राचीन	
१५ × ७·४ सें० मी०	३६ (४८-६९, ७१–८४)	८	२०	अपू०	प्राचीन	श्रीमद्भागवतद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय ॥१८॥ × × ×
१५·५ × १०·३ सें० मी०	११	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूप दर्शनं नाम एकादशोऽध्यायः ॥

(सं० सू० ६०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	२८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदनदास सरस्वती	दे० का०	दे०
२३	२१०२	गीतागूढार्थं दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२४	२१०३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२५	२१०४	गीतार्थगूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२६	२३०८	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
२७	२३०७	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
२८	२११३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.४ × १३.३ सें० मी०	२८	१३	४९	अपू०	प्राचीन	
२८.३ × १२ सें० मी०	१२	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां षोडशोध्यायः ॥१६॥
२८ × १२ सें० मी०	१०	९	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूप निषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण मार्जन संवादे गूढार्थ दीपिकायां चतुर्दशोध्याय ॥ श्री कृष्णाय गोविदाय नमोनमः ॥श्री॥
२४.३ × १२ सें० मी०	८	११	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण मार्जुन संवादे दीपिकायां द्वादशोध्यायः ॥ श्री कृष्णाय गोविदाय नमोस्तुते ॥ श्री भवान्यै नमः ॥
२८ × ११.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां मोध्यायः ।
२८.४ × १२.१ सें० मी०	३१ (१–३१)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां षष्ठोध्यायः समाप्तः प्रथमकांड समाप्त ॥
२८.२ × ११.९ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां तृतीयोध्यायः ॥शुभमस्तु॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९	२११२	गीतागूढार्थ दीपिका (चतुर्थ अध्याय)			दे० का०	दे०
३०	२१११	गीतागूढार्थ दीपिका (पंचम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३१	२११०	गीतागूढार्थ दीपिका (सप्तम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वता	दे० का०	दे०
३२	२१०८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३३	२१०९	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३४	८३६	गीता शांकर भाष्य	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३५	१९६५	गीता (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·२ × ११·६ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थदीपिकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥
२८·२ × ११·६ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्म ·········गीता गूढार्थ दीपिकायां पंचदशोध्यायः ॥
२८·४ × १२ सें० मी०	१५ (१–१५)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ··· ··· गूढार्थ दीपिकायां सप्तमोध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥
२८·५ × १२ सें० मी०	४६	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत परमहंस परिब्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती बिरचितायां श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां सर्व गीतार्थ सूत्रण नाम द्वितीयो ध्यायः ॥ शुभमस्तु ॥ शुभ रस्तु ॥
२८·५ × १२ सें० मी०	१३	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां गीता गूढार्थ दीपिकायां प्रथमोध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपालाय नमः ॥
२९·३ × १२ सें० मी०	१२३ (१–४४, ४६–१२४)	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य शंकरभगवतः कृतौ श्रीगीताभाष्ये षूपनिषत्स्वष्टा दशोध्यायः समाप्ताः ॥ ·········
२४·२ × १२·६ सें० मी०	५ (२–४, ४, २०)	६	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२९३५ / ७	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३७	७५३२	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३८	१७०१	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३९	१७०८	गुरुगीता			दे० का०	दे०
४०	१११६ / ४	जन्मविपाकगीता			दे० का०	दे०
४१	७९०८	तत्वसागरगीता			दे० का०	दे०
४२	२४८४	नारदगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × १४·५ सें० मी०	२	२६	१७	अपू०	प्राचीन	
१४·२ × ६.५ सें० मी०	११ (१–११)	९	३२	पू०	प्राचीन	श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे इश्वर पार्वती संवादे श्री गुरुगीतास्तोत्र मंत्र संपूर्ण ॥ × × × × × ×
२२ × १०·५ सें० मी०	१० (३, ७–१६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३ ५ × ११·३ सें० मी०	७ (३–९)	११	३१	अपू०	प्राचीन सं० १८३४	इति श्री स्कंदपुराणे उमा महेश्वर संबादे गुरु गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ ……सं० १८३४ मासानांकार्तिक मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां १४ बुधवासरे लितं गुसाई ॥
२९ × १४·१ सें० मी०	२ (३–४)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवान अर्जुन संवादे जनम विपाक गीता समाप्तः ॥
१३·१ × ८·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ९·३ सें० मी०	६ (१–६)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद संवादे नारद गीता संपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	१६८३	नारदगीता			दे० का०	दे०
४४	३३४८ / ४६	नारदगीता			दे० का०	दे०
४५	१४००	नारदगीता			दे० का०	दे०
४६	७१७८	नारदगीता			दे० का०	दे०
४७	२६३१ / १२	पांडवगीता			दे० का०	दे०
४८	७७४६	पांडवगीता			दे० का०	दे०
४९	७२८८	पांडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·९ × ११·५ सें० मी०	२ (२–३)	७	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद संवादे नारद गीता संपूर्णम् ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	९ (१–९)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णनारद संवादे नारद गीता संपूर्णम् शुभमस्तु श्री राम
१४·५ × १० सें० मी०	६ (१–६)	९	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद गीता संपूर्ण ॥
१६·६ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	९	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे श्री कृष्णनारद संवादे नारदगीता संपूर्णम् ॥
१३·१ × ८ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री पांडव गीता गीता संपूर्ण ... .सं० १८८८ लिषति लालमनिरायो श्री रामाय नमः ॥
१८·८ × ८·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२४	पू०	सं० १८१३	इति श्री पांडवैकृता पांडवगीता समाप्तं ॥ ... । श्री सं० १८१३ ...॥
३१·९ × १२·७ सें० मी०	५ (१, ३-६)	९	३६	अपू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री पांडव कृता पांडवगीता सं० १९०२ + + + +
(सं० सू० ६१)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६०००	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५१	५६०६	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५२	२३८६	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५३	३२१२	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५४	६५२० / १६	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५५	३३४८ / ४६	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५६	३२०७	पांडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३·४ × ११·७ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पाण्डव गिता शुभ शपुर्न समाप्त ॥
२०·७ × १०·६ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति श्री सकल महावैष्णव: विरंचतायां पाण्डवगीता स्तोत्र समप्तं शुभं भवत मंगलं ददात् ॥ फगुन सुद १० ॥ संवत् १८७१ ॥ मु: कां: ॥ वाद ॥···
२२ × १० सें० मी०	१० (१–४, ६–११)	८	२८	अपू०	प्राचीन सं० १८१७	इति श्री महाभारते शांति पर्वणि भीष्म नारद संवादे पांडवगीता नाम विष्णु अस्तुति समाप्ता । शुभंमस्तु ॥ संवत् १८१७ ॥ तत्र वर्षे श्रावण मासे शुक्ला सप्तम्यां पक्षे भौमवासरे ॥ मिदं पुस्तकं समाप्तं ॥
१५·३ × १०·१ सें० मी०	७९	८	२०	अपू०	प्राचीन	
९·९ × ९·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता शमाप्त शुभमस्तू + + + ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीराम: ॥
१६·५ × ८·३ सें० मी०	११ (१–११)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति पांडवगीता समाप्त: श्री लक्ष्मी नारायणार्पणमस्तु ॥ शुभंवतु ॥ यादृशी पुस्तकं दृष्ट्वातादृशी लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते ॥ १ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	११२३	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५८	३५६२	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५९	४१३७	पांडवगीता			मि० का०	दे०
६०	२८३७	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६१	२८९८	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६२	४५१४	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६३	१८६१	पांडवगीता			दे० का०	दे०
	५					

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९ × १२·६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते·········राजशूय प्रकरणे शिशुपालवधे पांडवगीता समाप्ता ॥
१६ × ८·४ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता समाप्ता ।
१४ २ × १०·३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता संपूर्णम् सुभ भूयात् मिती आषाढ़ सुदि ७ संवत् १९०७ रामायनमः·········॥
१६·९ × ८·७ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति पांडवगीता संपूर्ण ॥ समाप्तः ॥ सं० १९२२ ॥ श्री श्री स्वामी जी चैत·········॥
१२·३ × ७·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	१५	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री पांडवगीता समाप्ता सं० १९१७ के मार्ग सुदी १० शुक्रेका पुस्तक लिखितं पं० अमोरासिवदीन राम चतुर्वेदी उचहरा वैद ॥
२३·३ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडव गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२८ ४ × १४ सें० मी०	३ (१–३)	१५	४४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१३६८	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६५	४२७६	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६६	६८६६	ब्रह्मगीता-सटीक			दे० का०	दे०
६७	६१	भगवतगीता	लालताप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
६८	३६४	भगवतगीता	व्यास		दे० का०	दे०
६९	७२७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७०	७४५२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१८×६ सें० मी०	६	८	३३	अपू०	सं० १८५४	इति पांडवगीता संपूर्णम् शुभमस्तु सं० १८५४ वं० शु० ५ भृगु० लि० उदेरामेणशुभम् ।
२१५×१०.५ सें० मी०	१४ (.१-३,१५)	७	२५	३५०	सं० १६१८	इति श्री पांडवगीता समाप्ताः ॥··· ···॥ संवत् १६१८ माघ कृष्ण ६ शनौ लिष्यतं पं० श्री दुबेराधे पठनार्थं ··· ।
२७.५×१२ सें० मी०	१५० (१–३२, ३२-१४६)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदेपुराणे सूत संहितायां यज्ञवैभव खंडस्योपरिभागे ब्रह्मगीतासूपनिषत्सुद्वादशोध्यायः ॥
२१×११.७ सें० मी०	६६ (१–६६)	६	१६	पू०	प्राचीन	भाद्र कृष्ण १० गुरु वारे लिष्यतं मिदं पुस्तक समाप्ता लिष्यतं लालताप्रसाद मिसिर पलटन गोपन कंपनी ८ रजमट
२८.३×१४.४ सें० मी०	२८ (२–२४, २६-२६, ३१)	१४	३७	अपू०	प्राचीन	६६ वनाजमालपुनदि कृष्ण पुल के निकट ॥ जद अक्षर पुस्तकं द्रष्टातादश लिष्यतं मया । यदि शुद्धम सुद्धंवा मम दोशोन दीयते ।
२०.२×१०.४ सें० मी०	६३ (१–६३)	६	२६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीता संपूर्ण सुभमस्तु संवत् १८८१ के शुक्ल चैत्र सुदि नौमि गुरौ क :–
२०.६×६.१ सें० मी०	७१ (१–७१)	७	२८	पू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगोनामाष्टादशोध्यायः । शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	७४५०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७२	७२९८ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७३	७६१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७४	७६०१	भगवद्गीता टीका			दे० का०	दे०
७५	७६६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७६	७८८६	भगवद्गीता-सटीक (सुबोधिनी टीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
७७	७८९३	भगवद्गीता टीका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·४ × १२·४ सें० मी०	७८ (२–७९)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुन संवादे गुणत्रयविभागयोगोनाम सप्तदशोध्याय: ॥ (पृ० ७५)
१६·४ × १२·५ सें० मी०	३६ (१–३६)	१८	१३	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्ठादशोध्याय: १८ ॥ भगवद्गीता संपूर्णा ॥
२५·७ × १३·४ सें० मी०	४० (२–४१)	११	३०	अपू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यासयोगोनामा द्वादशोध्याय: ॥ × × संवत् १८६६ वर्षे ॥ सके १७६४ ॥ वर्षे फाल्गुन मासे सुदि···
२३·५ × १२·४ सें० मी०	१६	६	२५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
६·४ × ८·६ सें० मी०	४६	६	१३	अपू०	प्राचीन	
३३·८ × १५·७ सें० मी०	८१ (१–८१)	१३	५०	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्रीभगवद्गीता टीकायां सुबोधिन्यांश्रीधरस्वामि विरचितायां परमार्थ निर्णयोनामाष्टादशोऽध्याय: १८ ॥ रामेभवसुभू संख्ये १८८३ वर्षे पौषेसितेभृगौ ॥ पक्षेऽष्टम्यां चरेवत्यां मल्लिनाथोव्यलीलिखत् ॥१॥ समाप्तोयं ग्रंथ: सुभमस्तु श्रीराम ॥
३१·१ × १३·३ सें० मी०	११५ (१–११५)	११	४०	पू०	प्राचीन सं० १८५३	इति श्रीभगवद्गीता टीकायां सुबोधिन्यां श्रीधरस्वामि कृतायां मोक्ष योगो नामाष्टादशोध्याय: ॥ १८ ॥ समै मासे चैत्र शुक्ल पक्षे पंचम्यां भौमवासरे पुस्तक गीता टीका रामे लिषावा बाल कृष्ण रामभक्त: संमत १८५३ श्री पद्मपुर ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८	५८११	भगबद्गीता (द्वादश अध्याय)			दे० का०	दे०
७६	५८२६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८०	५८२५	भगवद्गीता (भाषा टीका)			दे० का०	दे०
८१	५६६४	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८२	५६६१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८३	५६८२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७४	५६७१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
	६					

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२.८ × ११ सें० मी०	२ (१-२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याणां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः १२॥
२० × १४ सें० मी०	६० (३३–९२)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं० १९२२ (कृमि-कृंति)	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्या यांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादेसन्यास मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्यायः सं० १९२२॥
२२.३ × १३.४ सें० मी०	६६	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मनमहाभारते सतसहस्र संहितायांवैयाशिक्यां भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपरिषत्सु ब्रह्म-विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन-संवादे ज्ञान-विज्ञान यागोनाम सप्तमोऽध्यायः
१९.५ × ९.५ सें० मी०	३० (१–२,४–६,११–१६, २५, २८–३३, ६६, ६९–७३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे गुणकर्म्म दर्शनो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥
१३ × ९.१ सें० मी०	२२	५	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे विभूति योगोनाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥
१६.९ × ९.५ सें० मी०	१०३ (१–१०३)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसयोगो नाम अष्टादशोध्यायः ॥
१०.८ × ६.७ सें० मी०	१३५ (१–१३५)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्र्यं-संहितायांवैयासिक्यां भीष्म पर्वणि भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यापां-योग शास्त्रे श्री कृष्णतंत संवादे संन्यास योगो नामाष्टादशोध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	६१२५	भगवद्गीता (दशम और एकादश अध्याय)			दे० का०	दे०
८६	६०७६/५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८७	६२०८	भगवद्गीता (चतुर्थ, पंचम अध्याय)			दे० का०	दे०
८८	२२८१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८९	५५२०/५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९०	२१९३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९१	२१९३	भगवद्गीता (गूढार्थदीपिका)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·३ × ८·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे विश्वरूप दर्शनोनामैकादशोध्यायः ॥११॥
१५.४ × ९·४ सें० मी०	१३५	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्रसंहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोध्यायः संपूर्णम् ॥शुभम्॥
१७ × ७·६ सें० मी०	५ (३३-३७)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यास योगो नाम चतुर्थोध्यायः ।··· (पत्रसंख्या–३६)
१९.८ × ११·४ सें० मी०	२८ (१–२८)	५	१४	अपू०	प्राचीन सं०१८४४	
१३·६ × ७·९ सें० मी०	१४३ (१-१४४)	६	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षयोगोनामअष्टादशोध्यायः ॥
१७.७ × ७·८ सें० मी०	१६ (८,११–१२,२५,२९–३९)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२८ × १२ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इतिश्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे गुढार्थदीपिकायां सप्तदशोध्यायः ॥ श्रीकृष्णाय गोविंदाय नमोस्तुते ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	६४६१	भगवद्गीता (हिन्दी-मराठी-टीका)		पार्थ सारथी	दे० का०	दे०
६३	७१५७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६४	१३६	भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०
६५	३८५	भगवद्गीता (सटीक)	व्यास	रामानुजमुनि	दे० का०	दे०
६६	६६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६७	३३७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६८	३८७५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·३ × १५·२ सें० मी०	६०	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति टीका समश्लोकी अध्याय पंच मावरी श्री पार्थसारथी कर्त्ता जीवा मन मनोरथी ५ (पत्र सं० २८) (पत्रांक ३४)
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१२६ (१-११५, १४१–१५१)	६	१५	अपू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादेसंन्यास योगोनामष्टादशोध्यायः ॥·· संवत् ॥ १६१७ ॥······
१६ × १० सें० मी०	७१ (१–७१)	७	२७	पू०	प्राचीन	शके १७१३ शुभ कुन्नामसंवत्सरे आषाढशुक्ल चतुर्दश्यां मंद वासरे आर्यावर्तांतर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे उत्पलारण्येवारुणी क्षेत्रेएतत्पुस्तक समाप्तिमं गमत् ॥
३३·६ × १६·२ सें० मी०	१६ (३५–५०)	१३	५५	अपू०	प्राचीन सं० १८३७	इति श्री भगवदंमानुज मुनिविरचिते अष्टादशोध्यायः ॥१८॥ भाद्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ १५ ॥ बुद्धवासरे तद्दिनशंपूर्ण शमाप्तं॥ संवद॥१८३७॥
२७·३ × ११·६ सें० मी०	१२७ (१,३-१२८)	७	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८६३	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे भीष्मपर्वणि परममोच सन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥······ श्री सं० १८६३ ॥
२४·१ × १२·६ सें० मी०	२७ (१–२७)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषतत्सू ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास यागोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१६॥सं०॥१६॥
२५·६ × १५·६ सें० मी०	११ (६–१६)	१४	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सू ब्रह्म विद्यायां योगसास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्म संन्यास योगो नाम चतुर्थोध्याय ॥ + + + + (पृ० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९	३६१८	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१००	३६४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०१	३६८६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०२	३६८८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०३	३८६०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०४	३००९	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१०५	३०७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·७ × १५·५ सें० मी०	१३१ (१–१३१)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पंचौवलीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेसन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय: १८ समाप्तिर्मगमत् ॥ विक्रमादित्यराजस्यनागाभ्रनवभूस्मृत: आषाढ़ेऽ सितपक्षेतु तृतीया चंद्रवासरे लिखितं शिवदत्तेन मुन्नालालस्यआत्मज: ।
११·५ × ७·६ सें० मी०	११८ (१–११८)	८	१८	पू०	प्राचीन	······श्री भद्गवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्ज्जुन संवादे मोक्ष्य सन्यास योगो नाम अष्टमदशोध्याय: ।
१८·८ × ९·६ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	३२	पू०	प्राचीन	· ···श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय: समाप्तं शुभं भूयात······।
३१·१ × १५·२ सें० मी०	३९ (१–३९)	९	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म० योगशास्त्रे श्रीकृष्णाजुंन संवादे क्षेत्र सन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय॥१८॥ समाप्त: शुभमस्तु ॥
२३·५ × १०·३ सें० मी०	१३ (९–२१)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपणिषत्सु ब्रह्म विद्या ।
३१·३ × १६.३ सें० मी०	१९	१५	५२	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे योग शास्त्रे निर्णय सन्यास योगो नामऽष्टादशोध्याय: ॥१८॥
२१·८ × ८·७ सें० मी०	७१ (१–७१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०६३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	८६६	भगवत्गीता (१ से १० अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०७	६१५	भगवत्गीता (१ से १८ अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०८	६४४	भगवत्गीता			दे० का०	दे०
१०९	६७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११०	४८३८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१११	४६२३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११२	४६१४	भगवद्गीता (अष्टादशाध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·८ × १३·२ सें० मी०	५४ (१–५४)	९	२७	पू०	प्राचीन सं० १९३२	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे रत्न लालनेवमलेखि गीता मेर कोट नगरे ॥ नमः श्रीकृष्ण य ॥ सं० १९३२ वैशाख.........
१६·४ × ९·२ सें० मी०	१२७ (१–७८, ७८–१२६)	५	२१	पू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्ण अर्जुन सवादे मोक्ष संन्यास योगो नामाष्टादसोध्यायः ॥ १८ ॥ सं० १८९२ मुकाम टीकमगडमध्ये ॥ पठनार्थ श्री महतरंभा गोरजी ॥ लिख्यतं पं० श्री चौबेकलुराम
१६·७ × ७·७ सें० मी०	६ (१, ८, ३७, ८३, ८९–९०, ११८)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास नामाष्टादशोध्यायः ॥
२२·४ × १० सें० मी०	२५	९	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७६१	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे परमार्थ निर्णयो नाम अष्टादशोध्यायः ॥ १८ ॥... ... ...संवत् १७६१ दशमी वद पूष समापः...॥
१८·८ × ९·४ सें० मी०	८७ (१–८६,८८)	८	२०	अपू०	सं० १९४४	......शुभंभवतु भूयात संवत् १९४४ शाक १८०९ भाद्र कृष्ण पंचम्यां भौमवासरे ॥
२३·७ × ११·३ सें० मी०	३१ (१,३-६,१४-१६,२३,२७,३३-३४,३६-४३,४६-४८,५०,५१,५४-५७,५९-६१,६३)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे गुणत्रयविभाग योगोनाम सप्तदशोध्यायः ॥ (पृ० ५७)
२२·९ × १२ सें० मी०	४९ १–४९	८	३४	पू०	प्राचीन	इति भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे सन्यासयोगो नामअष्टादशोध्यायः संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	४६१०	भगवद्गीता			मि० का०	दे०
११४	४५२६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११५	५०६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११६	४६१९ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११७	५१३२	भगवद्गीता (१०-११ अ०)			दे० का०	दे०
११८	६८७९	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११९	६५२० / १६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२१·४ × ११·८ सें० मी०	४७ (१-८,१२-१६ १८-५१)	६	२२	अपू०	आधुनिक	
१६ ६ × १० २ सें० मी०	६४ (१-६४)	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णा……
२०·६ × १०·५ सें० मी०	२६	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे कर्म गुण विभागदर्शनोनाम सप्तदशोध्याय: + + + ॥ (पृ० ५५)
६·६ × ६·७ सें० मी०	६५ (१-६४ ६६)	५	९	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे कर्म योगोनामतृतीयोध्याय: ॥ + + + ॥ (पृ० ८१)
२३·४ × ९·४ सें० मी०	१२ (१-१२)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे विश्व रूपदर्शनोनाम एकादशो ध्याय: ।.१॥ लिखितं नारायण भट्ट ब्राह्मन ॥
२५·५ × १५·४ सें० मी०	३० (१६-४५)	१४	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे गुणत्रय विभागोनाम चतुर्दशो ध्याय ॥ (पृ० ४१)
६·६ × ६·५ सें० मी०	२० (१-२०)	१०	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूशंदर्शन योगो नामेकादसोध्याय: ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	१७१७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२१	४४८८	भगवद्गीता (१–१८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१२२	४४६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२३	१७४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२४	४२६२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२५	४३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२६	४४४० / १०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·८ × ९·१ सें० मी०	७ (५५–६१)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२१·७ × ११ सें० मी०	७९ (१–७९)	७	२४	पू०	सं०१९१७	इति श्री भगवदगीतामूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ संवत १९१७ मार्गमाशे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ एकादश्यां ११ खवाशरे लिष्यतं श्रीदुवे राधेकृष्ण ··· ···
१६·३ × ९·८ सें० मी०	११८ (२–५,८,१०–४०,४६,४६–६२,६४–६५,६८–१३२)	६	१६	अपू०	(कृमि कृतित) सं०१९११	इति श्री भगवदगीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामअष्टादशोध्यायः ॥१८॥ फाल्गुणमासे कृष्णपक्षे षष्ठ्यांबुधवासरे ॥ मथुरादासलिखितं भगवदगीतांपुस्तिका ॥ संवत् १९०११ श्रीराधाकृष्णायनमः ··· ··· ···
१५·३ × १० सें० मी०	५७ (१-४५, ४७-५२,५४-५७,६१-६२, ६५–६६)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगो नामाष्टदशोऽध्याः ॥ १८ ॥
२३·७ × १३·१ सें० मी०	४३	७	२२	अपू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमदभागवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे··· ··· विभागयोयोगोनासत्पदशोध्यायः ॥ (पत्रसंख्या ७९) + + +
३१·६ × १३·८ सें० मी०	३० (१–३०)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री भगवदगीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्याम योगोनामाष्टदशोध्यायः १८ श्री संवत १८७१ पौष शुक्ल पौर्णमास्याम् शुभं ॥
१२·४ × ९·१ सें० मी०	९९	९	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८९८	श्री मद्भगवदगीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यामयोगो नामाष्टादशोध्याय + + + संवत् १८९८ मथती नाम संवत्सरे शाखमध्ये द्वैतिया प्रायाग दास लिषतं + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	१३६८ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२८	१३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२९	१९१०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३०	१८७०	भगवद्गीता (सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१३१	१८२६	भगवद्गीता (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१३२	१५३२	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१३३	१६६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·७ × ७·८ सें० मी०	१२६ (८–१३३)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोन संन्यासयोगो नामाष्टादशोध्यायः ॥ १८ ॥ सपूर्णम् शुभं ॥
१४ × ८·५ सें० मी०	१४४ (१–१४४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संघातायां वैससिका भीष्मपरणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत् ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षे··· · अष्टादशोध्यायः ॥ १८ ॥
२९·५ × १५·८ सें० मी०	१२२ (१–१२२)	४	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगो नामअष्टादशोध्यायः समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२१·३ × १४·७ सें० मी०	४२ (५८–७८, ८१–८६, ९८–१०८, ११२)	१५	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्ज्जन संवादे········
२७·७ × १४·५ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	१४	४१	पू०	प्राचीन	संवत् १८५८ भाद्रपदे मासे शुक्ले पक्षे तिथौ सप्तमी ७ चंद्रवास रे लिखितं मिदं पुस्तकं गीतायां लक्ष्मण ब्राम्हणे ॥ ···
३० × ११ सें० मी०	३२	११	३४	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १०·४ सें० मी०	६	८	१९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	२८८३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३५	२८४८	भगद्वगीता			दे० का०	दे०
१३६	२८३५ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३७	२८१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३८	३४४१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३९	१२५६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४०	१२१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·३ × ८ सें० मी०	८१ (१–८१)	७	२५	पू०	प्राचीन सं०१८७४	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगो नामाष्टा दशोध्य यः ॥१८॥ भगवत्गीता सपूर्णं शुभम्भूयात् ॥ संवत १८७४ के शाल चैत्र सुदि ८ भौमेक: लिखा श्री वैह्म वसत दाश ॥ सीताराम ॥ श्रीराम चन्द्रायनमः ॥
२२·६ × ११ सें० मी०	१२१	६	२७	अपू०	प्राचीन	
१४·२ × ८·७ सें० मी०	१४१ (१३–१५३)	६	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र संहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे ··· ··· ॥
१० × ७ सें० मी०	२२ (१०७-१२८)	६	१०	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × १०·३ सें० मी०	४० (१–४०)	५	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादेकर्मयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ (पृ० ३४)
१७ × ९·३ सें० मी०	११९ (५–१२३)	६	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे परमार्थ विनिर्णय योगो नामाऽष्टादशोध्यायः ॥१८॥ वर्षे वैशाख वदि ३ शनिवाशरान्वितायां लिखितं पं० नारायण दास टिहनगुरिया ॥ पोथी श्री महाराज कुमार आनंद सिंहजू की ॥ श्री गोपाल जू ॥
१८·५ × ९ सें० मी०	१०७ (२–१०८)	६	२१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	११६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४२	३१६३	भगवद्गीता (१–८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१४३	३१७५	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१४४	३१७८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४५	३१८०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४६	३२८७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४७	२९३३ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ११.५ सें० मी०	४०	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे परमार्थ निर्णयोनामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ समाप्तम् ॥शुभमस्तु॥
२७ × १३.३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादशोध्यायः ।
३० × १३ सें० मी०	११३ (४–११६)	१३	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशो ध्याय: १८ नारायणाय × × ×
२०.९ × ८.९ सें० मी०	९६	५	२८	पू०	प्राचीन	श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगोनाम अष्टादशोध्या ॥
२१.६ × ९.१ सें० मी०	७३ (२–७४)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षयोगोनाम अष्टादशोध्यायः ॥१८॥
१२.२ × ९.२ सें० मी०	१२५	७	१२	अपू०	प्राचीन	
१५.७ × १०.६ सें० मी०	६७	७	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	३६७०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४९	८५५२ ---- ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१५०	४४१७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५१	२१०७	भगवद्गीता गूढार्थं दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५२	२१०६	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५३	२१०५	भगवद्गीता दीपिका गूढार्थ	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५४	८३०	याज्ञवल्क्य गीता (१-१२ अध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·२ × ४८ सें० मी०	१०५ (३–१०७)	५	२४	अपू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगेशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोध्यायः ।। संवत् १८६६ इदं पुस्तकं केशवस्य हस्ताक्षर खुद्द अस्ति शुभं भूयात् ।।······
१६·१ × ११ सें० मी०	४ (१८–२१)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विभूति योगोनाम दशमोध्यायः।।
३१·५ × १५·८ सें० मी०	२४३ (१–२४३)	१४	४५	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विश्वेश्वर सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायामष्टादशोध्यायः १८ समाप्तः संवत १८५५ मिति जेष्ट मासे कृष्णपक्षे ११ एकादश्यां शुक्रवासरे × × ।।
२८·३ × १२ सें० मी०	१२	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां दशमोध्यायः ।।
२८·३ × १२ सें० मी०	११	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गूढार्थ दीपिकायामेकादशोध्यायः ११।।
२८·३ × १२ सें० मी०	१३	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां त्रयोदशोध्यायः ।। श्री कृष्ण उवाच ।। ।। श्री गोपालाय नमः ।।
२७·७ × १२ सें० मी०	१८ (१–१८)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री याज्ञवल्क्यगीतापुपनिषदष्षु द्वादशोध्यायः ।। शुभमस्तु ।। श्रीकृष्णायनमः ।।... ... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	३९७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१५६	३९७५	रामगीता			दे० का०	दे०
१५७	४०१४ / ६	रामगीता	रामानुज		दे० का०	दे०
१५८	३६८७	रामगीता			दे० का०	दे०
१५९	२७८२	रामगीता			दे० का०	दे०
१६०	३३४८ / ४६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६१	१४४४ / ५	रामगीता (पंचम सर्ग)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × ८·३ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री मदध्यात्मरामायने उत्तर कांडे रामगीता नाम पंचमोध्याय: ॥५॥ प्रथम सवन सुदि ॥२४॥ संवतु १८८२॥ मुकां बदेउगड ॥
१३·८ × ९·६ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्म रामायणे उत्तरकांडे रामगीतं नाम पंचमोध्याय: ॥५॥···
१८·१ × १६·१ सें० मी०	३	१५	८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामनुजं विरचतं षटश्लोकी रामंगीता संपूर्ण समाप्त···
१९·३ × ७·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तर कांडे रामगीता नाम पंचम: सर्ग: ॥
१५·८ × १०·५ सें० मी०	८ (१–८)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उत्तरकांडे उमा महेश्वर संवादे रामगीता समाप्ता॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे श्रीरामगीता नाम पंचम: सर्ग.: ५ ॥
१८·७ × १२·७ सें० मी०	७ (१–१७)	१५	१५	पू०	प्राचीन (सं०१९१७)	इति श्री अध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे श्रीरामगीता पंचमसर्ग: ५ बिहारि लालेन लिखतं सं० १९१७ श्रा० शु० शु० ॥

(सं० सू० ६५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	६८६०	रामगीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१६३	८५१३	रामगीता			दे० का०	दे०
१६४	६६७६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६५	२२५६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६६	७३७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१६७	७३४५	रामगीता सटीक			दे० का०	दे०
१६८	७५५२	रामगीता सटीक (रामगीता व्याख्या)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·४ × ११·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१३	४१	पू०	प्राचीन (कृमि-कृतित)	इति श्री मत्सकल राज विपद्धर ॥ रामगीता टिप्पन समाप्ता ।।
१६·१ × ९·९ सें० मी०	२२ (१–२२)	१५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अध्यात्म रामायणे उत्तरकांडे श्री रामगीता समाप्त: श्री रामार्पन-मस्तु ॥
१८·२ × ११·७ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१९	अपू०	प्राचीन	
१४·४ × ७·३ सें० मी०	१८ १,३, ४-१९,	१५	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमा-महेश्वर सवादे श्री रामगीता संपूर्णम् ॥
३२ × ९·८ सें० मी०	६ (१–६)	९	३६	पू०	प्राचीन सं०१९३२	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उत्तर कांडे उमा महेश्वर संवादे श्री राम-गीता समाप्तम् सम्वत् १९ गत ३२ के शाह्य पुस्तक लिखितम् × × ×
२६·६ × ११·३ सें० मी०	३१ (१–३१)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे रामगीता कथनं नाम पंचमः सर्गः ॥ × × × इति टीकायां पंचमः सर्गः ॥५॥
२४·९ × ११·२ सें० मी०	१४ (१,४–१६)	९	४६	अपू०	प्राचीन	……करिष्ये रामगीता व्याख्यानं बालबुद्धये ॥१॥ (पत्रसंख्या १)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६९	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४९	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४९	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२ / ५	श्रीभगवद्गीता			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·३ × ९·६ सें० मी०	९	८	२५	अपू०	प्राचीन सं० १७५९	इति श्री वैष्णव गीतायां श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दीक्षा निर्देशयोगो नाम चतुर्थोध्यायः समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७५९ ॥
१५·२ × ७·९ सें० मी०	११२ (१–११२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खंडे श्रीमद् शिव गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां श्री महादेव राघव संवादे मोक्षयोगोनाम षोडशोध्यायः ॥
२३ × १५ सें० मी०	६	१६	३४	अपू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोध्यायः × × × × सं० १९२२ ज्येष्ठे ॥
२३·६ × ९·७ सें० मी०	९ (१–९)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२८·३ × १२ सें० मी०	११	११	५८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोध्यायः ॥
१६·५ × ११·५ सें० मी०	१०२	८	१८	पू०	सं० १९१४	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगेनाअष्टोदशोध्यायः ॥ १८ ॥ संपूर्नः शुभमस्तु ॥ संवत् १९१४ के साल……
१६·६ × ९·३ सें० मी०	१२९ (१–१२९)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यासयोगोनामाष्टादशाध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७६	५७	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७७	१२८५/८	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७८	१९१३	श्रीमद्भागवतगीता (संस्कृत सटीक)			दे० का०	दे०
१७९	४२८०	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८०	३३४८/४६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८१	६३९	श्रीमद्भगवतगीता			दे० का०	दे०
१८२	११०	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·८ × ११·६ सें० मी०	१० (६–१५)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × ९ ५ सें० मी०	९९ (१–९५)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवदगीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनामष्टादशोध्याय: ॥६॥ ॥संम॥
३३ × १५ सें० मी०	२६	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२० × १०·५ सें० मी०	४५ (३-२१, २५-३६, ४६-४८ ५६-५७, ५९-६५)	६	२७	अपू०	सं०१८४७	···र्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय: ॥१८॥ शुभं भूयात ॥ श्रीमद्भगवद्गीता संपूर्णा॥ श्रीरामचंद्रायनम: संवत् ॥१८९४॥ मिति आषाढ वदि ॥ लिखिते पन्नालाल भट्ट मथुरास्थेन ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१३८ (१-३६ (३४-३६)-१३५)	६	१७	पू०	सं०१८९६	ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्य संहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्ज्जुन संवादे सन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय: १८ संवत् १८९६ के मिती चैत्र सुदि ४ लिष्यतेयं श्री गोसाई दलई राम पठनार्थं वैष्णव श्रीनंदराम श्रीरामजी
२०·६ × १०·६ सें० मी०	७०	८	२२	पू०	प्राचीन	श्री संवत् ॥१६॥ ॥६३॥ पौसवदि द्वितिया सानी वासरे समाप्तं······
१७ × १०·५ सें० मी०	१२६	७	१७	पू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे संन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय: ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८३	६६१/५	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८४	६७३२	श्रीमद्भगवद्गीता ('सुबोधनी' संस्कृतटीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१८५	६८२०	श्रीमद्भगवद्गीता (मराठी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१८६	७०२४	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८७	७१७९	श्रीमद्गवद्गीता			दे० का०	दे०
१८८	५४१२/५	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८९	६०६९	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·६ × ७·१ सें० मी०	८१ (१२–१७, ३२–१०४, १०७–१०९)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता ॥
२८·५ × १२·६ सें० मी०	११२ (१ ११२)	१४	३८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीताटीकायां सुबोधिन्यां श्रीधरस्वामिकृतायां मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्यायः ॥······
२४·४ × १४·८ सें० मी०	६९ (२–७०)	१५	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैय्यासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगो नाम अष्टादशोध्यायः १८ संवत् १८४० फाल्गुन कृष्ण १४ शुभमस्तु ॥
१५·१ × ११·२ सें० मी०	१९	१७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री तत्सदिति श्री महाभारत शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां शांति भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ × × ×
२५·५ × १२ ५ सें० मी०	५२ (१–५२)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यासयोगोनाम अष्टादशोध्यायः ॥१८॥ संवत् १९३५ जेष्ठकृष्णा १५··· ··
१४·१ × ७·९ सें० मी०	१३५ (३–१३७)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यासयोगोनामाष्टादशोध्यायः ॥ शुभमस्तु लेखक पाटकयो ॥
२१ × १०·७ सें० मी० (सं०सू०६६)	७८ (१–७८)	७	२६	पू०	सं०१८८९	हरि ॐ तत्सदिति श्री महाभारते शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्री मद्भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनामष्टादशोध्यायः ॥१८॥···सं० १८८९···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९०	७४७७ / २	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१९०	६११३ / १०	षट्श्लोकीरामगीता			दे० का०	दे०
१९२	४६४५ / ५	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९३	४१४२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९४	१२५२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९५	३३१८	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९६	२३९ / १२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२.६ × ८.१ सें० मी०	१४३ (१-१४३)	६	१६	पू०	प्राचीन	३। श्री। म।। भा।। तेश।।स।।त्र।।हि।।यां वैयासि क्यां।।ष्म। वंर्गिग।।ग।।र्दगी।।सू। नि।।त्सु।। ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मो।।सं।।स।।गो।। मा।।दशो १०ध्यायः।।१८।। समाप्तम्।।
१६.५ × १३ सें० मी०	२ (३८-३९)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री षट्श्लोकी रामगीता संपूर्ण ।।
११.२ × ८.५ सें० मी०	४ (८-११)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता संपूर्न समाप्त ।।... ... ...
१३.५ × ८.३ सें० मी०	२ (१-३)	६	१३	अपू०	सं० १९४०	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्तम् ।। शुभमस्तु संवत् १९४० के अषाढ १४ कृ० ।।
१०.३ × ६.१ सें० मी०	१६	४	१०	अपू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्री सप्तश्लोकी गीता संपूर्ण सरमाप्त ।। लिष्यौषेत डीमधेस मत १८ ७५ ।। का।। मीतीमाह सुधि ।।१०।।
१२.१ × ६.९ सें० मी०	४ (१-४)	४	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तः
१६ × १०.५ सें० मी०	१ (५७)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति सप्तश्लोकी गीता संपूर्णम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९७	२५५२/५	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१९८	४३९८	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१९९	६०९८/२	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२००	५७५९	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०१	५८९६/२	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०२	५६०८	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०३	७१७८/७	सप्तश्लोकी भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·१ × ११ सें० मी०	२ (१५-१६)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन संवादे सप्तश्लोकी गीता सपूर्न ॥ सुभ मस्तु मंगलं ददातु ॥
१६·२ × ८७ सें० मी०	१ (१–३)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकीगीता संपूर्ण ॥
२२ × १०·१ सें० मी०	१	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ।
२० × १०·७ सें० मी०	३ (१–३)	७	२४	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्तः ॥ ····· संवत् १८८४॥ पोस विद ७। हस्ताक्षर अमृतराव के होम
१४·३ × १०·६ सें० मी०	१	८	१७	अपू०	प्राचीन	
१७·९ × ९·८ सें० मी०	२	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
१६·६ × १० सें० मी०	३ (१–३)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोक भगवद्गीता संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	१६५२	सारगीता			दे० का०	दे०
ज्योतिष						
१	६६३५	अंगप्रश्न			दे० का०	दे०
२	२४२	अंतर्दशा फल			दे० का०	दे०
३	१७५६	अक्षरचिंतामणि			दे० का०	दे०
४	४५६१	अक्षरचूड़ामणि			दे० का०	दे०
५	६८१८	अमृतकुंभ	नारायण		दे० का०	दे०
६	६६००	अर्घकांड			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१८·२ × १२·६ सें० मी०	२ (१–२)	१६	२७	पू०	प्राचीन	इत्यंग प्रश्नः ॥
२२·३ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०·५ सें० मी०	११ (१–११)	९	३८	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री अक्षरचिंतामणि समाप्ता संवत् १८३४
२२·७ × ९·२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	पू०	प्राचीन सं०१९३६	इत्याक्षर चुडामणि पुस्तकं सम्पूर्णं सम्वत् १९३६ साके १८०१ समय आषाढ मासे कृष्न ३ शनी वासरे लिषित्वा गौरी शर्म्मणे ....
३२ × १० सें० मी०	४२ (१–४२)	७	४५	पू०	सं०१९३१	इति श्री ज्योति श्री रामसुत नारायण विरचिते अमृत कुंभे ग्रहण लिखनानुक्रम समाप्तः ॥ संवत् १९३१ आशोज मासे शुक्ल प्रतिपदा मंदवासरे लिखितं मिदं पुस्तकं शंकर दत्तात्मज पुत्र नंद लाले नैव ॥
२७·२ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८१२	इत्यर्घ कांड संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७	४६०२	अर्घदीपक (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
८	३८०३	अर्घप्रदीप			दे० का०	दे०
९	२४९	अवजदकेवली			दे० का०	दे०
१०	७१८८	अष्टकवर्ग-अरिष्टादि			दे० का०	दे०
११	६९०८	अष्टकवर्गजातक (प्रथम अध्याय)			दे० का०	दे०
१२	५२७५	अष्टग्रहयोग फल	नागेश्वर तान पाठक		दे० का०	दे०
१३	२५७	अष्टवर्गाधिकार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × ११·२ सें० मी०	५३ (१–५३)	६	२९	पू०	सं०१९४२	इति केतूदयफलं संपूर्णं समाप्तं भूयात् संवत् १९४२ मासोत्तम मासे वैसाष मासे कृष्णपक्षे चतुर्थियायां शनिवासरे कुसमाप्तलिया लिखितं पंडित राम सरूपजी यह पुस्तक.........
२३ × १०·९ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	इति अर्घप्रदीपे गुरुमिश्रफलं ॥ (पत्रसंख्या-११) × × ×
२८·६ × ११·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१९११	इति श्री अवजद केवली संपूर्णम्... सं० १९११ मासो०......आदित्य वासरे लिखितां मुकलम पुरामध्ये लिखि विहारिनः राम राम कृष्ण रा०॥
२३ × १०·६ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२६	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·९ सें० मी०	४ (१–४)	९	४८	पू०	प्राचीन	इत्यष्टवर्ग जातके प्रथमोध्यायः समाप्त ॥
२१·५ × ८·२ सें० मी०	७ (१–७)	९	३२	पू०	आधुनिक	इति अष्टग्रहयोग फलं समाप्तं ॥ श्री क्षेत्र त्र्यंब के श्वर संन्निधौ लिखीतं नागेश्वर तात पाठक गोपालनाना लिखीतं ॥
२२·५ × १० सें० मी०	६ (१–६)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इत्यष्टकं वर्गाधिकार समाप्तम् ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	७३६०	अष्टोत्तरीदशा (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१५	५३३२/८	अहर्गण विधि			दे० का०	दे०
१६	१५५७	अहि चक्र			दे० का०	दे०
१७	५२८९	अहिबल चक्र (सटीक)			दे० का०	दे०
१८	५०५४/१५	आखेटक चक्र			दे० का०	दे०
१९	४७७४	आयाप्रश्न			दे० का०	दे०
२०	६६०५	आयुदायादि फल विचार (जैमिनि जातकोक्त)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.१ × १४.९ सें० मी०	२६	२०	१८	अपू०	प्राचीन	
२१.६ × १४.९ सें० मी०	२ (१–२)	१६	२२	पू०	प्राचीन	इति अद्भ्रंग विधि: ॥
२६.६ × ११.८ सें० मी०	४	९	३६	अपू०	प्राचीन	
२७.३ × ११.८ सें० मी०	५ (१–५)	१२	५१	पू०	प्राचीन सं० १६२१	इति नरपति जयचर्या स्वरोदये अहिबल चक्रम् समाप्तम् ॥ ………… इति स्वरोदयविवृतौ अहिचक्र विवरणम् ॥ संवत् १६२१ भाद्र शुक्ल षष्ठ्यां बुधवासरे लिखिमिदम्०
१६ × ७.८ सें० मी०	८ (१–८)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति यामलीय संग्रहे आखेटक चक्र: ॥
२१.८ × ६ सें० मी०	७ (१–७)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री आया प्रश्न समाप्तम् ॥ सम्वत् १८६० ॥ साके १७२५ ॥ समये चैत्र मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां रविवाशरे बिलेपित रघुवर रामेन आत्मा पठार्थ पुस्तकि समाप्तम्॥ शुभमस्तु॥ सिद्धिमस्तु॥
२७.४ × ११.९	३ (१–३)	१५	६१	अपू०	प्राचीन	………॥ अथ श्री मज्जैमिनि जातकानुसारेणायुदयादि फल विचार: क्रीयते ॥ …… (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	३६२६	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२२	५१८७	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२३	३०४६/६	आर्जाप्रश्न			दे० का०	दे०
२४	६६११	आर्यभट्टसिद्धांत	आर्यभट्ट		दे० का०	दे०
२५	५८६६	आलोक मनोरमा प्रश्न	गर्ग		दे० का०	दे०
२६	५५६५	इष्टकाल शोधन पूर्वार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०
२७	५५६४	इष्टकालशोधन उत्तरार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१८·६ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री देव कृत प्रश्नः समाप्तः × × × × × × ॥
२५·७ × १२·८ सें० मी०	२ (३–४)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति विघ्नराज कृतं आय पृष्ण ग्रंथं समा तं संवत् १८८३ ॥ × × ×
१९·७ × १३·१ सें० मी०	५	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × १२ सें० मी०	२९ (१–२९)	११	३९	पू०	प्राचीन सं० १९५०	इति श्री मदाचार्य्यार्य्य भट विरचिते महासिद्धांते गोलाध्याये कुट्टकाधिकारो नामाष्टादश. ॥ संपूर्णः ॥ संपूर्णोयमार्य्यभट सिद्धांतः ॥ संवत् १९५० ॥
१७·७ × १२ सें० मी०	९ (१–९)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री गर्ग विरचितालोक मनोरमा प्रश्न विसमा समाप्तय ॥ (पृ० ३)
२९·६ × ११·६ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	५३	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इति श्री लग्नात् षटराशिमध्ये चंद्रे लग्नोन चंद्रसारणी। उदाहरणं च समाप्तं शुभमस्तु संवत् १९०८ माघ शुक्ल सोमे लिखितं छत्रपुरे श्रीः ॥ पूर्वार्द्धं समाप्त।
२९·८ × ११·८ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४९	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इति लग्नात् षट्राशितोऽधिके चंद्रे सप्तमभावोनविधुसारण्युदाहरणे समाप्ते सं० १९०८ कातिक वदि १२ भौमे छत्रपुरेलिषिते श्रीः ॥ उत्तरार्द्धं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	१२६०	इष्ट शोधन			दे० का०	दे०
२९	४२५८	उडुदशास्वलक्रम			दे० का०	दे०
३०	६८५१	उडुदाय प्रदीप			दे० का०	दे०
३१	२०७७	उत्पात लक्षण	यशोधर मिश्र		दे० का०	दे०
३२	६६२	ऋण-धन चक्र ?			दे० का०	दे०
३३	६५१	ऋतुमंजरी			दे० का०	दे०
३४	११८/२	कमलवधशकुन	विघ्नराज कृत		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२३×१०·५ सें० मी०	६	८	२६	पू०	प्राचीन	
२५·१×११·३ सें० मी०	६ (१–६)	११	३७	पू०	प्राचीन सं० १८१८	इति उडुदशास्वल्पक्रमः श्री संवत् १८१८ शाके १६८२ वैशाख कृष्ण गुरौ लि० द्विवेदिनः जगनाथस्य श्री···
२४·५×११ सें० मी०	६ (१–६)	५	३६	पू०	प्राचीन सं०१६०१	इति पराशरीये उडुदाय प्रदीपः समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १६०१ श्रावण शु० १ गुरुवासरे ॥
३२×११ सें० मी०	८	६	४५	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति श्रीमत्कसारि मिश्रात्मज मिश्र यशोधर विरचिते दैवज्ञ चिंतामणी उत्पात लक्षणं समाप्तम् शुभमस्तु संवत् १६१८ के आश्विनि शुक्ल : १५ शुक्रेक: ······
१३·२×८ सें० मी०	५ (१–५)	८	१८	पू०	प्राचीन	
२१·६×६·२ सें० मी०	४	७	३१	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति श्रीतुंमंजरी संपूर्ण स्वम्व १८६० साके १७२५
२२×६ सें० मी०	४	८	२६	पू०	प्राचीन	इति कमल वध शकुन समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ लेषक पाठकयोः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	६९८७	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३६	६८१५	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३७	६४९४	*करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३८	३९४१	करण कौतूहल टीका	विश्वनाथदैवज्ञ		दे० का०	दे०
३९	३१८९	करणप्रदीप	महादेव		दे० का०	दे०
४०	१६७२	करण फल			दे० का०	दे०
४१	३८३६	कर्मप्रकाश (कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १०·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं०१६६६	इति भास्करीये करणे कुतूहले पर्वानयनोनाम दशमोऽध्यायः ।।सं०१६६६ वर्षे ... ...
२१·८ × १०·७ सें० मी०	१६ (१–१६)	९	२६	पू०	सं०१९३०	इतिह भास्करोदिते ग्रहागमे कुतूहले ॥ विदग्धबुद्धिवल्लभे शशांक सूर्यग्रहः ॥१०॥ सं० १९३०॥ शाके १७९५ मीती वैशाख वदि १४ भृगौ ॥
२३ × ९·३ सें० मी०	१६ (१-७, ९-१६, १८)	९	२६	अपू०	प्राचीन सं०१६६२	करण कुतूहलं समाप्तं ।।सं० १६६२ वर्षे शाके १५२७ प्रवर्त्तमाने भाद्रपाद शुदि नवम्यां रवौ लिखित... ... ...
२३·८ × १०·१ सें० मी०	६०	१०	३१	अपू०	सं०१८४२	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते ब्रह्मतुल्यस्योदाहरणे पाताधिकारस्योदाहरणम्।।श्रीविश्वनाथेन दिवाकरस्य सुतेन यत्माद्रचिता समाप्ता गोलाभिधग्राम निवासिनेयमुद्राहृतिः खेट कुतूहस्य ॥ सं० १८४२
२३·८ × १०·१ सें० मी०	६ (२-४, ६-८)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × १०·८ सें० मी०	३	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२२·९ × १५·२ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३१	पू०	प्राचीन	इतिश्री सूर्यारुणे संवादे ज्ञानभास्करे० कर्म प्रकाश विज्ञापन प्रकारः मुरलीधरेण लिखितं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	७५९०	कर्मप्रकाशिका			दे० का०	दे०
४३	१०६१	कलावलिटीका			दे० का०	दे०
४४	४५६	कष्टावलि	रुद्र		दे० का०	दे०
४५	५१९८	काकभाषापिंड (सटीक)	गर्ग ऋषि		दे० का०	दे०
४६	६९४८	कालचक्र जातक			मि० का०	दे०
४७	६९४९	कालचक्रदशा टीका			मि० का०	दे०
४८	१७४९	कालजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·६ × १२·६ सें० मी०	९ (३२–४०)	१५	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्म प्रकाशिकायां जन्मा कालान्निषेककालं ज्ञान नामचतुर्थाधिकारः······ (पत्र संख्या ३२)
३०·४ × १४·८ सें० मी०	१७ (१–१७)	१५	४७	पू०	प्राचीन सं०१८९०	समाप्तेयं बलिन्टीकाः इति श्री ॥ संवत् १८९० शा० १७५५ जेष्ठ मासे कृष्ण पक्षे अमावास्या रविदिने लिखतं मिश्र मुरलीधर स्वयं पठनार्थम् उमाशिवो जयति मंगल्य करोति ॥
२६·, × १२·५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति रुद्र कृ ा कष्टावलि संपूर्ण ॥१॥ कर्कार्कटके चैव आयस्ये ताम्रभाजने अश्वत्थे वटवृक्षे च भुक्ता चांद्रायणं चरेत् ॥१॥
२२·२ × १२·५ सें० मी०	४ (१–४)	११	२१	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री गर्ग ऋषीश्वरविरच्यते काकाभाषापिंडोपरिप्रस्तं चतुर्विंशति प्रोछा संपूर्णनगात् सं० १८३४ वै० शु० ८ गु० लि०······
२५ × १०·६ सें० मी०	१९ (१–१९)	९	४२	पू०	आधुनिक	इति श्री इश्वर पार्वती संवादे कालचक्र जातकं समाप्तम् ॥
२५·१ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	९	४२	पू०	प्राचीन	इति चंशेखरदत्त वाग्विभवेन श्रीधरार्यपुत्रेण श्री वलादित्य सुत सूर्य नामधेय देशिकप्रियशिष्येण मल्ल वाख्येन इश्वरोक्त कालचक्र जातकायुर्दाय विधानं दशाविपाकं चकिंचिद् याख्यातं॥
२७·८ × ११·३ सें० मी०	५ (१–५)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९४४	इति कालजातकः माघशुक्ला १२ बुधवार संवत् १९४४ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६	५५८२	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५०	४७७०	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५१	४:६०	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५२	४८८६	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५३	३५३७	कालज्ञानाक्षरचिंतामणि शास्त्र	शिव		दे० का०	दे०
५४	४६७	कालमार्तंड ?	कृष्ण दैवज्ञ		दे० का०	दे०
५५	६६३३	कालसूत्र व्याख्यान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·६ × १३·६ सें० मी०	२ (१–४)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	
२१.७ × ८·६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १८५६	संवत् १८५६ शाके १७२४ समय मार्ग मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां भौमवासरे ॥ लिलिषि रघुवर रामेन काल ज्ञान समाप्तम् ॥ श्रीराम ······
२३ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१८५७	इति आया प्रश्न समाप्तम्। संवत् १८५७ साके १७२२ ॥
२७.५ × १२·३ सें० मी०	७ (१–७)	८	४८	पू०	सं०१९३६	इति रवेरन्तर्दशासमाप्त चैत्रमासे कृष्ण पक्षे १३ दस्यां बुधवासरे । लिषीत्वा गौरीद्विजस्य आत्म पठनार्थ हेतवे संवत १९३६ शाकाब्द १८०१ ॥
२६·३ × १३·२ सें० मी०	१३ (३–१५)	११	२५	अपू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री शिव विरचतायां कालज्ञानक्षर-चितामणि शास्त्रं समाप्तं · संवत् १८८६ साउन कृष्णे १ शुक्रे श्रीराम-चंद्राय नमोनमः ॥
२४ × १० सें० मी०	३१ (१, २१-५०)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११·६ सें० मी०	४ (२–५)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	इति कालसूत्र व्याख्याने तृतीयोध्यायः ॥··· (पत्रसंख्या ४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६	२७९४	कुंडमंडपसिद्धि	विट्टल दीक्षित		दे० का०	दे०
५७	१८८०/४	कूपचक्रम			दे० का०	दे०
५८	११४३	कूपतडागचक्रम्			दे० का०	दे०
५९	७०५१	केरलप्रश्न	केशवप्रसाद		दे० का०	दे०
६०	७५५०	केरलप्रश्न			दे० का०	दे०
६१	४४६४	केरलीज्ञान			दे० का०	दे०
६२	१०३४	केशवपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·३ × ८·३ सें० मी०	९ (२–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत् ज्योतिवित् विट्ठल दीक्षित विरचिता कुंडमंडप सिद्धिः ॥ ······
२०·२ × १३·८ सें० मी०	३	१५	१२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मयामले तडाग चक्रम् ।
२१·२ × १२·२ सें० मी०	५ (१–५)	१६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव प्रशाद विरचिते केरल प्रश्नः समाप्तं ॥ सुभम् ॥ लिखतं मनभामनप्रसाद पठनर्थ अहं वनखंडेस्वरवासी पुजारी ···· ······· ...
२४·३ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२५·६ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४४	पू०	प्राचीन	इति केरली ज्ञानम् ॥ पार्धती······॥
२५·८ × १३·७ सें० मी०	८ (१–८)	७	३९	पू०	प्राचीन सं०१८८९	इति श्री केशव दैवज्ञविरच्चिते केशवीय पद्धतिं समाप्तम् ॥ संवत् १८८९ वैशाष वदि ८ चंद्रे लिखितमिदं मुरलीदत्त स्वयं पठनार्थम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४, २५	केशवपद्धति (सटीक)	केशव दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६४	४७१३	केशवी टीका			दे० का०	दे०
६५	१६८८	केशवी पद्धति (संस्कृत टीका सहित)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
६६	२७८५	केशवी पद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	१२८९	कोटचक्र			दे० का०	दे०
६८	१३७२	कौतुक चिंतामणि			दे० का०	दे०
६९	१८७६	गंडांतशांतिः			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.१ × १४.२ सें० मी०	३४ (१–३१, ३७–३९)	१६	४३	अपू०	रचनाकाल शा १५४० लिपिकाल सं० १८८९	गगनवेदशरेंदुमिते शके १५४० नभसि-शुक्ल वुधेभगगे तिथौ गणपतेहि कृतं सुखदंसतांवितत पारमगाद्धरसत्पुरे ॥ इति संपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवायनमः संवत् १८८९ शके १७५४ माधव मासि सितानवम्यां ९ भौमवासरे लिखितमिदं पूस्तकं मूरलीदत्त स्वयं पठनार्थं गौडान्वयेलेखक पठितं शुभमिति ॥
३०.५ × १५.५ सें० मी०	४५ (१,६-७-१०-२२-२४-४२, ४४-४६ ४९–५५)	१३	४०	अपू०	सं० १९१०	इति संपूर्णं समाप्तम् ॥ श्री शिवायनमः ॥ संवत् १९१० । शाको १७७५ पौषमासे सिते पक्षे एकादश्य विधु वासरे लिखत मिदं पूस्तकं मिश्र देवी सहाय स्वात्म पठनार्थमिति ॥
२२.४ × १४.३ सें० मी०	२०	२१	३३	पू०	प्राचीन	इति केशवाचार्य कृते केशवी पद्धति समाप्तं ॥
१९.७ × ८.३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२२	पू०	प्राचीन सं० १८२९	इति केशव दैवज्ञ विरचिता केशवपद्धतिः समाप्ताः। संवत् १८२९ बरखें श्रावण वदी तृतीया ३ वार सनिश्चर पोथी लिखी देवी ब्राह्मण ॥
२३.८ × ११.१ सें० मी०	५ (१–५)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.४ × १० सें० मी०	८३ (२–१८, १८–८३)	९	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८०९	इति कौतुकचिंतामणि समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ संवत् १८०९ श्रावण कृष्ण ३०········
२२.५ × १३.५ सें० मी० (सं० सू० ६९)	८ (१–८)	११	२८	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इति गंडांत शांतिः संपूर्णं ॥ संवत् १९३४ प्रथम ज्येष्टवदि ९ दिन रविवार लिखतं सिदनारायण ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०	७२३०	गणक भूषण	समरसिंह		दे० का०	दे०
७१	६६४४	गणित लता	वल्लभ गणक		दे० का०	दे०
७२	२६२६	गर्गमनोरमा	गर्ग मुनि		दे० का०	दे०
७३	२७२६	गर्ग मनोरमा			दे० का०	दे०
७४	१५३६	गर्ग मनोरमा (टीका सहित)			दे० का०	दे०
७५	६६३४	गर्ग संहिता	गर्ग		दे० का०	दे०
७६	६६३२	गर्भाधान कालचक्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·४ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं० १९१२	सनर सिहेन······युग नंद्र नंद कु मिते च: सूर्ये शनिवार युक् तिथिद्वि के कर मेच ॥ लिखितं मया गणक भूपण प्रश्न स्वहितं × × × ×
३०·९ × १२·७ सें० मी०	६ (१–६)	११	५२	पू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री वल्लभ गणक कृता गणित लता समाप्ता १ लि० उदीच्य पा० कृष्णलालेन सवत् १९१० मार्गशिते द्वेरव तिथौ मन्दवासरे ॥
२७·५ × ११ सें० मी०	९	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति गर्ग मनोरमा वराबा समाप्ता। ···
२५ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	११	३१	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति गर्ग मनोरमायां प्रश्न विद्यायां गर्ग कृत टीका समाप्ता शुभं संवत् १९१३॥
२९·८ × १२·६ सें० मी०	५१ (१–५०, ५२)	७	४१	अपू०	प्राचीन	गार्गीये ज्योतिःशास्त्रे प्रथम०॥··· (पत्र-संख्या १८)
२१ × १२·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	२२	पू०	प्राचीन सं० १९२८	इति श्रीकालचक्रोपरिकृतमुदाहरणं समाप्तम फाणीत् सं० १९२८ मार्गशिर्षं शुल्काष्टम्यां अवंतिका क्षेत्रे शिष्यार्थं कृत मदाहुतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५४६	गुरुकांड (राशिग्रह)			दे० का०	दे०
७८	६६४१	गुलिकादि फल			दे० का०	दे०
७९	६८५०	गुलिकासाधन			दे० का०	दे०
८०	३७२८	गोलक्रोड (गोलाध्याय)			दे० का०	दे०
८१	६४५३	गोलाध्याय	लल्लाचार्य		दे० का०	दे०
८२	५९२०	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८३	६७१८	गौरीजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·७ × ९ सें० मी०	८ (१–८)	९	३१	पू०	प्राचीन सं० १८५९	इति श्री गुरकाण्ड समाप्तम् ।। संवत् १८५९ शाके १७२४ समयमार्ग मासे कृष्णपक्षे एकादश्यां रविवासरे विलेषि-रघवररामेन आत्मपठार्थं पुस्तकि समाप्तम् ।। शुभमस्तु ।।
२१·२ × ११·७ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति गुलिकादि फलम् ।।
२४·४ × १०·८ सें० मी०	१	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति प्राणपद ।।
२१·३ × ११ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	३२	पू०	प्राचीन	
२७ × १२·५ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	आपूर्णोयं लल्लकृतं गोलाध्यायः ।। गोविन्द ज्योतिर्वित्सूनोर्माधवस्येदं पुस्तकम् ग्रंथसंख्या ।।४५०।।
३४·९ × १३·५ सें० मी०	१३ (२–१४)	९	६९	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १०·१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१	अपू०	प्राचीन	इति गौरी जातके शुभाशुभं + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४	४५९२	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८५	५३६९	ग.रीजातक कर्म पद्धति	माधव		दे० का०	दे०
८६	६१८७	ग्रहणफल			दे० का०	दे०
८७	१३०४	ग्रहणफल			दे० का०	दे०
८८	४४६६	ग्रहदशांतर्दशा			दे० का०	दे०
८९	६२५२	ग्रहदशाफल			दे० का०	दे०
९०	७०६३	ग्रह द्वादशभाव फल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री गौरि यातक शुभाशुभ फलं समाप्तम ॥ श्री शुभसम्वत्सरा १९०२ शाकाब्दा १७६७ समय चैत्र कृष्ण ११
२६ × १४ ० सें० मी०	३ (१–३)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री मिश्र कंटर्पात्मज माधव विरचितायां गौरि जातक कर्म पद्धितौ दाहाणादशांतर्दशाफलाध्याय: ॥
२४·४ × १० सें० मी०	६ (१–६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री राहुप्रकरणम् ॥ संवत् १८५७ जेष्ठ कृष्णे ११
२६·६ × १०·८ सें० मी०	३ (१–३)	१४	४०	पू०	प्राचीन	इति ग्रहण फल मिति ॥
२५ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १७९३	······सं० १७९३ श १६५८ माघ वदी १० भृगुवासरे लिखितं················ ॥
२७ × ११·२ सें० मी०	४ (२–५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × ११ सें० मी०	७ (२–३, ६–८; १०–११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	नवग्रह फल संपूर्णं ॥················

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१	१७८२	ग्रहफल			दे० का०	दे०
६२	१८५६	ग्रहफलम्			दे० का०	दे०
६३	६३३८	ग्रहभावप्रकाश (हिंदी टीका)	कविरत्न	गोपाल	दे० का०	दे०
६४	६०८८	ग्रहभाव फल			दे० का०	दे०
६५	४३००	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६६	५३२८	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	५१५४	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × १०·२ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति विवाह ।।
२४ × १२·२ सें० मी०	१३ (१,३,५-१५)	१७	२९	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ८·४ सें० मी०	६ (३, ८–११)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२१ × १२ सें० मी०	१३	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२०·७ × ११ सें० मी०	८ (५–८,१४-१६, ३३)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते गृहलाघवे चन्द्रसूर्य स्पष्टीकरणाधिकार + + + + + + ।। (पृ० ७)
३३ × १३·८ सें० मी० (सं०सू०७०)	२०	१३	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचितायां ग्रहलाघवस्य भौमादिस्पष्टीकरणं स्योदा ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९८	६६७१	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
९९	७२१६	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१००	७०३०	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		मि० का०	दे०
१०१	७०३१	ग्रहलाघव	विश्वनाथदैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०२	७०९१	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०३	५७७१	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०४	५७४३	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.८ × १०.५ सें० मी०	८ (२४–३१)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.२ × १०.५ सें० मी०	७	१०	२५	अपू० फुटकल पत्रे	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री मत्स[illegible]ागमाचार्य केशव [illegible]- वत्सरिकात्मज श्री गणेशदैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवे पचताराः स्पष्टाकरणं समाप्तं शुभमस्तु ॥ संवत् ८६८ माघे शुक्ले पक्षे चन्द्रवासरे ... ...
२०.६ × १०.८ सें० मी०	६ (२–४, १७–१९)	८	२६	अपू०	आधुनिक	इति श्री महानागमाचार्य [illegible] श्री केशव- क संवत्सरात्मज श्री मद्गणेश दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवे त्रिप्रश्नाधिकार श्चतुर्थः ॥ (पृ० १[illegible])
२२.२ × १०.३ सें० मी०	६२ (२–२९, ३१–६३) पत्र २१ दो	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १६६७	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ विरचिते ग्रहलाघव चन्द्र ग्रहणाधिकार स्योदाहृतिः समाप्ता ॥ संवत् १६६७ शाके १५३२ मार्गशीर्ष कृष्णे ३० × × (पृ० ६१)
२२.९ × ११.७ सें० मी०	८ (१–८)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेशदैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवाख्ये चन्द्र शृंगोन्नति द्वादशः + +
२७.४ × १०.२ सें० मी०	२ (१–२)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११.१ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे सिद्धांत रहस्ये गणेश दैवज्ञ विरचिते मध्यमाधिकारः + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४२२३	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०६	१७४४	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०७	१७१०	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०८	११६०	ग्रहलाघव	विश्वना दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०९	११६७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११०	११७४	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१११	११८५	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १६.५ सें० मी०	३५ (१–३५)	१५	४८	पू०	सं० १६१२	इति श्री ग्रहलाघवे ग्रहणाधिकाः समाप्त संवत् १६१२ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ चंद्रवासरे लिखितं पचौलीमहताबराठनार्थं ......
२४ × ११.२ सें० मी०	२१ (१–२, १–१९)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६.४ × ११.५ सें० मी०	७ (५–११)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × १२ सें० मी०	११ (८–१५, १७–१९)	१५	३६	अपू०	प्राचीन	इति दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिताग्रह लाघवस्यमाधिकारस्योपाहुतिः समाप्ता। ......अनेन रहित ......
२३.७ × ११ सें० मी०	९ (२–१०)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१७.१ × १२.५ सें० मी०	७ (३–९)	९	१८	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १२ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२	२१२८	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११३	१६४०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११४	१६७२	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११५	३६८०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११६	२३३०	ग्रहलाघव (सटीक)		गणेश दैवज्ञ	दे० का०	दे०
११७	४१२२	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११८	२४५५	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १०·५ सें० मी०	२९ (१–२९)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सकलागमाचार्य केशव सांवत्सरिकात्मज गणेश दैवज्ञ विरचिते सिद्धांत रहस्ये ग्रहलाघवं संपूर्ण ॥
२२·८ × ९ ३ सें० मी०	११ (१–११)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ कृते ग्रहलाघव तारा ग्रहस्य करणम् ॥ ··· ··· ··· ···
२६·७ × ११·१ सें० मी०	३७ (१–२४, २६–३८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
१९ × ९·५ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	२८	पू०	सं० १९३७	इति श्री ग्रहलाघवग्रंथः संपूर्णम् भवत् ॥ संवत् १९३७ शके १८०२ नंदननाम संवत्सरे × × × ॥
२४·३ × १ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५ सें० मी०	७ (१, ५–१०)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवस्पष्टः सूर्य चंद्र तिथ्यादि द्वितीयः (पृ० १०)
२३·८ × १२·१ सें० मी०	२० (१–२०)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव सांवत्सरात्मज गणेश दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवे सिद्धांत रहस्ये ··· ··· ··· ······समाप्तं सप्तदशः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११९	२५९७	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१२०	४७५	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२१	७६६१	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२२	९९७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२३	९६९	ग्रहलाघवम्	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२४	७७७६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२५	६०८३	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × १२.८ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १८०७	भा० ६ गुरौ सं० १९४२ शके १८०७ ॥ (17-9-1885 = १७-९-१८८५)
२० × १० सें० मी०	६ (१४–१८, २१)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.७ × ६.८ सें० मी०	६ (१३,१८–१६,२२-२४)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति गणेशदैव० ग्रह० सिद्धा० पंचांगा समाप्तं ॥
२७.२ × ११ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
३०.५ × १५ सें० मी०	१३	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
२०.७ × ६.४ सें० मी०	४	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेशदे० ग्रहला० सिद्धांतरह० तिथि पत्रादेव ग्रहणद्वयशाध्यम् × × × × (पृ० १६)
२४ × १०.२ सें० मी०	१५ (१–१५)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरदैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिता ग्रहलाघवस्य लग्नादि छाया यंत्रभाग दिक्साधन नलिका-बधाधिकारस्योदाहृतिः ॥··· ·· ··· ··· (पत्र सं० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	२४७५	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
१२७	३०१०	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२८	४३१७	ग्रहलाघवटीका		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२९	११६१	ग्रहलाघवटीका		नृसिंहदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३०	५७१६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ	नृसिंहदैवत्त	दे० का०	दे०
१३१	५७१४	ग्रहलाघवटीका	गणेशदैवज्ञ	मल्लारिदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३२	१०८०	ग्रहलाघवटीका			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × १०·४ सें० मी०	५५ (१-७,१०-३५ ३९-४१,४३-४७,५०-५३, ६६-७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२९·५ × १५·४ सें० मी०	३६ (१–३१, ३१–३५)	१३	२९	अपू०	प्राचीन	
३०·३ × १६·१ सें० मी०	३० (३४–६४)	१६	४१	अपू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री ग्रहलाघवे करणं सिद्धांत रहस्ये तद्विवर्णक दैवज्ञवर्य दिवाकरात्मज विश्व नाथ दैवज्ञ विरचिते सिद्धांत रहस्योदाहरणं समाप्ति × × संवत् १९०३ विक्रमात्समेमाघकृष्ण ......॥
२३·२ × १०·६ सें० नी०	८	८	२९	अपू० (खडित)	प्राचीन	
२६·५ × ११·५ सें० मी०	३१ (१,२,४-६, १५–४०)	८	४२	पू०	प्राचीन	श्रीमद्गुरुगणेशदैवज्ञेन ये ग्रंथाः कृताःस्ते तद्भ्रातृ पुत्रेण नृसिंह ज्योतिर्विदा स्व कृत ग्रहलाघव टीकायां ॥ (पत्र सं० १)
२७·१ × १३·८ सें० मी०	५२	१४	४९	पू०	सं०१९१४	इति श्री मद्गणेश दैवज्ञकृत ग्रहलाघवस्य टीकायां मल्लारि दैवज्ञ विरचितायां मध्यम ग्रह साधनधिकारः प्रथमः ॥ (पृ० १२)
२८·५ × ११·५ सें० मी०	२८	११	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	१६८६	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	गणेशदैवज्ञ	विश्वनाथदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३४	२३८५	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	गणेश दैवज्ञ	नृसिंह ज्योतिर्विद	दे० का०	दे०
१३५	४७५२	ग्रहलाघवविवरण			दे० का०	दे०
१३६	६९४६	ग्रहलाघवव्याख्या	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१३७	५६०३	ग्रहलाघवसारणी			दे० का०	दे०
१३८	९२९	ग्रहलाघवसारणी			दे० का०	दे०
१३९	२९८९	ग्रहविचार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·२ × १४ सें० मी०	१० (१–७, ८,३,३१)	१५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञात्मज विश्वनाथ कृते सिद्धांत रहस्य··· ··· ··· ···
२४·१ × १०·४ सें० मी०	५७ (१–५७)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११·२ सें० मी०	३९ (१–३९)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × १०·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१७	५३	पू०	सं० १९१४	इति श्री दिवाकर दैवज्ञातम विश्वनाथ दैव विरचितायां ग्रहलाघवो दाहृतो स्पष्टीकरण ॥ (पृ० ५)
३१·५ × १५ सें० मी०	१३ (१–१३)			पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे शारणी समाप्तं संवत् १८०७ (?) चैत्र शुक्ला १२ लिखत मिश्र मुरलीधरः
२६·९ × १३·२ सें० मी०	१५			अपू०	प्राचीन	
२३·४ × ९·३ सें० मी०	१३ (१-१२,१५)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	६२०९	ग्रहस्पष्टीकरण (ग्रह फल)			दे० का०	दे०
१४१	१७२०	ग्रहाधिकार			दे० का०	दे०
१४२	६१२८	चद्र अवस्था			दे० का०	दे०
१४३	८४५	चंद्रकुंडली			दे० का०	दे०
१४४	६२९५	चंद्रग्रहणार्थ श्लोक			दे० का०	दे०
१४५	६८०९	चंद्रोन्मीलन			मि० का०	दे०
१४६	३७५५	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१×१२·७ सें० मी०	१६	२२	१६	अपू०	प्राचीन	
३१×१५·१ सें० मी०	३ (१४–१६)	१३	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८ ९	इति ह्यब्धींद्राल्पेशके ग्रहा नयनाधिकारः इति पंचमाधिकार समाप्तं श्री संवत् १८९९ तत्र श्रावण कृष्णा १० चंद्र वासरे दंपुस्तक लिषतं मिश्र हरनंदस्वात्म पठनार्थं शुभं मंगल ददाति श्रीरस्तु ॥
११×८·८ सें० मी०	६	९	१८	अपू०	प्राचीन	अथ चंद्र अवस्था लिख्यते ॥ (आदि)
१८.४×१०·५ सें० मी०	८	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२९·५×११·१ सें० मी०	७	१३	४९	अपू०	प्राचीन	
२५·१×१०.५ सें० मी०	४७ (१–४७)	९	३९	पू०	आधुनिक	इति चंद्रोन्मीलनं समाप्तम् ॥
२४·८×१२·१ सें० मी०	१०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति चंद्रोन्मीलने महाशास्त्रार्णव विनिर्गते मूल तंत्रार्थ संबंधे प्रथम प्रकरणं ॥ (पत्र सं० २)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४७	१८३६	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०
१४८	६६१५	चंद्रोन्मीलनटीका			दे० का०	दे०
१४९	६६४५	चंद्रोन्मीलन दीपिका			दे० का०	दे०
१५०	४२६७	* चक्ररत्नावली	वासुदेव		दे० का०	दे०
१५१	५१६२	चक्रावली			दे० का०	दे०
१५२	७६५४	चमत्कारचिंतामणि	दैवज्ञरामभट्ट		दे० का०	दे०
१५३	२७८८	चमत्कार चिंतामणि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × ११ सें० मी०	१० (१०-१९)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२८·८ × १२ सें० मी०	१६ (१–१६)	१३	४५	पू०	प्राचीन	
३०·५ × १२ सें० मी०	१७ (१–१७)	१७	५६	पू०	प्राचीन	इति चन्द्रोन्मीलन टीकायां बाप्यादिषु जलनिर्णयः सप्तविंशति पटलः ॥
२८·५ × १२·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	५३	पू०	सं०१७१६	इति श्री वासुदेव कृता चक्र रत्नावली समाप्ता ॥ संवत १६१६ समये ज्येष्ठ सुदि एकादश्यां रविवासरे लिषित जगजीवन ब्रह्मचारिणा ॥
२६ × ११·४ सें० मी०	२ (१–२)	१७	५०	अपू०	प्राचीन	
१६ × १२·४ सें० मी०	४० (२–४१)	१०	१०	अपू०	प्राचीन सं०१६०३	इति श्रीमद्दैवज्ञरामभट्टनारायण विरचिते चमत्कार चिंतामणौ ग्रहभावफलाध्यायः आषाढ मासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ भृगुवासरे संवत् १६०३ शाके १७६८
२५·२ × १०·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१६२५	इति चिमतकार चित्यामणि संपूर्णं सं० १६२५ मि० पौष वदि ५ ॥

(सं० सू० ७२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५४	५०१८	चमत्कार चिंतामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१५५	५७९७	चमत्कार चिंतामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१५६	७८८१	चमत्कार चिंतामणि (सटीक)	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
१५७	३६८२	चलगणित			दे० का०	दे०
१५८	२०९१	चिंतामणिटीका			दे० का०	दे०
१५९	२५३२/१७	चौरनामप्रश्न			दे० का०	दे०
१६०	१९७६	जन्मदीपक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·३ × ११·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३३	पू०	सं०१९०२	इति श्री चमत्कार चिंतामणि सम्पूर्णम् श्री संवत् १९०२ शाके १७६७ माघ मासे शीते पक्षे षष्टम्यां रविवासरे
२२ × १०·५ सें० मी०	११ (१–११)	११	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री राज ऋषि: (नारायण)··· रचिते चमत्कार चिंतामणि नाम भावाध्याय: ॥सपूर्ण ॥
२७·३ × ११·४ सें० मी०	२० (१–२०)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
१९·८ × १०·७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	
३२ × ६ सें० मी०	७४ (२–७५)	७	४७	अपू०	प्राचीन सं०१९३६	
१३·७ × ११·५ सें० मी०	१ (१–२)	११	२६	पू०	प्राचीन	इति चौरनामप्रश्न: ॥
३० × ११·५ सें० मी०	१०० (१-२, १४-८०, ८३-१०३)	९	४१	अपू०	सं०१९१८	इति श्री जन्म दीपक शास्त्रेवर श्री हरि सुत सुतहकृष्ण विर विरचित··· संपूर्णं शुभमस्तु। सवत् १९१८ के साल आषाढ़ सुदि ३·········

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६७४	जन्मसमुद्र विवृत्ति	नरचंद्रोपाध्याय		दे० का०	दे०
१६२	६७१	*जन्मसमुद्र विवृत्ति	नरचंद्रोपाध्याय		दे० का०	दे०
१६३	७३७	जन्मांगपत्रावलि			दे० का०	दे०
१६४	८८६	जन्मजातक			दे० का०	दे०
१६५	४६२६	जातककर्म			मी० का०	दे०
१६६	११४४	जातककर्म			दे० का०	दे०
१६७	४४१	*जातककर्म पद्धति (केशवी टीका)		केशव दैवज्ञ	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·१ × १६·४ सें० मी०	६ (१–६)	१३	५५	अपू०	प्राचीन	इति नरचंद्रोपाध्याय कृतायां जन्मसमुद्रविवृत्ती वृत्ति ······ गर्भ संभवादि लक्षण प्रथम--प्रथमः कल्लोलः अथातो जन्म विधिनाम। कल्लोलो व्याख्यायते
३२·५ × १६·४ सें० मी०	२४ (१-२४)	१३	५८	अपू०	प्राचीन सं० १८४१	इति श्री काशहृदगद्दीया श्री सिंह सूनि शिष्यश्वेताबर श्रीनरचंद्रोपाध्याय कृतायां वृत्ति वेद्रायां सज्ञायां जन्म समुद्र प्रश्न शतसरहारारायां अष्टमकल्लोले नाम सादि यागदीक्षा प्रयोग लक्षणो नामष्टमः कल्लोलः समाप्तोयं ग्रंथः शुभ सवत् १८४१ ।
३२·५ × १३ सें० मी०	१६ (२–१७)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति संक्षेप जन्म पभावलोकनम् शुभमस्तु मगलं ददातु लिप्यतं देविसहाय विद्यार्थि पठनार्थ परपौत्र विष्नुदत्त का पौत्र मान सिह् का पुत्र बाहाद सिह् का सवत् १९०५ मासात्तमासे चैत्र मासे कृष्णपक्षे शुभ तिथै एकादस्यां ११ निब्रहेडी मध्य राम ।
१४·८ × ११·८ सें० मी०	१० (१–१०)	९	१४	पू०	प्राचीन सं० १९१२	इति जन्मजातक संपूर्णं समाप्तम् ॥ भूयात सं० १९१२ लिखित्वा मीनेकु ।
२१·९ × ८·८ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२४	पू०	प्राचीन सं० १८५९	इति श्रीजातकर्म समाप्तम् ॥ संम्वत १८५९ शाके १७२४ शमयपौषमामे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवाशरे ॥
१६ × १२·५ सें० मी०	२६ (१–१४) १६–२७)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० सें० मी०	९६	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति केशव पद्धतिः सोदाहरणा समाप्ता ॥ रचनाकाल--सं० १५४० लिपिकाल । १८३९ सम्मिते विक्रमस्य

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६८	११४५	जातकचंद्रिका			दे० का०	दे०
१६९	७६०९	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७०	१०९२	जातकपद्धति	श्रीपति		दे० का०	दे०
१७१	३१९७	जातकपद्धति			दे० का०	दे०
१७२	२४४३	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७३	१४७४	जातकपद्धति	पाराशर		दे० का०	दे०
१७४	१७३१	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१६ × १२ सें० मी०	१३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२१·१ × ८·५ सें० मी०	६ (१–३, ६–८)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव दैवज्ञ विरचिते जातक पद्धतौ भावाध्यायः ॥ (पत्र १–२)
३१ × १४·८ सें० मी०	८६ (१–८३, ८६–८८)	१६	४८	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १०·३ सें० मी०	११ (५–१५)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × १०·३ सें० मी०	२७ (३–१५, १७–३०)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
२१·७ × १०·६ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं० १८९०	इति पाराशर कृत जातक पद्धतिः समाप्ताः ॥ संवत् १८९० चैत्रशुदि १२ चंद्रवासरे लिखितं ॥........ सुखग्रहायुः ॥
२०·३ × १० सें० मी०	६ (१–६)	११	३३	पू०	प्राचीन सं० १८३९	इति श्री केशव दैवज्ञ विरचिता जातक पद्धतिः समाप्ता ॥ संवत् १८३९ शाके १७०४ वैशाखे मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ चंद्र वासरे शुभमस्तु मंगलंददातु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७५	३००	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ	नारायण	दे० का०	दे०
१७६	२०३०	जातकपद्धति	अनंत दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७७	५८६२	जातकद्धति उदाहरण	कृष्ण दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७८	६२५१	जातकपद्धति व्याख्या			दे० का०	दे०
१७९	७१९७	जातकमंजरी	रघुनाथ		दे० का०	दे०
१८०	१०३३	जातकरत्नसार	वशिष्ठ		दे० का०	दे०
१८१	५७९४	जातक लग्नगुणप्रकरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × ९·६ सें० मी०	४६ (१–४६)	१३	५२	पू०	प्राचीन सं०१७४५	इति श्री बल्लालदैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञसुत दैवज्ञ नारायण कृता सोदाहृतिके केशवीय जातक पद्धति व्यख्या समाप्ता ।। संवत् १७४५ शके १६११ समये भाद्र पदे ·····विशेश्वरभट्टेनेदं पुस्तकम् लेखीति ।। शुभं भूयाल्लेखक पाठकयो: ।।
३४ × १५·२ सें० मी०	१८ (१-१५, १५–१७)	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·३ सें० मी०	२५	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री बल्लाल दैवज्ञात्मज कृष्ण दैवज्ञविरचिते श्रीपति भट्टीय जातक पद्धत्युदाहरणे दृष्टि गणितोदाहरणम् । (पृ० १८)
२२·८ × १०·३ सें० मी०	२८ (१–२८)	९	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ × ९·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३५	पू०	प्राचीन सं०१८३९	श्री रघुनाथ विरचिते जातकमञ्जर्यां जातक प्रकरणं प्रथम् ।। (पत्र सं० ३) संवत् १८३९ साकेऽर्क १७०४ राम अषाढ कृष्ण प्रतिपदा तिथौ बुधवासरे ।। लिखितं ठाकुर रामेण × × ×
२८·८ × १३·५ सें० मी०	१० (१–१०)	९	३२	पू०	सं०१९०३	इति श्रीवशिष्ठ कृत जातक भग्योदयविचार बालक ज्ञानफलद दशमोध्याय: १० मिति श्रावण शूदि ८ सं०१९०३।।
२०·१ × १०·४ सें० मी०	४ (१–४)	११	२१	पू०	प्राचीन	इति जातक लग्न गुण प्रकरणं ।।
(सं०सू०७३)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८२	६६३१	जातक विवरण			दे० का०	दे०
१८३	७०४१	जातकसार (सामुद्रिक)			दे० का०	दे०
१८४	६६५८	जातकसार			दे० का०	दे०
१८५	४७१२	जातकसारोद्धार			दे० का०	दे०
१८६	११९२	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१८७	३३९८	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१८८	२९८२	जातकाभरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४ × ९.३ सें० मी०	३ (१–३)	२८	४३	पू०	प्राचीन सं० १७२७	इति श्री विद्यारण्य विरचिते भाव-निर्णयः समाप्त. शके १७२७ फाल्गुन × × × × × ।।
२५.७ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री जातकसारे सामुद्रिकोदिते इष्टकाल निर्णयोनाम षष्ठाध्याय. ।। × × × × (पत्र सं० ८)
२५ × १०.७ सें० मी०	३ (१–३)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर संवादे जातक-सारे संपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।।······
३१.५ × ११.५ सें० मी०	८ (१–८)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले उमामहेश्वर संवादे जातक सारोद्धार संपूर्णम् ।। (पृ० ३)
२३.७ × ११ सें० मी०	५०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १०.९ सें० मी०	२०२	१०	३०	अपू०	सं० १८३६	इति श्री सर्वजातक सारोज्जातक संग्रहः समाप्तः शुभमस्तु संवत् १८३६ प्रः श्रावण शुक्ल ३ ।।
२८.३ × १३.८ सें० मी०	६	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८९	२९८५	जातकाभरण			दे० का०	दे०
१९०	५०३७	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९१	६०१३	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९२	२४७७	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९३	३०८	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९४	२९२४	जातकाभरण	ढुंढिराज दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१९५	४६९५	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२४.७ × १०.३ सें० मी०	६	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२३.६ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३१ × ११.५ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १०.२ सें० मी०	६६	६	२८	अपू०	प्राचीन	
३१.५ × १२.५ सें० मी०	३३	१२	४३	अपू०	प्राचीन	इति जातकाभरणेऽ ष्टकं वर्गफलाध्याय = ?
२४.३ × १०.४ सें० मी०	२	८	२६	अपू०	प्राचीन	
३१.३ × १५.५ सें० मी०	४४ (२–८, ११–१७, १६–४८)	१७	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री दैवज्ञ ढुंढिराज विरचिते जातकाभरणे स्त्रीजातकाध्यायः जातकाभरण संपूर्णं ॥ सं० १८६५ आषाड कृष्ण १३ बुधवासरे लिखितमिदं पुस्तक मिश्रलक्ष्मण तत्सुत मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् उमाशिवो- जयति ... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९६	४७८४	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९७	४७८	जातकाभरण (ग्रहभावफलानि)	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९८	५०५९	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१९९	६७७२	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२००	३७८४	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०१	३०४९/६	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०२	५६५४	जातकालंकार	गणेश गणक		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × ११·६ सें० मी०	५७ (२-१७, १९-२५, २७-२८, ३०-३१, ३५-३६, ४२, ४५-४७, ४९, ५१, ५३-५६, ५८, ६३-६६, ६८-७०, ७२, ८०-८३, ८६-८८, ९५, ९७)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ ढुंढराज विरचते जातिका भरने हर्टष्परनाध्याय ॥ (पत्रसं० ८०)
२७·७ × १२·६ सें० मी०	५ (१-५)	१३	४२	पू०	प्राचीन	इति जातकाभरणे ग्रहभावफलानि ॥ शुभम् भूयात् मंगलं भवतु श्री रामचंद्रायनमः ॥
२४·१ × १७·३ सें० मी०	१२ (१-६ १०-१५)	१३	२६	अपू०	सं० १९५७	इति श्री गणेशदैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे शवर्णनाध्यायः सप्तमः ७ वैसाष वदी ४ संवत १९५७ सुभमस्तु ॥
२५ × ११·३ सें० मी०	१२ (१-७, ९-१३)	११	३७	अपू०	प्राचीन सं० १८८७	इति श्री गोपालात्मज गणेश दैवज्ञ कृत जातकालंकाराख्यं जातकं संपूर्णं शुभ भूयात् सं० १८८७ केशा फाल्गुण शुक्लः।
२३·५ × १०·३ सें० मी०	१० (१०-१६, १८-२०)	९	४२	अपू०	प्राचीन सं० १५३५	…श्रीमान् सर्वकलानिक्षिस्तदनुजो गोपालनामा भवच्छ्रीमद्दैव विदां वरस्त दनुजः श्री रामकृष्णोऽभवत् २ शाके मार्गण रामशायक धारा तुल्ये १५३५ नभस्ये तथा मासे अच्न पुरेसु जातक मिदं चक्रे गणेशः सुधी छपोले ॥
१९७ × १३·१	१७ (१-१७)	२०	१५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति गणेश कवि कृतौ जातकालंकार समाप्तं ॥…संवत् १८८३ कातिगमासे कृष्ण ९ बुधवासरे इदं पुस्तकं लिप्यते।
३१·३ × १२·४ सें० मी०	१६ (१-१६)	११	३२	पू०	प्राचीन सं० १९०७	इति श्री गणेशगणक विरचितं जातकालंकार समाप्तम् शुभ संवत् १९०७ शाके १७७२ श्रावन मासे कृष्णपक्षे कृष्ण × × × × × ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०३	४३०३	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०४	१७३४	जातकालंकार			दे० का०	दे०
२०५	४३६	जातकालंकर	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०६	२५२१	जातकालंकार			दे० का०	दे०
२०७	२४८५	जातकालंकार			दे० का०	दे०
२०८	४००४	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०९	३४८४	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × ११·९ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३७	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·६ सें० मी०	७ (१०–१६)	१०	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	
३० × १२·७ सें० मी०	१४ (५–१८)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·५ सें० मी०	२१	७	३८	पू०	सं०१८८९	संवत् १८९९ माघ वदि ९ ॥ श्री दुर्गायैनमः ॥
२५ × १२ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री जातकालंकारे भावाध्याय्यः समाप्तः भाद्रे मासिसिते पक्षेद्वादश्यां बुधवासरे संवत् १८८३ ॥
२१·८ × ११·१ सें० मी०	५ (१, ६, १७–१९)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२९ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३२	पू०	प्राचीन	

(सं०सू०७४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१०	५११५	जातकालकार			दे० का०	दे०
२११	७०११	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१२	५४८०	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१३	६८१२	जातकालंकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१४	६८५४	जातकालंकार (वंशाध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१५	१०३७	जातकालंकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१६	४१९७	जातकालंकार (सटीक)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	३८	अपू०	प्राचीन	
२४·४ × १०·८ सें० मी०	२० (१–२०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे वंशाध्यायः सप्तमः ।। संवत् १८-५० शक १७१५ श्री मनिकर्णिकायैनमः ।।
३०·४ × १४·२ सें० मी०	१० (१–१०)	८	४८	अपू०	प्राचीन	
२३·३ × १०·६ सें० मी०	२८ (१–८, १०–२५, २७–३०)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री जातकालंकारे टीकायां वंशाध्यायः समाप्तोयं गंथः ।।
२३·५ × ९·६ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे वंशाध्यायः ।।
३१· × १४·२ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	५०	पू०	प्राचीन सं० १८९६	इति श्रीमच्छुक्लोपशर्मकहरिभानुभाविता जातकालंकारटीकाः सं०१८९६ शाके १७६१ फाल्गुण कृष्णा सप्तमि ७ चंद्रवासरे इदंपुस्तक लिखितं मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् उमाशिवो जयति शिवायनमस्तु ।।
३४·५ × १३·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	५६	अपू०	प्राचीन	इति श्री जातकालंकारे संज्ञाध्यायः प्रथमः ! (पत्रसंख्या–३) × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	७६६६	जातकालंकार सटीक	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१८	७४१२	जातकालंकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१६	३५३५	जातकालंकार टीका		हरिभानु	दे० का०	दे०
२२०	६६४३	जातकालंकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२२१	३८१५	जातकालंकार सूचीपत्र			दे० का०	दे०
२२२	६६०४	जैमिनि उपदेशसूत्र			दे० का०	दे०
२२१	२५६३	जैमिनि उपदेशसूत्र	जैमिनी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
३२·३ × १४·४ सें० मी०	२८ (१–२८)	११	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति हरिभानु शुक्ल कृता जातकालंकार व्याख्या समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८८० फाल्गुण कृष्णा १२ गुरौ श्रीः ॥
२६·५ × १०·३ सें० मी०	२०	१५	४०	पू०	प्राचीन (कृमि-कृतित)	इति श्री जातकालंकारे टीकायां वंशाध्यायः समाप्तोऽयं शुभमस्तु संवत् १८९७ शाके १७६२ पौष × × ॥
२६·२ × १२·६ सें० मी०	२७ (१–२७)	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री मच्छुक्लोपनामक हरिभानु-भाविता जातकालंकार टीका समाप्ता सवत् १८८३ शाके १७४९ अश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ११ बुधवासरे ॥
२६·४ × ११·२ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	४५	पू०	सं० १९०८	इति श्री गणेश दैवज्ञारचिते जातका-लंकारेवंशाध्यायः समाप्तः श्री श्री संवत् १९०८ माघेमासी कृष्णपक्षे गुरुवासरे लिखितं…… ॥
२७·७ × १४ सें० मी०	१० (१–१०)	१६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रंथालंकार प्रकरणं समाप्तं शुभमस्तु मंगलं ददातु ॥
२७·१ × ११·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति जैमिन्युपदेश सूत्रे चतुर्थाध्याये चतुर्थः पादः ॥४॥……
२६·२ × १२·२ सें० मी०	११	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२४	७३६७	जैमिनि सूत्र			दे० का०	दे०
२२५	६६१३	जैमिनि सूत्र (सटीक)		नीलकंठ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२२६	६६०६	जैमिनि सूत्र (सटीक)			दे० का०	दे०
२२७	३०२८	जैमिनि सूत्र वृत्ति		कृष्णानंद सरस्वती	दे० का०	दे०
२२८	४२५७	जैमिनि सूत्र व्याख्या		नीलकंठ (व्याख्याकार)	दे० का०	दे०
२२९	६५४४	ज्ञानदीपिका			दे० का०	दे०
२३०	६६०६	ज्ञान प्रदीप			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१७·२ × ११·१ सें० मी०	२	१०	२०	अपू०	प्राचीन	इति जैमिनिसूत्रम्० ॥
२७·२ × ११ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठ ज्योतिर्विद्विरचितायां जैमिनि सूत्र व्याख्यायां सुबोधिन्यां द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ पादः समाप्तः ॥ श्री शाके रस सप्तभूपतिमिते नेपाल खंडे वरे श्री श्रीमद्रणजिन्नृपालक वरे राज्यं प्रकुर्वत्यसौ ॥ रेग्मी श्री जय शर्म सूरि तनुजः श्री नीलकंठोद्विजः शास्त्रे जैमिनिना कृते सुविवृतिं भूपाज्ञया व्याकरोत् ॥
२७·७ × ११·८ सें० मी०	२४ (१–२४)	१७	४७	पू०	प्राचीन	इति जैमिनि सूत्रे तृतीयाऽध्यायस्य तृतीय पादः ॥३॥
२६·३ × १०·५ सें० मी०	८१ (६–८६)	९	४२	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१४	५९	अपू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठज्योतिर्विद्विरचितायां जैमिनिसूत्र व्याख्यायां सुबोधिन्यां प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः ॥ × × ×
२१·२ × ७·६ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२४	पू०	प्राचीन	ज्ञान दीपिका समाप्ता ॥
२७·४ × ११·७ सें० मी०	२५ (१–२४) (एक विशिष्ट पत्र)	९	४०	पू०	प्राचीन सं० १९२९	इति श्री ज्ञान प्रदीपे केरलीये कार्य सिद्धि कथनन्नाम कांड समाप्तः ॥ सं० १९२९ शके १७९४ मार्ग शीर्ष कृष्ण ८ × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३१	४७६८	ज्ञानप्रदीपक			दे० का०	दे०
२३२	४५३४/२	ज्ञानबोधिनी	नंदलाल		दे० का०	दे०
२३३	१६७७	ज्ञानभास्कर			दे० का०	दे०
२३४	६५४५	ज्ञानमंजरी	ऋषि शर्माचार्य		दे० का०	दे०
२३५	१२८६	ज्ञानमंजरी			दे० का०	दे०
२३६	६४३६	ज्ञानस्वरोदय			दे० का०	दे०
२३७	६७०	ज्यौतिक सार जातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·४ × १० सें० मी०	२६ (१–२६)	८	३३	पू०	सं० १७५४	इति ज्ञान प्रदिपके संमाप्तं ॥ ... ... संवत् १७५४ समये कार्तिके ... ...
३० × १२·२ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	५७	पू०	सं० १८१६	इति श्री मिश्रशिवरामसुतनंदलाल विरचितायां ज्ञानबोधन्यां संवत्सरनाम ॥ ज्ञानबोधनी समाप्ता शुभमस्तु श्री कृष्णार्पण मस्तु संवत् १८१६ मार्गवदि ३० खौवहलिखित्तमिदं पुस्तकं कालू चतुर्वेदिन राम ॥
३०·५ × १२ सें० मी०	४८	१०	२८	पू०	सं० १९१८	संवत् १९१८ के साल ..... १४ का ॥ लिखितं लाल बूर्ज लाल ॥ ....
२४·७ × ९·५ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति ऋषि शर्माचार्य विरचितायां ज्ञानमंजर्यामिक्षर प्रश्न विद्या समाप्ता ॥१॥
२२·६ × ११ सें० मी०	३२ (२–३३)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्ञानमंजरी समाप्ताः ॥
२३·२ × १२·३ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वरसंवादे ज्ञान स्वरोदय समाप्तम् ॥ मीति द्वितिय आषढ कृष्ण ११ एकादश्यं इंदुवासरे संवत् १८८४ वीकारी नाम संवत्सरे उदगयने ग्रीष्म रुतु त्तदिने पुस्तकं समाप्तं मुकाम जलवा ।
२५·५ × १७·५ सें० मी०	४ (१,२,५,६)	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिकसार जातक समाप्तंलिखितं लक्ष्मी नाथ भट्ट गोकुलस्थः ॥

(सं० सू० ७५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३८	७८८०	ज्योतिः प्रबोध	केशव		दे० का०	दे०
२३९	३५२१	ज्योतिर्विदाभरण			दे० का०	दे०
२४०	२९९३	ज्योतिष कल्पतरु			दे० का०	दे०
२४१	११९०	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०
२४२	३०११	ज्योतिषकल्पतरु	चूडामणि		दे० का०	दे०
२४३	३०१६	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०
२४४	३०१७	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७·७ × ११·३ सें० मी०	७ (१–७)	८	४३	पू०	प्राचीन	
३०.८ × १५·८ सें० मी०	६	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × १२·६ सें० मी०	४१	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४ × ६·७ सें० मी०	७७	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२८·१ × ११·६ सें० मी०	८३ (१–८३)	६	३४	पू०	प्राचीन शाके१५५०	शाके शून्य सरेषु शीत किरणे १५५० वैशाषमासे… …इति श्री कवि चूडामणि चक्रवर्ति विरचिते ज्योतिषकल्पतरौ जातक स्कंधे द्वात्रिंशोध्यायः ३२ शुभमस्तु ॥
२७·६ × ११·५ सें० मी०	२२५ (१–५५)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री ज्योतिष कल्पतरौ जातक स्कंधे विदशा योगिनीदशा कथनं नामषड्विंशतिमोध्यायः श्री संवत् १८८२ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथौ १ भौमवासरे लिपितमिदं पुस्तकं छत्रपुर मध्ये……॥
२५·८ × १३·१ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष कल्पतरौ मूल संभवे तृतीयोध्यायः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	३४२२	ज्योतिष कल्पतरु	चूड़ामणि		दे० का०	दे०
२४६	७३२४	ज्योतिषकौमुदी (प्रश्नप्रकरण)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२४७	१२२९	ज्योतिषकौमुदी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२४८	२७५३	ज्योतिष ग्रंथ			दे० का०	दे०
२४९	१६९६	ज्योतिषचंद्रिका			दे० का०	दे०
२५०	१०१५	ज्योतिष जातक			दे० का०	दे०
२५१	३४८९	ज्योतिषतंत्र (ज्योतिष प्रश्न)	चिंतामणि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × १० सें० मी०	६२१	७	३७	अपू०	शाके १५६५	शाके पंचांग वाणांदौ १५६५ वैशाखे गुरुवासरे ।। पंचम्यां शुक्ल पक्षेतु श्री मद् वृंदावनांतरे ।। ··· ······ ··· इति श्री कवि चूडामणि विरचिते ज्योतिषकल्पतरौमिश्र स्कंधे उपसंहारो नाम पर्चादिशा ··· समाप्तश्चायं स्कंधः ।।श्री।।
२४·४ × १०·३ सें० मी०	३	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १८३६	इति श्री नीलकंठविरचिते ज्योतिष कौमुद्यां प्रश्न प्रकरण ।। सं० १८३६ मिती वैशाख कृष्ण द्वितीया २ शनौ लिखितं हरीराम दीक्षित × × × ।।
२४·५ × १०·६ सें० मी०	३७ (१–३७)	८	३३	पू०	सं० १८४७	इति श्री नीलकंठरचित ज्योतिषकौमुद्यां प्रश्नप्रकरणं समाप्तम् ।। संवत् १८४७।। मिति आषाढ शुदि द्वितीया भौमवासरे ।।श्री।।
२१·२ × ८·१ सें० मी०	५ (१–५)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति ज्योतिषं ।।··· ··· ··· ···
२० × १० सें० मी०	६	८	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष चंद्रिकायां पचांगाक्र्यो प्रथम प्रकाशः ।❀ ।।श्री रस्तु।।
२५·५ × ११·६ सें० मी०	२३	६	२६	पू०	सं० १९८८	समत सम्वत १९८८ समैनामनीति जेठ सुकुला आष्ठम्यां रविवासरे ।।
२७·६ × १२·५ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ चूडामणि श्री मन्महाराज वंदित पादांबुज सिख्य जनानांददायि सर्वविद्याकुशलशास्त्रेपुकृतश्रम श्रीमंचिंतामणि पंडितवर्यें विरचितायां ज्योतिः शास्त्रे प्रथमं तंत्र संपूर्णम् ।। (पृष्ठ संख्या–१३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	२५१४	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	दे०
२५३	२६५	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	दे०
२५४	२०६५	ज्योतिष यंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
२५५	६८४८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२५६	५०८१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२५७	२८६७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	दे०
२५८	४४३७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × ९·५ सें० मी०	२०	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
३० × १३ सें० मी०	४ (१--४)	११	३५	पू०	प्राचीन	
१३·८ × ८·७ सें० मी०	२५	११	१६	पू०	प्राचीन	
२४·८ × १०·९ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट विरचितायां ज्योतिषरत्नमाला समाप्तं ......
२३·४ × ११·४ सें० मी०	६ (३,९-१२, २०)	१३	३८	अपू०	आधुनिक	इति श्री श्रीपत भट विरचितायां ज्योतिरत्नमालायां मुहूर्त प्रकरणं × × × (पृ० १०)
२३·४ × ८·३ सें० मी०	५२ (१–५२)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १७७५	इति श्री पति भट्टविरचितायां ज्योतिष रत्नमालायां देवप्रतिष्ठा प्रकरणं विंशतिमं समाप्तं ।। शुभमस्तु ।। संमत् १७७५ शाके ।।१६४०।। समये पौष शुदि ७ सप्तमी गुरौकह ।। राम ।। राम ।।
२६ × १०·४ सें० मी०	३५(२-८,१३-१८,२२-३०,३७-४१,४१-४३,४५-४७,४९,५३-५४,५६)	५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति विरचितायां ज्योतिष रत्नमालायां योग प्रकरणं चतुर्थं × × (पृ० १४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५९	१३७१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६०	३१५०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६१	५३०८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६२	६५४६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६३	७३९	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६४	४८१०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	४८३२	ज्योतिष रत्नमाला (लग्नप्रकरण)	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·५ × १५ सें० मी०	२६ (२–२७)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२३·९ × ११·५ सें० मी०	८ (२-७,८-१५, १९)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपति भट्ट विरचितायां ज्योतिषशास्त्रमालायां लग्न प्रकर्णं ॥ (प० १६)
२४·८ × १०·२ सें० मी०	३१ (१–३१)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचितायां ज्योतिषरत्नमालायां लग्न प्रकरणं द्वादशः ॥ ... ...
२५·३ × ११·५ सें० मी०	६६ (२–६७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२२ × ८·४ सें० मी०	४७ (२–४५, ५०–५२)	९	३३	अपू०	सं० १८२७	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचितायां ज्योतिष रत्नमालायां सुर प्रतिष्ठा प्रकरणं ॥ संवत् १८२७ मार्ग सुदि १२ वुधेकः पुस्तक लिसितं भोद्वरामेण स्वपाठार्थं ।
२७·५ × ११·५ सें० मी० (सं०सू०७६)	३६ (१–३६)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचितायां ज्योतिष रत्न मालायां लग्न प्रकर्णम् द्वादशम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	६१३७	ज्योतिषसंग्रह			दे० का०	दे०
२६७	७०५३	ज्योतिषसंग्रह			दे० का०	दे०
२६८	१६२०	ज्योतिषसंग्राहिका			दे० का०	दे०
२६९	६१६३	ज्योतिषसार	नरचंद्र		दे० का०	दे०
२७०	४६०८	ज्योतिषसार			दे० का०	दे०
२७१	१७७४	ज्योतिषसार			दे० का०	दे०
२७२	४२७९	ज्योतिषसारसंग्रह (बालबोधक)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·८ × ७·५ सें० मी०	६	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१७·७ × ८·६ सें० मी०	६१	८	१८	पू०	प्राचीन	
२१ × १६ सें० मी०	३२	१६	१५	अपू०	कृमिलित	
२५·२ × १०·३ सें० मी०	८	१६	४५	अपू०	प्राचीन	अर्हतं जिन नत्वा नारचंद्रेणधीमता सार मुध्रियते किंचि चातिष: क्षीर नीरधे ॥१॥ स्वरस्वती प्रसादेनयं वको द्धार दृष्यन्तं । करिष्य नरचंद्रोहं । मुग्धाना बोध हेतवे ॥२॥ (प्रारंभ)
२३·८ × १६·३ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२२	अपू०	प्राचीन सं०१६११	इति जोक्तोसारसास्त्र समाप्तं संवत् १६११ पौषसुदिद्वितीय गुरु बासर तादिन समाप्तं सुभमस्तु मगलं ददात् ।
२४ × १२·४ सें० मी०	५ (२–६)	११	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री जोतिकशार सास्त्रं समाप्त संपूर्ण चैत्रे शुक्ल पक्षे तिथौ ७ भृगु बासरे संवत् १८७६ लिप्यतं पं श्रीर छरिया जुगल परसाद सेवक कृष्ण के ॥
२३ × ९·७ सें० मी०	१२ (२–७, १३, २१–२५)	८	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८५३	इति श्री मुंजादित्येन विप्रेन ॥ विरंचितं जोतिष सार संग्रहा बालबोधकावसारसंग्रह संपुर्ण । संवत ॥१८॥५३॥ प्रमोनाम संवत्सरे ॥क्वार माशे शुम्ये शुक्ल पक्षे त्रियोदसी शुक्रवासरे ... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	५७२६	ज्योतिष सारसंग्रह			दे० का०	दे०
२७४	१६३६	ज्योतिषादि संग्रह			दे० का०	दे०
२७५	७१३४	ताजकसार			दे० का०	दे०
२७६	६६२६	ताजिक (द्वादश ग्रहफल)			दे० का०	दे०
२७७	५५२५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२७८	२०४५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२७९	५८८३	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × ११ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	४५	अपू०	प्राचीन	इति ज्योतिष सार संग्रहे मास नक्षत्र गोधूलि गुरु रवि शुद्धिनाम द्वितीयोस्तबक: ॥२॥ ... ... (पत्र संख्या--७)
१७·५ × १२ सें० मी०	२२	१६	१५	अपू०	प्राचीन	
२४·४ × १०·१ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
१६ × ९·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	२०	पू०	प्राचीन सं० १७५३	ईति राहुफलं ईति ताजिके द्वादश: भुवनं पेटानं फल स्माप्तं श्री शूभमस्तू यादृष्ट पुस्कं दृष्टवा तादृष्टं लीषति मया × संवत् १७५३ मास सा० ॥
२४·८ × १०.७ सें० मी०	४४ (१–४४)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
३३·१५ × २ सें० मी०	३	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १०·५ सें० मी०	१० (१–२, ४–११)	९	४३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८०	६८१०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८१	६९९२	ताजिक नीलकंठी	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८२	२७२०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२८३	२७२८	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८४	१२८०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८५	४६०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८६	२४९३	ताजिक नीलकंठी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.२ × १०.६ सें० मी०	२८ (१–२८)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	
३२.३ × १२.५ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति दैवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठ ज्योतिर्वि कृतं संज्ञातंत्रे षोडशयोगाध्यायस्य व्याख्योदाहृतिः समाप्ता ॥ (पृ. ४६)
२३.३ × ११.६ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठाचार्य विचिते नीलकंठीताजक संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥
२४.२ × १२.४ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
३१.५ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	६	४५	अपू०	प्राचीन	
२८.६ × १५.२ सें० मी०	२६ (१–२६)	१३	३४	पू०	सं० १९०६	इति श्री नीलकंठ विरचिततांजकं समाप्तं ॥ शुभमस्तु मंगलं ददातु संवत् १९०६ शाके १७७४ पौषे कृष्ण अष्टम्यां चंद्रवासरे लिखितं मिश्र शिवदयाल श्री ॥
२४.५ × ६.८ सें० मी०	३१ (३-४,७,६-२६,३१-३३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८७	३३०६	ताजिक नीलकंठी			दे० का०	दे०
२८८	४१२४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८९	१७४१	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९०	५२४५	ताजिक नीलकंठी (वर्षतंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२९१	६५४८	ताजिक नीलकंठी (वर्षतंत्र)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९२	४८५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९३	७०१३	ताजिक नीलकंठी (संज्ञातंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·९ × ११·२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१७७८	शके नंदाश्वगणेंदुमित आश्विन मासके। शुल्केष्टम्यां.........संवत् १७७८ शाके १६४३ कार्तिक शुक्ल पंचमी रवि वासरे समाप्तं पुस्तकं ॥ ताजक नीलकंठी लिखितं... ....॥
२६ × १३ सें० मी०	३७ (३–३७, ३९–४२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × ११ सें० मी०	७० (१-२२, २५-२६, ३०-३२, ३५-५०, ५९-६२, ६९-७२, ७६, ७९-८८, ९२-९९)	५	२८	अपू०	प्राचीन	
२७ × १३·९ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	३०	पू०	रचनाकाल–शाके–१५०९ लिपिकाल–संवत्–१८३९	शाके नंदाभ्रवाणेंदुः ॥१५०९॥ मिति अश्विन मासिके शुक्लेष्टम्यामनुग्रंथ नीलकंठ बुधोकरोत् ॥ इति श्री काशी निवासि नीलकंठ विरचितं वर्ष तंत्र द्वितीय समाप्तं ॥ श्री सं० १८६९॥ तत्रवर्षे महामांगल्यप्रदे मासोत्तमे मासे फाल्गुनमासे शुक्ले पक्षे शुभ तिथौ एकादश्यां ११ शुक्रवासरा ... ...
२४·७ × १०·५ सें० मी०	२८ (१–२८)	९	३०	पू०	प्राचीन	शके नंदा बाणेंदुमित आश्विन मासके शुक्लोष्टम्यां वर्ष तत्रं नीलकंठबुधो ऽकरोत् ॥५॥ शुभंभवतु लीखीतं बासदेव ह्ययं ॥
३० × ११·५ सें० मी०	२७	११	५०	पू०	सं०१८३७	इति वर्ष तंत्र संपूर्ण ।सं० १८३७ शाके ७०२ मासोत्तमेमासे अस्वन मासे। शुक्ल पक्षे। पुन्य तिथौ दसंम्यायां।१०। रव वासरे। लिषतं जोत गराय पुत्र राम प्रसादका। नाग वाएा। शुभं। शुभं श्रीरामजी सदा सहाय। सरस्वति नमः ॥शुभ॥
२४·९ × ११·१ सें० मी० (सं०सू०७७)	१८ (१–१८)	९	३०	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री नीलकंठ्यां संज्ञातंत्र समाप्तं + + सं० १८८२ समाप्तं + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९४	४६६	ताजिक (मंज्ञा तंत्र) (सटीक)		समरसिंह	दे० का०	दे०
२९५	६५४७	ताजिक नीलकंठी (संज्ञा तंत्र)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९६	१४९	* ताजिक नीलकंठी (संज्ञातंत्र प्रकाशिका टीका) उत्तरार्ध	नीलकंठ दैवज्ञ	विश्वनाथ	दे० का०	दे०
२९७	२६४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ	दिवाकर दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२९८	२९८१	ताजिक नीलकंठी (संस्कृतटीका)	नीलकंठ दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२९९	५८०	ताजिक नीलकंठी (संस्कृतटीका)			दे० का०	दे०
३००	२६६	ताजिकनीलकंठी (सं० टीका) शिशुबोधनी	नीलकंठ दैवज्ञ	माधव	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.५ × १४.५ सें० मी०	१३ (२–१४)	१४	४४	अपू०	सं० १९०७	···समरसिंह कृत ताजिक तंत्रे स्फुटं प्रकटार्थमुक्तमस्ति'' (पृ० ६) इति हर्षस्थानं विचारयेत् लीख्यतंराम-गोपाल चुलड्यै: कापडचाबासमध्य सं० १९०७ पौ० कृ० १३ ॥
२५ × १०.४ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इशि श्री दैवज्ञानंतसूत नीलकंठी विरचितं सज्ञा तत्रं समाप्तं ॥ दंद पुस्तके दिभि तमाण केश्वर ज्योतिर्विदी
२४.५ × १०.१ सें० मी०	७४	१२	३१	पू०	प्राचीन शक सं० १५५१	प्रकारिविश्वनाथेन संज्ञातंत्र प्रकाशिका ॥ टीकाटीकाकृतां कुर्यात्सिज्जालज्जानुबंधनम् ॥१॥ चन्द्रवाण शरचन्द्र १५५१ सम्मिते हायनेनृपतिशलिवाहने । मार्गशीर्षसित पञ्चमी तिथौ विश्वनाथ विदुषा समापिता ॥२॥ गोदावरीतटे भाति गोल्ग्रामोऽति सुन्दरः ॥
३१.७ × १२.७ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	४१	पू०	प्राचीन सं० १९१९	इति श्री दिवाकर दैवज्ञ विरचिते श्री नीलकंठ ज्योत्तिवित् कृत संज्ञातंत्रे पंचाशत्सहम सहितं समाप्तम् तीयोध्यायः संवत् १९१९ मार्गशिर शुक्ला ३ चंद्र वासरे लिपि कृतं आनंदि रामात्मज विहारिणा मोरणाख्य वासिना शुभम् ॥
२७.२ × १५.६ सें० मी०	१३	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठ ज्योतिर्विद्कृत संज्ञातंत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ता ॥
२७ × ११.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३१.७ × १२.८ सें० मी०	३३ (१–३३)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०१	२२८	ताजिक नीलकंठी (१–२ तंत्रम्)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३०२	२७१०	ताजिक भाव विचार			दे० का०	दे०
३०३	१०९	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० का०	दे०
३०४	६९	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० का०	दे०
३०५	५२३७	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३०६	७८९	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३०७	७५७	ताजिकसार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११ सें० मी०	२६ (१–१२, १–१७)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति नीलकंठ्यां द्वितीतंत्र समाप्तं लिखितं हरारामदीक्षितमराठले करेण स्वार्थं ॥ शुभंभूयाल्लेखक पाठकानां॥
२५·४ × ११ ६ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१८२६ श०१६९१	……संवत् १८२६ शाके १६९१ वैशाख सुदि १ ॥
२५ × ९·१ सें० मी०	५४ (१–५४)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१७५५ श०१६२०	इति श्री मद्दैवज्ञ ढुंढिराजात्मज गणेश दैवज्ञविरचितेता जिप्र भूषणा भोजन चिन्तार्क्वसः ॥ समाप्तो यं ग्रंथः ॥ समाप्त । शुभमस्तु ॥ संवत् १७५५ शके १६२० प्रथम ज्येष्ठ वदि १३ गुरुवासरे मुकुंदपुर नगरे श्रीमहाराजा अवधूतसिंह देवस्य पुस्तक लिखितं मिदं। श्रीमिश्रन्त हनुमनेन ॥
२९.८ × १४ सें० मी०	१७ (१–१७)	१५	४४	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्री मद्दैवज्ञ ढुंढिराजात्मज गणेशगणक विरचिते ताजिक भूषणे भोजन चिंता विचाराध्यायः ॥ समाप्तोययं ग्रंथः उमाशिवोजयति ओंतत्सत् संवत् १८९६ चैत्र शुक्ला १३ चंद्रदिने लिखितमिदं पुस्तकं मिश्र मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् श्री ॥
२९·७ × ११·१ सें० मी०	३५ (१–३५)	९	३७	पू०	सं०१७७८	इति श्री हरिभट्ट विरज्यते ताजिकसारे दिनप्रकरणं समाप्तं संवत् १७७८ ज्येस्ट मासे शुकल पछे १ प्रतपदांम्ये ताजिक सार………
३४·४ × १२ ८ सें० मी०	१६ (२, ६–२०)	९	६२	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०·३ सें० मी०	८ (२,६,११, १५-१७,३२, ३४)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०८	४२७२	ताजिकसार	हरिहर भट्ट		दे० का०	दे०
३०९	७५९८	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३१०	७६२६	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३११	१०५५/३	तिथि ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०
३१२	५९००	तिथितत्व दर्शन (तिथि निर्णय)	शिवगोविंद पंडित		दे० का०	दे०
३१३	५१११	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
३१४	२५३२/१७	तिथिनिर्णय			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १० सें० मी०	४ (१–४)	९	३७	अपू०	प्राचीन	
२०·५ × ९ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीताजक शारे मिश्रभावाध्यायः ... ... (पत्र सख्या ४६)
१९·७ × ११·८ सें० मी०	२७ (१–२७)	१५	२६	पू०	प्राचीन सं० १८४१	इति श्री हरिभट्ट बिरचितं ताजिकसारं संपूर्णम् सं० १८४१ शाके १७०६ मिति आषाढ कृष्णामायां गुरु वासरे
२०·३ × १०·८ सें० मी०	४ (१–४)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
३०·७ × १२·३ सें० मी०	११ (१–११)	९	३७	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री मद्रामचंद्र चरणारविंद मंजिमकरंद मधुपेन शिवगोविंद पंडितेन विरचितं तिथितत्व दर्शनं नाम तिथि निर्णयः समाप्तः शुभमस्तु शुभंभूयात् सं० १९१६ के साल अश्विन वदि ...
२२ × १० सें० मी०	४ (४–६, ९)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१३·७ × ११·५ सें० मी०	२½	९	२४	पू०	प्राचीन सं० १९०२	सं० १९०२ के साल मिति चैत्रवदि ३० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१५	२३१	तिथिपत्र			दे० का०	दे०
३१६	२५३२/१७	तिथि प्रकाश			दे० का०	दे०
३१७	७६४९	तिथिप्रकाश निर्णय	गंगाधर		दे० का०	दे०
३१८	२३५०	तिथिराशि शुभाशुभ विचार			दे० का०	दे०
३१९	२४७	* त्रिविक्रमशतम्	त्रिविक्रमाचार्य		दे० का०	दे०
३२०	६९४४	त्रिशत् श्लोकी टीका	राम		दे० का०	दे०
३२१	७८१४	दर्कागल	वराह मिहिर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ९·५ सें० मी०	५२	१६	२७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
१३·७ × ११·५ सें० मी०	१०	१२	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री तिथि प्रकाशं समाप्तं शुभमस्तु ॥
६·१ × ८·९ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १८७४	इति श्री द्विवेद गंगाधरकृतौ तिथिप्रकाश निर्णमं समाप्तं शुभमस्तु ॥ सं० १८७४ चैत्र सुदि ३ गुरौकः पुस्तक लिखितं × × ×
२२·[illegible] × १०·४ सें० मी०	५	९	२५	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × १०·७ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३९	पू०	प्राचीन सं० १८३७	इति श्री त्रिविक्रमाचार्य विरचितं त्रिविक्रमशतं संपूर्णं ॥ सं० १८३७ ॥ शाके ॥ १७०२ ॥
२६·१ × ११·३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	४३	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति मिते विक्रम वर्षेएषा कृष्णाक्ते मंजरी निबद्धा केन बालुकायां वंशे गोरक्ष पुंसः क्षिति सुरजनुषा रामेणं कृतः ॥ सं० १९१७ माघे मासे ॥
२४·६ × १०·६ सें० मी०	१० (१-८--१०-११)	९	२७	अपू०	प्राचीन	इति दर्कार्गलं समाप्तः ॥ श्रीः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२२	४४११	दशाचक्र			दे० का०	दे०
३२३	६६५०	दशाचितामणि			दे० का०	दे०
३२४	७६८८	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२५	४८३५	दशाफल			दे० का०	दे०
३२६	२५३२/१७	दिवामुहूर्त			दे० का०	दे०
३२७	२६२२	दैवज्ञचितामणि			दे० का०	दे०
३२८	४०१२	दैवज्ञ जीवन	श्रीलक्ष्मण त्रिपाठी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·७ × ११·४ सें० मी०	५ (२–६)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × १०·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति दशाचिंतामणिः समाप्तः ॥
२७·३ × ११·४ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३४	पू०	प्राचीन	
२३·५ × ६ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
१३·७ × ११·५ सें० मी०	१३½	६	२३	पू०	सं० १९२४	अथ शुभ सं० १९२४ के शाके १७८९ कार्तिक वदि १५ समाप्ति दिनं लिषितेदं पुस्तकं श्री पंडित गंगारामेषु
३२ × १२·८ सें० मी०	६ (१–५, ७)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १५·१ सें० मी०	३३	१७	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री द्विज दिनकरात्मजस्त्रिपाठी श्री लक्ष्मण बृहत्सांवत्सरार्य विरजितास्त्रिगुण संहिता ··· (पुष्पिका)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२९	७५३३/३	दोषज्ञान			दे० का०	दे०
३३०	६२४२	द्वादशराशिफल			दे० का०	दे०
३३१	७५३५	द्वादशराशिफल प्रश्नावली			दे० का०	दे०
३३२	५३३२/८	द्विघटिका मुहूर्त			दे० का०	दे०
३३३	४०८५	द्विघटिका मुहूर्त			दे० का०	दे०
३३४	२५३२/१७	द्विघटिका मुहूर्त			दे० का०	दे०
३३५	७७७९	धीकोट (पर्वपरिज्ञानाधिकार)	श्रीपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१७.२ × १२.५ सें० मी०	२	८	१६	पू०	प्राचीन	इति दोपज्ञानं ॥
२१.५ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	१३	३२	पू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री राशी मण्डल द्वादश राशी फल ॥ संमत् १६१५ शाके ७७८० भादो शुक्ल त्रयोदशी······
२२.८ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इति द्वादश रासिफल लिष्यते ॥ शुभमस्तु शिद्धिरतु संवत १८५८ फालगुन वदि ······
२१.६ × १५.६ सें० मी०	३	१३	२३	पू०	प्राचीन	इति शिवशिवा विरचितं दुघटीया मुहूर्त संपूर्ण ॥ श्री ॥
२३ × ७.८ सें० मी०	१६ (१–१६)	४	३७	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति श्री ज्योतिः शास्त्रसारे पार्वती शिव सवादे शिव प्रोक्तं द्विघतिकाशमाप्तः ॥ संवत् १८५६ शाके १७२१·······॥
१३.७ × १५.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	२८	पू०	सं०१६२४	इति श्री सिव कृतद्विघटिकामुहूर्त संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १६२४······
२१.८ × ११.० सें० मी०	५	६	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२४८१	नक्षत्र कष्टावली			दे० का०	दे०
३३७	६८०८	नक्षत्र चूणामणि			दे० का०	दे०
३३८	७०१२	नक्षत्र विधान			दे० का०	दे०
३३९	१०४१	नक्षत्रायुर्दशाफलम्			दे० का०	दे०
३४०	५८६१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४१	२५८४	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४२	६८७३	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·२ × ८·३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र कष्टावलि संपूर्णं ॥
२३·६ × १०·३ सें० मी०	३२ (१–३२)	९	३३	पू०	प्राचीन	॥ इति स ॥
२२·८ × ९·९ सें० मी०	५ (१–५)	९	३६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र विधानं संपूर्णं ॥ × ×
२६·२ × १०·८ सें० मी०	११ (१–११)	८	२८	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इति श्री मन्भि श्रकंदर्य्यात्मजमा(ध) व रचितेनक्षत्रायुर्द्दशा क्रमविभागानयानंफलं समाप्तम ॥
२४·१ × १०·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इनि नरपति जयचर्यायां स्वरोदये षडङ्गे सप्ताध्याये शास्त्र संग्रहो नाम प्रथमोध्यायः ॥ (पृ० ४)
३२·१ × १२·२ सें० मी०	६१ (३०–५६, ५९–८३, १३१–१४१)	१३	४४	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री नरपति कवि विरचितायां नरपति जयचर्या ग्रंथ संपूर्णं ॥ सं० १८७० ।
२७·९ × १३·९ सें० मी०	२२७ (१–२२७)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पंडित नरपति विरचितेयां यात्राप्रवेसनिमितराकुनानिसमाप्तानिः × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४३	६९०१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४४	३७५०	नरपतिजयचर्या			दे० का०	दे०
३४५	७३४०	नरपतिजयचर्या-स्वरोदय	नरपति		दे० का०	दे०
३४६	१६२१	नरपतिजयचर्या-स्वरोदय			दे० का०	दे०
३४७	५०५४/१५	नवार तिथिनक्षत्र योग			दे० का०	दे०
३४८	६६२१	नष्टजन्म पटल			दे० का०	दे०
३४९	९१८	नष्टजन्माध्याय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·९ × ११·२ सें० मी०	६४	९	३५	अपू०	प्राचीन	इति नर प० रज्जुवधे चक्रं ॥
३३ × १२·५ सें० मी०	३० (५-३०, १२७, १२९, १३१, १३२)	१३	४४	अपू०	प्राचीन	
३१·७ × १३·३ सें० मी०	६५ (१-६५)	१२	५२	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री नरपति जयचर्य्यायां स्वरोदये तात्कालिक पंचांग समाप्तम् ॥······ शाके १७३० । सं० १८६५ ·· ···
२५ × १२ सें० मी०	२३	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
१६ × ७·८ सें० मी०	८	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२०·७ × ९·३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्र संहितायां हर पार्वती संवादेनष्टजन्म पटलाध्यायः समाप्तः ॥ श्री शिवार्पण मस्तु ॥
२३·९ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०७९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५०	६६१७	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५१	७७६८	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५२	२८०३	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५३	६६२९	नष्टजातक प्रश्न			मि० का०	दे०
३५४	२२७९	नारचंद्रटिप्पन	श्रीसागरचंद्र सूरि		दे० का०	दे०
३५५	२६७९/२	नारायण प्रश्न			दे० का०	दे०
३५६	६६१०	निषेककालशुद्धि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्न मार्गे नष्ट प्रकाराध्यायस्समाप्तिमगमत् ।। ... ...
२०·३ × १६ सें० मी०	३ (१–३)	१७	२५	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·६ सें० मी०	२ (१–२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति नष्टजातकाध्यायः ।।
१६·८ × ६·५ सें० मी०	४	११	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नमार्गेनष्टप्रचराध्यायः ।।
२४·१ × १२·५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२६	पू०	प्राचीन सं०१८०७	इति नारचंद्रटिप्पनके श्रीसागरचन्द्र सूरि कृते प्रथमः प्रकीर्णकः ... संवत् १८०७ वर्षे श्रावणवदि तृतीया-३ बुधवासरे लिखितं व्यास जय शंकरेण ।।
१७·८ × १५·५ सें० मी०	१५½	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × ११·६ सें० मी०	६	१३	४४	पू०	प्राचीन सं०१६२६	सं० १६२६ आषाढ व १३ बुधे विनायक वेतालस्यायं लेखः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५७	१८०५	नीलकंठी	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३५८	२५३२ / १७	नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३५९	६९९३	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
३६०	२६१७	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
३६१	६८४७	नीलकंठी (टीकासहित)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३६२	७३३४	नीलकंठी (संज्ञातंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३६३	७४७	नृयान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.६ × १५.३ सें० मी०	४० (१–४०)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री दैवज्ञानंतमृत दैवज्ञ राम विरचितं वर्षफल ··· ···मासफले च दिनफले नीलकंठ नाम ग्रंथ संपूर्णं ॥ समाप्त शुभमंगल दधात ॥ संवत् १९१७ । मिति असुन वदि ॥३॥ शुके···
१३.७ × १५.५ सें० मी०	१२	१५	२६	पू०	प्राचीन	इति नीलकंठी तंत्रे प्रश्नः समाप्तः ॥
३१ × ११.६ सें० मी०	२१	९	४४	अपू०	प्राचीन जीर्ण	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मविजा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठ-ज्योतिर्वित्कृत संज्ञा तंत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति संपूर्णं ॥
२३.७ × १२.३ सें० मी०	३१ (२२–५२)	१०	३८	अपू०	सं० १८६९	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मविजा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठ-ज्योतिर्वित् कृत संज्ञा तंत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृतिः समाप्ति संपूर्णं ॥ संवत् १८६९ शाके १७३४ ॥
२४.३ × १०.२ सें० मी०	२९ (१–२९)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	
२७.१ × ११.४ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १९१२	इति श्री नीलकंठ कृतं संज्ञाविवेके सहमानिव्यदधात् ॥ प्रथमतंत्रः समाप्तः । × × × ॥
२५.१ × १०.६ सें० मी०	६ (१–६)	११	२६	पू०	प्राचीन सं० १९०७	इति श्री नृयान पुस्तक समाप्त श्रावन मासे कृष्णपक्षे कृष्ण चतुर्दस्यबुधवासरे सवत् १९०७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६४	४६८७	पंचपक्षी			दे० का०	दे०
३६५	५०९६	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६६	४०३२	पंचपक्षी			मि० का०	दे०
३६७	३००७	पंचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६८	६७३६	पंचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६९	५३३२ / ८	पंचम भाव विचार			दे० का०	दे०
३७०	२८६४	पंचशरा	परमेश्वर उपाध्याय		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·५ × १२·५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४४	पू०	सं० १९०९	इति श्री शीवोक्तं पंचपक्षि समाप्तम् । शुभ सम्वत १९०९ ॥ शाके १७७४ ... ...
२० × ७·६ सें० मी०	२५ (१–९,१–७,१–९)	६	३३	अपू०	प्राचीन	अथ पंचपक्षिणा संख्या विधीयते ॥ (प्रारम्भ) ... ...
२० × ७·७ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३९	पू०	सं० १९२५	इति पंचपक्षी समाप्ता: ॥ संवत १९२५ मार्गशीर्षवद्य शुक्रवार हर्डीकरोपनाक राम चंद्रेण लिखितं स्वा० ॥
२४ × १५ सें० मी०	२	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पंचपक्षी प्रश्नं संपूर्णं ॥
३३·२ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	५३	पू०	प्राचीन	इति रत्नाकर खंडे स्कन्दागस्त्य संवादे पंचपक्षी प्रश्नः समाप्तः ॥ लिखितमिदं विनायक वेतालेन ॥
२१·६ × १४·६ सें० मी०	२	११	२८	पू०	प्राचीन	अथ पंचम भाव विचार : + + (प्रारंभ)
२४·५ × १३·५ सें० मी०	२ (१–२)	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सना कुला वतंशपरमसुरयोपाध्याय कृते पंचशरा ग्रंथे आयुर्दायो द्वितीयोध्यायः समाप्तः :०: जयशिव :०: जयराम जानकी :०: जयगौरी शंकर

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७१	७३७८	पंचस्वरनिर्णय (सुबोधिनी टीका)	गंगाप्रसाददैवज्ञ	प्रजापतिदास	दे० का०	दे०
३७२	२६६७	पंचस्वरनिर्णय	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७३	४७१४	पंचस्वरा	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७४	६८५३	पंचस्वरा			दे० का०	दे०
३७५	६६२०	पंचस्वरा	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७६	६६१२	पंचस्वराजातक (सटीक)	प्रजापतिदास		दे० का०	[illegible]
३७७	६८१७	पंचस्वरानिर्णय	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·८ × ११·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्दैनियोपनामक अक्षर मणिसुत गंगाप्रसा विरचितायां पंचस्वर निर्णयेसप्तमोऽध्याय: ॥७॥ पौषेमासे कृष्णपक्षे × × × × × ॥
२७ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३९	पू०	प्राचीन	
३४·४ × १७·५ सें० मी०	७ (१–७)	१५	५२	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास कृत पंचस्वरा समाप्तं ॥
२४·२ × १०·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३०	पू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	४३	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास विरचिते पंच स्वरायां सप्तमोऽध्याय: ॥७॥
२६·२ × ११·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	३४	पू०	प्राचीन	इति पंच स्वराजातके बालारिष्टम्॥१॥ (पत्र-संख्या ५) इति श्री गौड व्र(प)दाचार्य वि० पंचस्वर टिपणं समाप्तम् ॥ (पत्र-संख्या १६)
३२·५ × ९·८ सें० मी०	१० (१–१०)	११	५५	पू०	सं०१९४९	इति प्रजापतिदास कृत: पंचस्वरा निर्णय: समाप्तम् ॥ सम्वत् १९४९ ॥ शाके १८१४ तिथिम् पंचदशमि गुरु वासरानितायां ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७८	४०३१	पंचांग वर्णन			मि० का०	दे०
३७६	२६२७	पक्षिपंचक			दे० का०	दे०
३८०	७३६६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८१	७४६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८२	४२५६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८३	१८१२	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८४	१०६७	पद्मकोश	गोवर्द्धन ज्योतिज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० × ७·७ सें० मी०	८ (१–८)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति पारिजात रत्नाकरे पंचांगवर्णनोनाम प्रथमोध्यायः ॥
२७ ३ × १०·८ सें० मी०	५ (१–५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	
१८·२ × १०·९ सें० मी०	२९	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × ११ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति पद्यकोश भाव फलम् समाप्तम् ॥ मं० १९०९ ··· ··· स्वस्ती श्री रघुवर त्रिपाठी तस्य आत्मज दाताराम त्रिपाठी तस्य पुन्य भार्जायां रा लोचन रामेन ······मंडपमेधे ॥
२३ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री ताजकीय पद्मकोशा व्यग्रंथः समाप्तोयम् वैशाख शुक्ला ४ चंद्रवासरे सं० १९११ ॥
२५·१ × १०·९ सें० मी०	९ (१–९)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
२७·६ × १०·७ सें० मी०	११	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति पद्मकोसः सं० १८८६ महासोत्मासे चैत्र शुक्ला ७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	३५८	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८६	१६३८	पद्मकोश जातक			दे० का०	दे०
३८७	५६६	पद्मकोश वर्षफलं			दे० का०	दे०
३८८	४६०६	पद्यपंचाशिका			दे० का०	दे०
३८९	१५१४	पद्यपंचाशिका			दे० का०	दे०
३९०	२८२३	पद्यपंचाशिका	श्रीपति		दे० का०	दे०
३९१	३६४२	पद्यपंचाशिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·५ × १३·२ सें० मी०	१२	२०	२०	पू०	प्राचीन सं० १९८४	इति राहुफलं इति ताजकीय पद्म क शाव्यग्रथ: समाप्तोयम् मौर्ग शिर कृष्णा ८ बुधवासरे सवत् १९३४ शुभम्···लिखित बनवारि लाल स्वयं पठनार्थः ।.
२०·८ × १०·८ सें० मी०	२५	८	२९	अपू०	प्राचीन सं० १९५१	
२४·६ × १०·३ सें० मी०	९ (१–९)	८	४१	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति श्री पद्मकोश वर्षफल नवग्रहादि फल सपूर्णम् ।। संवत् १९३५ वैशाख कृष्ण प्रतिपदा १ वार वृहस्पतवार ··· मेषाद्यावर्षलग्नके १ ।।
२३·५ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १९०८	कार्श स्था गौड विप्र हररस कवि वः शेवकः सज्जनानां कुर्वे सिद्धान्त सारं मुन मनुजनतं पद्य पंचासकीयं २ पाद्धि पंचाकासं पुर्न समापति ।। संवतु १९०८ ।। (पत्र संख्या–१)
२३·८ × १०·७ सें० मी०	७	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·६ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री कविंद्रक विभूषण पंडिति श्रीपति विरचितायां पद्यपंचासिकीयं ।। समाप्त सुभमस्तु ।। संवत् १८६६ ।। साके १७३१ श्रीरामायनमः । श्रीराम चन्द्रं नमः "श्रीगणेशायनमः ।।
२५·५ × १३ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्म पंचाशिका समाप्ता ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९२	३६८९	पद्यपंचाशिका	श्री पति		दे० का०	दे०
३९३	६८०७	पद्यपंचाशिका			दे० का०	दे०
३९४	२१३०	पद्यप्रदीप जातक	श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
३९५	६८६	पल्लिशरट विचार			दे० का०	दे०
३९६	२८११	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३९७	१४६८	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३९८	२५३२/१७	पल्लीपतन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२२ × १२ सें० मी०	४	१७	३६	अपू०	सं० १८७७	इति श्री कवीन्द्रकुलभूषणपंडित श्रीपति रचितायां पद्यपचासकायं समाप्तंम् ॥ संवत् १८७७ भाद्रपद कृष्णपक्षे ५ रवि लिष्यतं यस्थ छोटेलालऽस्थित मिरपुरे गंगानिकटे विध्यक्षेत्रे
२४·१ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
३२·६ × १२·३ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री कवींद्र कुलकलशपंडित श्रीपति विरचिते पद्यप्रदीपाख्यजातकं समाप्तम्
२२·६ × ११·७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इति श्री पल्लि पतः शपट प्ररोहण विचारः शुभ सं० १९०८ शाके १७७३ अश्विनमाशेशुक्ल पक्षे नवम्यां भृगु वाशेर लिखतंरामदिहलि प्रेण अथमार्थक् पुस्तकि मिदम् ।
२७·१ × ११·१ सें० मी०	२ (१–२)	९	४१	पू०	प्राचीन	इति परिक्षा पल्ली पतन फलाफल शान्ति विधि प्रहरअंग तिथिबार नक्षत्र लग्न मृत्यु ... ... ॥
१९·७ × ९·३ सें० मी०	३ (२–३–४)	११	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८३७	इति पल्ली पतन समाप्तम् ॥ मिश्र नौबत राय पठनार्थ सं० १८३७ मार्गशिर शु० २ लियतं ऋषजी शिव कर्ण॥
१३·७ × ११·५ सें० मी०	१०	११	२४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९९	७७५१/२	पल्लीपतनविचार			दे० का०	दे०
४००	६१७३	पल्लीपतनविचार (दुःस्वप्नदर्शन)			दे० का०	दे०
४०१	१७३२	पल्लीशरट-विधान	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
४०२	१८९०/४ (घ)	पल्लीशरटविधानम्			दे० का०	दे०
४०३	६९५१	पल्लीसरटयोर्विधान	गर्ग उपाध्याय		दे० का०	दे०
४०४	६६१९	पवनविजय			दे० का०	दे०
४०५	६३०५	पवनविजयस्वरोदय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·६ × ८·१ सें० मी०	६ (१–६)	७	१९	पू०	प्राचीन सं०१९३८	इति श्री पल्लीविचारोध्यायः समाप्तम् ॥ सं० १९३८॥ फाल्गुण मासेसित पक्षे षष्टम्यां गुरुवासरे ॥ × × × ×
२०·५ × १५·१ सें० मी०	१ पत्रा	२९	२७	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूतवचनात् पल्लीपतनविचार समाप्तं ॥
२५·८ × १०·७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीब्रम्हवैवर्ते महापुराणेनारायण-नारद संवादे श्रीकृष्णखंडेभगवन्नंदसंवादे दुःस्वप्नदर्शनकथनं नाम द्वाशीतितमो-ध्यायः ॥ शुभमस्तु ॥
१२·२ × ८·८ सें० मी०	६ (१–६)	८	१३	अपू०		इति पल्ली शरट विधान समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१·७ × १०·१ सें० मी०	२ (१–२)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति गर्गोपाध्याय विरचितं पल्ली सरटयो-विधानं समाप्तं ॥
१४·३ × ८·२ सें० मी०	७ (१–७)	११	२२	पू०	प्राचीन सं०१७७५	इति श्री पवन विजय नाम ग्रंथसमाप्तं शूभंभूयात् ॥ सं० १७७५ कातिक शुक्ला सप्तमी ७ रवौ लिषतं मनसा रामगौड ब्राह्मन जलेसर नगरमध्ये शुभं भुयात् ॥
२२·१ × १८·५ सें० मी०	११ (१–११)	९	२४	पू०	प्राचीन सं०१८९९	इतिः ॐ तत्सदिति शिव उमासंवादो-क्तो नव प्रकरंणान्वित पेवन विजयं नाम स्वरोदयं समाप्तम् ॥ सं० १८९९ माघ मासे कृष्णपक्षे··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	६३०४	पवनविजय स्वरोदय			दे० का०	दे०
४०७	६९५६	पातसाधन विवृति	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
४०८	३०१८	पाराशर जातक			दे० का०	दे०
४०९	७०४७	पाराशर होरा सुश्लोकी-शतक			दे० का०	दे०
४१०	५६६३	पाराशरीय जातक (सटीक)			दे०का०	दे०
४११	५६७२	पाराशरीय जातक			दे० का०	दे०
४१२	३१८७	पारशरीय जातक (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.२ × १३.६ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	१८	पू०	प्राचीन सं० १८९९	ॐ तत्सदिति उमामाहेश्वर संवादे नव प्रकरणान्वितं पवनविजय नाम स्वरोदयं समाप्तम् संपूर्ण संवत् १८९९ मासानां मासे माघ शुक्ला ५ शनौ लिखितं ... .
२६.९ × ११.५ सें० मी०	८ (१-६, ६-७)	१५	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ विरचिता पातसाधन विवृतिः समाप्ता ॥
२७.३ × ११.५ सें० मी	१५ (१–१५)	७	३१	पू०	प्राचीन सं० १९०७	इति पाराशरि जातकः सं० १९०७ शाके १७७२ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे ३ गुरुवासरे .. ...
२७.८ × १०.९ सें० मी०	६ (१–३, ५-६, ८)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
३१.२ × १४.८ सें० मी०	६ (२–७)	१४	४५	अपू०	प्राचीन सं० १८९९	
२५.६ × १०.४ सें० मी०	२ (१–२)	९	३६	अपू०	प्राचीन सं० १९००	इति पाराशरीये जातके उडुदायप्रदीपाख्येदशांतर्दशाध्यायः समाप्तः ॥ ४ ॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥ श्री रस्तु सं० १९०० शाके १७६५ × × ॥
२५.६ × १२.५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति पाराशरी जातकस्य टीका या संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१३	६६१८	पाराशरी होरा			दे० का०	दे०
४१४	६२८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१५	३७५४	पाशकेवली	गौतम		दे० का०	दे०
४१६	२८६७	पाशकेवली	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४१७	७०८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१८	६६७६	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणिटीका, गोचर प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४१९	६६७९	पीयुषधारा (मुहूर्त चिंतामणि टीका, तिथि, वार, नक्षत्रप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति पराशरीये केरलमारे कारक प्रकरणं ॥······.
२६·२ × १२·८ सें० मी०	७	१४	३३	अपू०	प्राचीन सं०१७६२	इति पाशकेवली समाप्ता ॥ मुहूर्ते शुभ बेलायां पाशक कार मे छुभ × × × × × सवत् १७६२ पौष शुक्ल प्रतिपादि तीर्थराजे लिखिता ॥
१६ × १२ सें० मी०	१० (१–७, ७–९)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री गोत्तम कृता पाशाकेवली समाप्ता ॥ संवत् १६१७ मिश्र सेठ मल्ल जी तस्यात्मज छजुरामेण लिपिकृता पाशाकेवली विष्णोः प्रसादात्शुभमस्तु श्रीकृष्णायनमः ॥
२३·८ × ११ सें० मी०	५ (४–६, ८–९)	१०	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८३९	इति गर्गाचार्यं विरचितं पाशाकेवली समाप्तं ॥ शुभमस्तु समाप्तं ॥ संवत् १८३९ फाल्गुणे मासि शुक्ले प्रतिपदायां भौमवासरे शुभ ॥
१४·६ × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	१८	पू०	प्राचीन	पासाकेवली समापिता ॥ श्री सुभं भुया ॥
२५·८ × १२·२ सें० मी०	४४ (१–४४)	७	३३	पू०	सं०१८८८	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहुत्त चिन्तामणी गोचर प्रकरणं ····· ···गोविंदेन विनिर्मिते नवनिधौ पीयूषधाराभिधे व्याख्याने खलु गोचर प्रकरणे संपूर्णता ··· ····· ··· ··· संवत् १८८८·········· ॥
२५·६ × १२·३ सें० मी०	१६२ (१–१६०) पत्र २६ एवं ५३ दो,दो	७	३२	पू०	सं०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंदज्योतिर्विद्विरचितायां मुहूर्त्त चितामणि टीकायां पीयूषधाराभिधायां सविचार तिथिवारनक्षत्र प्रकरण समाप्ति सं० १८८८।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२०	६६७५	पीयुषधारा (मुहूर्त्तचिंतामणिटीका, राज्याभिषेक प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२१	६६७८	पीयूषधारा (मुहूर्त्तचिंतामणि टीका, विवाह प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२२	६६९६	पीयूषधारा (मुहुर्तचितामणि टीका, शुभाशुभप्र करण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२३	६६७७	पीयूषधारा (मुहूर्त्तचिंतामणि टीका, संक्रांतिप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२४	६६९७	पीयूषधारा (मुहूर्त्तचिंतामणि टीका, संस्कारप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२५	६८७२	पैतामहसिद्धांत			दे० का०	दे०
४२६	२७३६	प्रपंच निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × १२·१ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३५	पू०	सं०१८८८	···मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र-गोविंद ज्योतिर्विद्विरचितायां मुहुर्त्त चिंतामणि टीकायां पीयूषधाराभिधायां राजाभिषेक प्रकरणं समाप्तिमगमत्··· सं० १८८८ ··· ··· ··· ॥
२६ × १२·१ सें० मी०	१७६ (१–१७६)	७	३६	पू०	सं०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालंकारनीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंद ज्योतिर्विद्विरचितायां मुहुर्त्त चिंतामणि टीकायां पीयूषधारा-भिधायां विवाह प्रकरणं समप्तिमगात्॥ सं० १८८८ ॥
२५·८ × १२·२ सें० मी०	१०० (१७-११६)	७	३०	अपू०	सं०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञमुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रः गोविंदज्योतिर्विद्विरचितायां मुहुर्त्तचिंतामणिटीकायां पीयूष-धाराभिधायां शुभाशुभ प्रकरणं समाप्तं गमात ॥ सं० १८८८ ॥
२६ × १२·२ सें० मी०	४२ (१–४२)	७	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीदैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंद ज्योतिर्विरचितायां मुहुर्त चिंतामणि टीकायां पीयूषधारा-भिधायां संक्रांति प्रकरणं समाप्ति ।
२५·७ × १२·१ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	७	३३	पू०	सं०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालंकार नील-कंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंद ज्योतिर्विद्वि-रचितायां मुहुर्त्त चिंतामणौ टीकायां पीयूषधाराभिधायां सपरिकरं संस्का-रणं समाप्ति मगमत् सं० १८८८ आश्विद्व ६ ।
२७·८ × १३·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्री विष्णुधर्मोतरे पैतामह सिद्धांतः समाप्तः शाकेऽग्नितर्कॆषुसुधांशु १५६३ × × संवत् १८८७ फालगुण कृष्ण १० चंद्रवासरे समाप्तं इदं पुस्तकं पंडत् जी श्री मंछाराम जी की लिखतं दवे रांम लाल पलिवा-लखज्ञाति राय श्री निवास जी री ब्रह्मपुरी मध्ये + +
२७ × ११·३ सें० मी०	१४	१०	३७	पू०	सं०१६१७	इति प्रपंच निर्णयः, शुभं भूयात् संवत् १६१७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२७	१६६	प्रश्न ग्रंथ			दे० का०	दे०
४२८	३००८	प्रश्न ग्रंथ (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
४२९	४२१९	प्रश्नग्रंथ			दे० का०	दे०
४३०	४३४२	प्रश्नचंडेश्वर			दे० का०	दे०
४३१	२५३२/१७	प्रश्नचिंतामणि			दे० का०	दे०
४३२	५८२८	प्रश्नज्ञान			दे० का०	दे०
४३३	१०५५/३	प्रश्न ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·२ × ९.५ सें० मी०	५ (३–७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
१५·१ × ९ सें० मी०	४ (१–४)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२३·६ × १०.९ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२८	पू०	प्राचीन	अथ प्रश्नग्रंथ लिख्यते (प्रारंभ) ... ... शुभमस्तु सम्पूर्णम्। (अंत)
३०·५ × १४ सें० मी०	१८ (१–१८)	१६	५४	अपू०	सं०१८६४	इति श्री चंडेश्वर ब्रह्मविद्यायांगमागमौत्ध्यायो एकादशः × × उमाशंकराय नमः सम्वत १८६४ ... पृ० (१८)
१३·७ × ११·५ सें० मी०	२½	१८	३२	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नचिंतामनि शमाप्त : ॥
२४·२ × १०·३ सें० मी०	२ (३–४)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२०·३ × १०·८ सें० मी०	७ (१–७)	९	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३४	४४७६	प्रश्नतंत्र	नीलकंठ		दे० का०	दे०
४३५	६८४४	प्रश्नदीप			दे० का०	दे०
४३६	१७५३	प्रश्नदीपक	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४३७	३९२०	प्रश्नपारिजात			दे० का०	दे०
४३८	३००० / ३	प्रश्नप्रकरण			दे० का०	दे०
४३९	१८३	*प्रश्नप्रकाश			दे० का०	दे०
४४०	४०८०	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·३ × १५·५ सें० मी०	१८ (२-३, ७-२२)	१५	४७	अपू०	प्राचीन सं० १९०४	इति श्री निलकंठ विरचिते ज्योतिषि कौमुद्यां प्रश्नतंत्र करणं समाप्तोयं ... ... सं० १९०४ शाके १७६९ चैत्रे कृष्णपक्षेकादश्यां भृगुदिने ... ...
२१·५ × १०·१ सें० मी०	१	११	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × १०·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	३७	पू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री काशीनाथ कृतो प्रश्नदीपक समाप्तं ॥ अथ शुभ संवत्सरे श्री नृपति विक्रमादित्यराजे संवत् १८७० वर्षे माहामांगलमासे पौषमासे शुक्ल पछे शुभतिथौ दशमायं (दशम्यां) शनिश्चर वारे मिश्र ननसुख स्वात्म पठनार्थ ॥ शभं भवतु ॥
२३·८ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ११·८ सें० मी०	१६½	१६	२४	अपू०	प्राचीन	
२३ × ८·९ सें० मी०	१२	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिर शास्त्रे सारे प्रश्न शास्त्रे प्रश्न प्रकाशग्रंथः समाप्तः ॥
२३·२ × ८·७ सें० मी०	१३ (१, ३–१४)	९	२८	पू०	प्राचीन सं० १७६४	इति काशीनाथ विरचितः प्रश्न प्रदीपः समाप्तः शुभमस्तु सर्व जगतः ॥ संवत् १७६४ शाके १६२९ के आश्विन सुदि २ भौमे कह लिषितं त्रिपाठी प्राननाथं स्वातमार्थ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	७३६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४२	७४६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४३	३३११	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४४	२८४६	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४५	११३२	प्रश्नप्रदीप जातक (सटीक)	पं० श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
४४६	१०७६	प्रश्नप्रदीपिका	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
४४७	४४३	*प्रश्नभैरव	गंगाधर दैवज्ञ		दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११ × ७·४ सें० मी०	१२	१०	१८	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × ११·२ सें० मी०	८ (३३–३७, ३९–४१)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × १२·७ सें० मी०	८ (१–८)	१६	३४	पू०	प्राचीन सं० १८४५	इति काशीनाथ कृतौ प्रश्नप्रदीपकः समाप्त शुभमस्तु मंगलं ददातु संवत् १८४५ पौषशुक्ल ८ ॥
२३·३ × १०·५ सें० मी०	१७	७	२८	पू०	सं० १९१८	इति श्री काशीनाथ विरचिते प्रश्नप्रदीपोयं समाप्त ॥ सं० १९१८ ॥
३३·३ × १२·८ सें० मी०	२०	९	४९	पू०	प्राचीन	इति श्री कवींद्रकुलकलश पंडित श्रीपति विरचिते प्रश्न प्रदीपाख्य जातकं समाप्तम् ।
२०·५ × १० सें० मी०	१६	८	३२	पू०	सं० १९१४	इति श्री सर्व विद्या विशारद काशीनाथ कृतौ प्रश्न प्रदीपिकः समाप्तः ॥ संवत १९१४ शाके १७७९ वैशाख कृष्ण चतुर्दश्यां १४ वृहस्पत वासरे । शुभमस्तु, श्री राम लिखितं मिश्र देवीसहाय ॥ श्री रस्तु ॥ शुभ मस्तु ॥
२४·५ × १२·५ सें० मी०	२१	११	३८	अपू०	सं० १८२०	इति श्री भैरव दैवज्ञात्मज गंगाधर दैवज्ञ विरचित प्रश्नभैरवः समाप्तः सं० १८२० जेष्ठ १४ पूर्णिमा भृगु समाप्तम् लिषतं नौवत राय आत्मपठनार्थ ॥ श्रीमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४८	५०१४	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४४९	१४२१	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५०	११२२	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५१	६६१८	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५२	७३०७	प्रश्नमहोदधि (सटीक)			दे० का०	दे०
४५३	६६४७	प्रश्नरत्न	नंदराम		दे० का०	दे०
४५४	३२७२	प्रश्नरत्न	नंदराम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·१ × १०·९ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता प्रश्नमनोरमा समाप्ताः ॥ लिखिते सेवाराम स्वबोधार्थं: ॥ राम शुभंभूयात् ॥
२४·४ × १३·४ सें० मी०	६ (१–६)	१४	३८	पू०	सं०१८८५	संवत् १८८५ सरोहदंतिभूवत्सरे भक्तज्येष्टमिशनौमुरलिदत्तेन लेष्यम भारद्वाज कुले शुभे ॥ लक्ष्मण सुताभवः ।-शुभंभूयात् ॥
२०·२ × १०·२ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता श्लोक प्रश्नमनोरमा प्रश्न विद्या समाप्ता ॥ ··· ··· लेषिता पुस्तकी सुंदरमनोरमप······॥
१६·६ × ८·१ सें० मी०	२	९	२६	अपू०	प्राचीन	इति प्रश्न मनोरमा समाप्ता ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तू ॥
२३·१ × ११.४ सें० मी०	८ (१–८)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	
२९·७ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	१९	६२	पू०	सं०१९३१	इति प्रश्नरत्नं संपूर्णं ॥ संवत् १९३१ भाद्रपद शुक्ल १४ शुक्रवारे लिखितं ॥
३३·२ × १३ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४५	पू०	सं०१९०१	इति श्री मिश्र नंदराम कृत केरलि शास्त्रे प्रश्णरत्नं नामः ग्रथं समाप्तम् संवत् १९०१ मितिः जेष्ठ शुक्ला नवम्यां रविवासरान्वितायां समाप्तोयं लिपितं वासुदेव सर्मण अरीघग्रामे ॥ शुभं भूयात् ॥ श्री ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५५	८१४	प्रश्नरत्नटिप्पणी			दे० का०	दे०
४५६	१८९७	प्रश्नरहस्य	विघ्नराज		दे० का०	दे०
४५७	७२७३	प्रश्नविचार	देवल		दे० का०	दे०
४५८	१३८६	प्रश्नविनिश्चय			दे० का०	दे०
४५९	१४७१	प्रश्नविनोद			दे० का०	दे०
४६०	१४५५	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास		दे० का०	दे०
४६१	१६५०	प्रश्नवैष्णव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × १२·२ सें० मी०	४४ (१–४४)	११	३४	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री स्वकृत प्रश्न रत्नस्य टिप्पणी संपूर्णं ॥ संवत् १८६५ आश्विन कृष्ण १० गुरुदिने ... महापुन्य क्षेत्र कनखलेयं लिपि कृतं पठनार्थस्य शुभं ॥
२४ × ९·५ सें० मी०	५	९	३०	पू०	सं० १९२१	इति श्री विघ्नराज निर्मित प्रश्नरहस्य समाप्तं । इदं पुस्तकं लिखितं गौरीदत्तेन शिव दियाल आत्मज शुभं मस्तु सिद्धि रस्तु शुभ संवत् १९२१ चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टम्यां ८ रविवासरे......
२५·८ × १२·७ सें० मी०	३ (१–३)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति देवल कृतं प्रश्नः संपूर्णमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥
२३·७ × ९·३ सें० मी०	७ (१–२, ५–६, ११–१३)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × ८·८ सें० मी०	२६ (१–२६)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १८९१	इति श्री प्रश्नविनोद ग्रंथ संपूर्णं शुभमस्तु ॥ सं० १८९१ ॥
२३·७ × १३·५ सें० मी०	१२ (१०–११, १३–१५, १८, २०–२५)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १३·५ सें० मी०	४२ (२, २६–४६, ४८–५९, ६१–६८)	१०	२७	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०८३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६२	३४०१	प्रश्नवैष्णव	नारायण दास		दे० का०	दे०
४६३	६६२४	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६४	२६७८	प्रश्नसंग्रह	शिव		दे० का०	दे०
४६५	३७४६	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६६	६१५०	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६७	७००१	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४६८	६८५६	प्रश्नसार	हयग्रीव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·८ × १५·७ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	५३	पू०	सं०१७५५	इति ब्रह्मदाशपुत्र श्रीनारायणदास सिंह विरचिते प्रश्न वैष्णव शास्त्रे पंचदशोध्याय: १५ श्री संबत् १८७४ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ रववासरे शुभमस्तु मंगलंदाति लिषितं मिद पंश्री दुबेगिरधारा ... ...
२१·३ × ८७ सें० मी०	८ (१–८)	११	३०	पू०	प्राचीन शाके १७५३	इति प्रश्न संग्रह: समाप्ता: ॥ श्रीराम चंद्रार्पणमस्तु ॥ शके १७५३ खरसंवत्सरे गुर्जरोपनामक रामचंद्रेण लिखित ॥ श्री गजानन ॥
३१·२ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव विरचितं प्रश्नसंग्रह समाप्त: ॥ शुभमस्तु मंगलं ददातु... ... .
१६ × १३·५ सें० मी०	९ (१–९)	९	१६	पू०	सं०१९००	इनि प्रश्णसाग्हं॥ संवत् ॥ १६०० चैत वदिमावाश्चा ॥
२२·५ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	९	२८	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशं नमस्कृत्य श्रीगुरं गिरिजापतिं दैवज्ञानं हितार्थाय क्रियते प्रश्न संग्रहै... ... —(आदि)
२०·६ × १६·५ सें० मी०	४ (१–४)	१८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्पूण्य स्तंब निवासित आचार्य वंशोद्भव विष्णु दैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञ विरचिते प्रश्नसार संपूर्ण: ॥
२१·४ × १२·५ सें० मी०	१२ (१–१२)			पू०	प्राचीन सं०१६०५	हयग्रीव विरचितं प्रश्नसार: समाप्तिमगमत् ॥ सं० १६०५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६९	४६०१	प्रश्नसार	गणेश		मि० का०	दे०
४७०	५०७९	प्रश्नसार	जीवज्योति		दे० का०	दे०
४७१	२३६४	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७२	२६०३	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७३	१२९४	प्रश्नस्वरोदय			दे० का०	दे०
४७४	१८२० / २	प्रश्नावली			दे० का०	दे०
४७५	८४९	प्रश्नावली	जड़भरत		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·५ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	७	२८	पू०	सं०१९२७	इति श्री रुद्रयामले गणेश निर्मितं प्रश्नसार ग्रंथ समाप्तम् १९२७ द्वितियः वैशाख शुक्ला १५ ॥
२३·५ × ११ सें० मी०	३ (६–८)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति याज्ञिक नरहरि सुत जीव ज्योति विरचितं प्रश्नसारं समाप्तं ॥ × ×
२२·५ × ९ ५ सें० मी०	६ (१, ३–७)	१०	२८	अपू०	सं०१९३	इति प्रश्नसार समाप्तम् ॥ सं० १९३६ पुसवदि ४ का ॥
२६·५ × ११·४ सें० मी०	६	९	३०	अपू०	सं०१९१३	इति श्री विष्णु दैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञ विरचितः प्रश्नसारः समाप्तः ॥ श्रीकृष्णार्पणम् ॥ संवत् १९१३ शाके १७७४ मासेतम मासे अषाढ़ मासे शुभे कृष्णपक्षे तिथौ १४ चतुर्दश्यां भौमवासरे······
१६ × ९·२ सें० मी०	९ (३–११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति साधारण प्रश्नस्वरोदय लिखितं गोपीदूबे······
१८ × १३·२ सें० मी०	१०	८	१३	पू०	प्राचीन	
२८·२ × १२·१ सें० मी०	१० (१–१०)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिविराजकाचार्य श्री मुनि माधवानंदस्यशिष्योजडभरत विरचिता प्रश्नावली समाप्तम्ः ॥ शच्चिदानंदरूपायनमः शुभंमस्तु मंगलं ददातु ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	६६५८	प्राणपद-साधन प्रकार			दे० का०	दे०
४७७	२९३०	फलविचार			दे० का०	दे०
४७८	७०७३	फारसी काव्याधिकार	हीरानन्द		दे० का०	दे०
४७९	६५४२	बालबुद्धि-प्रकाशिका	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८०	७०३७	बालबुद्धि-प्रकाशिनी	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८१	६८९८	बालबुद्धि-प्रकाशिनी	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८२	३०१४	बालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·५ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३२	पू०	प्राचीन	
२४ × १२·१ सें० मी०	२२			अपू०	प्राचीन	
१६·६ × १०·४ सें० मी०	९ (१–९)	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञवर्य्यनरहरितनय हीरानंद विरचिते ठाकुरदास विलासे पारसी काव्याधिकारे सद्व संज्ञाधिकारस्समाप्तः शुभम् ॥
२२·८ × ९ सें० मी०	९७ (१–९७)	५	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोवर्धनाचार्यात्मजे गोविन्दाचार्य निर्मितायां प्रिय बालबुद्धिप्रकाशिकान्या जातकस्कंधे राशिभेदा प्रकर्ण पूर्ण…… (पत्र सं०––६)
२७ × १६·९ सें० मी०	८	२०	१७	अपू०	प्राचीन	श्रीमद्गोवर्द्धनाचार्यात्मजेन दैववेदिना गोविंदाचार्यवर्येण निर्मितायांप्रियत्विषी बालबुद्धि प्रकाशिन्यां स्कंधे गणित संज्ञके…… (पत्र संख्या––५)
१८·८ × ९ सें० मी०	३७ (१–३७)	८	२५	अपू०	प्राचीन	श्री मद्गोवर्द्धनाचार्यात्मजेनदैववेदिना गोविंदाचार्य वर्येणनिर्मितायां प्रियत्विषी ॥७८॥ बालबुद्धि प्रकाशिन्यां स्कंधे गणित संज्ञके + + + (पत्र संख्या––१०)
२५·९ × १०·३ सें० मी०	३६ (१–३६)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १९१५	इति श्री मुंजादित्य विरचितं जोतिससास्त्रे बालबोध संख्यासंग्रह समाप्ता शुभं मस्तु संवत् १९१५ चैत्रमासेशुभे ……॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८३	११८८	बालबोध	मुंजादित्यविप्र		दे० का०	दे०
४८४	६८११	बालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८५	२३३८	बालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८६	२७३९	बालबोध व्याख्या	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८७	७०४३/४	बालबोध (सारसंग्रह)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८८	७४७८/२	बालबोध सारसंग्रह	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८९	४२२	बालबोधक (सारसंग्रह)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·८ × १३·३ सें० मी०	१७ (३–१७, १९–२०)	११	२८	अपू०	सं० १८४७	इति श्री मुंजादित्यविप्रविरचितं बालबोध ग्रं समाप्तम् सुभमस्तु संवत् १८४७ साके १७१२ आषाढ वदि ९ शुभमस्तु राम ॥
२३·३ × १०·६ सें० मी०	१७ (१–१३, १६–१९)	१०	३४	अपू०	सं० १८६५	इति श्री मुंज्जा दित्येन विरचिते ज्योतिष शास्त्रं वालबोधकाख्या सार संग्रह समाप्तम् ॥ १८६५ शुभभूयात् ॥
२४·५ × ११ सें० मी०	१४ (१–११, १३–१५)	९	३४	अपू०	सं० १७४४	इति श्री मुंजादित्येनविरचितं ज्योतिष शास्त्र बालवोधाख्या सारसंग्रह समाप्तं संवत् १४४४ ज्येष्ठ सुदि भौमे···
२१·५ × १४ सें० मी०	१२	१३	१३	पू०	सं० १८१४	इति श्री मुंजादित्येन विरचितं ज्योतिष शास्त्र वालवोध व्याख्या समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु । संवत् १८१४ पौष वदि ३० ॥
१४·७ × १३ ३ सें० मी०	१६	११	१५	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × ९ ९ सें० मी०	३४ (१–३४)	११	२२	पू०	सं० १८७४	इति श्री मुंजादित्येन विरचितं ज्योतिष शास्त्र वालवोधकाख्य सारसंग्रह समाप्तं ॥ पौषे मासे सिते पक्षे प्रतिपंच्च बुधवासरे ॥ नथन मिश्र द्विजेनेदंलिपतं पुस्तगमिद संवत् १८७४ शाके श १७३९ । चंडिपुर मध्ये ॥
१३·८ × ९·७ सें० मी०	४१ (१–४, ६, १०–४६	८	१९	अपू०	प्राचीन	


नागरी
सभा
प्रचारिणी